श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि

(उपासना-साधना)

लेखक :-
योगी विलासनाथ
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) हरिद्वार ☎ 01334-226583

प्रकाशक :-
श्री बाबा मस्त नाथ मठ
मठ अस्थल बोहर जिला रोहतक (हरियाणा)

श्री ॐकार यन्त्रम्

चित्रांकन – योगी विलास नाथ

प्रकाशक – श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर
जिला – रोहतक (हरियाणा)

श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि

(उपासना-साधना)

लेखक :

योगी विलासनाथ

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर

जिला रोहतक (हरियाणा)

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन-01334-226583

Visit us at : www.yogigorakshnath.org,

e-mail : media@yogigorakshnath.org

14 अप्रैल 2010 (वैशाखी संक्रान्ति) (हरिद्वार महाकुम्भ पर्व)

सम्वत् 2067

प्रथम संस्करण-2000 प्रति] [मूल्य : 80/-

इस पुस्तक के किसी भी भाग एवं अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

आर्शीवचन

अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

महामंत्री

प्रिय शिष्य योगी विलासनाथ
शुभ आशीर्वाद

"श्री सिद्धों की ॐकार सिद्धि" यह ग्रंथ देखकर अति प्रसन्नता हुई हैं, जोकि इसमें ॐकार स्वरूप आदिनाथजी से नवनाथ चौरासी सिद्धादि नाथ परम्परा तथा अनेकों नाथ संस्कार जो ॐकार स्वरूप से ही प्राप्त है। इसमें ॐकार स्वरूप ॐकार आदिनाथजी जो की उन्हें निर्गुण ब्रह्म सम्बोधित करते हुए जीव ब्रह्म-माया को पृथक करते हुए ॐकार ब्रह्म प्राप्ति तथा ॐकार ब्रह्म, दर्शन साक्षात्कार करने में नाथ सिद्ध योगिओं तथा नाथ भक्ति-भक्तों को उपयोगी सिद्ध होगा। जोकि कम पढ़े लिखे जन साधारण को तथा योग ध्यान करने वाले योगियों को पर्याप्त और सरल सुलभ मार्ग प्राप्त हो जाये।

इस ग्रंथ में परब्रह्म ॐकार उपासना ज्ञान-सिद्धियों एवं साक्षात्कार जैसे सत्व गुण अपेक्षित कार्य पूर्ति के लिए ॐकार बीज युक्त तंत्र मंत्र क्रियादि जैसे राजसी गुण तथा निर्गुण पर ब्रह्म प्राप्ति का जो मोक्ष मुक्ति का साधन, जो सरलता से सफल व्यक्त का साधन, जो सरलता से सफल व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

अनहद नाद रूपी ॐकार ब्रह्म से सारी सृष्टि की उत्पत्ति से उसी में लीन होने वाली मायातित सृष्टि का बड़े ही सुचारू बद्ध

रचना जैसे ॐकार विस्तार–उनका नादब्रह्म ॐकार महात्म्य, तंत्र मन्त्रादि सिद्धियों परब्रह्म ॐकार तथा ॐकार स्वर तत्व ज्ञान इन सभी पक्षों पर बड़े ही विस्तृत भाव से और सहज समझने के लिए उपनिषद द्वारा समझाने का प्रयास किया है। जिसमें त्रिगुणातित ॐकार रूपी नाथ सिद्धों की सुप्त शक्तियाँ तथा अदृश्य शक्तियाँ तथा दैवी शक्तियाँ का कर्मकाण्डों क्रिया–योग–पूजन–हवन इत्यादि द्वारा चेतन होकर कार्य सिद्धि के लिए योग्य, मार्गदर्शन हुआ है। जिससे सभी के सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होंगे इन सभी प्रयास व्यक्तता देखते हुए लेखक प्रशंसा का पात्र है।

इस ग्रंथ में योग–ध्यान–कुण्डलीनि शक्ति द्वारा मोक्ष मुक्ति की उपलब्धी निस्वार्थ भाव करने पर तथा गुरुकृपा से प्राप्त होगी। जो कि नाथ सिद्ध सम्प्रदाय की नाथ पंथ प्रणाली–मर्यादा और संस्कार की अखण्डता को कायम रखने का अनूठा प्रयास किया गया है।

अतः यह ग्रंथ नाथ सिद्ध सम्प्रदाय तथा अन्य सभी सम्प्रदाय के लिये माया–ब्रह्म के अलग–अलग ज्ञान विवेक मार्गदर्शिता के लिए सिद्ध होगा। थोड़े से अभ्यास करने मात्र से पूर्णता प्राप्त होगी अतः मानव प्राणी मात्र ने इन सबका अनुभव लेना चाहिए।

अतः शुभकामना करते हुए पुनः–पुनः हम आशीर्वाद देते हैं कि बाबा मस्तनाथ जो गुरु गोरक्षनाथ जी के अवतार है इनके अनुकम्पा से लेखक उत्तरोत्तर अपने प्रयास सफल करता रहे।

इति शुभम्

योगी आनंदनाथ जी

(प्रधान महामंत्री)

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा,

हरिद्वार

मनोगत

ॐ .. ॐ .. ॐ काराय नमो नमः

जती सती साधु सन्त नाथ सिद्ध योगेश्वर हमारे नाथ सम्प्रदाय के भूषण हैं और गुरु शिष्य परम्परा के पवित्र स्रोत हैं। क्योंकि इनकी आत्मा में सत्य का निवास होता है। ज्योकि **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की सद्भावना को लेकर समस्त संसार का कल्याण करते हैं।

ॐकार आदिनाथजी, मत्स्येन्द्रनाथजी, गोरक्षनाथजी आदि ९ नाथ चौरासी सिद्धों की कृपा से ही अनिवार्यनीय जीवन ज्योत जगमगाती है। जिसमें अलौकिक जीवन ज्योति श्री सद्‌गुरुदेव की कृपा से मिलती है। ऐसे गुरुदेव के परंगुरु आदि गुरु मूल गुरु जो

गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु गुरुर देवो महेश्वरा।
गुरुर साक्षात् परब्रह्म तस्मे श्री गुरवे नमः।।

तो वह है ॐकार। ॐकार सर्व सृष्टि के आराध्य गुरु है। जो कि ॐकार से सारी सृष्टि बनी है। ॐकार के प्रणव 'अ' कार 'उ' कार 'म' कार से ब्रह्मा विष्णु महेश निर्माण हुये है, वेद-ज्ञान-विद्या कर्म भक्ति भी निर्माण हुई है तथा यह ॐकार चारों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त कर मुक्ति पथ पर ले जाता है। क्योंकि इस ॐकार में उत्पत्ति है तो लय भी इसीमें है।

ऐसे परब्रह्म स्वरूप ॐकार जो नाथ पंथ की धरोहर है। जो

नाथ पंथ के दादा गुरु योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी को प्रत्यक्ष साक्षात्कार हुआ था तथा ॐकार स्वरूपी आदिनाथ जी के प्रत्यक्ष स्वरूप गुरु गोरक्ष नाथजी की स्वयं मुख से अपने शिष्य भर्तृहरि गोपी चन्द नाथजी को ॐकार महिमा बखान करते हैं।

उसी प्रकार गुरु गोरक्षनाथजी के अपने गोरखबानी जो सम्पूर्ण योग प्रणाली स्रोत है तथा "सिद्ध सिद्धान्त पद्धति" एवं "हठयोग प्रदिपिका" जिसमें पिण्ड से ब्रह्माण्ड स्वरूप दर्शन है ग्रंथों में ॐकार की गुणगान तथा ॐकार महात्म्य का गान किया गया है।

इस सत्य सनातन सद् गुरुकृपा स्वरूप ॐकार के बीजों से इनके अक्षर ब्रह्म, शब्द ब्रह्म या ब्रह्मनाद या नाद ब्रह्म के आधार पर नाथ सिद्धों की अनेकों ऋद्धि-सिद्धियाँ तथा योग ज्ञान, मोक्ष मुक्ति का प्रमाण की सिद्धता सिद्ध की गयी है। अतः "श्री नाथ सिद्धों की ॐ की सिद्धि" ग्रंथ में समूची नाथ पंथ के सभी पक्ष जो ॐकार द्वारा ब्रह्म दर्शन, आत्म दर्शन, साक्षात्कार नाद ब्रह्मानुसंधान की विविध विधियाँ प्रस्तुत की गयी है। जिसमें नाथ पंथ के गुरु-शिष्य परम्परा के ब्रह्म संसार तथा कर्मयोग, ज्ञान योग, ध्यानयोग, भक्ति योग इत्यादि यह ॐकार उपासना का बहुत सरल भाषा में वर्णन किया गया है तथा सकारात्मक अपेक्षा स्वार्थ-पारायण कुछ ॐ कार मय तंत्र मंत्र विधि विधान हवनादि सभी वर्णन जो जन कल्याणप्रद है। ऐसे ॐकार को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है तथा ॐकार द्वारा ही स्वर ज्ञान, स्वर तत्त्व ज्ञान स्वर सिद्धि का भी विस्तृत वर्णन किया गया है जो साधक और पाठकों को नित्य जीवन में सुख समृद्धि और सरलता ला सकती है।

इसी प्रकार मंत्र-तंत्र ज्ञान आरती, भजन, हवन इत्यादि द्वारा ॐकार परब्रह्म की उपासना करके चारों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हो जाने के लिए तथा ॐकार मय ज्ञान-विज्ञान

भौतिक आदि भौतिक, दैहिक–दैविक इत्यादि सुखः दुःखादि पार हो जाने के लिए यह ॐकारमय ग्रंथ सभी जन साधारण को सहज–सरलता से उपयुक्त होगा तथा साधु सन्तों योग– ध्यान–समाधि में ॐकार भक्ति भाव का आनन्द भी ले सकते हैं।

इस ग्रंथ कार्य में सभी नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वरों तथा गुरु भाई यागी प्रमोदनाथ, योगी मोतीनाथ, योगो राकेशनाथ इत्यादि सह हृदय सद्प्रेरणा दी अतः इन सभी कार्यों का सविनय आभारी हूँ।

हमें पूर्ण आशा है कि इस ग्रंथ से सभी सिद्ध योगेश्वर, साधु सन्त एवं भक्तजन लाभान्वित होंगे।

टंकण में हुई अशुद्धियों के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

इति शुभम्

योगी विलासनाथ

योगी विलासनाथ
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष
बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

श्री नाथ सिद्धों की ॐ कार सिद्धि

अनुक्रमणिका

१. प्रथमः अध्याय १

।। ॐ कार का ब्रह्मदर्शन ।।

२. द्वितीयः अध्याय १३

।। ॐ कार विस्तार ।।

३. तृतीयः अध्याय ३०

।। श्री नाथयोगी ब्रह्म संस्कार ।।

४. चतुर्थः अध्याय ४३

।। ॐ कार नाद ब्रह्म ।।

५. पंचमः अध्याय ६०

।। ॐ कार महात्म्य ।।

६. षष्टमः अध्याय ७१

।। ॐ कार महिमा ।।

७. सप्तमः अध्याय ८४

।। परब्रह्म ॐ कार सिद्धि ।।

८. अष्टमः अध्याय ९४

।। त्रिगुणातित ॐ कार साधना ।।

९. नवमः अध्याय १२३
॥ ॐ कार स्वर ज्ञान ॥

१०. दशमः अध्याय १३७
॥ ॐ कार स्वर तत्व ज्ञान ॥

११. एकादशः अध्याय १५४
॥ त्रिकालदर्शी ॐ कार स्वर ॥

१२. द्वादशः अध्याय १६२
॥ ॐ कार हवन विधि ॥

१३. त्रयोदशः अध्याय १७७
॥ ॐ कार उपासना ॥

१४. चर्तुदशः अध्याय १९३
॥ साधना सिद्धि के संकेत–नियम ॥

१५. पश्चदशः अध्याय २०२
॥ ॐ कार पर्वत के सानिध्य में ॥

१६. **सूची पत्र** २१३

श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि

(उपासना एवं साधना)

प्रथमः अध्याय

।। ॐकार का ब्रह्मदर्शन ।।

पूर्वकाल एक समय कि बात है कि पतित पावनी मां गंगा के तट पर बसे हुये तीर्थ नगरी मायापुरी में बिल्व पर्वत कि गोद में एक भव्य गुफा में श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी अपने ध्यान-समाधि में लीन थे। गंगा मां का अविचल जल प्रवाह बड़े ही उत्कट भाव से बह रहा था। वह चैतन्यमय जल धारायें मानो आनन्द सागर को मिलन हेतु बड़ी तेजी से बह रही थी। उसकी कल-कल छल-छल कि आवाजे मन को मोह ले रही थी दूर से हिमालय कि ठंडी-ठंडी मन्द मन्द हवाओं की लहरे उस गुफा में प्रवेश करते ही तन मन चित्त को नव चैतन्य दे रही थी। कहीं-कहीं दूरी से आती हुयी अत्यंत गहरी शंख ध्वनि कानों में अल्हाददायक लग रही थी बीच-बीच में घण्टों का नाद मधुर कम्पन सुनाई पड़ता था। उस प्रभाती सूर्योदय की सुनहरी किरणों में वह पुण्य भूमि मानो स्नान कर रही थी।

इधर गंगाजी के घाट पर योगीराज भर्तृहरि और गोपीचन्दनाथ जी स्नान का आनन्द ले रहे थे। सूर्य-अर्ध्य-आचमन-वन्दना इत्यादि कर्म पश्चात अपने-अपने कमण्डलु में जल भर के वह गुफा की तरफ अपने सतगुरु गोरक्षनाथजी के दर्शन हेतु निकल पड़े इन दोनों नाथ सिद्धों को उस पवित्र गुफा आश्रम में अपने गुरुदेव की सेवा करने का उनके स्नेह आशीर्वाद तथा उपदेश लेने का सुनहरी अवसर मिला था। जब वे बड़े आनन्द पूर्वक गुफा में पहुँचने पर वहाँ गुरुदेव ध्यान समाधि में मग्न थे। उनकी प्रसन्न और तेजस्वी मुखमंडल शान्त चित्त मन मोह ले रहा था। तपस्वी तेजस्वी काया से मानो वह गुफा प्रकाशमान हो गयी थी अतः वह दोनों ही उनकी ध्यान जाग्रति का इन्तजार करने लगे वह अत्यन्त खुश एवं सन्तुष्ट दिख रहे थे। और जब गुरु गोरक्षनाथजी अपने गहन समाधि में से जाग्रत हुये और उन्होंने देखा कि योगीराज भर्तृहरिनाथ एवं गोपीचन्द नाथ जी बड़े ही आदर सद्भाव से उन्हें आदेश-वन्दना कर रहे है और हाथ

जोड़कर एक ही सुरताल में आदेश गायत्री का पाठ करने लगे।

।। आदेश गायत्री ।।

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी आदेश। ॐ गुरुजी। एक ओंकार तेरा आधार तीन लोक में जयजयकार नाद बाजे काल भागे ज्ञान कि टोपी गोरख साजे गले नाद पुष्पन कि माला रक्षा करे श्री शम्भुजति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला चार खाणी चार बाणी चन्दा सूरज पवन पाणी एको देवा सर्वत्र सेवा ज्योत पाट ले परसों देवा कानन कुण्डल गले नाद करो सिद्धों नाद ॐकार। सिद्धों गुरुवरों को आदेश। आदेश।

पाठ होने के पश्चात वह दोनों नदमस्तक होते हुये नादि बजाकर आदेश वन्दना अर्थात नमस्कार किया। और ऐसा देखते हुये गुरु गोरक्षनाथजी प्रसन्न अन्तकरण होकर अभय मुद्रा में उन्हें आशीर्वाद दिया और अपने सन्मुख बैठने के लिये उन्हें संकेत किया। तब वह दोनों योगेश्वर अपने अपने आसनों पर सिद्धासन बैठकर हाथ जोड़कर गुरुजी को प्रार्थना करने लगे उन्होनें कहा कि हे गुरुदेव हमें ॐकार जो इस आदेश गायत्री में तेरा आधार कहा गया है, अतः इस ॐकार का समुची सम्पूर्ण ज्ञान और इसका भेद बताने की कृपा करे। तब यह सुनकर प्रसन्न होते हुये गुरु गोरक्ष नाथजी कहने लगे हे प्रिय शिष्य भर्तृहरि-गोपीचन्द नाथ आपने बहुत ही अच्छा प्रश्न किया, जिसके उत्तर पक्ष जानने में समुची सर्वत्र सृष्टि का ही ज्ञान हो जायेगा। यह ॐकार आदि अनादि अत्यन्त प्राचीन, सनातन नेती-नेती ज्ञान विज्ञान युक्त इस जगत सृष्टि का बीज अर्थात मूलाधार हैं। अतः हम इसका भेद तथा रहस्यमय ज्ञान बताने की चेष्टा करते है। आप चित्त, मन को एकाग्र करके सुनिए।

एक बार हम स्वयं गणेश लोक कैलाश पर्वत के तलहेटी गौरी कुण्ड क्षेत्र में गये थे वहां हमारी भगवान श्री गणेश जी से भेटवार्ता हुयी थी। वह एक विनोदनी मूर्ति थी, उनकी काया मनुष्य देह थी और उपर का मस्तक हाथी का था, नासिका के स्थान सुन्दर ॐकार कृति सूंड दिखाई दे रही थी। चर्तुभुज सुगंठित शरीर तथा ऊँचे ललाट पर त्रिपुण्ड भस्म तथा गठिला बाल रूप बहुत ही सुन्दर लगता था हमने कुतुहल वश उन्हें अपना परिचय देकर उनकी पहचान पूछने लगे अतः उन्होंने बहुत ही सुन्दर शब्दों में

अपना परिचय कराया उन्होंने कहा हे योगीश्वर मैं माता पार्वती का पुत्र हूँ। एक समय माँ ने उबटन से मेरे देह का पूतला बनाकर मुझे द्वार रक्षक रूप में स्थापित किया, मेरे हाथ में अकुश देकर आदेश दिया कि मैं स्नान करने जा रही हूँ। अन्दर कोई भी प्रवेश ना कर पाये, अत: हम रक्षा करने हेतु बैठ गये इतने में भगवान शिवजी आये मैं अनजान था अत: हमने उन्हें रोक दिया उन्हें क्रोध आया और त्रिशूल से मेरा शीश काट डाला अत: माता पार्वती यह समझने पर बहुत ही दु:खी हुई और भगवान शिवजी से मुझे जिन्दा करने को हट करने लगी। तब आशुतोष भगवान ने गणों को आदेश दिया। जो सर्वप्रथम प्राणी मिलेगा उसका शीश ले आवो, गणों को प्रथम हाथी ही मिला फिर हाथी का शीश काटकर मेरे धड़ को लगाया और मृत संजीवन मन्त्र से मुझे जीवित किया। इतने में सभी देवी-देवता आये सबके सन्मुख मुझे ज्ञान, शक्ति और भी वरदान दिये कि तुम चिरंजीवी रहोगे, जगत में सर्वप्रथम तेरी श्रद्धा से पूजन करेंगे तो सभी कार्य निर्विघ्न पार पड़ेगे तबसे जन्म-विद्यारंभ-विवाह-नया प्रवेश इत्यादि शुभ कर्म में प्रथम मेरी ही पूजा होती है और सर्वप्रथम मान मुझे ही प्राप्त होता है और विशेषत: आपके योग कुण्डलीनी प्रक्रिया में सभी चक्र के मूलाधार चक्र में भी मुझे ही प्रथम स्थान दिया गया है। हे सर्व जतीश्वर हे श्री शम्भुजती योगेश्वर अब मै मेरा ही उत्पति का लक्षार्थ सुनाता हूँ। देखों मेरी माता पार्वती प्रकृति का रूप है और पिता शिव पुरुष का स्वरूप है, पंचमहाभूतों का वह उबटन है जिनसे (मेरी) देह बनती हैं। और हमारा अहंकार दशद्वारों का द्वारपाल या द्वाररक्षक हैं। जो प्रकृति का दूत होकर ज्ञान स्वरूप शिव कों नही पहचानता और उसके निश्चय का प्रवेश अन्तकरण में नही होने देता किन्तु जब भगवान शिव का तेज तम रूपी अहंकार पर अर्थात द्वारपाल पर त्रिशूलवत पड़ते ही तब वह भस्म हो जाता हैं खत्म हो जाता है। और उसकी भस्मी या धड़ जड़वत पड़ जाता है। इस सृष्टि में जीव का जन्म माता के गर्भ अर्थात प्रकृति अनुरूप होता है। अर्थात माता के इच्छा से होता है। और ज्ञान का जन्म या ज्ञान प्रकाश संभवत: सत गुरु कृपा से (मन्त्र) से होता है। अर्थात ॐकार रूपी मन्त्र जो मेरा आकार है। वज्र के भाँति (जो मेरा अंकुश है) अभिमान को काटकर शिष्य के मस्तक पर (त्रिपुटी में) अर्थमात्रा का अनुभव कराता है। अर्थात स्थूल देह मे चैतन्य

।। ॐकार मय श्री गणेश।।

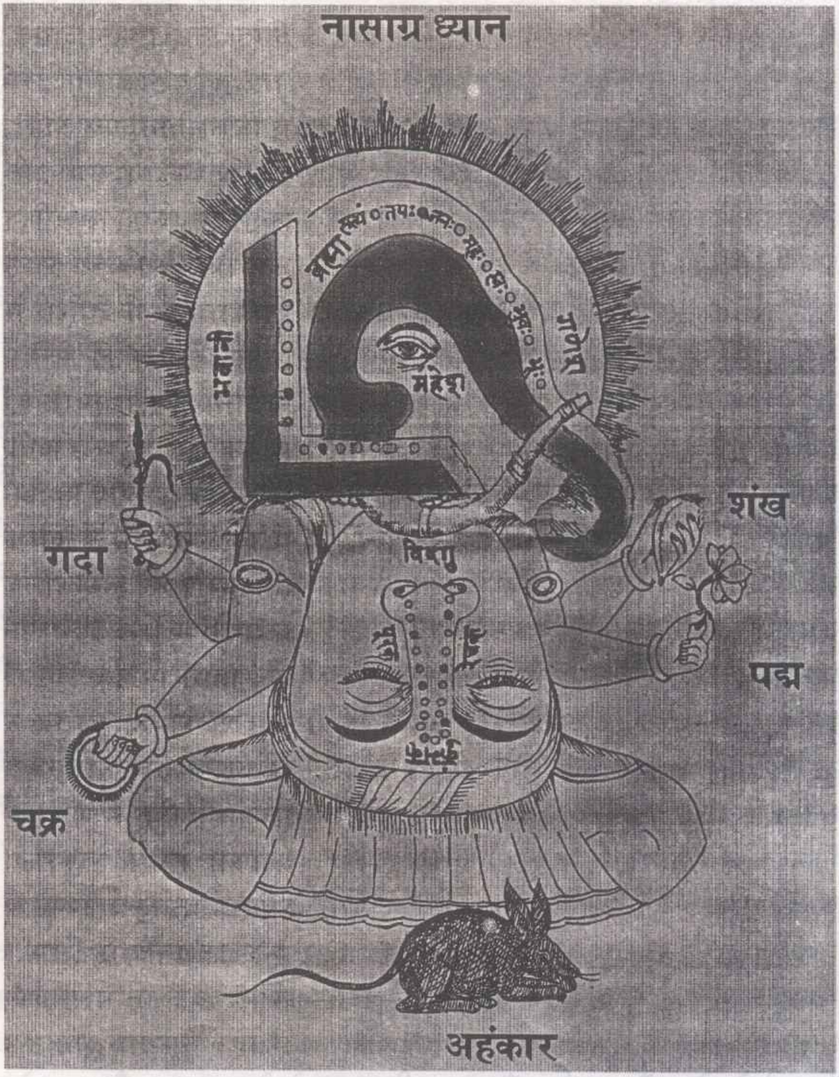

का (जो ॐकार) प्रवेश ज्ञान साधना से होता हैं। जैसे हाथी देहधारियों म सबसे बड़ा है वैसे अक्षरों में ॐकार सबसे बड़ा हैं। और सभी मन्त्र तंत्र महावाक्यों में सबसे प्रथम आता है। अत: जो इस एकाक्षर ॐकार मंत्र कि साधना करता है वह चिरंजीवी, सर्वेन्द्रिय ज्ञानेन्द्र और ईश बन जाता है।

यह सूंड जो आप मेरे मुख पर देख रहे है वास्तव में ॐकार कि उल्टी हुई मूर्ति है जो नासाग्र का अभ्यास करने पर जिज्ञासु के अनुभव में अन्तर्य दृष्टि से आती है। मेरा सफेद एक दन्त अद्धैत पद दर्शाता है। और मूर्ति के उलट हो जाने पर ॐकार के चार पाद मेरी चर्तुभुजा बन जाते हैं इस मेरे ॐकार रूपी हाथी के भय से देह का अहंकार चुहा बनकर मेरा वाहन बन गया है। और मेरी ॐकार मयमूर्ति में 'अ"उ' 'म' ◡ ● में ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति नाथ बिन्दु इन पंचदेवताओं का आकार प्रतीत होता है।

अत: ऐसे नासाग्र की धारणा के प्रताप से जैसे हि शिष्य सतगुरु भाव को प्राप्त होता है। उसके लिये उसने एकान्त सुखासन बैठकर प्राणायाम अर्थात पुरक रेचक तथा कुम्भक करके मूलाधार में स्वास द्वारा ॐकार मन्त्र को उठाना चाहिये। और यह अभ्यास बार बार करना चाहिये। फिर उन्होंने हमें वह प्राणशोधन की विधि बतलाई। फिर गणेश नाथजी ने कहा कि साधक ने सुखासन में सीधा और स्थिर बैठकर प्राणशोधन के निमित्त ॐकार प्रणव या सतगुरु का मन्त्र या गायत्री का जाप श्वासाद्वारा करे जोकि प्रथम बाहर से श्वास या प्राण को धीरे-धीरे बाये नथुने से अन्दर खींचते हुये ऊपर चढ़ावे इसे पूरक कहते है इस श्वास को ललाट दोनो भौंवे के बीच स्थिर करे इसे कुम्भक कहते हैं और फिर दायें नथुने से श्वास धीरे-धीरे बाहर छोड़े इसे रेचक कहते है। इस धारणा का विधि सह अभ्यास बारह या इक्किस दिन करे यथा शक्ति यह बढ़ा सकते है। जिससे प्राणशुद्धि मन चित्त एकाग्रता बढ़कर ध्यान के योग्य अवस्था आती है। तब साधक दोनों आँखे अर्द्ध खुले रखते हुये नासाग्र पर ध्यान एकाग्र करें और ॐकार का जाप करे। इस योग अभ्यास के उपरान्त साधक को उस तेजोमय ॐकार के ध्यान का आनन्द आत्मानन्द इत्यादि का अनुभव होकर उस चैतन्य को वह प्राप्त होगा। इस ॐकार की महिमा अनन्त है। वह सभी जगत सृष्टि

।। पंचमुखी ॐकार आदिनाथ जी द्वारा ॐकार उत्पत्ति।।

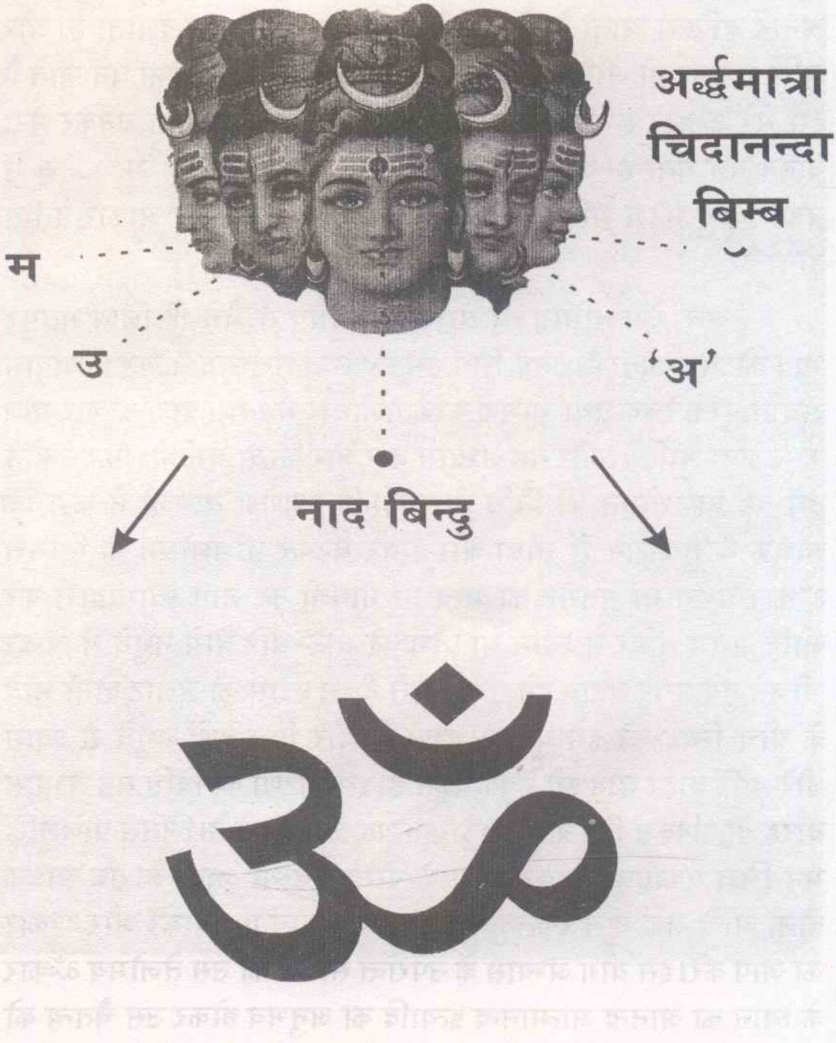

का मूलाधार है वह चैत्यन्य मय सद्गुरु है।

नासांग्रे बुद्धि मारोप्य सर्वेन्द्रिय च संयमेत।
मनः सर्वत्र संगुह्य ॐकार तत्र चिन्तयेत॥१॥
ओमिति गुरु ओमिति ब्रह्म ओमितीत सर्वत्र।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकारा गुरु नमौ नमः॥२॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वर।
गुरुरेव जगत सर्व तस्मै श्री गुरवे नमः॥३॥

अर्थात्–अपने सब इन्द्रियों के संयम के साथ नाक के अग्र भाग पर ध्यान को केन्द्रित कर और मन को सब क्रियाओं से हटाकर साधक को ॐकार का चिन्तन करना चाहिए॥१॥

अतः ॐ ही गुरु है, ॐ ही ब्रह्म है, ॐ ही सर्व विश्व है। वह सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला और मोक्ष देने वाला है मैं उस ॐकार सद्गुरु को बारंबार नमस्कार करता हूँ॥२॥ सद्गुरु ब्रह्मा विष्णु और साक्षात् महेश्वर है। सर्व जगत् ही सद्गुरु है उन सद्गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ॥३॥

इस प्रकार हे भर्तृहरि गोपीचंद हमारी यह वार्ता होने पर फिर और भी गोष्ठी वार्ता हुई और एक दूसरे के सत्संग में सवाल जबाव हुये। अतः हम श्री गणेशा और गुरु जी से नमन करके हमारे मूल विषय पर सत्संग प्रारंभ करते है।

॥ एक ओंकार तेरा आधार॥ अर्थात् समुची सम्पूर्ण सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता तथा जिससे यह तीनों लोक सह ब्रह्माण्ड बना है। वह "ॐ" कार ॐकार स्वरूपी श्री ॐकार आदिनाथजी के मुखारविन्द अर्थात् मुखमण्डल से प्रगट हुआ है। जिनको पांच मुखकमल है अतः उन्हें पंचमुखी आदिनाथ और पंच महादेव, पंच परमेश्वर, पांच महेश्वर, पंच ईश्वर इत्यादि नामो से जाना जाता है। विशेषतः नाथ सिद्ध इस पांच महेश्वरों को ही ॐकार आदिनाथ जी मानते है। अतः यह महामंगलकारी ॐकार प्रत्यक्ष आदिनाथजी का ही स्वरूप है। ॐकार वाचक है तो आदिनाथजी वाच्य है। जब सृष्टि उत्पत्ति पूर्व अर्थात् असंख्य युग में वह अपने पंच मुखों

से प्रथम श्वास (प्राण) लेने लगे तो तब उनके मध्यवर्ती मुख से नाद का प्रागटय हुआ जो नाथ सिद्धों ने वरण किया। फिर पूर्ववर्ती मुख से बिन्दु या बिम्ब का प्रागटय हुआ जो नाथ सिद्धों ने बिन्द बिन्दु बिम्ब ऊर्ध्व रेता प्राण या कुण्डलिनी शक्ति रूप में वरण किया। उसी प्रकार उत्तरवर्ती मुख से 'अ' का पश्चिमवर्ती मुख से 'उ' का और दक्षिणवर्ती मुख से 'म' का प्रागटय हुआ और जब इन पंचों का योग (मिलकर) हुआ तो वहां ॐकार का प्रागटय होकर यह शिव शक्ति बोधक का विस्तार होने लगा और तीन लोक ब्रह्माण्ड का आधार बन गया मूल बना अतः सृष्टि का बीज ॐ कार बना उस समय बिन्द से शक्ति प्रगटी फिर 'अ'कार से रजोगुणी ब्रह्माजी बने जिन्होंने सृष्टि बनाने का कार्य किया। तदपश्चात् 'उ'कार से सत्वगुणी विष्णुजी बने जिनका सृष्टि की रक्षा करने का कार्य बना और 'म' कार से रुद्र शिव बने जो तमोगुण युक्त सभी सृष्टि के संहारक बने और उस ॐकार नाद से नाथ सिद्धों ने ज्ञान मोक्ष मुक्ति को स्वीकारा। इस प्रकार त्रिगुणमयी सम्पूर्ण सृष्टि के लिये ॐकार व्याप्त हो गया।

ॐकार आदिनाथजी के आदेश प्रेरणा से जब प्रजापति ब्रह्मा जी सृष्टि बनाने की सोचकर योजना बनाने लगे तब वह बहुत चिन्तित हुए। अब मैं किस प्रकार यह सृजन सृष्टि को उपजाऊ? तब उन्होंने निर्गुन निराकार अलख निरंजन का ध्यान लगाया अनेकों साल तपस्या होने पर मैं अलख निरंजन ॐकार आदिनाथजी के प्रेरणा स्वरूप दर्शन देकर उन्हें उपदेश दे रहा था जोकि वह ब्रह्मकमल में बैठे-बैठे मेरे उपदेश ग्रहण करते हुए कृतार्थ हो रहे थे। तब उन्हें इस त्रिगुण मई सर्व बीज रूपी ॐकार प्रणव की सूक्ष्म साधना करने को कहा अतः वह सोचने लगे। कि यह एकाक्षर मंत्र ॐकार से किस प्रकार सभी नरनारी जीव उत्पत्ति तथा जीवों के मनोरथ की सभी देवी देवताओं सभी साधु सन्त, यज्ञ ज्ञान शास्त्र सभी प्रकार की भाषाये – स्थावर जंगम जीव प्राणी की रचना करू? वह समझ ही नहीं पा रहे थे कि क्या करे और कैसे करे ? अतः हमने उन्हें ब्रह्मचर्य एवं चैतन्य के प्रति आवाहन तथा उपासना व्रत करके ध्यान करने को बताया। जब उन्होंने अनेक वर्ष यह साधना करने पर उन्हें ध्यानावस्था में उस अक्षर ब्रह्म प्रणव ॐकार का साक्षात्कार हुआ जो सर्वव्यापी सर्व विभु चतुर्मात्र और आयातयाम है और फिर क्या उन्हें सब कुछ समझने में आ गया और ॐकार कृपा से

जो "एकोंम बहुस्यामी" से उन्हें अन्तरम में बोध हुआ कि यह सृजन सृष्टि का प्रादुर्भाव कैसे करे ? उस समय उन्होंने देखा की ॐकार के प्रथम मात्रा से पृथ्वी लोक द्वितीय मात्रा से अन्तरिक्ष लोक तृतीय मात्रा से द्युलोक चतुर्थ मात्रा से अनन्त असंख्य परालोक उन्हें और भी ज्ञात हुआ कि सम्पूर्ण अदृश्य जगत की रचना ॐकार से ही हुई है। यह सौर मण्डल, यह आकाश गंगाये, यह निहारिका ॐकार में करोड़ों में ही विद्यमान है। ॐकार के बाहर कुछ भी नहीं है।

अत: "एकाशेन स्थितो नावत्संसार है" तब गुरुदेव ने कहा हे भर्तृहरि गोपीचंद जो साधक ब्रह्मचार्य का पालन करके ॐकार साधना करने पर उसकी सभी समस्यायें अपने आप निवारण होकर वह साधक अत्यन्त बलशाली, शक्तिशाली होकर सभी ऋद्धि सिद्धिओं को प्राप्त करता है। तब ब्रह्माजी ने ॐकार प्रणेता बीज विस्तार द्वारा सृजन सृष्टि बनाते समय चार प्रकार की सृष्टि बनायी जो कि प्राकृतिक रूप से सृष्टि को जन्म दिया।

१. उद्विज २. स्वदेज ३. अण्डज ४. पिण्डज

१. उद्विज सृष्टि = अर्थात् धरती पर वृक्षादि पेड़ पौधे औषधि वनस्पतियाँ की उत्पत्ति की।

२. स्वदेज सृष्टि = अर्थात् उनमें सूक्ष्म कृमियाँ जुर्या आदि तदउपरान्त

३. अण्डज सृष्टि = अर्थात् पीछे सर्पादि प्राणी उत्पन्न किये तद्न्तर

४. पिण्डज सृष्टि = जो जरायुज नरनारी एवं पशु प्राणी आदि मैथुन सृष्टि को जन्म दिया तद् उपरान्त खेचर सृष्टि अर्थात् आकाशीय देवता भूचर सृष्टि यानी भूमि पर नरनारी पशुसर्पादी, निशाचर यानी रात्री के भूत-प्रेतादि, जलचर में मछलियाँ कछुवा ग्राह आदि यह चार खानियों के भेद निर्माण किये जिसमें चौदह भुवन सप्त समुद्र पर्वतादि का विस्तार हुआ ९ नाथ ८४ सिद्ध ऋषि मुनि सन्त इत्यादि भी प्रगट हुए। परन्तु इन सभी सृष्टि में इस निर्माण में जड़त्व, मुढ़त्व, अज्ञान निर्जीव सा दिख पड़ता था अत: ब्रह्माजी इस समस्या के निवारण हेतु सप्त पाताल लोक में विराजे श्री मद्नारायण विष्णुजी के शरण में गये और कहने लगे हे जगत्पालनहार हे श्रीमत भगवन्त हे नारायण मैं ने तो सृजन सृष्टि बनाई

है किन्तु यह सब जड़त्व मृढ़त्व में स्थित है इनमें चैतन्यता नही है, अतः आप कृपा करे और इसका उपाय करिये तब भगवत श्री मद् नारायण विष्णु जी अपने शेष शय्या पर विराजे हुए थे उन्होंने ॐकार का स्मरण करके ॐकार आदिनाथजी को याद किया तब उनके स्वरूप में हमें स्वयं जाना पड़ा। तब हमने उस सृष्टि को चैतन्य मय होने के लिये अपनी धूनी में की अनमोल बभूति दी जो परमतत्व में स्थित हमारे विराट अग्नि स्तम्भ अर्थात् उस चैतन्य मय नाथ सिद्ध धूनी में कि बभूति उन्हें प्रदान की तद्उपरान्त भगवान विष्णुजी ने वह चैतन्यमयी बभूति विधि ब्रह्मा जी को प्रदान की और वह प्रजापति ब्रह्माजी ने यह सत्‌चित्त सनातन चैतन्यमयी बभूति सभी सृजन सृष्टि में विधिवत संक्रमित की तब इस अचेत सृष्टि में चैतन्य का प्रवेश होकर आत्म तत्व से अन्तरात्मा तथा कारण तत्व से ज्ञान प्रकाश संक्रमित होकर अपितो सम्पूर्ण त्रिगुणमयी त्रिलोक जगत सृष्टि चैतन्यमय हो गयी।

अतः हे प्रिय शिष्यों साधना या तपस्या धूनी चेतन करके उनके सान्धिद्य में करने पर तथा ॐकार की परिपक्व उपासना तथा साधना करने पर स्थूल सूक्ष्म और कारण सह चैतन्यमय यह ब्रह्माण्ड ते पिण्ड अथवा पिण्ड से ब्रह्माण्ड का समुची सम्पूर्ण ज्ञान होकर उस चैतन्य रूपी ॐकार का बीज रूप में आत्म साक्षात्कार हो जाता है। अतः जब ब्रह्माजी सृष्टि के चैतन्यता के लिये बभूति प्रयोग कर रहे थे। तब ज्ञान-अज्ञान -विद्या-अविद्या तथा माया-ब्रह्म तथा जन्म-मृत्यु-मोक्ष मुक्ति की जब समस्या आयी तो ब्रह्मा और विष्णु जी ॐकार आदिनाथजी के सन्मुख गये और उन्हें उपरोक्त समस्या का समाधान पूछा तब देखो शिष्यों यह निर्गुण निराकार अलख निरंजन स्वरूप ॐकार ने अपने आपको सृष्टि में प्रगट होकर निर्गुण से सगुण रूप लेकर सूक्ष्म से स्थूल रूप में विस्तारित होने लगा।

उस वक्त ॐकार आदिनाथजी के मुख से जब बिन्दु प्रगट हुआ तब शक्ति अर्धमात्रा के स्वभाव के अनुकूल चारों ओर बिन्दु फैलने लगे और सृष्टि में .... ऐसा चिन्ह प्रगट हुआ फिर तदपश्चात अन्य मुख से 'अ' कार से रेखाये प्रगट होकर + ऐसा चिन्ह प्रगट हुआ फिर अन्य मुखसे - 'उ' कार प्रगट होकर

यह चिन्ह प्रगट हुआ तदनन्तर दक्षिण मुख से 'म' कार प्रगट होकर यह सब अधिष्ठान के योग से अर्थात मिलकर यह 'ॐ' कार सिद्ध हुआ। जो अत्यन्त तेजस्वी स्वरूप में सत्य सनातन लोक बना। और फिर इन सभी का विस्तार आगे बढ़ता ही गया।

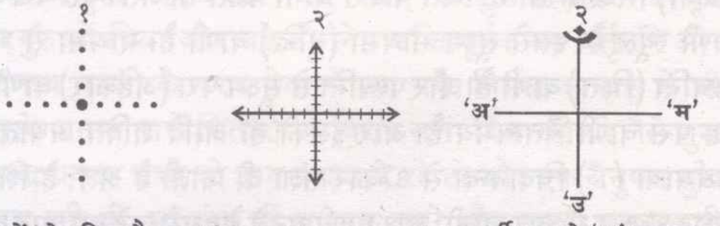

१. चारों ओर बिन्दु फैलकर ॐ प्रागट्य २. उत्तवर्ती मुख से 'अ' प्रागट्य

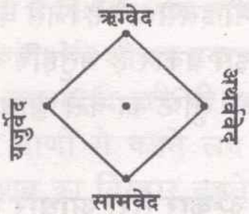

३. पश्चिमवर्ती मुख से 'उ' प्रागट्य ४. दक्षिण मुखसे 'म' प्रागट्य

अतः इन चारों बिन्दु रेखा कोन द्वारा सोलह पाद बनते है। जो काया वाचा मन बुद्धि होने पर ही समझ मे आते है। जोकि ॐ से चार अन्तकरणः बने जो प्राणियों को प्रकाशित करते हैं और वह चार रूप अहंकार–चित्त– बुद्धि और मन है फिर इसी के द्वारा चार अवस्थायें बनी जो जाग्रत–स्वप्न–सुषुप्ति और तुर्या है। अतः हे भर्तृहरि गोपीचन्द इन चार अवस्थाओं से ही एक मूल अवस्था है। उसे 'तुर्यातित' कहते है जो हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वर ध्यान समाधि के समय इन चारों अवस्था के परे अर्थात तुर्यातित में लय हो जाते है। और इसी में ही अन्तकरण समाहित होते है। इन अन्तकरण का जो व्यापार होता है। उन्हें 'बाणी' या 'बाणियाँ' कहा जाता है और वह है चार बाणी जो परा–पश्यन्ति–मध्यमा–वैखरी कहते है। अतः इनकी उत्पत्ति देखे।

उत्पत्ति (१) परा– इसकी उत्पत्ति अहंकार से होती है। उसका रूप फुर्णा होता है। फुर्णा से वस्तु का संकल्प रचते है और वह संकल्प चित्त का व्यापार बनता है। जिससे पश्यन्ति–वाणी बनती है। इस संकल्प के साथ प्रयोजन (उद्देश्य) का बान्धना होता है। जो बुद्धि का कार्य है यहां मध्यमा

वाणी बनती है। पहली से दूसरी (परा से पश्यन्ति) दूसरी से तीसरी (पश्यन्ति से मध्यमा) ऐसा क्रम उत्पन्न होता है जो इन तीनों का व्यापार अन्तर्यामी होता है। जो मौन में होता है। चौथी वैखरी वाणी जो मन के कार्य से मिला हुआ होता है। जिसका उच्चारण शब्द द्वारा प्रगट होकर मनुष्य व्यापार (क्रिया) सिद्ध करता है। जिसे वैखरी बानी कहते है। अत: यह वैखरी (मन) वाणी स्थूल है। इससे सूक्ष्म मध्यमा (बुद्धि) वाणी है। मध्यमा से भी सूक्ष्म पश्यन्ति (चित्त) वाणी है। और पश्यन्ति से सूक्ष्म परा (अहंकार) वाणी है और यह परा वाणी चैतन्यमय है। और इसको ही आदि शक्ति अर्थात ॐ की अर्धमात्रा (ँ) चिदानन्दा से ॐकार संज्ञा दी जाती है अत: हे शिष्यों इस प्रकार ॐकार से चार खानी, चार वाणी बनते है इससे जुड़े हुए चार वर्ण तथा चार आश्रम भी इससे बने है जिसे वेद, शास्त्र, पुराणों मुख्यत: पंच तत्व सह कहा गया है इस प्रकार हे भर्तृहरि गोपीचन्द हमने ॐकार की मूल स्वरूप उत्पत्ति एवं ॐ सृष्टि का कैसे आधार है यह निरूपण किया अत: जो कि कहते है।

एक ॐकार तेरा आधार तीन लोक में जय जयकार

तथा

चार खाणी चार वाणी चन्दा सूरज पवन पानी

का यथार्थ ॐकार ही आधार है।

इतना सब कहने के उपरान्त गुरुदेव जी पुन: अपने अन्तर्मुख समाधी में तल्लीन हो गये इति

इति श्रीनाथ सिद्ध ॐकार सिद्धी, गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे ॐकार ब्रह्मदर्शने नाम

प्रथमोऽध्याय:

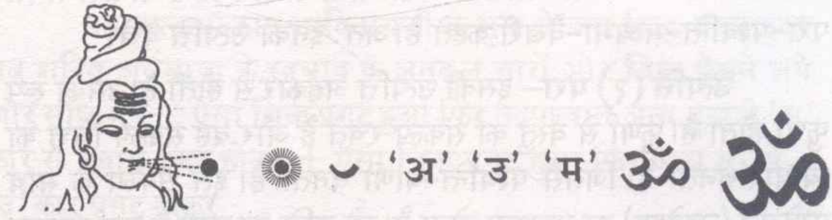

द्वितीयः अध्याय

।। ॐकार विस्तार।।

आज सायंकाल के समय पतित पावन माँ गंगाजी में संध्या स्नान करके ध्यान पूजन तथा धूना की आरति पूजा कर्म करके सभी सिद्ध स्थान, गुफा में विराजे गुरुदेव को आदेश नमन किया, फिर कुछ फलाहार तथा दूध अपने सद्गुरु को दिया और बड़े ही स्नेह भक्तिपूर्वक वह भर्तृहरि और गोपीचन्दनाथ गुरुजी के चरण सेवा में लग गये। निर्मल आकाश मे भी चन्द्र के साथ अनन्त तारों सितारों कि विराट सभा दिख रही थी जैसे शुद्ध स्फटिक चन्द्र प्रकाश सभी को ज्ञान प्रकाश दे रहे हो और एक अनुपम सुख शांति बरस रही थी, मां गंगा की चकमक लहरे और उनकी कलकलाती आवाजें मानो आकाश सभा को कहे रही है कि हम ज्ञान सागर की तरफ जा रहे हैं। उस स्थब्ध वातावरण मे मां गंगा की शीतल हवाओं की लहरें मन मंदिर काया को सुख आनन्द का अनुभव दे रही थी। अतः गुरुदेव गोरक्षनाथजी मृदुल सुरस ऐसे गंभीर वाणी से कहने लगे है भर्तृहरि गोपीचन्द अब हम और भी ॐकार प्रणव का विस्तार कहने जा रहे है। एकाग्र होकर ध्यान पूर्वक सुनिये।

पूर्वकाल में भक्ति का आनन्द लेने वाले नारदमुनि एक बार कैलास पर्वत पर भगवान आशुतोष आदिनाथ जी के दर्शन हेतु पधारे थे। तब उन्होंने शिव आदिनाथजी के अनोखा रूप को देखा जो कि शिवजी के गले में मुण्डमाला लटक रही है। और कालरूपी बाघांम्बर पर पद्मासन में विराजे भगवान अपने ध्यान लीला में निमग्न थे उनकी सुनहरि जटा-लटाये माथे, पर चन्द्रमा, कानों मे कुण्डल अत्यंत शोभायमान दिख रहे थे यह दृश्य देखकर श्रीमद्नारदमुनि भाव-विभोर होकर अपने भक्ति रस मे उनके गुणगान करने लगे माता पार्वती जो आदिशक्ति यह सब देख रही थी। श्री नारदमुनि आदिनाथजी के नाथ स्वरूप का वर्णन नाथ सिद्धिओं-का गान तथा काल के ऊपर बैठे कालातिल कालपर विजय पाने वाले कालनाथ जी आदि काव्य भाष्य सुरताल में गाण करने लगे जब वह मुण्डमालाओं का भी गान करने लगे तो माता पार्वती ने उन्हें इसका रहस्य पूछा तब नारदजी कहने लगे हे जगत जननी माता पार्वती यह मुण्डमाला आपके ही पूर्व जन्मा के है जोकि भगवान आशुतोष अजर अमर है। और इसका भेद भी वही

आपको बता सकते है। तद् उपरान्त देवी पार्वती ने शम्भुजती ॐकार आदिनाथजी को बहुत ही हट करके यह गुप्त रहस्य पूछा तब वह मात्र दोनों ही क्षीर सागर के तट के एकान्त मे निर्जन स्थान पर आ गये वहा शिवजी ने सती पार्वती को ज्ञान देने के लिये अपना ॐकार आदिनाथ अलख निरंजन का स्वरूप मे अवस्थित होकर सूक्ष्म ज्ञान दिया प्रथम अपने पंचमुख से (●) बिन्द (◡) अर्द्धमात्रा फिर 'अ' 'उ' 'म' का नाद स्वर प्रगट करके ॐकार का सूक्ष्म ज्ञान दिया और वही नाथ सिद्धों को सूक्ष्म वेद, सूक्ष्मज्ञान–गुप्तज्ञान नाम से प्रचलित हुआ यह सूक्ष्म वेद स्वयं प्रकाशी पूर्ण चैत्यन्यमय और अमरता तथा मृत्युजयी सिद्ध हुआ। उसी समय हमारे सद्गुरु माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी भी उसी सागर तट पर मत्स्य गर्भ में अवस्थित थे और यह समुची संपूर्ण सूक्ष्मवेद का ज्ञान उन्होंने ग्रहण किया। और उसी वक्त महामाया आदिशक्ति पार्वती ने यह सूक्ष्मवेद का ज्ञान सुनकर उन्हें भी वैराग्य हुआ और देखो कि कैसे प्रत्यक्ष माया को ही ब्रह्म ज्ञान होकर माया को ही वैराग्य उत्पन्न हुआ। अतः माया से माया को वैराग्य तथा ज्ञान तथा अमरता प्रदान करने वाला यह ॐकार रूपी सूक्ष्म वेद नाथ सिद्धों की धरोहर बन गया तब आदिनाथजी ने सर्वप्रथम पार्वती को दिक्षा देकर उसे उदयनाथ नाम से सम्बोधित किया। क्योंकि वहा प्रथमता ही ज्ञान का उदय हुआ था। उसी प्रकार वहा गुरुदेव मत्स्येन्द्रनाथजी को भी दीक्षित करके उनको भी मत्स्येन्द्र नाथ नाम दिया जोकि उन्हें उन्होंने मत्स्य के गर्भ से निकाला था। और इस प्रकार यह ॐकार से ही हमारे नाथ सिद्ध गुरु–शिष्य परम्परा का उदय हुआ जोकि स्मुक्षम् वेद ने गुरु शिष्य और परमात्मा का योग किया अतः हमारे पूर्वज नाथ सिद्धों का यह आविष्कार जो सूक्ष्म वेद रूपी ज्ञान आज भी प्रत्येक जीव में सूक्ष्म रूप से विद्यामान है। किन्तु जब उन जीवों को योग्य सत्गुरुजी की प्राप्ति हो जाती है तो वह वैराग्य तथा ज्ञान मार्ग पर आरुढ़ हो जाते है।

सूक्ष्म वेद ज्ञानानुभव मात्रं भवति
अतो स आकरेषु व्यक्त विषयो
न समर्थो क्रियते, यतो हि एतादृश
ग्रंथेषु व्यक्त ज्ञानं प्रादुर्भावे सति
स स्थूल रूपेण विपरिणते ।।

चार वेदों कि (सूक्ष्म वेद) उत्पत्ति
पंचमुखी ॐकार आदिनाथजी द्वारा

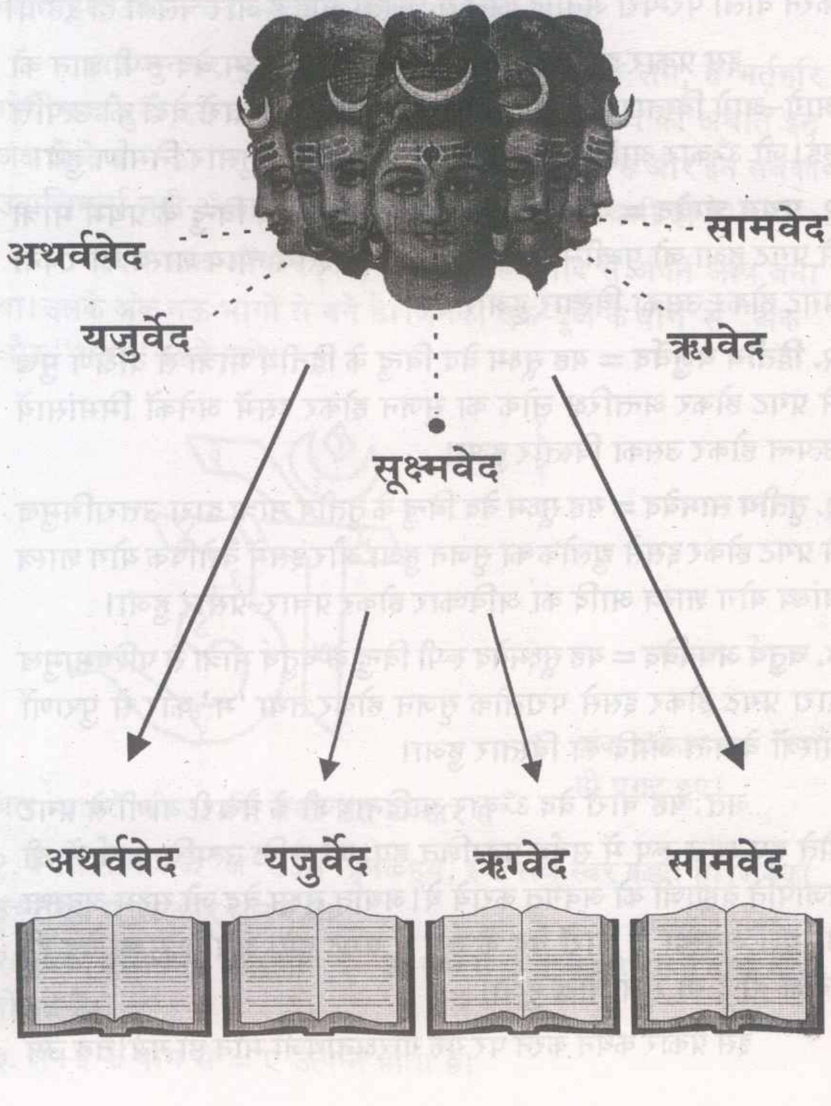

अर्थात् – सूक्ष्म वेद मात्र अनुभव ज्ञान है। अतः वह किताबों (ग्रंथ में) व्यक्त नहीं किया जा सकता, अतः व्यक्त होते ही वह स्थूल रूप में परिनित (परिवर्तित) हो जाता है।

अतः हे प्रिय शिष्यों इस ॐकार स्वरूपी सूक्ष्मवेद का प्रत्यक्ष स्वरूप अनुभव या प्रचिति से ही होता है। इस प्रकार यह नाथ सम्प्रदाय की गुरु शिष्य परम्परा इस सूक्ष्म वेद रूपी ॐकार ज्ञान से परमात्मा का योग करने वाली परम्परा अनादि काल से चलती आई है और चलती ही रहेगी।

इस प्रकार इस ॐकार के सूक्ष्म बिन्दु को सूक्ष्म वेद रूपी ज्ञान को आगे-आगे विस्तार होने लगा और इस सूक्ष्म वेद से चारों वेदों की उत्पत्ति हुई। जो ॐकार आदिनाथ के चारों मुखदिशा के अनुसार निर्माण हुये।

१. प्रथम ऋगवेद = यह पूर्व दिशामुख को सूक्ष्म वेद बिन्दु के प्रथम मात्रा से प्रगट हुआ जो पृथ्वीलोक का सृजन होकर इसमें न्याय शास्त्र की रचना प्रगट होकर उसका विस्तार हुआ।

२. द्वितीय यजुर्वेद = यह सूक्ष्म वेद बिन्दु के द्वितीय मात्रा से दक्षिण मुख से प्रगट होकर अन्तरिक्ष लोक का सृजन होकर इसमें अनेकों मिमांसायें उत्पन्न होकर उसका विस्तार हुआ।

३. तृतीय सामवेद = यह सूक्ष्म वेद बिन्दु के तृतीय मात्रा द्वारा उत्तराभिमुख से प्रगट होकर इससे द्युलोक का सृजन हुआ और इसमें वैशेषिक योग शास्त्र सांख्य योग शास्त्र आदि का अविष्कार होकर प्रचार-प्रसार हुआ।

४. चतुर्थ अथर्ववेद = यह सूक्ष्मवेद रूपी बिन्दु के चतुर्थ मात्रा से पश्चिमामुख द्वारा प्रगट होकर इससे परालोक सृजन होकर तथा 'म' कार से पुराणों शास्त्रों वेदान्त आदि का विस्तार हुआ।

अतः यह चारों वेद ॐकार आदिनाथजी के वैखरी बाणी से प्रगट होते हुए स्थूल रूप में सर्वत्र प्रकाशित हुए। जो सृष्टि उत्पत्ति कार्य में श्री प्रजापति ब्रह्माजी को अवगत कराये थे। अर्थात् सूक्ष्म वेद जो सूक्ष्म अवस्था से स्थूल अवस्था के चारों वेद के रूप में प्रगट हुए। अर्थात् सूक्ष्म वेद ही इनका बीज या मूल सिद्ध हुआ।

इस प्रकार कथन करने पर गुरु गोरक्षनाथजी मौन हो गये। तब उस

मौन को तोड़ते हुए भर्तृहरि गोपीचन्द कहने लगे हे गुरुदेव जिस प्रकार आपने चारों वेद और नाथ सिद्धों का सूक्ष्मवेद के विषय में हमें ब्रह्मज्ञानान्द दिया। अतः हम बहुत सन्तुष्ट है ! अतः इन वेदों को व्यक्त करने वाले जो शब्द है तथा वह ब्रह्म विद्या को व्यक्त करने वाले अर्थात् इस वैखरी वाणी को स्थूल रूप में प्रगट होने वाले जो अक्षर है, इन अक्षरों की अतः इन शब्दों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई है? कृपया हमें इनको ज्ञात करवाईये ऐसा कहते हुए उन्होंने बड़े आदर के साथ नमस्कार किया।

यह सुनकर गुरुदेव प्रसन्न अन्तकरण से कहने लगे, हे भर्तृहरि गोपीचन्द सुनो इस व्यक्त-अव्यक्त वैखरी बाणी के शब्द को अर्थात् इन अक्षरों के ज्ञान को "शब्द ब्रह्म" या "अक्षरब्रह्म" कहते है और इन सबका उत्पत्तिकर्ता यही ॐकार नाद अर्थात् ॐकार आदिनाथजी ही है।

प्रथम शब्द ओंकार (ॐ) है जो अनहद नाद से अपने आप बना था। उसके अंक नऊ भागों से बने है। जिनको एक-दूजे के योग से "अंक" और "भाग" कहने लगे।

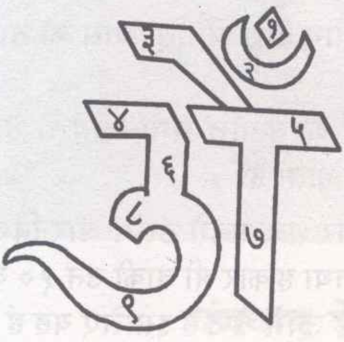

१
२
३
.
.
.
.
.
९ अंक ॐकार से
ही प्रगट हुए।

अतः अक्षरों की उत्पत्ति देखो उस ॐकार से

१. प्रथम तीन शब्द 'अ"उ"म' प्रगट हुये, इन्हें लघु स्वर कहते है। जिनका उच्चारण सरल और सुलभ है।

२. इनकी वृद्धि होने पर 'आ' 'ई' 'ऊ' क्रम से प्रगट हुए है जिन्हे दीर्घ स्वर बोलते है।

३. अ+ई के योग से = ए उत्पन्न होता है।

४. आ+ई के योग से = ऐ उत्पन्न होता है।

५. अ + उ के योग से = ओ उत्पन्न होता है।

६. आ + ऊ के योग से = औ उत्पन्न होता है।

और यह चारों गुण (ए ऐ ओ औ) कहलाते है। अतः श्वास को नाक से बाहर निकालते हुए अ का उच्चारण करने के अनुसार बनता है और 'अं' अक्षर रूप लिखा जाता है। श्वास को मुख से बाहर निकालते हुए अ उच्चारण करने से विसर्ग बोला जाता है और वह 'अः' रूप में लिखा जाता है। इस प्रकार प्रथम के तीन ('अ"उ"म') शब्दों को चौगुणा करने से १२ स्वर सिद्ध हो जाते है। अतः और भी ऋ ॠ और ऌ ॡ भी स्वर है माने जाते है परन्तु यह चारों व्यंजन अक्षर के सम्बन्ध होने पर प्रतीत होते है। व्यंजन अक्षर की संख्या ३३ है जैसे कि

१. क ग च ज ट ड त द प ब यह १० अक्षर प्राणवायु द्वारा अर्थात् श्वास को बाहर से अन्दर की ओर खींचने से बोले जाते है।

२. ख घ छ झ ठ ढ़ थ ध फ भ ह यह ११ अक्षर अपान वायु द्वारा अर्थात् श्वास अन्दर से बाहर की ओर निकालते हुए बोले जाते है।

३. ङ त्र ण न म यह ५ अक्षर उदान वायु द्वारा अर्थात् श्वास को नासिका द्वारा निकालते हुए उत्पन्न होते है।

४. य र ज व श ष स इन ७ अक्षरों की उत्पत्ति समानवायु से है इनके उच्चारण में और व्यंजनों से परिश्रम होता है।

अतः देखो हंस शब्द में स कार शब्द सबसे उत्तम और निरायास है। इससे आत्मभाव निर्माण होता है तथा ह कार भी बाकी उन १० अक्षरों से जो अपान वायु से उत्पत्ति होती है उनमें श्रेष्ट है इसलिए यह हं अक्षर अनात्म भाव माना गया है।

अतः गुरुदेव बोलते-बोलते रूक गये तब उनकी चुप्पी को तोड़ते हुए वह दोनों शिष्य योगीराज भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ जी ने कौतुहल पूर्वक पूछा हे गुरुदेव हमें प्राण, अप्राण इ० वायु क्या है। और इनका क्या प्रयोजन है ? कृपया हमें बतलाईये। तब जती गुरु गोरक्षनाथ जी कहने लगे हे शिष्यो में अब प्राण चक्र के विषय में संक्षिप्त बतलाता हूँ। यह प्राण चक्र देवताओं के राजा इन्द्र देवता के आधीन है। इस प्रकृति की तीन अवस्था स्थूल, सूक्ष्म

।। काया अन्दर–पंचवायु दर्शन।।

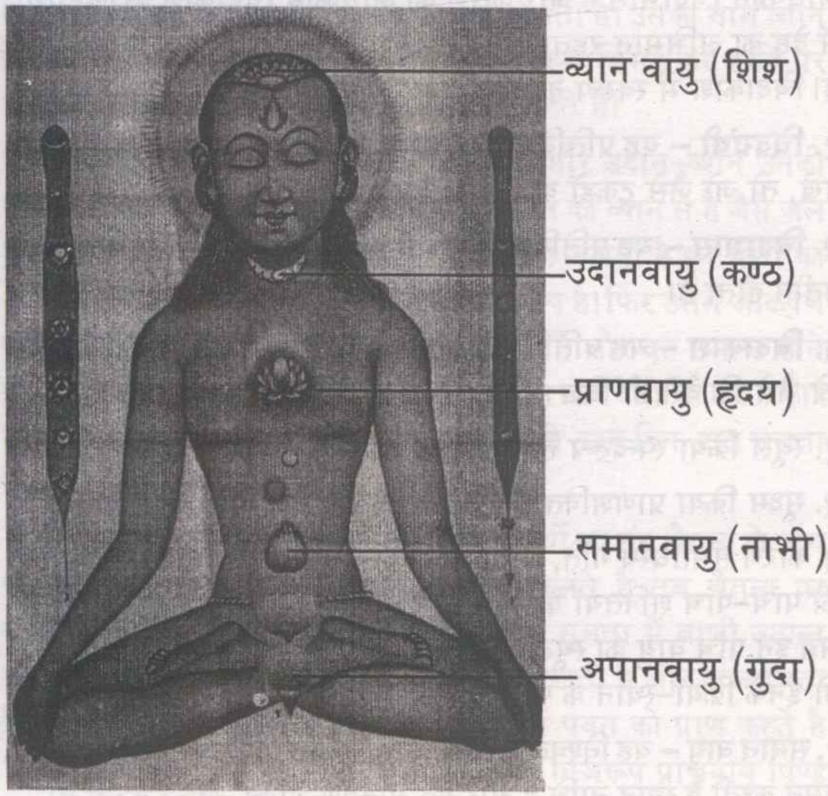

पंचवायु के उपप्राण

१. नाग = डकार में

२. देवदत्त = जिंबाई में

३. कुर्म = पलक झपकने में

४. कृकल = भूक लगती है

५. धनंजय = मृत्यु उपरान्त काया को फुलाता है।

और कारण है। स्थूल रूप में जिसमें प्राणों के ढाँचे पर देह का कोश बना हुआ है। सूक्ष्म रूप जिसमें पंच शक्तियाँ प्राणों को चलाती है और कारण रुप जो अनुभव का लक्ष्य है। स्थूल का अधिष्ठान चिद्ग्रंथी है। सूक्ष्म का अधिष्ठान चिदाभास है और कारण का अधिष्ठान चिदाकाश है। चिदग्रंथी में देह का अभिमान रहता है। चिदाभास में लिंग शरीर का ज्ञाता बसता है। चिदाकाश में स्वरूप का साक्षी चैतन्य निवास कर्ता है।

१. चिदग्रंथी – यह प्रतिबिम्ब जैसे चमकते हुए धातु के टुकड़ों में मुख को देखे, तो जो जैसे टुकड़ों का रंग है। वैसे ही प्रतिबिंब है।

२. चिदाभास – यह प्रतिबिम्ब जैसे जल में मुख देखते है, जो हिलता हुआ प्रतीत होता है।

३. चिदाकाश – यह प्रतिबिम्ब निश्चल स्पष्ट होता है, जैसे दर्पण में मुख को जैसे कि वैसे ही दिख जाता है।

१. स्थूल क्रिया स्पन्दरूप है जो मरूत देवता के आधीन है।

२. सूक्ष्म क्रिया प्राणशक्ति है जो निस्पन्द रूप इन्द्र के आधीन है।

३. कारण समाधिस्थ गति, जिसके स्वामी रुद्र है और इन स्थूल सूक्ष्म कारण की पांच-पांच शक्तियाँ को ही समान प्राण अपान व्यान उदान कहते है। अब इन पांच वायु का स्थूल रूप देखे जो एक वायु श्वास होकर चलती है तो इनके क्रिया-स्थान के पांच भाग होते है। अर्थात्

१. समान वायु – यह निश्चल होकर आकाश का रूप धारण करके सब में सर्वत्र गमन करती है स्थान नाभि है और यह आकर्षण शक्ति उत्पन्न करती है।

२. प्राणवायु – यह अपेक्षानुसार बाहर की पवन अन्दर खींचते है जिसका स्थान हृदय है।

३. अपानवायु – क्रिया-उत्तेपण है रूप अग्नि स्थान गुदा स्थान है यह देह के अन्दर की पवन ऊपर को निकालती है।

४. व्यान वायु – क्रिया-प्रसारण है देह के सर्व अंगों में प्रवेश करता रूप = जल और स्थान = ललाट है।

५. उदानवायु – क्रिया-आंकुचन देह के सभी अंग में सिकुड़ना, रूप-पृथ्वी और स्थान कण्ठ है।

अपना देह एक भपके के समान है। सबसे नीचे अपान वायु अग्नि का काम देती है और समान वायु भाण्डा (बर्तन) बनती है। प्राणवायु जल का कार्य करती है इन तीनों के व्यापार से जो भाप उठती है। शिश के ढकने (खोपड़ी) में एकत्र होकर देह के सब अंगों में फैलती है। उसका नाम व्यान है। जब भापका कार्य हो जाता है। तब वह द्रव रूप सिमट कर ढकने पर रस बिन्दुओं को उत्पन्न करती है। उसे उदान कहते है।

यथार्थ में प्राण/अपान दो शक्तियाँ है और उदान-व्यान उनकी युक्तियाँ है। प्राण का सम्बन्ध उदान से और अपान का व्यान से है जैसे जल में मिट्टी के परमाणु बैठते है और अग्निभाप को उठाती है इन चारों का अधिष्ठान समानवायु में है। जो आकाशवान निर्लेप है। फिर उसमें आकर्षण शक्ति बाहर की प्राणवायु देह के अन्दर खींचती है और वह समाप्त होने ही अपान शक्ति देह से बाहर निकालना प्रारंभ कर देती है। इस प्रकार श्वास का आवागमन बनकर लुहार कि घौंकनी की तरह दिन-रात चलता है और इसी का नाम जीवन है।

प्राण श्वास अन्दर खींचते हुए बाह्य पदार्थो का संग चैतन्य के साथ इन्द्रियों द्वारा होता है और श्वास बाहर निकलते है तब चैतन्य का प्रतिबिम्ब विश्व में भासता है। इन दो क्रिया की समता में बाणी उत्पन्न होती है और ये परस्पर घिसने से जठराग्नि निकलती है और अन्नपचता है। पवन तत्व का बीज रूप प्राण है अत: पांचों पवन को प्राण कहते है जिनमें प्राण तत्व का अंश मिश्रित है। यह मुख्य निजरूप प्राणवायु पिण्ड और ब्रह्माण्ड में सम्पूर्ण व्यापक है। यदि पिण्ड की वायु ब्रह्माण्ड की वायु से सम्बन्ध टूट जाये तो यह मृत्यु है।

इस प्राण से वायु अपान से पित्त और व्यान से कफ उत्पन्न होकर उदान रूपी देह की स्थिति सिद्ध होती है और इन पवनों का परस्पर सम्बन्ध और समूह से संकल्प उठता है। मन का अभ्यास चिद ग्रन्थि में होता है।

इन प्राणों के संयोग से पांच उपप्राण बनते है। जो १. नाग =से डकार आता है २. देवदत्त = से जिंबाई आती है ३. कुर्म = से पलक-पलक झपकते है ४. कृकल = से भूक लगती है और ५. धनंजय = मृत्युपरान्त शरीर को फुलाता है। अत: समान (नाभी) वायु पिण्ड और ब्रह्माण्ड में

आकाशवत व्यापक है। और निम्न ४ वायु उत्पन्न होती है।

१. **प्राणवायु (हृदय)** – ब्रह्माण्ड में पवन होकर चलती है और पिण्ड मे श्वास बनकर बाहर से अन्दर आती है।

२. **अपानवायु (गुदा)** – ब्रह्माण्ड में अग्नि ज्योति होकर रहती है। और पिण्ड मे जठराग्नि बनकर श्वास को अन्दर से बाहर फेकती है।

३. **व्यान (शिश)** – ब्रह्माण्ड में चन्द्र ज्योति होकर रहती है। पिण्ड मे भाप बनकर रूधिर को नाडियों में चक्र देती है और देह का पोषण कराती है।

४. **उदानवायु (कण्ठ)** – ब्रह्माण्ड में परमाणु रूप मे ठहरी है। और पिण्ड में स्थुलाकार बनी है जिससे सभी कर्म इन्द्रियों के कार्य सिद्ध होते है।

अत: ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों मे पांच पवन का खेल है। किन्तु उन पवन का व्यवहार स्थान भेद से ब्रह्माण्ड मे एक प्रकार का और पिण्ड मे दूसरे प्रकार से बिम्ब प्रति–बिम्बवत है। जो वास्तव मे पंचप्राणों का सूक्ष्म आकार है और पंचमहाभूत उन्हीं की स्थूल अवस्था है। इसी प्रकार सूक्ष्म अवस्था में प्राण–अपान व्यान उदान इन चारों प्राण शक्ति की सूक्ष्म क्रिया अन्तर्दृष्टि से देखने पर पवन की चाल मंद हुई प्रतीत होती है और प्राण पवन निस्पन्द रूप होते ही द्वन्द मिटता है। चिदाभास का निर्माण होता है। यहां चैतन्य स्वतंत्र है और देह जड़ वत होता है। चैतन्य के अधीन मन–इन्द्रियों का व्यापार चलता है।

इसी प्रकार कारण अवस्था में चिदाभास का लय होकर चिदग्रंथी खुलने पर दर्शन होता है। नाभी (समान) त्रिकुटी (व्यान) हृदय (प्राण) पर ध्यान करने पर नाभि द्वारा प्राण स्पन्दन क्रिया होती है हृदय पर शब्द की एकता करने पर प्राण निस्पन्द होता है और त्रिकुटी में स्पन्द और निस्पन्द क्रिया रूप प्राण–अपान का लय हो जाता है। एक विलक्षण दर्शन हो जाता है। जो अवर्णनीय है। जिसे चिदाकाश अवस्था कहा जाता है। यहां अशून्य रूप चिदाकाश में जगत से चैतन्य का पृथक भाव ज्ञान चक्षुद्वारा दिखता है। तब मायारूपी जगत चैतन्य के प्रतिबिम्ब समान दिखता है।

इस प्रकार हमने प्राणों का विश्लेषण आपको बतलाया है। अत: हमारे मूल विषय में कहते है। तो ॐकार चैतन्यमय शब्द, स्वर व्यंजन अक्षर आदि का ॐकार ही कारण स्वरूप है।

अतः हे प्रिय शिष्यों मैं पुनः शब्दब्रह्म एवं अक्षर ब्रह्म के विषय में पुनः विश्लेषण करता हूँ तो हमने बताया था कि हंस शब्द से आत्मभाव तथा अनात्म भाव कैसे निर्माण होते है अतः उसके आगे सुनो।

जब प्राण और अपान-व्यान के अन्दर लय हो जाते है तब वैखरी बाणी बनती है जो स्वर शक्ति बनकर व्यंजनों को व्यक्त (प्रगट) करती है।

अतः इन व्यंजन और अक्षरों की उत्पत्ति भिन्न है जो कण्ठ रूपी वीणा से विस्तारित होती है जैसे

"चित्तबुद्धि गणपती कण्ठ बसे सरस्वती" तो कण्ठ में बिनाधारी सरस्वती ही वैखरी बाणी से बोलती है। कण्ठ के ७ पर्दे विना के तार ही होते है। देखो

१. गले से क ख ग घ निकलते है वह निषाद पड़ता है।

२. तालू से च छ ज झ निकलते है वह घैवत पड़ता है।

३. जिव्हा से ट ठ ड ढ निकलते है वह पश्चम पड़ता है।

४. दाँतों से त थ द ध निकलते है वह मध्यम पड़ता है।

५. होठो से प फ ब भ निकलते है वह गंधार पड़ता है।

६. नाक से ङ ञ ण न म निकलते है वह ऋषभ पड़ता है।

७. मुख से य र ल व श ष स ह निकलते है वह मुखस्वर पड़ता है।

इन सप्त पर्दे से सप्त सूर निकले है। इन स्वरों के ३ भेद है १. उदात्त २. अनुदात्त और ३. स्वरित ७×३ = २१ भाँत के स्वर सिद्ध होते है। जो ७ प्रकृति और ३ गुण के अनुसार समझना चाहिए।

अतः वाणी और संगीत का कुछ परिणाम अवश्य होता है। जो उस समय का उन्मान किया जाता है। जिसे छन्द कहते है। जो सामविद्या में ताल और लय कहते है। अर्थात् साम छन्दों में आकर छूप जाता है पर विभक्त का प्रतीत होता है। छन्दों में गायत्री छन्द उत्तम जाता है। उसमें परिणाम का नियम नहीं है और ब्रह्म विद्या उसमें गुप्त हुई है। जो वैदिक दैविक देवभाषा (संस्कृत) के मंत्र तंत्र इ गायत्री छंद में बोले जाते है।

नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में स्वछन्द श्रेष्ठ माना जाता है। जो स्वयं सिद्ध कहा गया है। जिसका परिणाम या प्रत्यय प्रत्यक्ष प्रमाण है और ब्रह्मज्ञान उसमें सूक्ष्म रूप से विद्यामान है। ॐकार आदिनाथ ९ नाथ ८४

सिद्ध मुख्यता मत्स्येन्द्र नाथ जी के शाबर मंत्र तंत्र रहस्य तथा सांभरी मंत्र तंत्र रहस्यों में इत्यादि स्वंछन्द सिद्ध में बोले जाते है। अत: नाथ सिद्धों का ब्रह्म ज्ञान, का सत्य ज्ञान या शून्य समाधि या मोक्ष मुक्ति यह सब योग ध्यान धारणा समाधि के स्वरूप है। प्रकृति माया स्वरूप योगिक चक्र तथा सप्त लोक सप्त स्वर्ग पातालादि अर्थात् ब्रह्माण्ड ते पिण्ड सब ॐकार से ही है। जैसे प्रथम १. भूलोक जो पृथ्वी मण्डल है नाथ सिद्धों योग में मूलाधार चक्र में मूल बीज मंत्र "लँ" या "भू:" शब्द को जप कर ध्यान करने पर देह और भूलोक का ऐक्य अनुभव आता है।

२. पृथ्वी के ऊपर जल चक्र जो स्वाधिष्ठान चक्र मेरू दण्ड में स्थित है, इसका बीज मन्त्र 'वँ' या भूव: शब्द का ध्यान करने पर इस लोक की शब्द एकता का अनुभव सिद्ध होता है। इसे चन्द्र लोक भी कहते है।

३. इसके ऊपर अग्नि चक्र है अर्थात् स्व: लोक जो योग मे 'पँ' इसके स्थान हृदय में अनहद चक्र में है इस 'रँ', बीज या स्व: शब्द के साथ सूर्य लोक का ध्यान करने से श्रुति निश्चल हो जाती है।

४. सूर्य लोक जो वायुमण्डल से घेरे हुए है इसे वायुलोक भी कहा जाता है या महर्लोक कहा जाता है जिसका अधिष्ठान कंठ स्थान स्थित विशुद्ध चक्र में है, 'हँ' बीज से मह: शब्द का चिन्तन ध्यान करने पर वायु लोक या मरूत लोक सूर्य-चन्द्र तारांगन दर्शन होकर एकता प्रतीत होती है।

५. अब इस वायुलोक के चारों ओर आकाश लोक या जन लोक जिसका स्थान दो नेत्रों के बीच में है। ज्ञान चक्र में है यहां 'हँ' या रुद्र देव का ध्यान करने पर चैतन्य व पंचमहाभूत साक्षी हो जाता है।

६. तप: लोक जो मन का अधिष्ठान है। जो पंच महाभूत आधार है। अंधेरे का रूप रखता है। योग में इसका स्थान ललाट में ज्ञान चक्षु जहां इन्द्र का ध्यान प्रकार रूप करने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है और ज्ञान का स्वरूप आता है।

७. सत्य लोक यह मेरा स्थान है जो योग में ब्रह्मरंध्र परम गुफा का स्थान है। जहां शिखा स्थान अवस्थित ॐकार का या गुरु का ध्यान करने पर अविद्या या अज्ञान दूर होकर ब्रह्मज्ञान अहंब्रह्मास्मि तत्वमसी आदि की उपलब्धि होकर आगे-आगे शून्यातित समाधि उपरान्त मोक्ष मुक्ति की उपलब्धी हो जाती है।

इस प्रकार ब्रह्माण्ड सप्त लोक सप्त स्वर्ग आदि सब ॐकार का ही विचार है। अत: मैंने जो पृथ्वी मण्डल का लँ बीज, जल का वँ, बीज, अग्निका 'रँ' बीज, सूर्यलोक या वायु का हँ बीज, आकाश का हँ बीज तथा तपोलोक एवं सत्यलोक के लिये 'ॐ' बीज की साधना करने पर अपेक्षित साक्षात्कार एवं ज्ञान हो जाता है अत: शब्दब्रह्म के अनुसार लँ वँ रँ हँ यह सभी ॐकार से ही प्रगट होकर पंचतत्वादि सृष्टि बनी है। इस प्रकार सारा ब्रह्माण्ड एवं तीन लोक सह सब सृष्टि ॐकार का ही विस्तार है। ऐसा कहते हुए भगवत श्री गोरक्षनाथ आसमा में दिख रहे चन्द्रमा को एक टक देखने लगे चन्द्रमा की वह शीतल और अमृतमय प्रकाश मन को अद्भुत शान्ति दे रही थी। तब योगीराज भर्तृहरि नाथजी से रहा नही गया वह मन के राजा चन्द्र के समान अपने सतगुरु बानी द्वारा ज्ञानामृत का आनन्द और लेना चाह रहे थे उन्होंने कहा हे गुरुदेव आप ने चारों वेदों के विस्तार बता रहे थे जिसमें चार आश्रम चार वर्ण-धर्म कर्म इस विषय का भी उल्लेख किया था अथ हमें और विस्तार से बताने कि चेष्टा करे तो हमपर बड़ी कृपा होगी॥

तब गुरु गोरक्षनाथजी बहुत प्रसन्न हुये उनके तेजस्वी मुख मंडल पर स्मित हास्य चन्द्र के भांति मनमोहक लग रहा था। उन्होंने मधुर बानी से कहा कि हे योगी भर्तृहरि गोपीचन्द हमने पहले ही आपको सुनाया था कि जब प्रजापति ब्रह्माजी ने ॐकार स्वरूप की बहुत दिनों तक तपस्या की थी तब यही चारों वेदों को प्राप्त किया था जो नाथ सिद्धों के सूक्ष्म वेद से प्रगट हुये थे। इस प्रकार इन वेदों के विस्तार से आगे चार वर्णो का भी विस्तार हुआ जो उनके अपने गुण-धर्म कर्म के अनुसार थे। तब उस समय सृजन सृष्टि के बीज रूपी ॐकार के विराट स्वरूप के मुख से ब्राह्मण सिद्ध हुये फिर उनके बाहु से क्षत्रिय प्रगट हुये फिर वैश्य ॐ के जांघ से तो शुद्र उनके पाव तुल्य जानने लगे, और जिसे प्रकार कहा गया है कि **"चंदा सूरज पवन पानी"** अर्थात उस विराट ॐकार का मन हि चन्द्र है और नेत्र सूरज है। विशेषत: इस विराट ॐकार के शिखा मण्डल से जो बिन्द रूप है इससे नाथ सिद्ध योगेश्वर तथा अनेकों साधु सन्त का प्रागट्य हुआ जिनके गुण-धर्म-कर्मनुसार जन-जीवन के लिये त्याग-वैराग्य-ज्ञान-धर्म-कर्म मोक्ष मुक्ति का कारण बने अत: यह सर्व श्रेष्ठ सिद्ध हुआ तदपश्चात देखो

इस विराट ॐ के मुख से वैखरी बाणी से ब्राह्मण वर्ण जो विद्याज्ञान-शास्त्र विधि विधान कर्मकाण्डों सतकर्म इत्यादि का प्रसार हुआ जो श्रेष्ठ अंग (निर्माण) है। उसी प्रकार बाहुबल के अंग क्षत्रिय जिनके सहायता से प्रजा की रक्षा होती है। और जो वैश्य जिस जांघो से उत्पन्न हुये उन जांघो मे कार्य शक्ति है जिसमें कर्म व्यापार लेन-देन व्यवहार इत्यादि से स्थिति उन्नति होती है। और उन पावों से निर्माण शुद्र जो सेवा सुश्रृषा सहयोग करते है। और इस प्रकार चारों वर्ण से सेवा उन्नति और कार्य सिद्ध होते है। और चारों धर्म का निर्वाह होता है। धर्म यज्ञार्थ कर्म का ही नाम है। और कर्मकाल के तीन भेद है। जो कि प्रथम (१) प्रालब्ध (२) क्रियामान और (३) अगामी हैं परन्तु विवेक से तीन प्रकार के कर्म बनते है (१) अध्यात्म कर्म (२) आधिभौतिक कर्म (३) आधि दैविक कर्म अतः

(१) अध्यात्म कर्म – यह देहधारी से बुद्धि, मन और इन्द्रिय द्वारा किये जाते है और उसके फलस्वरूप सुख-दु:ख को प्राप्त होते है।

(२) आधिभौतिक कर्म – यह जो देहधारियों से उत्पन्न होता है और उसे भी सुख-दु:ख पहुँचता है।

(३) आधिदैविक कर्म – यह कर्म पंचमहाभूतों से निर्माण होता है और मनुष्य को अच्छा-बुरा फल देता है। अतः भर्तृहरि गोपीचन्द जरा गौर से सुनो कि सत्य तो यह है कि कर्म सिद्धि जो सम्पूर्ण सृष्टि स्वरूप कर्म ही है वह यज्ञों के द्वारा होती है। जिसकी सर्वप्रथम सृष्टि के पूर्व एक विराट यज्ञ के भांति अग्नि स्तम्भ जो ॐकार स्वरूपी आदिनाथजी ने प्रगट किया था। जो नाथ सिद्धों का धूना या धूनी रूप में सिद्ध हुआ अतः इस यज्ञ अथवा नाथ सिद्धों का धूना का कर्ता यही ॐकार ही है। जिसको अज्ञान से लोग नहीं जानते जो कि वह लोक कर्म और उस कर्म का फल अपना ही अपने ही अहंकार में मानते है जैसे मैं करता हूँ मैं बलवान हूँ मैं ही करता हूँ मुझे फल चाहिए इत्यादि यह मैं-मेरा-मुझे ही अहंकार है।

देखो सभी जीव प्राणियों की उत्पत्ति अन्न से होती है। अन्न पोषण वर्षा से होता है। वर्षा पृथ्वी तथा जल से परमाणु (बाष्प) को ऊपर खेचकर उसके बादल बन कर वर्षा होती है। जिसे अन्न बनाकर जीव उत्पत्ति होती रहती है और यही प्राकृतिक यज्ञ है। जो ॐकार द्वारा होता रहता है। इस

ब्रह्म यज्ञ भी कहते है जो ॐ ही ब्रह्म है और यहां सभी देवता जैसे अग्नि, तेज, जल, पृथ्वी, वायु, आकाश अपने अपने कार्य करते है जिसमें तेज तत्व प्रधान है।

अतः इस ब्रह्मयज्ञ या प्राकृतिक यज्ञ में अथवा अपने नाथ परम्परा के धूना कर्मों में और भी यज्ञ कहे जाते है। जैसे १. अश्वमेघ यज्ञ २. नरमेघ यज्ञ ३. गौमेघ यज्ञ ४. स्वाध्याय यज्ञ ५. शान्ति यज्ञ ६. पुत्र कामेष्टि यज्ञ इत्यादि यज्ञ के प्रकार है।

१. अश्वमेघ यज्ञ – इस यज्ञ का तात्पर्य यह है कि अश्व अर्थात् घोड़े की चंचलता यह प्राण को कहा गया है। मेघ अर्थात् वध या और निरोध कहा गया है। तब अश्वमेघ यह एक ऐसा यज्ञ है तो प्राणायाम ही यज्ञ है जो एक साधना है जो प्राण का निरोध करते है जो प्राण ॐकार स्वरूप है और इस अश्वमेघ यज्ञ जैसे साधना से घोड़े की चंचलता स्वभाव के मन का वध करके अर्थात् मन के विचार, संस्कार, वृत्तियाँ, विकारों का वध करके अर्थात् चंचल मन को शून्य करके ध्यान समाधि में अवस्थित होना ही अश्वमेघ यज्ञ कहते है। जो परिपक्व अवस्था में आत्मविद्या–आत्मज्ञान को जीव प्राप्त करता है। अतः हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वर धूना (यज्ञ) चेतन करके उसके सानिध्य में योग साधना (प्राणायाम आसन मुद्रा इत्यादि) करते है और ज्ञान को प्राप्त करते है। यही अश्वमेघ यज्ञ कहलाते है। परन्तु अज्ञानी लोक यज्ञों में घोड़े की बली चढ़ाने का ही अर्थ लेते है। किन्तु यह अत्यंत घृणित, अत्यंत गलत, तामसी एवं पाप कर्म कहा जाता है। अतः यज्ञ विधियों में कोई भी जीव का बलि विधान निषिद्ध है।

२. नरमेघ यज्ञ – इसका प्रयोजन जीव या नर–नारी अपने अहंकार का मेघ यानि वध करे, नाश करे। जिससे नर को ज्ञान होकर वह सुख–दुःख के परे ले जाता है। यहां भी मूर्ख लोक नर बली का अर्थ लेते है। अतः इस प्रकार से नर हत्या पाप का भागी बनाता है।

३. गौमेघ यज्ञ – इसका प्रयोजन गौ यानि इन्द्रिय अतः इन्द्रियों के ऊपर संयम करना या निरोध करना कहा गया है। इस भक्ति यज्ञ या योग साधना रूपी यज्ञों में इन्द्रिय शमन या इन्द्रिय संयम करके सात्विक भाव से ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करना है। अतः इसमें भी पापी

लोक गौ की बली का गलत अर्थ लेकर गौवों की हत्या करते हुए गौहत्या का पाप करते है। जो अन्त में नरक को प्राप्त होते है।

४. स्वाध्याय यज्ञ – इसका प्रयोजन ज्ञान की प्राप्ति के लिये वेदों-शास्त्रों पुराणों उपनिषदों आदि ग्रंथों अध्ययन किया जाता है और अन्त में सत्कर्म ज्ञान पाकर मुक्त हो जाते है।

५. शान्ति यज्ञ – यह यज्ञ का आशय यह है कि सर्वस्व का त्याग-वैराग्य होकर शान्ति को प्राप्त होना या संसार के कर्म भोग भोगते हुये निष्काम-निस्वार्थ होकर मुक्त हो जाना जैसे विदेही राजा जनक थे। अतः स्थूल रूप से लोक राज्य शान्ति-विश्व शान्ति-ग्राम शान्ति ग्रह दोष शान्ति गृह क्लेश शान्ति आदि उद्देश्य से यज्ञ कर्म करते है।

६. पुत्र कामेष्टि यज्ञ – यह निसंतान को सन्तान प्राप्ति हेतु किये यज्ञ को पुत्र कामेष्टि यज्ञ कहते है। यह तांत्रिक कर्म है तथा राजा दशरथ ने यह यज्ञ करने पर उन्हें राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न जैसे उत्तम पुत्रों की प्राप्ति हुई थी। इस प्रकार यज्ञ कर्मो से ॐकार के त्रिगुण मिस्रित जीव नर नारियों में सात्विक गुणों से देवी देवता राजसी गुणों से मनुष्य और तामसी गुणों से राक्षस बनते है। जिसमें जो गुण की अधिकता है वह वैसे ही बन जाते है।

अतः इसमें दो संपदा है, १. दैवी संपदा २. राक्षस संपदा इनमें हमेशा विरोध होता है। यहां जब दैवी संपदा बलवान होती है। तब राक्षसी संपदा निर्बल होती है। तो वह एक यज्ञ सिद्ध होता है और ॐकार से ३३ कोटी या ५६ कोटी देवता अर्थात् दैवी संपदा बनती है। ५ कर्मेन्द्रिय ५ ज्ञानेन्द्रिय और एक मन = ११ अंक उसे त्रिगुण ३ ने गुणा ११×३=३३ अंक सिद्ध होता है। उस पर सप्त प्राकृतिक ७ शून्य देकर अर्थात् ३३०००००००की संख्या सिद्ध होती है। इसमें कारण = त्रिपुटी के ३ अंक को सूक्ष्म = त्रिपुटी के ११ अंक से अधिक या योग करके स्थूल = त्रिपुटी के ७ शून्य को बढ़ाकर तैतीस कोटी देवी-देवता माने जाते है। यह शैव अर्थात शिव ॐकार आदिनाथ जी की नाथ सिद्ध परम्परा का सिद्धान्त है। उसी प्रकार विष्णु भक्त या वैष्णवी लोक ५६ कोटी देवता मानते है। वह कारण त्रिपुटी के अष्ठधा प्रकृति को सिद्ध किया और सूक्ष्म त्रिपुटी में सप्त लोक माने और स्थूल त्रिपुटी में सप्त मण्डल स्थापित किये इस विधि स

८×७=५६ इस पर ७ शून्य बनाये तो ५६००००००० की संख्या देवताओं की बनती है। अत: देखो ब्रह्मज्ञान जो देवी देवताओं की शक्तिाओं से बनता है। जो ईश्वरीय ॐकार कृत है। जो सदैव एक सा रहता है, जो नित्य नित्य या नेती–नेती कहते है। अत: देवताओं की स्वाभाविक क्रियाओं को समझना पराविद्या है और जो संसार के भाति चलती है उसे अपराविद्या पर चलता है। जिसका मुख्य आधार या मुख बीज या मुख्य निर्माता ॐकार ही है। इस प्रकार हें भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ जो कि नाथ सिद्ध आदेश करते समय ऐसा जो कहते है **एक ओंकार तेरा आधार तीन लोक में जय जय कार**। अत: हमने ॐकार की स्थूल सूक्ष्म और कारण रूपी जगत विस्तार की महिमा का बखान किया है।

इतना कहते हुये गुरु गोरक्षनाथजी पुन: अपने योग ध्यान में लीन हो गये।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे
ॐकार विस्तारे नाम द्वितीयोऽध्याय: ।।

नाथ सिद्धों का सोम यज्ञ (जालन्धर नाथ उत्पत्ति)

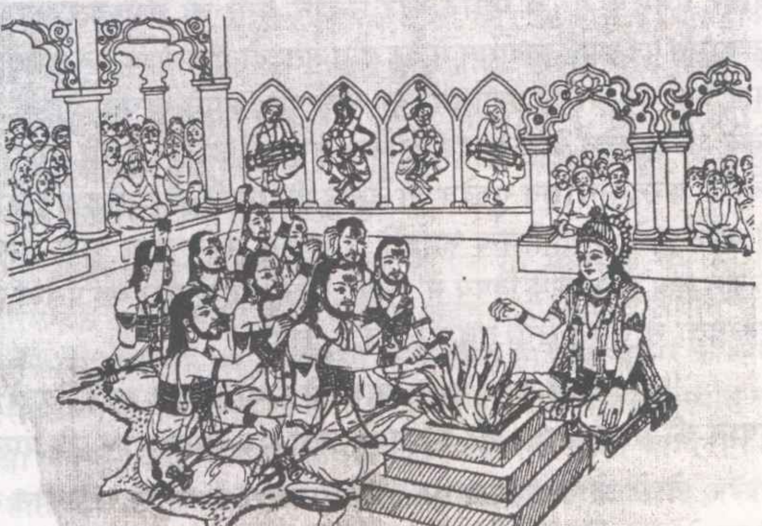

तृतीयः अध्याय

।। श्री नाथ योगी ब्रह्म संस्कार ।।

आज प्रातः योगीराज गोपीचन्द भर्तृहरि शीघ्र ही गंगा स्नानादि कर्म करके गुफा में लौटे थे और वहां धुना के सानिध्य में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रतिक्षा में लगे थे। वह प्रातः का वातावरण उत्साह और अल्हाददायक लग रहा था। उनके मन में गुरुदेव के दर्शन एवं उपदेशामृत की अनेक बातें उमड़ रही थी उनके सानिध्य में और अमृत तुल्य मीठे रसभरित उपदेशों से उन शिष्यों को ज्ञानानन्द और अपरीमित शान्ति का अनुभव हो रहा था। इस कारण वह अत्यन्त अतुर अवस्था में गुरुदेव का इंतजार कर रहे थे वह बार-बार गुफा के तरफ देख रहे थे और वह एक उच्चासन पहले ही लगा के रखा था। धूना की धक-धक ज्वालायें आकाश छूने को उठ रही थी मृदु और ठण्डी हवायें वहां के स्तब्ध वातावरण में चैतन्य ही चैतन्य बिखरा रही थी। पंछियों की उठने की और आकाश में उड़ने की चिड़चिड़, आवाजें उनकी चिलबिल की आवाजे मधुर लग रही थी। हवाओं के झोंको में वहां के पेड़ पौधे डोल रहे थे बीच में कही दूर से शंख ध्वनि सुनाई दे रही थी।

इतने में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी उस गुफा के अन्दर से बाहर धूना के संमुख पधारे और उन्होंने धूना को नमस्कार करके उस उच्चासन पर अपने सुखासन में बैठ गये। अतः दोनों योगेश्वरों ने नम्रतापूर्वक नाद बजाकर आदेश प्रणाम किया और पुनः अपने-अपने आसन ग्रहण किये और गुरुदेव के सन्मुख हाथ जोड़ कर उन्हें उपदेश बाणी बरसाने को बिनती करने लगे। तब गुरुदेव जी ने बड़े ही प्रेम से और स्नेह भरे आवाज से कहने लगे। हे गोपीचन्द भर्तृहरि आज हम अपने नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के कुछ ब्रह्म संस्कारों के विषय में सत्संग करेंगे। यह सुनकर वह प्रसन्न होकर एकाग्रता से सुनने लगे। तब गुरु देव ने कहा

"नाद बाजे काल भागे, ज्ञान की टोपी गोरख साजे" गले नाद पुष्पन की माला, रक्षा करे श्री शम्भु जती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

देखो श्री नाथ सिद्ध गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार प्राचीन काल में हमारे नाथ सिद्धों ने जो कि नवनाथ चौरासी सिद्धादि इन्होंने अपने

त्रिकाल दर्शी दृष्टि द्वारा समय काल और परिस्थितियों का अनुमान लगाकर तथा अपने स्वयं अनुभव सिद्ध ज्ञान द्वारा इस नाथ सम्प्रदाय के कुछ अनूठे सुसंस्कृत संस्कार की परम्परा बना दी जिसमें ब्रह्मज्ञान तथा ब्रह्मविद्या का तथा परमज्ञान के उपदेशों का विस्तार होकर उसमें उत्तरो उत्तर प्रगति होने हेतु संस्कार बनाये जैसे सत्गुरु जी शिष्यों को दिक्षा-संस्कार, उपदेशात्मक-संस्कार योगध्यान-संस्कार और अनेकों तंत्र-मंत्रादि, कर्मकाण्डों के संस्कारों की परम्परा की रचना की और भी प्रगतिशील संस्कारों में जैसे दिव्य दृष्टि पाद; या अमोघ शक्ति पाद तथा ब्रह्मज्ञान-उपदेशों का शब्दपाद जो नाद दीक्षा या मन्त्र दीक्षा भी कहते है और अनेक प्रकार जैसे रूप रस (सहवास) स्पर्श पाद जिसे शिश पर हाथ रखकर आशीष द्वारा भी कहा जाता है। इस प्रकार से ज्ञान की प्राप्ति हो मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति हो आदि तत्वों को एकत्रित करके हमारे नाथ पंथ में कुछ विशिष्ट मर्यादायें अर्थात् संस्कार स्थापित किये।

अतः देखो सत्गुरुदेव साधक को शिष्य के रूप में संस्कारित करते हुए उन्हें आसन-वासन, जप-तप, योग ध्यान साधना इत्यादि के नियम या मर्यादा देकर उन्हें दीक्षित करते है। जिसमें शिष्य का मुण्डन करके उसकी चोटी काटकर उसे लंगोट-भगवा बाना (भगवे वस्त्र) पहनाकर मन्त्र दीक्षा देकर उसे त्याग-वैराग्य-ज्ञानमार्ग की ओर ले जाते है। यह दीक्षा संस्कार करते समय शिष्य को मुख्यत नाद जनेऊ अर्थात् नाथ सिद्धों का यज्ञोपवित गले में पहनाते है और मस्तक पर त्रिपुण्ड भस्मी या भस्मी स्नान कराके मन्त्र दीक्षा देते है और नियम और मर्यादा में उसे रखते हुए शिष्यत्व संस्कार से स्वीकार कराते है।

देखो जन्म दो प्रकार के होते है। एक तो माता के गर्भ से पंच भौतिक देह उत्पन्न होता है और दूसरा सद्गुरु जी के शब्द अर्थात् मन्त्र दीक्षा द्वारा ज्ञानरूपी या विद्यारूपी जन्म होता है। पहले प्रकार का जन्म तो सहसा सभी का एकसा ही होता है। किन्तु दूसरा शब्द जन्म अर्थात् गुरु दीक्षा जन्म में बड़ी विशेषतः होती है और यह जन्म किसी भाग्यवान का ही होता है। यहां ज्ञान-वैराग्य सह नित्य योग-साधना ध्यानादि अभ्यास या गुरु सेवा-समाज सेवा आदि कर्मयोग तथा सत्संग करने पर ब्रह्मत्

सत्य के लक्ष को वह ज्ञात हो जाते है और वह मोक्ष-मुक्ति के अधिकारी बन जाते है।

अतः हे भर्तृहरि गोपीचन्द अपने नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में पूर्व काल में अयोनिज जन्म या मात्र संकल्प से जन्म या पंचतत्वादि जन्म जैसे अग्नि से (अग्निकुण्ड) जन्म, जलतत्व से जन्म या अनेक प्रकार के प्राकृतिक या यौगिक सिद्धियों से जन्म जैसे परकाया प्रवेश, अन्तर-आत्मानुसंधान या कायाकल्पादि जन्म प्रसिद्ध है। जैसे नवनाथों में ॐ कार आदिनाथ जी, सत्यनाथ (जल से) सन्तोषनाथ (तेज तत्व से) अचल अचम्बेनाथ (वायु तत्व से) गजबेली गजकंथड़ गणेश जी (संकल्प से) ज्वालेन्दरनाथ (अग्नि कुण्ड से) बाबामस्तनाथ (संकल्प से) सनक सनातन सनन्द नाथ (ब्रह्मा जी के संकल्प से) कनकाई-भुसकाई (संकल्प से) गहीणीनाथ (मृतिका से) कायानाथ (संकल्प से) सप्तऋषि और भी जन्म अयोनिज थे। जो कि हमारी उत्पत्ति भी अयोनिज स्वयं प्रकाशी शिव संकल्प के द्वारा हुई थी क्योंकि जब देवी देवतायें तथा ऋषि मुनियों ने प्रत्यक्ष भगवान शिव ॐकार आदिनाथ जी को पूछने पर उन्होंने स्वयं कहा था कि

"अहंमेवास्मि गोरक्षोमद्रूपं तं निबोधात्
योगमार्ग प्रचाशय मयांरूपमिदं घृतम्"

अर्थात्-मैं ही गोरक्षनाथ हूँ मेरा ही रूप गोरक्षनाथ को जानो लोक कल्याणकारी योगमार्ग का प्रचार करने के लिए मैंने ही गोरक्षनाथ नाम से रूप धारण किया है। इसी प्रकार हमारा अयोनिज जन्म हुआ था।

अतः नाथ संस्कारों में पंच दीक्षा संस्कार होते है अर्थात् शिष्य को अपनी योग्यता के अनुसार पांच गुरुओं से दीक्षा संस्कार करना पड़ता है। तब उसे नाथ सम्प्रदाय का पूर्ण नाथ योगेश्वर की मान्यता प्राप्त होती है।

१. सत्गुरु अर्थात् चोटी गुरु = यह मुख्य गुरुदेव होते है जो साधक का मुण्डन करके उसकी चोटी काटकर तथा गले में नाद जनेऊ पहनाते हुए गुरु मन्त्र संस्कार करते है।

२. कर्णवेध संस्कार-चिरागुरु = शिष्य के आचरण सेवा - पर विश्वास होने पर यह कर्ण वेध संस्कार करते है। जो की कर्ण को छेद करके उसमें

मिट्टी के कुण्डल धारण करवाते है यह कर्णवेध संस्कार सवा महीना तक साधना के द्वारा करवाते है तब वह पूर्ण नाथ बनता है। उसे दर्शनी योगी कहते है।

३. योगमायासंस्कार अर्थात् उपदेश संस्कार या उपदेशी गुरु = यह जब शिष्य अपने काया इन्द्रिय मन, चित्त पर जब पूर्ण विजय पाता है तब यह उपदेशी संस्कार दीक्षा देते है। यह योगमाया का गुप्त ज्योति विधि कर्म काण्ड इ० निशा रात्रि में यह दीक्षा संस्कार करवाते है। यहां शिष्य विशिष्ठ मोड़ पर आता है।

४. तपस्वी संस्कार = बभूति गुरु = यहां शिष्य को परिपक्व अवस्था होने पर तपस्या द्वारा अर्थात् हटयोग द्वारा साधना सिद्धि का उपदेश तथा उसके सम्पूर्ण काया पर बभूति लगाकर इसे बभूति स्नान या बभूति संस्कार कहते है और यहां भी गुरु मन्त्र संस्कार करवाते है।

५. बाना गुरु या लंगोट गुरु = इसे बाना संस्कार कहते है। यहां गुरुदेव शिष्य को भगवा वस्त्र देकर उन्हें त्याग वैराग्य की दीक्षा दी जाती है। अतः यह सब विधियों को संस्कार कहा जाता है। जैसे जिसमें स्थूल एवं सूक्ष्म संस्कार कहते है।

स्थूल संस्कारों में – मुण्डनकरना, चोटी काटना नाद जनेऊ गले में पहनना, कर्ण संसार, काया पर बभूति रमना, भगवा बाना या लंगोट पहनना, धूना चेतना, आरती, पूजा आदि सब कर्मकाण्डों को स्थूल अर्थात् जो दृष्टिगोचर होते है जो खुली आंखों से दिखते है। वह स्थूल संस्कार होते है।

सूक्ष्म संस्कार – इसमें मुख्यता सभी मन्त्र तंत्र संस्कार तथा दृष्टिपात शक्तिपात कुण्डलीनि जागरण-आशीर्वाद-कृपा-अनेकों उपदेश इत्यादि सभी सूक्ष्म संस्कार है जो अदृष्टिगोचर होते है जो खुली आंखों से दिखते नहीं या केवल मन-अन्तकरण के भाव या जो केवल अनुभव सिद्ध महसूस होते है।

अतः यह सभी पंच संस्कार विधियाँ तंत्रमंत्र विशेषतः नाथ सिद्धों के शाबर मंत्रों से किया करते है। जोकि मंत्रों का बीज या मंत्रों का राजा

यह ॐकार ही है।

इन सभी संस्कारों में नाद जनेऊ अर्थात् यज्ञोपवित संस्कार को मुख्य माना जाता है। जो मन्त्रों (नाद जनेऊ मंत्र होता है) द्वारा पहनाकर मंत्र दीक्षा पात किया जाता है। क्योंकि गले में नाद जनेऊ या यज्ञोपवित रखना नाद सिद्धों की मुख्य निशानी है और यह नाद जनेऊ यह नाथों का यज्ञोपवित भी ॐकार युक्त भरपूर है।

"गले नाद पुष्पन की माला, रक्षा करे
श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।"

इस प्रकार कहते कहते गुरुदेव ने बोलना बन्द किया और वह पूर्व दिशा के सूर्योदय को एकटक देखने लगे प्रातः का वह लाल सूर्य बिम्ब सन्मुख विशाल गंगा पात्र में परावर्तित दिख रहा था। गंगा माता के जल बिन्दुओं पर गुलाल बिखरा हुआ लाल सूर्य किरणों की ब्यौछावर हो रही थी। इर्द गिर्द पहाड़ियां, पेड़-पौधे अपितु धरती माता भी सूर्य स्नान कर रही थी। वह निसर्ग रम्य उषाकाल का दृश्य बड़ा ही मनभावन, मन मोहक लग रहा था गुरुदेव वह सृष्टि सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे इतने में गोपीचन्दनाथ जी ने जल से भरी झारी गुरुदेव को लाकर दे दी और गुरुदेव ने उस सुप्रभाति भास्कर आगमन का सुस्वागतम् करते हुए सूर्यदिव को अर्ध्य देने लगे अतः सभी ने सूर्य भगवान के श्लोक स्तुति करके नमस्कार किया। फिर जब गुरुदेव अपने आसन विराजे तब उन्हे शिष्य भर्तृहरि ने दूध, फल देकर जलपान करवाया और नमस्कार करके पुनः प्रश्न किया। हे कृपा सिन्धु गुरुदेव आपने कहा कि नाद जनेऊ में ॐकार समाहित है अतः वह कैसे? और यह नाद जनेऊ कैसे बनाके तैयार किया जाता है तथा इनकी क्या-क्या मर्यादायें होती होगी अतः कृपा करके इनका पूर्ण भेद बताने की अनुकंपा करे।

अतः गुरु गोरक्षनाथ जी ने मोहक स्मित हास्य करते हुए कहा आप नाथों ने बहुत ही उत्तम प्रश्न किये है। प्रथम मैं! नाद जनेऊ कैसे बनाते है वह बतलाता हूँ। अतः सुनो यह नाद जनेऊ सभी नाद सिद्ध योगेश्वर ही स्वयं अपने हाथों से बनाते है और उन जनेऊ में कर्मानुसार उनके मन्त्रोच्चार

करते है या गुरु मन्त्र का जाप करते है। विशेषतः ॐ ॐ का जाप अवश्य करना पड़ता है क्योंकि ॐकार उठाते हुये यह बनाते भी है और आदेश करते समय भी ॐकार उठाना पड़ता है ॐकार उठाना अर्थात् अपने नाभि कमल से नाद बजाते है। तो देखो प्रथम यह नाथ लोक जनेऊ बनाने हेतु काले भेड़ की ऊन (बालों को) को पवित्र गंगा जल में भिगोकर फिर उसे धोकर स्वच्छ करते हुए धूप में सुखाते है। फिर लकड़ी की टकली लगाकर उसे बुन-बुन कर लम्बा धागा बनाते है। फिर उस लम्बे बारीक (ऊन) के धागे को सोलह धागों में विभाजित करके उसे चार-चार लकड़ी की गिट्टियाँ लगाकर उसे टंगते हुए अपने दोनों हाथों के ४,४ अंगुली में वह गिट्टयाँ रखते हुए एक दूसरे में उन सोलह धागों को अलट-पलटकर बुनते हुए उसका पुनः एक लम्बा धागा बन जाता है। फिर यह कम से कम साड़े बारह हाथ का लम्बा धागा तैयार करते है। फिर उसे छः जती नाम से छः या नवनाथ नाम से नौ गाँठ देते हुए जोड़ते है। उसे ''ब्रह्मगाँठ'' कहते है। फिर इसी को तीन समान लपेटो में एक जैसा धागा लेकर उसे विरूद्ध दिशा में जोड़कर मिला देते है और उसके निचले हिस्से में एक पवित्री +एक मूंगा+एक स्फटिक+एक रुद्राक्ष और फिर एक नादि इनको एक पक्के धागे में पिरोकर जोड़ते है। इस प्रकार नाद जनेऊ तैयार होने पर उसे थोड़े चिकना तेल अथवा घी लगाकर उसे मृदु बनाते है और दीक्षा संस्कार के समय गुरुजी शिष्य के गले में डालते है।

अब हम नाद जनेऊ की मर्यादा या कुछ नियम बतलाते है। अपने नाथ सम्प्रदाय के नियम या मर्यादा अनुसार नाथ योगेश्वर साधक (शिष्य) अपने सद्गुरुजी को (उपरोक्त पंचगुरुदेव को भी) नमस्कार करते समय उन्हें उखड़ु बैठकर तीन बार नादि बजाकर आदेश करना होता है और साथ-साथ तीन बार आदेश मंत्र का मनन करना पड़ता है। यह गुरु-शिष्य परम्परा का द्योतक है। उसी प्रकार नाथ सिद्धों के इष्ट देवी-देवता हो या सिद्ध पीरों की समाधियाँ हो यहां भी तीन बार नादि बजाकर तथा स्वयं को एक परिक्रमा करके पुनः तीन बार नादि बजाके आदेश तथा मंत्रोच्चारण किया जाता है। उसी प्रकार बारह पंथायी पीर गद्यी या मथ्याटेक गद्यियों में भी मर्यादा अनुसार तीन बार नादी आदेश करना पड़ता है। उसी तरह

मानधारी महन्त पीरों को भी शम्भु आदेश जोकि नादी न बजाते हुए दोनों हाथों की मुट्ठी अंगुलियाँ की क्रिया तीन बार करते है जिसमें पंचतत्वादि गुण धर्मो का समावेश किया गया है। मुख्यता इसे "नाद ॐकार उठाना" या "ॐकार उठाना" या "ॐकार आदेश" या "शम्भु आदेश" शब्दों से पहचान कराते है। अत: इस नाथ सिद्धों के नादी आदेश तथा यह यज्ञोपवित या यह नादी पवित्री जनेऊ रचना में ॐकार स्वरूप का रहस्य सूक्ष्म रूप से विद्यमान है।

ॐकार स्वरूपी नाद जनेऊ (यज्ञोपवित)

प्रथम नाद जनेऊ रचना विधान (चित्र–आकृति) में देखो जो की नादि और पवित्री के बीच में एक मूंगा (मणी) लाल या सिन्दुरी रंग का जो आत्मविश्वास , निर्भयता और समृद्धि प्रदान करता है और एक स्फटिक (मणि) यह हिमालयी पारदर्शक होता है। जो मन को शान्ति और पारदर्शकता प्रदान करता है। तथा रुद्राक्ष (दाणा) जो प्रत्यक्ष शिव स्वरूप होता है। वह [निरमुखी से १–२..........२१ मुखी तक] होते है इनके अपने अपने अलग अलग गुण धर्म होते है। लेकिन यहा मुख्यता दैवी – आदिदैविक– भौतिक इत्यादि सर्व गुण सम्पन्नता का लाभ देता है। अत: यह मूंगा+स्फटिक+रुद्राक्ष को एक साथ सूत में पिरों के आगे पीछे नादि पवित्री जोड़ते है। इस रचना सूत्र के प्रति नाथ सिद्धों का विश्वास है कि मूंगा प्रजापति ब्रह्माजी के प्रति रजोगुण युक्त ॐकार का 'अ' कार प्रणव जिसे सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता मानते है तथा स्फटिक को भगवान विष्णु जी जो सत्‌गुण युक्त 'उ' कार प्रणव जो सृष्टि की यथास्थिति या संरक्षक या प्रतिपालक रूप में मानते है। उसी प्रकार रुद्राक्ष यह प्रत्यक्ष शिव (रुद्र) स्वरूप, तमोगुण युक्त 'म' कार प्रणव जो सृष्टि का संहार करने वाला मानते है और पवित्री जो आदि शक्ति, पराशक्ति का स्वरूप (ˇ) शक्तिमान मानते है तथा इस अर्द्धमात्रा चिदानन्दा को सृष्टि के क्रिया कर्म शक्तिमान मानते है तथा इस अर्द्धमात्रा के अन्दर के बिन्दु (●) नाद बिन्दु का स्वरूप उसी नादि को मानते है क्योंकि उसे बजाते समय उसमें से नाद प्रगट होता है। अर्थात् इसे नाथ सिद्धों का नाद मानते है। यह सब 'अ'+'उ'+ 'म'+ ˇ+● का योग करके ॐकार स्वरूप बनकर ऊनके प्रति ॐकार स्वरूपी

श्री नाथ सिद्धों के नाद जनेऊ का ॐकार स्वरूप रहस्य

- ऊन का जनेऊ
- पवित्रि शक्ति (अर्धमात्रा चिदानन्दा पराशक्ति) पवित्रता
- मूंगा - ब्रह्माजी का - उत्पत्ति - राजोगुण - 'अ'
  (ब्रह्मग्रंथी ब्रह्मानंद) राजस कार
- स्फटिक - विष्णुजी का - स्थिति - सत्यगुण - 'उ'
  (विष्णुग्रंथी महानंद) सत्य कार
- रुद्राक्ष रुद्र (शिव) - संहार - तमोगुण - 'म'
  रुद्रग्रंथी कैवल्यानंद तामस कार

- नादि - नाद - बिन्द - बिन्दी श्री नाथ सिद्धों की (नाद) बिन्द

समाधि में ॐकार दर्शन से ज्ञान प्रकाश
समाधि में ॐकार नाद से नाद ब्रह्म } प्राप्ति
समाधि में शून्य अवस्था ही मुक्ति है

ॐ = ओहं सोहं – प्राण अपान – जपा – अजपा श्वास प्रश्वास – प्रकृति माया = जीवन

केवल योग साधना के द्वारा ही मुक्ति की प्राप्ति होती है = नाथ सिद्धान्त

श्री नाथ सिद्धों का (आदेश) संस्कार

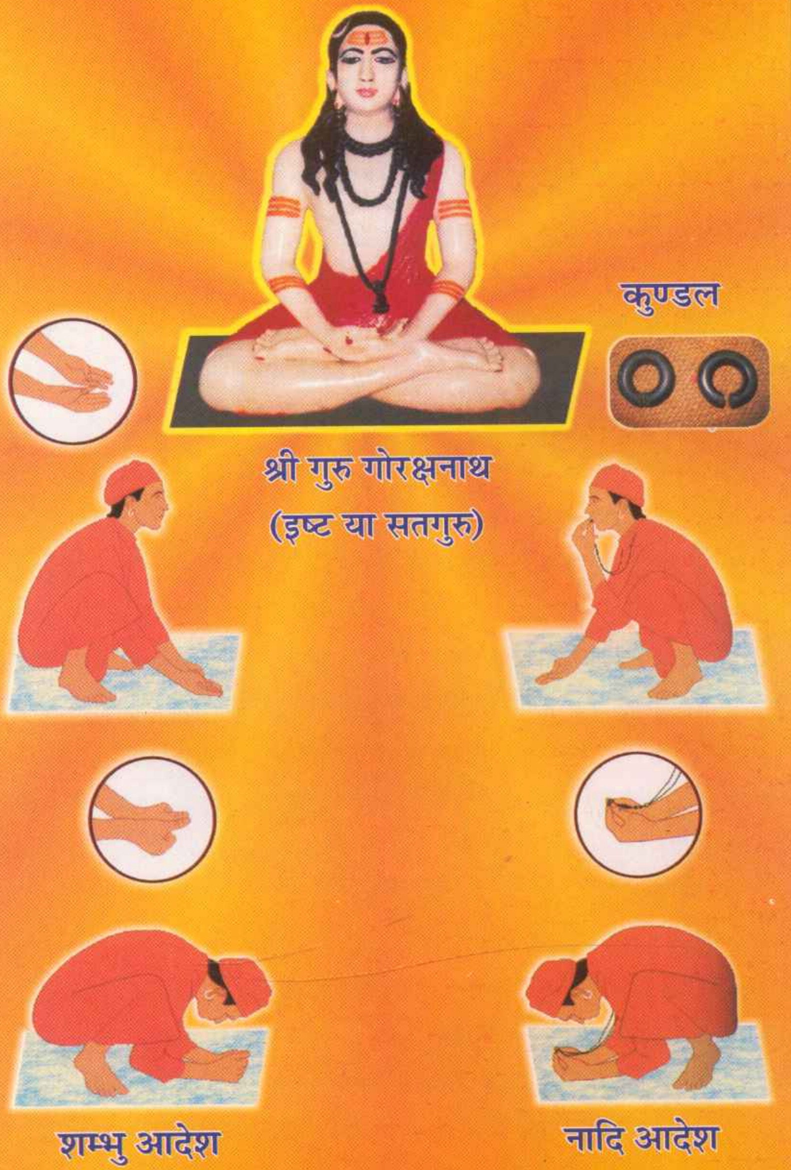

जनेऊ (यज्ञोपवित) जो त्रिगुणातितरूपी सूत (धागा) नाथ सिद्ध संस्कार सह गले में पहनते है।

इस प्रकार समस्त सृष्टि का बीज और बीजी रूपी ॐकार प्रणव का रहस्य नाथों के (नादि पवित्री जनेऊ) में प्रत्यक्ष सस्वरूप विद्यामान है। ऐसे इस महत्तम् ॐकार को प्रणव भी कहते है। जो कि इस प्रणव कहने का तात्पर्य यह है कि प्र = अर्थात् प्रपंच, न = अर्थात् नहि है 'व' = अर्थात् तुम लोगों के लिए यह भाव आम व्यक्ति ज्ञानिओं जानते है। इसका दूसरा भाव प्र–प्रकर्षेण, न = नयेत् वः – युष्मान् मोक्षम् इति वा प्रणवः अर्थात् यह तुम सब उपासको को बलपूर्वक मोक्ष मुक्ति तक पहुँचा देगा यह अभिप्राय से प्रणव को योगी नाथ सिद्ध जन सन्त समझते है। यह प्रणव समस्त कर्मो का नाश करके दिव्य नूतन ज्ञान देता है। अतः इसलिए इस ॐकार को प्रणव कहते है। यह ॐकार प्रणव दिव्य परमात्म ज्ञान को प्रगट करता है। यह ॐकार प्रणव सूक्ष्म रूप है और ॐकार (शिव) आदिनाथ जी तथा उनके मंत्र स्थूल स्वरूप समझना चाहिए। अतः ॐकार प्रणव का जाप, तपस्या या साधना करनी चाहिए। जब हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वर ॐकार मन्त्र प्रणव का जाप/साधना करते है तो साधना में परिपक्वता निर्भयता आत्मविश्वास मुख्यता पवित्रता आती है। वैसे–वैसे मूलाधार चक्र जाग्रति होकर क्रम से सहस्त्रगार चक्र तक कुण्डलिनि प्रवेश करती है और ॐ प्रणव नाद प्राकृतिक साक्षात्कार रूप में अपने आप सुनाई देता है। तब उसे उपजत ज्ञान की सत्य परम सत्य ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस ॐकार प्रणव योग प्रणाली के अनुभव में ब्रह्मग्रंथी, विष्णुग्रंथी तथा रुद्र ग्रंथी अर्थात् प्रणव 'अ"उ"म' अर्थात् 'रज"सत"तम' ग्रथिंयों जाग्रत होकर महाआनन्द परमानंद कैवल्यानंद की प्राप्ति होती है तथा यह कुण्डलिनि शक्ति से परा अपरा निजा शक्ति तक पा लेते है। अतः यह योग प्रणाली का जो सूक्ष्म मतितार्थ है वही स्थूल रूप में नाथ सिद्ध योगेश्वर अपने गले में नाद जनेऊ स्वरूप में पहनते है (चित्र को देखे)

हे भर्तृहरि और गोपीचन्द अपने सद्‌गुरु जी को शिष्य जब नादि बजाकर या ॐकार उठाकर अथवा योग प्रणाली दृष्टिकोण से ऊँह–सोंह, जपा–अजपा इन सभी का एक दूसरे में ॐकार स्वरूपमय ही है। जोकि जब शिष्य नादि बजाते है तो प्राण–अपाण के योग से अपने नाभी कमल से नाद को (आवाज को) उठाते है तब जिस शिष्य या योगी, चेला या साधक योग

साधना में परिपक्व या पारंगत है। उसे नादि बजाते समय अपने नाभी (चक्र) स्थान में (स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रति के कारण) विशिष्ट स्पन्दन होते हुए अनुभव होता है। इसी प्रकार से अगर शिष्य योग साधना सीखते हुये मार्गदर्शन अनुसार करता है तो नाद बजाना, ॐकार उठाना, उसके कुण्डलिनि जाग्रति के लिये, विशेषतः नाभी स्थान स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रति के लिए बहुत ही सहयोगी सिद्ध होता है।

हे भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ एक मुख्य मर्यादा नादि आदेश की सूनो देखो नादि मुख से बजाते समय हवा (प्राण) को अन्दर से बाहर की ओर हवा (प्राण) फूँक मारकर नाद (सीटी जैसी आवाज) उत्पन्न करना पड़ता है और यही नाद अर्थात् नादि बजाकर आदेश गुरुजनों को या इष्ट देवताओं को स्वीकारार्थ है। अगर यही नाद उल्टी बजाई अर्थात् विपरित क्रिया से बजाई, जो कि बाहर की हवा (प्राण) नादि द्वारा (मुख से) अन्दर खींचने से आये हुए नाद को उल्टा नाद बजाना कहते है और इस प्रकार उल्टा नाद बजाते हुए सत्गुरु को आदेश (नादि बजाकर) नमस्कार किया तो कहते की आयुष्य कम होकर शिष्य की योग साधना या भजन तपस्या में पतन होता है और ऐसा उल्टा नाद (अपने) किसी योग साधना सम्पन्न योग सिद्ध, आत्मासाक्षात्कारी सत गुरु जी के सन्मुख बजाया जाये तो ऐसे महान सत्गुरुदेव को स्वभावतः या प्राकृतिक उस सूक्ष्म नाद स्पन्दन द्वारा अनुभव होता है। उस ज्ञान समान सतगुरुजी के दानों स्वर अर्थात् जपाऽजपा या ॐ हं सों प्राणापान कुछ क्षण के लिये रूक (बन्द) हो जाते है जिस कारण वह महात्मा, वह सत्गुरुदेव समझ जाते कि सम्मुख का शिष्य उलटा नाद बजाके आदेश कर रहा है। इसी प्रकार अगर अपने इष्ट–देवताओं के सन्मुख उलटा नाद बजाया जाये तो उस साधक के योग साधना पर उलटा असर होकर प्राण शक्ति पर सूक्ष्म परिणाम होकर भविष्य में पतन होने की सम्भावना होती है। अतः अपने सतगुरुजी के मार्गदर्शन अनुसार ही नादि बजाकर (सही ढंग से) आदेश करना अनिवार्य है।

हे प्रिय शिष्यों इस प्रकार यह त्रिगुणात्मक और ॐकार स्वरूप नाद जनेऊ से शिष्य ने अपने सत्गुरु, अपने इष्ट मानधारी आदि को प्रातः और संध्या को नादि आदेश अर्थात् प्रणाम करना चाहिए। प्रातः काल में सदगुरुजी का हृदय स्थान में स्मरण करके या मन्त्र का उच्चारण करते हुए

नादि आदेश करे तथा सायंकाल में आपने इष्ट (आदिनाथ, गोरक्ष, रुद्रनाथ आदि) को ललाट' या मस्तक अर्थात् भ्रकुटी-त्रिकुटी में स्मरण करके अथवा धारणा करके ही आदेश प्रणाम करना अति उत्तम है और इस सब आदेश-प्रणाम करने के अपने-अपने मंत्र भी होते है। जो सतगुरुदेव = या सम्प्रदाय के मुख्य आधिकारी द्वारा सिखाये जाते है। इस प्रकार नाथ सिद्धों ने सदाचार्य-सतगुणों से यम नियम आसन प्राणायाम जप-तप साधना मुख्यता ब्रह्मचर्य पालन यह सब करते हुए यह नादि आदेश या नादि पूजा [अर्थात् गुरुदेव को या इष्ट को या मानधारीओं को दान दक्षिणा इसे पूजा कहते है यह पूजा चढ़ाकर जो आदेश करते है। उसे नादि पूजा कहते है।] तथा ॐकार नाद उठाना करना चाहिये तब ऐसे शिष्य साधक को तत्व बोध होकर वह समदर्शी एवं उसे ज्ञान की उपलब्धि हो जाती है। वह सत् और तत् दोनों लक्ष्य को यथावत् पहचानता हुआ प्रज्ञावन्त और ज्ञानी हो जाता है।

इस प्रकार आज हमने ॐकार स्वरूप से नाद संस्कार को खुलकर प्रगट किया इसे मनष: धारण करो।

यह सब श्रवण करते हुये शिष्य भर्तृहरि गोपीचन्द अत्यन्त प्रसन्न हुये तब उन्होंने पुन: प्रश्न किया हे गुरुदेवजी आपने **"गलेनाद"** का बहुत सुन्दर विश्लेषण किया अत: **"पुष्पन की माला"** का क्या भावार्थ होता है। कृपया हमें इसका भी निवेदन करने की अनुकंपा करो और उन्होंने उन्हें नमस्कार किया। तब अत्यन्त खुश होते हुए श्री नाथजी गुरुजी कहने लगे हे प्रिय शिष्यों हमने अभी तक "गले नाद" का यह स्थूल रूप में भावार्थ बताया है। अत: इसका सूक्ष्म अर्थ भी हम बताने जा रहे है सुनो जब साधक योग साधना के द्वारा अपने काया अन्दर ॐकार नाद अर्थात् नाथ सिद्धों का अनहद नाद को (ध्यान-समाधि में) सुनते है। उसे **"गले नाद"** कहते है जो कि कुण्डलिनी जाग्रण योग द्वारा साधक ने अपने समस्त चक्र जाग्रति से खड़दर्शन अर्थात् छ: चक्रों की जाग्रति कराके, यह अनहद नाद को सुना है। उन छ: चक्रों को पुष्प के भाति, कमल दलों के भाति **"पुष्पन की माला"** अर्थात् छ: चक्रों की माला कहा गया है। अत: इन खड्दर्शन चक्र पुष्पों की माला काया अन्दर किस प्रकार है तो सुनो

प्रथम पुष्प को मूलाधार चक्र कहते है। यह गुदास्थान में श्री गणेश रूप गजबेली गजकन्थड़नाथ जी का निवास स्थान है। सक्षम प्राणायाम, मुद्रा, बन्ध आदि के द्वारा प्राण-अपाण (इड़ा पिंगला नाड़ियों) के संयोग से यह पुष्प खिलता है अर्थात् जाग्रत होता है, और प्राण अर्थात् ॐकार अपने बीजाक्षर वं, शं षं सं जो उनके चार पंखुडियाँ अपानवायु से संयोग करके पुष्प को प्रफुलित करके जाग्रत करके उसको ऊपर उठाता है जिसे ॐकार उठाना भी कहते है। अर्थात् प्राण या ॐकार या कुण्डलिनि ऊर्ध्वरिता होकर द्वितीय पुष्प में प्रवेश करती है।

द्वितीय पुष्प को स्वाधिष्ठान चक्र कहते है यह छः पंखुड़ी वाला पुष्प लिंग मूल में ब्रह्मा रूपी सत्यनाथजी का वास है सक्षम साधना ध्यान द्वारा ॐकार के छः पंखुड़ी रूपी अक्षर बं, भं मं यं रं लं खिलकर (जाग्रत) होकर पुष्प प्रफुल्लित होते हुये ॐकार प्राण (कुण्डलिनि) ऊपर उठकर सुषम्ना नाड़ी द्वारा तृतीय पुष्प में आती है।

तृतीय पुष्प को मणिपुर चक्र कहते है यह १० पंखुड़ी वाला पुष्प नाभि स्थान में सन्तोषनाथ विष्णुजी का निवास है यहां ध्यान धारणा द्वारा ॐकार अपने डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं पंखुडियाँ रूप अक्षरों द्वारा जाग्रत अर्थात् पुष्प खिलकर पुनः सुषम्ना द्वारा चतुर्थ पुष्प में जुड़ता है।

अतः चतुर्थ पुष्प को अनहद चक्र जो बारह पंखुडी ॐकार के क, ख, ग, ध, च, छ, ज, झ, त्र, ढ, ठ, वर्ण से अंकित पुष्प में ईश्वर हृदय स्थान में विराजे है। जब प्राण के ॐकार रूपी ज्योति से यह हृदय पुष्प प्रफुलित (जाग्रत) होता है तो वैखरी बाणी सिद्ध हो जाती है और पंचम पुष्प से सुषम्ना द्वारा जुड़ (कुण्डलिनि) जाता है। तद् पश्चात्

पंचम पुष्प को विशुद्ध चक्र जो १६ पंखुड़ी से ॐकार बीजाक्षार अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ ॡ ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः इन स्वर रूप पंखुडियां को पुष्प में सदाशिव बैठे हुये है जो कण्ठ स्थान पर स्थित अनहद नाद युक्त यह पुष्प उर्त्सजित होकर कुण्डलिनि ऊर्ध्वरिता होते हुए वैखरी बाणी द्वारा ॐकार (प्राण) का विस्तार होता है और छटे पुष्प में प्रवेश होता है। अतः देखो

छटा पुष्प को आज्ञा चक्र कहते है दो पंखुड़ी वाला यह पुष्प

खडदर्शन कुण्डलिनी योग दर्शन

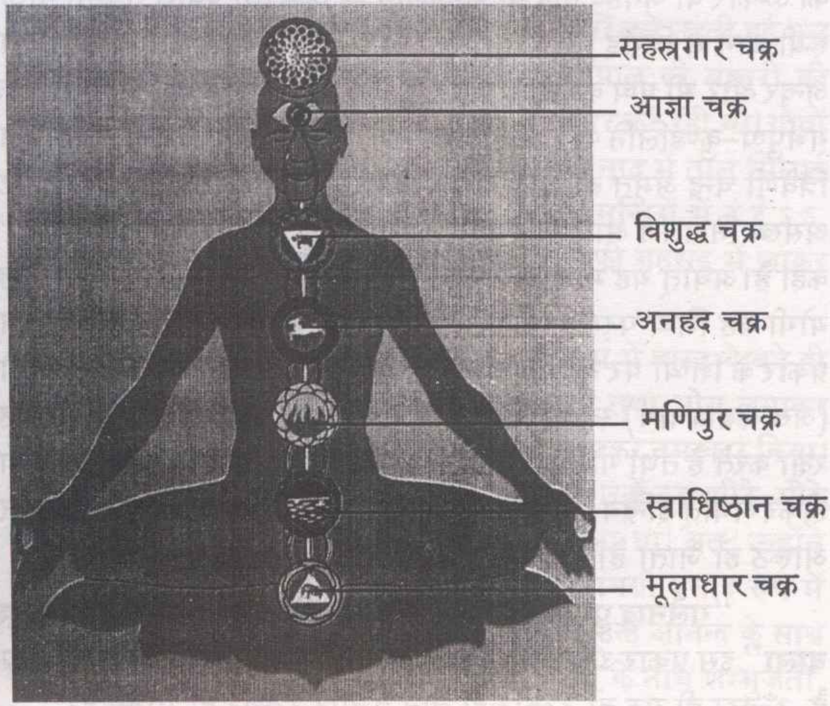

ज्ञानवर्धक है, ॐकार के हं, क्षं बीज रूप पंखुड़ी प्रफुलित होकर दैदीप्य प्रकाशमान ॐकार का दोनों भौवे के बीच में दर्शन हो जाता है यह पुष्प खिलने से ज्ञान चक्षु खुल जाता है और योगी के मोक्ष मुक्ति के द्वार खुल जाते है।

अत: हे प्रिय शिष्यों इस प्रकार परिपक्व साधना करनी चाहिये जो कि **"गलेनाद पुष्पन की माला"** सिद्ध हो जाये जो कि छ: चक्र रूपी पुष्पों को ॐकार या अनहद नाद या कुण्डलिनि का ऊर्ध्वरिता प्रवास सुषम्ना नाड़ी रूपी धागे में पिरोई हुई प्रतित होती है। इस चक्र रूपी माला में इस काया अन्दर और भी पुष्प कमल समाहित है, जैसे महापद्यचक्र पुष्प-सुषम्ना चक्र गर्भपुष्प-कुण्डलिनि चक्र लिंगचक्र प्राण, अवल चिबु बलवान कर्णमूल त्रिवेणी चन्द्र अमृत ब्रह्मद्वार-अकुल-ब्रह्मरंध्र तालू अलक्ष्य अकंठ कोलहाट असंख्य निरालंभ आदि चक्र पुष्पों की माला को **"गले पुष्पन की माला"** कहा है। अर्थात् यह माला गले में उस योगी को धारण करना चाहिये, वह योगी वह शिष्य परमभाग्यशाली मोक्षमुक्ति का वरण होता है और इस प्रकार के शिष्यों पर सत्‌गुरु कृपा तथा शम्भुजती अर्थात् शिवजी का जती (अखण्डब्रह्मचार्य) स्वरूप ॐकार आदिनाथ जी की अनुकंपा होकर वह रक्षा करते है तथा गोरक्ष अर्थात् गो माने इन्द्रियों जो गो इन्द्रियों की रक्षा होकर अर्थात् इन्द्रिय संयम होकर ज्ञान को प्राप्त होकर मोक्ष मुक्ति पथ पर आरूठ हो जाता है। तो

"गलेनाद पुष्पन की माला रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला" इस प्रकार ॐकार ही नाद है ॐकार ही नाथ है तो ॐकार ही पुष्प है, ॐकार ही गुरु तो ॐकार ही ज्ञान है और ॐकार ही मुक्ति है।

इतना सब कहते हुए गुरु गोरक्षनाथ जी पुन: अपने ध्यान क्रिया में रमण हो गये।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे
श्री नाथ योगी ब्रह्म संस्कारे
नाम तृतीयोध्याय:।।

चतुर्थ: अध्याय

।। ॐकार नाद ब्रह्म।।

संध्या की बेला थी, भगवान सूर्यनारायण अस्त होने जा रहे थे। जाते जाते सारा आसमा लाल, नीले, जामुनी अनेकों रंगों से रंगीन सुशोभित हो रहा था। उनका प्रतिबिम्ब गंगा जी में जल की शोभा बढ़ा रहा था। अपने फड़फड़ाते पंखों से पंछी वापिस अपने आशियाना में आ रहे थे। वनखण्ड में से गौवें और प्राणी मायापुर के तरफ अपने बछड़ों के मिलन की आंस से दौड़ते हुए आ रहे थे और उनके पैरों तले उड़ती हुई धूल मानों गुलाल के बादल उठ रहे थे उन्हीं में से गोपाल की बांसुरी की सुरीली, मधुर धून वनविहार करती हुई कर्ण रस मधुर कर रही थी। गौवों के गले की घंटियां घुंगरू की छनछनाहट उस बांसुरी नाद में ताल मिलाई सुनते सुनते मन आत्मविभोर हो रहा था। दूर-दूर मन्दिरों में टं टं ऽ ऽ.. घण्टा नाद एवं शंख नाद सुनकर उनकी गुंजन मन की गहराई में जाकर शान्त हो रही थी।

इधर नाथ भर्तृहरि गोपीचन्द अपने धूना कर्म में व्यस्त थे बड़े ही श्रद्धा भाव से उन्होंने धूना देवता की पूजा-आरती तथा भोग लगाकर संध्या आदेश प्रणाम किया। फिर गुरुदेव को नादि बजाकर नमस्कार किया। आज दिन में भिक्षा लेने को गोपीचन्द नाथ गये थे। उन्हें कुछ मीठे-मीठे फल और कमण्डल भरके गौ का दूध भिक्षा में मिला था। अत: उन्होंने गुरुदेव को दूध फलाहार समर्पित किया। बचे हुई सामग्री प्रसाद रूप में ग्रहण करके वह गुरु सेवा में लग गये चरण सेवा में उन्हें आनन्द के साथ शान्ति भी मिल रही थी जो त्रिलोकी के नाथ, नाथों के नाथ शम्भुजती, प्रत्यक्ष शिव अवतार ऐसे गुरु गोरक्षनाथ जी की सेवा का अवसर उनका अहोभाग्य उन्हें साथ दे रहा था। अत: उन्होंने देखा श्री नाथजी गुरुजी अत्यंत शान्त एवं प्रसन्न है। तब नाथ भर्तृहरि ने प्रश्न किया हे परम हितैषी गुरुदेव..... गुरुजी ने हुंकार भरते हुए कहा "हाँ कहो भर्तृहरि क्या पूछना चाहते हो ?" तब इन्होंने कहा हे कृपावन्त नाथजी गुरुजी हमें बताईये की नादब्रह्म क्या है? और अनहद नाद क्या रहस्य है? ॐकार नाद का क्या भेद होगा ? कृपया हमारे इन शंकाओं का समाधान करने की चेष्ठा करे। तब बड़े ही प्रेमल भाव से गुरु गोरक्षनाथजी कहने लगे हे शिष्यों आप

लोकों ने तो अन्तकरण को आनन्द देने वाले प्रश्न पूछ लिये है। अतः हम नाद ॐ नाद का विवेचन करते है अतः तुम जरा ध्यानपूर्वक सुनिये

ॐकार प्रभवा नादा, ॐकार प्रभवा स्वराः।
ॐकार प्रभवा सर्वे, त्रैलोक्य सचराचरम।।

अर्थात् – यह ॐकार से ही नाद उत्पन्न हुए ॐकार से ही स्वर–शब्द–अक्षर अतः सर्वे सर्व तीन लोकी चराचर ॐकार से ही उत्पन्न हुए है। देखो अपने काया रूपी पिण्ड में जो चैतन्य है वही ॐ है जिने नाद ध्वनि जयौ है उसमें प्रणव 'अ' दृष्यतय संसार है, उस संसार का प्रणव "उ" सूक्ष्म जगत है। उस जगत का प्रणव 'म' मनोमय है। जो जगत सृष्टि के नक्षत्र लोक़–भुवलोक–तथा स्वर्ग लोक इन त्रिसृष्टि को प्रतिष्ठित करता है। यह "म" जो इन्द्रियों के परे ज्ञानवाणी, परंज्ञान का परिचय देता है और पिण्ड ते ब्रह्माण्ड इस ॐ से प्रादुर्भुत, वर्तमान और लय को प्रतिपादित करता है। ऐसा यह ॐ नाद या ध्वनि परम विराट तत्व के रूप में समस्त ध्वनियों में समस्त नाद में सर्वतः व्याप्त है। अतः यह सर्वव्यापि नाद ॐकार ही ब्रह्म का उस सत्य का यथार्थ स्वरूप है।

अतः सुनो.....

ॐ नमो शिवाय बाबू (शिष्य) ॐ नमो शिवाय।
अह निसि वाइ (वायु) मन्त्र कोण रे उपाई।।
म्यंने म्यंने अष्यरे जे देवै रे बुझायी।
ताका मै चेला बाबू सों गुरु हमारा।।

अर्थात् – हे (बाबू) शिष्यों ॐ नमो शिवाय, बोलो ॐ नमो शिवाय। ॐकार स्वरूप आदिनाथजी शिव को नमस्कार है। रातदिन प्राणवायु से (श्वास चलते रहने से ॐ सों इस मन्त्र का जाप साँस के द्वारा चलता रहता है।) इस जिवणदायी प्राण स्वरूप हंस मन्त्र अर्थात् ॐ सों का मूल कौन है और कहा से यह मन्त्र उत्पन्न हुआ, जिनके भिन्न भिन्न अक्षरों का रहस्य सद्गुरु ही जानते है। निस्संदेह जो इस मन्त्र का स्वरूप बोध हमें बताये सो वही हमारे सद्गुरु है॥ अब देखो

ॐकार आछै बाबू मूल मन्त्र धारा।
ॐकार व्यापिले सकल संसारा।।
ॐकार नाभि हृदे देवगुर सोई।
ॐकार साधे बिन सिधि ने होई।।

अर्थात् – हमारे योगसाधना तथा प्राण हंस, प्राण मन्त्र की उत्पत्ति ॐकार से ही है, हमारे पिण्ड अन्दर चैतन्य-सचिदानन्द ॐकार ही मूल धारा है। समस्त सृष्टि जगत संसार को ॐकार ने ही व्यापा है यह ॐकार ब्रह्म ही हमारे नाभि (स्वाधिष्ठान चक्र) और हृदय (अनहद चक्र) में सहजावस्था में विद्यामान है। ॐकार ही दैवत ॐकार ही सत्गुरु है इस अलख निरंजन ॐकार ब्रह्म की साधना जब तक नहीं की जाती तब तक कोई भी सिद्धियों की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अब ॐकार नाद की भी सुनो

नादै लीना ब्रह्मा नादै लीना नरहरि।
नादै लीना उमापति जोग ल्यो धरि-धरि।।
नाद ही तो आछै बाबू सब कछू निधानां।
नाद ही तै पाइयै परम निरबाना।।

अर्थात् – मूल ॐकार का अभिव्यक्त रूप नाद ही है इस कारण इस नाद ही में ब्रह्मा, नरहरि (विष्णु) और उमापति (शिव) लीन है और उनकी सब लीला की अभिव्यक्ति का माध्यम ॐकार नाद ही है इसमें ध्यान लगाकर मनचित्त का लय करके उस परमधन कैवल्यपद अर्थात् उस निर्वानि परमपद को पाना है।

अत: उस परमईश्वर परमात्मा का नाद या शब्द या ध्वनि ॐकार का ही माना जाता है। अत: यह परमात्मा परमेश्वर ॐकार नाद जो

अलेख लेखत अदेख देखत अरस-परस ते दरस जाणी।
सुनि गरजंत बाजंत नाद अलेख लेखत ते निज प्रवाणी।।

अर्थात् – अलख निरंजन ॐकार शून्य पर परंशिव अक्षर है नाद है जो लेखन में नहीं आता वह नेती-नेती निराकार वह आखों इन्द्रियादिओं से

देखा नहीं जाता वह आन्तरिक ज्ञान चक्षु से ही दिखता है। सहस्त्रगार चक्र में अनाहद नाद को सुनते हुए नाथ योगी उसकी महत्ता और व्यापकता करते है। जो उनका कहना सुनना उनकी परम योग की अनुभूति है। अतः यह परमात्मा का अनहद नाद रूप साक्षात्कार अनुभव गम्य ही है।

अब मैं इन नाद का अनुसंधान अर्थात् नाद की प्रचीति या अनुभव जो कि नादानुसंधान साधना में जपा-अजपा या ॐ-सोहं या प्राण-अपान की निरंतर क्रिया से सिद्धि हो जाती है। यह एक स्वयं फलित साधना है। सत्य तो यह है कि नाद का अनुसंधान साक्षात् "ॐ" स्वरूप शब्द ब्रह्म परमात्मा की उपासना है जिसमें अनहद नाद का श्रवण अर्थात् अनुभव होता है। इसमें स्थिति के परे परम शिव का शून्य पद में साक्षात्कार करके जीवात्मा अमृतरस का पान करता है और आत्मज्योति का दर्शन होता है। संसारी लोक बर्हिमुखता के कारण इस सूक्ष्म नाद जो निरन्तर आकाश मण्डल में ध्वनित हो रहा है उसे सुन नहि पाता, ये तो परिपक्व योगी-वैराग्य-गुरुकृपा पूर्व संस्कार आदि प्राप्ति वाले ही इस अनहद नाद की प्रचीति ले सकते है। देखो साधक निरन्तर २१६०० "हंस" सों हं का मंत्र जाप करता रहता है और अनहद नाद स्वयं सिद्ध हो जाता है। जहां साधना में सुषुम्ना में संचारित होकर ज्ञान उदय होकर रोम रोम अंग अंग में यह ॐकार रूपी अनहद व्याप्त हो जाता है। ये नाभि चक्र से प्राण उठकर हंस ऊर्ध्वरिता होकर ब्रह्मरन्ध्र में स्थित होता है वहां प्रकाश ही प्रकाश है।

अतः योगी भर्तृहरिनाथ पूछ्ते है हे गुरुदेव यह अनहद नाद का क्या अर्थ है ? तब प्रसन्न होकर गुरु गोरक्षनाथ जी कहते है। हे भर्तृहरिनाथ जैसे मैंने बताया कि ॐकार रूपी ॐ सोहं या जपा अजपा रूप अनहदनाद जो ब्रह्म प्रचीति देता है। हमारे नाथ सिद्ध ९ नाथ ८४ सिद्धों का प्राचीन और सत्य अनुभव है कि जब ब्रह्म अभिव्यक्त (प्रगट) हुआ तो सर्व प्रथम वह नाद रूप ग्रहण करता है जो नाद ब्रह्म है इस नाद शक्ति से बाद में सृष्टि उत्पन्न हुई अतः यह मूल ध्वनि निर्विकार ब्रह्म का मूल स्फोट है। मन-बुद्धि चित्त के परे अत्यंत सूक्ष्म प्रकम्ब है नाद या ध्वनि वस्तुतः दो पदार्थ के टकराव से निर्माण होती है जैसे घण्टा, घड़ीयाल, ढोल आदि जो नाद गुंजन होता है। अतः यह अनहद नाद किसी पदार्थ के टकराव से उत्पन्न नहीं हुआ है अर्थात् उसे आहत न होने वाले ध्वनि को ही अनाहद

नाद कहते है। जो अत्यंत सूक्ष्म और प्रकम्प है और यही अनहद नाद परिपक्व साधना योग में आत्मसाक्षात्कार रूप में या ब्रह्म साक्षात्कार रूप में ॐकार का ही स्वरूप में हो जाता है। यह नाद ब्रह्म या शब्द ब्रह्म योगी को काल से परे ले जाता है। अतः ऐसे ॐकार अनहद नाद मय समाधि अवस्था में काल (समय) रूक जाता है। इस कारण नाथ सिद्ध कहते है कि **"नादे बाजे, काल भागे"**

इसलिए हे अवधू उस नाथ सिद्ध साधक ने नादानुसंधान साधना के अभ्यास करने से पूर्व अपने आसन पर स्थिर होकर सर्व प्रथम घड़ी २ घड़ी लगातार ॐ.....ॐ.....ॐ..... की धुन कर चिंतन या मनन या कीर्तन करे फिर मन के अन्दर उस अनहद नाद को श्रवण करने का एकाग्रता पूर्वक अवधान करे। जिससे वह शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर लेता है। क्योंकि ॐ ॐ..... उच्चारण में जो थरथराहट होती है। उसी का आकाश में भी जो कम्पन्न होते है उनका सूक्ष्मतम रूप ही अनहद नाद है और वही ॐकार नाद है और तब वह साधक जड़ता से या माया से अलग हो जाता है जैसे विवाद-अवसाद-तनाव-क्लेश आदि से हटकर दूर हो जाता है। भक्ति रस में अभिसिंचित होकर कल्मष कषाय आदि दोषों से हटकर ॐकार नाद चैतन्य में वह लय होने लगता है और अन्तरमन की गुप्त शक्तियों, रसग्रंथियाँ खुल कर अन्तरम दिव्य रस लय कर देती है और ब्रह्म और माया का विच्छेदात्मक ज्ञान रस पाकर वह ब्रह्म ज्ञान की उपाधि को प्राप्त कर लेता है। अर्थात् कहते है कि **"ज्ञान की टोपी गोरख साजे"** अर्थात् इस ज्ञान की अमूल्य निधि अर्थात् शान्ति की टोपी उसी को सजती है जो गोरख अर्थात् गो इन्द्रियों पर संयम करके शुद्ध सात्विक संयमी जीवन जीता है। जिसका जीव शिव में एकरूप हो जाता है। जो शिव याने कल्याण शान्ति ज्ञान ब्रह्म सत आदि उपलब्धि को प्राप्ति हो जाये। अतः सुनो

निरंजन माला निराकार ज्वाला। कवल गरजे शब्द उजियाला।
छसं सहंस इकविस मेला, नख सख पवन ले बाधिबे भेला।।
नाद अनहद निहशबद बाणी। जीव थैशिव होइबा प्राणी।
देही बदेही अविचल थीरं रुध्री उलटि फिरि होइबा खीर।।

अर्थात् – निरंजन का ध्यान करना ही माला है, जहां ब्रह्मरन्ध्र में निराकार

ज्वाला (चैतन्यज्योत) सदा प्रकाशित है और सहस्त्रदल कमल में ॐकार नाद की गर्जना होती है। जैसे बिजली ही चमकती है। २१६०० श्वास-प्रश्वास काया में व्याप्त है।

अर्थात् – यही ॐ रूपी प्राण जो पवन शिश से लेकर नख तक सम्पूर्ण शरीर में मेला अर्थात् रमन करता है। इसी प्रकार यह ॐकार अनहदनाद की शब्द वाणी जब जीव सुनता है तो वह जीव शिव में (शिवत्व में) मिलन हो जाता है और देहकाया में प्रवाहित रूधिर रक्त तथा वीर्यरस ऊर्ध्वरिता होकर सहस्त्रागार में प्रवेश कर खीर अर्थात् अमृत बन जाता है और ज्ञान होकर वह देह का विदेही बन जाता है। अतः हे भर्तृहरि गोपीचन्द हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वर तथा अनन्त साधक को यह अनहद नाद रूपी ॐकार को भजना चाहिए।

अतः नाथ भर्तृहरि बड़ी कुतुहल पूर्वक कहने लगे, हे गुरुदेव हम इस ॐकार नाद बिन्द को कैसे सूने तब गुरुदेव जी प्रसन्नता से कहने लगे हे अवधू भर्तृहरि यह तो हमने पहले ही बहुत कुछ बताया अतः पुन स्पष्ट रूप से सुन

नादबिंद बजाई ले दोऊ पूरिले अनहद (नादा) बाजा।
एकंतिका वासा सोधिले भरथरी कहे गोरक्ष मत्स्येन्द्र दासा।।

अर्थात् – हे अवधू प्राणायाम करके देह नसनाड़ियां शुद्ध करके मन चित्तवृत्ति निरोध करके नाद-बिन्दु अर्थात् ॐकार अनहद साधना में तत्पर सावधान एवं एकाग्र होना चाहिए इस प्रकार हे भर्तृहरि एकान्त में निवास करके अथवा सहज शून्य सहस्त्रागार चक्र में आत्मा लय करके नादाबिन्दु ॐकार अनहद साधना करनी चाहिए। हृदय स्थित अनहद नाद विनयास अपनी परमात्मा मय चैतन्य मय उपस्थिति प्रगट करता है। ऐसे शब्दब्रह्म, नादब्रह्म रूपी ॐकार नाद-अनहद के विषय में हम गुरु मत्स्येन्द्रनाथ जी के दास कह रहे है।

इसी प्रकार से और सुनो

सबदहि ताला सबदहि कूंची शबद हि सबद समाया।
सबद (नाद) हिं सबद सूं परचा हुआ शबद हि सबद समाया।।

अर्थात् – इस नादानुसंधान ॐकार साधना में शब्द (नाद) ही ताला है

क्योंकि आत्मतत्व को गुप्त रखता है जो शब्द (नाद) इस सूक्ष्म आत्मा का स्थूल आवरण है और इसके मूल में जाना और वापस आने के लिये शबद (नाद) की धारा पकड़ना पड़ता है। इसी कारण शबद (नाद) ही कुंची भी है। जब अनहद नाद सुनना अर्थात् स्थूल नाद (शबद) सूक्ष्म नाद में विलीन हो जाता है। जब प्राणायाम करते-करते प्राण सुषुम्ना नाड़ी द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में स्थिर होने लगता है तब अपने अन्दर ही कभी घंटे की तो कभी बंशी, वीणा, भ्रमर की गुंजन जैसे सूक्ष्म नाद सुनाई देता है फिर जैसे अवधू समाधि में अग्रसर हो जाता है तब सब लय होकर प्राण शिश के ब्रह्मरन्ध्र में स्थिर होता है और अवधू शून्य अवस्था में जाकर आत्मासाक्षात्कार या शिव साक्षात्कार कर लेता है अत: यह अनहद शब्द या ॐ या ब्रह्म का प्रकाश सब अद्वैत अर्थात् एकत्व एकरूप हो जाता है। अभेद हो जाता है।

अत: हे नाथ योगी भर्तृहरि गोपीचन्द सुनो अजपा गायत्री हंस "**सोहं हं**" के अन्तर में महामंत्र यही ॐ ही निहित है और इस ॐकार से ही समस्त ध्वनियाँ विकसित होती है और उसी में ही विलीन हो जाती है। हमारे शरीर में यह ॐ की चरमसत्ता, शब्द ब्रह्म या परम परमात्मा शिव हमेशा अपने आपको प्रगट करते रहते है और जिस साधना क्रिया द्वारा अपने शरीर में सहजता से अनुभव होता है। उसे ही नादानुसंधान कहते है और जब यह नाद अनुसंधान अपने अन्दर चरमसीमा को प्राप्त होता है तब हमारे अन्दर परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है। काया दोषो दु:ख निद्रा क्षुधा व्याधियाँ यहां तक की जरा मृत्यु आदि से मुक्त हो जाता है। उन्मत्त मोह मायामय आसक्तियाँ आदि बातों से त्रस्त मन स्थिर होकर एकाग्रता को प्राप्त कर आत्मसाक्षात्कार आत्मानुभव आत्मादर्शन आदि से वह प्रत्यक्ष शिव ही बन जाता है। इस प्रकार हमने "**नाद बाजे काल भागे ज्ञान की टोपी गोरख साजे**" यह भी ॐकार मय है। यह बता दिया।

अत: हम नादानुसंधान साधना में बताने जा रहे है। जरा गौर से सुनो जैसे हम इच्छा के साथ जो कर्म करते है वह बिन्दु है! शिव की शक्ति से नाद उत्पन्न होता है नाद से बिन्दु उत्पन्न होता है। अर्थात् शिव स्वरूप बिन्दु और बीज स्वरूप शक्ति का सम्बन्ध ही नाद है। जिसे ॐकार स्वरूप नाद का अविष्कार अनहद नाद में होता है। यहां बिन्दु के स्वाद और नादानुसंधान से साधक योगी जीवमुक्त होकर सिद्ध देह में स्थित होता है।

अतः इस नादानुसंधान में हमारा साधना सिद्धान्त सुनो।

ब्रह्म–ग्रन्थिर्भवेद भिन्ना हयानन्द–शून्य सम्भवः।
विचित्रः क्वणको देहेऽनाहतः श्रुयते ध्वनि।।
दिव्य ग्रन्थों दिव्य चक्षु स्तेजस्वी स्यादरोगवान्।
सम्पूर्ण हृदयः शून्य आरम्भे योगवान्भवेत्।।

अर्थात् – जब प्राणायाम से ब्रह्मग्रन्थि का भेदन होता है तब हृदयाकाश में से निकली आभूषण की सी विचित्र आनन्द दायिनी अनाहद ध्वनि सुनाई पड़ती है और काया से दिव्य गंध निकलती है। साधक दिव्य चक्षुयुक्त हो जाता है। उसके हृदय में योगज्ञान का प्रकाश ही प्रकाश भर जाता है। यह प्राणायाम–मुद्राबन्ध, चक्रभेदन और कुण्डलिनि के प्रबोधन द्वारा प्राथमित अवस्था कहलाती है।

द्वितीयायां घटीकृत्य वायुर्भवति मध्यगः।
दृढासनो भवेद्योगी ज्ञानी देवसमस्तथा।।
विष्णुग्रन्थिर्यदा भिन्ना परमानन्द सूचकः।
अतिशून्य विभेदश्च भरीशब्दस्तथा भवेत्।।

अर्थात् – यह दूसरी अवस्था है। जिसे घटावस्था कहते है। यहां प्राण और अपान वायु नाद और बिन्दु को सम्मिलित करके विशुद्ध चक्र में प्रवेश करती है। तब दृढ़ सिद्ध आसन वाला योगी ज्ञान सम्पन्न देवताओं समान हो जाता है। तब विष्णुग्रन्थि का भास होकर जो अतिशून्य कंठ स्थान में जो विशुद्ध चक्र का चैतन्य मय होकर परमानन्द की प्राप्ति होती है। जहां भेरी का नाद (शब्द) सुनाई पड़ता है जहां साधक मग्न हो जाता है। अतः इस प्रकार साधना करते–करते तृतीय अवस्था देखो जो

तृतीयायां ततो भित्वा विहायो मर्दल ध्वनि।
महाशून्य तदायाति सर्वसिद्धिसमाश्रयम्।।
चित्तानन्दं ततो जिव्हा सहजानन्द सम्भवः।
दोषदुःख–क्षुधानिद्राजरा मृत्यु विवर्जितः।।

अर्थात् – तीसरी पश्चिम अवस्था है इसमें जब प्राणवायु विशुद्धचक्र को भेदन करते हुए सभी केन्द्र महाशून्य अर्थात् भौहों के मध्यवर्ती आकाश में

प्रवेश करती है तब मर्दल नामक वाद्य-विशेष की ध्वनि सुनाई पड़ती है और चितानन्द को जीत लेने पर अमनस्क अवस्था उन्मनी समाधि की प्राप्ति हो जाने पर योगी को सहजानन्द की प्राप्ति हो जाती है। तब दोष जो चित्त के विकार-मल सुख दु:ख निद्रा बूढ़ापा और मृत्यु से योगी छूट जाता है। अत: अन्त में प्रयास और अभ्यास करने पर आगे होता है कि

रुद्रग्रन्थि ततो भित्वा शर्वपीठभतोऽनिलः।
निष्पतौ वैणवः शब्दः क्वणवीणा क्वणो भवेत्।।

अर्थात् – यह ॐकार नाद की चतुर्थ अवस्था को निष्पत्ति अवस्था कहते है। जहां प्राणवायु रुद्र ग्रन्थि का भेदन करके ब्रह्मरन्ध्र में आती है। इसे निष्पत्ति अवस्था कहते है। इस अवस्था में बंशी और वीणा का शब्द-नाद सुनाई पड़ता है।

इस प्रकार नादानुसंधान का अभ्यास में प्रथम समुद्र मेघ भेरी आदि नाद सुनाई पड़ते है अभ्यास बढ़ने पर बंशी वीणा भ्रमर-गुंजना दी नाद सुनाई देते है। आगे सूक्ष्म से सूक्ष्म नाद सुनाई देगा तब उसी एकाग्रता बढ़ाके उसी ॐकार सूक्ष्म नाद में लय हो जायेगा।

अत: हे भर्तृहरि गोपीचन्द इस ॐकार नाद से अनहद नाद द्वारा परमानन्द में लय होने का एक सरल साधन बताते है, उसे भ्रामरी प्राणायाम कहते है। उसमें आसन में सीधा बैठकर दोनों कान अंगुली से बन्द करे गहरी श्वास अन्दर लेकर कुम्भक करे कण्ठ में भ्रमर की आवाज निकालते हुए धीरे-धीरे रेचक नाक से करे जोकि मुँह और आँखे बन्द रखना चाहिए ऐसा नित्य प्रतिदिन प्रात: अभ्यास करने पर ४-५ अवस्था में ही साधक यशस्वी हो जाता है। इसमें प्रथम अवस्था में श्वास छोड़ते समय भ्रमर की धीरे-धीरे आवाज कर गले विशुद्ध चक्र पर ध्यान केन्द्रित करना है जब तक प्रथम आवाज की उत्पत्ति न हो तब तक नाद पर ध्यान केन्द्रित करे। अत: द्वितीय अवस्था में वैसे ही क्रिया करके श्वास छोड़ते समय दोबारा ॐ का उच्चारण करते हुए छोड़े जिसमें एकाग्रता करने पर पंछिओं की बोलने की आवाज ध्वनि आयेगी अब तृतीय अवस्था में कान बन्द करके मुख बन्द करके प्रथम दूसरी ध्वनि फिर बाद में प्रथम आवाज ध्वनि फिर श्रवण करने का अभ्यास करे। यह अभ्यास बार-बार करने पर एक

विशिष्ठ आवाज सुनाई देने लगेगी अतः चतुर्थ अवस्था में रात्री के एकांत में या प्रातः एकांत में अपने आसन में बैठे और ना कान बन्द करे और नाही मुख से उच्चारण करे केवल प्रथम और द्वितीय सुनी हुई नाद को ग्रहण करे। इसमें पहली नाद सुने उसे तेज होने दे तब दूसरी ध्वनि धीरे से प्रारंभ होगी जिसपर तुम्हें एकाग्र ध्यान देना है। यहां दूसरी ध्वनि तेज होने लगेगा तब तृतीय विशिष्ठ आवाज ध्वनि निर्माण होती है। इस प्रकार नादों पर ध्यान करना चाहिए और ऐसा अभ्यास करने पर आशा-निराशा सुख-दु:ख इत्यादि का नाश होकर एक परम शान्ति को साधक प्राप्त होता है। उत्तरोत्तर प्रगति करने पर वह आत्मज्ञान, आत्मदर्शन, आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त होता है और इस प्रकार

सदा नादानुसंधानात्क्षीयन्ते पापसंचया।
निरंजने विलीयते निश्चितं चित्तमारूतो।।

अर्थात् – ॐकार नाद के अनुसंधान से सदा संचित पापों-तापों का क्षय अर्थात् नाश हो जाता है। अतः हे अवधू तुम ॐकार नाद-अनहद नाद का अनुसंधान मेरे कथन अनुसार करो। तुम्हारा कल्याण होगा।

अतः जैसे अपने आदेश गायत्री में कहा है **एको देवा सर्वत्र सेवा, ज्योत पाटले परसो देवा। कानन कुण्डल गले नाद करो सिद्ध नाद ॐकार।।** जैसे की हमने ॐकार का अनेक प्रकार का विस्तार एवं ॐ का महत्व बतलाया है जो कि वह सर्वत्र व्याप्त है। जैसे ॐकार बीज, ॐकार मूल के विषय में तथा ॐकार प्राण – ॐकार नाद – ॐकार अनहद आदि पिण्ड ते ब्रह्माण्ड विषय में उसी प्रकार ॐकार आदि ॐकार गुरु रूप में, ज्ञान ॐकार शब्द रूप में शब्दब्रह्म ॐकार प्रणव – ॐकार अक्षर जो ब्रह्म विद्यारूप में तथा ॐ कार रूपी ॐकार आदिनाथजी ॐकार ज्ञानोदय रूपी उदयनाथजी जो ॐकार रूपी सूक्ष्म ज्ञान मेरे गुरु मत्स्यन्द्रेनाथजी ने मत्स्य गर्भ में सुना था और वहां से नाथ सम्प्रदाय की गुरु शिष्य परम्परा की नीव डाली गयी थी और भी ॐकार स्वरूपी आत्मज्ञान-आत्मसाक्षात्कार आत्मज्योति आदि द्वारा मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार ॐकार के **'एको बहुस्यामी'** जैसे अनन्त स्वरूप से ॐकार इस धरापर कण कण में विद्यामान है और इसकी जो हम

उपासना–आराधना–पूजा–साधना–इत्यादि करते है। इसी को कहा गया है। "**एको देवा**" अर्थात् एक ऊँकार को ही ऊँकार देवता कहा है और **सर्वत्र सेवा** अर्थात् उपरोक्त ऊँकार के अनेकों रूप में हम सेवा करते है। "**ज्योत पाट ले परसो देवा**" अर्थात् जब नाथ योगेश्वर नाथ अवधू योगी को अपने साधनायें करते समय अपने ज्ञान पटल पर जो अनहद रूपी ऊँकार या ज्योति रूपी ऊँकार (प्राण) अर्थात् ज्योति आत्मसाक्षात्कार या ज्योति रूपी ज्ञान हो जाता है उस ज्योति प्रकाश को उस ज्ञान प्रकाश को ही कहा गया है कि **ज्योत पाट के परसों देवा** अर्थात् इस ऊँकार रूपी देवता का जो विराट विस्तार ब्रह्माण्ड ते पिण्ड या पिण्ड ते ब्रह्माण्ड में जो अवस्थित चैतन्यरूपी परमेश्वर को ही ऊँ देवा कहा गया है।

इस प्रकार **जोत पाट ले परसो देवा**। यह शब्दार्थ सिद्ध हुआ।

अत: हम आगे बताते है **कि कानन कुण्डल गले नाद। करो सिद्ध नाद ऊँकार।**

अत: हे भर्तृहरि गोपीचन्द हमारे नाथ सिद्धों के कानों में जो कुण्डल है। जिसे दर्शन भी कहा जाता है। जबकि **दर्शनी योगी शिव की काया** का मान देकर उस दर्शनी योगी को शिवयोगी समझकर दर्शन अर्थात् नमस्कार या साक्षात्कार कहा जाता है। इन्हे मुद्रायें भी कहते है जो ऊँकार के 'म' मात्रा का रुद्र स्वरूप भी कहा जाता है। 'म' + रुद्र = मुद्रा कहा जाता है। ऐसे कुण्डल या दर्शन या मुद्रा को मंत्र रूप में कहा है कि

दर्शन (कुण्डल) का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ऊँ गुरुजी ऊँ नाद सों मुद्रा कौन मुद्रा खेचरी बोलिये कौन मुद्रा भोचरी बोलिये, कौन मुद्रा धरे ध्यान, कौन मुद्रा कथे ज्ञान ? ताम्बे की मुद्रा खेचरी बोलिये स्फटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये गेण्डे की मुद्रा धरे ध्यान। मृतक की मुद्रा कथे ज्ञान श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी के कान नीचे धरती ऊपर आकाश रक्षा करे श्री दादा गुरु मत्स्येन्द्रनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अर्थात् – ऊँ गुरु जी अर्थात् गुरुदेव कहते है (गुरुवाणी) या ऊँ सों अर्थात् हमारे श्वास–प्रश्वास, या जपा–अजपा प्राण या अपाण या चन्द्र–सूर्य इन्हे मुद्रा या कुण्डल स्वरूप कहा गया है। अर्थात् योगी के प्रत्येक श्वास के साथ

मुद्रा है जपा अजपा अर्थात् निरंतर जप (चिन्तन) के साथ यह दोनों कुण्डल है। प्राण-अपाण अर्थात् प्राणायाम तथा ध्यान के साथ भी यह दोनों दर्शन एक संलग्न एवं निरंतर है। इस प्रकार के दर्शनी योगी ने कौन सी साधना या मुद्रा करनी चाहिये जैसे खेचरी मुद्रा करने वाला योगी तांबे की मुद्रा पहनायेगा जो अमृतपाण करता हुये अमर काया सिद्ध हो जाता है। उसी प्रकार स्फटिक अर्थात् स्वच्छ-निर्मल वृत्ति योगी स्फटिक (कुण्डल) मुद्रा पहनकर भोचरी मुद्रा की साधना करके अन्तकरण निर्मल करके निर्गुण निराकार समाधि में जा सकता है। उसी प्रकार गेण्डे जैसे स्थूल प्राणी की मुद्राये पहनने वाला साधक अखण्ड अवस्थित गेण्डे प्राणी समान अचल समाधि का ध्यान लगाता है। और जो साधक मृतिका का अर्थात् (मिट्टी के) धरती स्वरूप कुण्डल पहनता है और इस ॐकार की साधना करता है। वह साधक धरती के सभी गुण को आत्म साथ करके अर्थात् दया, क्षमा, शान्ति, सहशीलता, त्याग वैराग्य इ० गुण सम्पन्न होकर मृतिका के कुण्डल धारी नाथ योगी ज्ञान को कथन करता है जो गुरु कृपा से गोरक्ष अर्थात् इन्द्रियों पर संयम करता हुआ अपने गुरुजनों की कृपा अनुकंपा को प्राप्त कर लेता है। अत: सत्‌गुरु उसकी हमेशा रक्षा करते है।

इस प्रकार इन कुण्डलों का महात्म्य है। इन कुण्डलों को चन्द्र-सूर्य स्वरूपी भी मानते है तो कोई इन्हे शब्द-अशब्द, नाद-अनाद (अनहद नाद) तो कोई सृष्टि स्वरूप उत्पत्ति-लय कहते है। इस प्रकार इन दर्शनों को नाथ सिद्धों ने अनेक प्रकार अनेकों उपाधियों से अलंकृत किया है। यह नाथ सिद्ध सम्प्रदाय का मुख्य संस्कार ॐकार रूपी संस्कार तथा नाथों की एक पहचान, एक अस्तित्व या निशानी या नाथ सिद्धों का आदर्श मानते है। इसलिये इन दर्शनी योगेश्वरों को दर्शनी योगी शिव की काया अर्थात् शिव समान की उपाधि दी है जो शिव प्रत्यक्ष ॐकार स्वरूप है। तो **कानन कुण्डल गले नाद**। अत: गले नाद का तात्पर्य गले में संस्कारित किया हुआ नाद जनेऊ को ही उद्‌घोष किया है। जो नाद जनेऊ सम्पूर्ण ॐकार स्वरूपी ही है। देखो इस नाद जनेऊ का मन्त्र भी सिद्ध करवाता है कि

नाद जनेऊ मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि में

शून्य, शून्य में ॐकार। आओ सिद्धों नाद बिन्द का करो विचार। नादे चन्द्रमा नादे सूर्य नाद रहा घट पिण्ड भरपूर नाद काया का पेखना बिन्द काया की राह। नाद बिन्दे योगियाँ तीनों एक स्वभाव बाजे नाद भई प्रतित आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी अतीत। नाद बाजे काल भागे ज्ञान की टोपी गोरक्ष साजे डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई बाडे घाटे टल्ल जागे सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई टिल्ला शिवपूरी का स्थान चार युग में मान मूल चक्र मूलस्थान पढ़ मन्त्र योगी नाद बजावे छत्तीस भोजन अमृत कर पावे बिना मंत्र योगी नाद बजावे तीन लोक में कही ठौर न पावे जो जाने नाद बिन्द का भेव आप ही कर्ता आप ही देव संध्या शिवपूरी का बेला अनन्त कोटी सिद्धों का युग-युग मेला इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण मया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

अतः इस नाद जनेऊ मन्त्र से यह स्पष्ट होता है कि यह पूर्ण संस्कार ॐकारमय ही है। अर्थात् सृष्टि सृजन उत्पत्ति से पूर्व सब शून्य था तब ॐकार उत्पन्न हुआ जो अनहद नाद स्वरूप था। अतः सिद्धों उस अनहद नाद बिन्दु पर विवेक करने पर यह बिन्द रूपी नाद सर्वत्र व्यापक है समाहित है और योगी के काया में यह बिन्द सूर्य रूप से नाभि स्थित मनिपुर चक्र में तथा सहस्त्रगार चक्र रूप में शिश में चन्द्र स्वरूप में है। अर्थात् जिससे अमृतपाण होता है तो **नादे चन्द्रमा नादे सूर्य नाद रहा घट पिण्ड भरपूर** तो यह नाद बिन्दु रूप में काया के उज्ज्वल तथा विर्यवन्त रूप में सम्पूर्ण कायापिण्ड में भरपूर व्याप्त है। यह नाद काया का सूक्ष्म और सिद्ध स्थान है जिसका बिन्द अर्थात् ओजस रूपी वीर्य सर्व काया में मार्गस्त रहता है। सदा सदा चैतन्य रूप से कायापिण्ड में भ्रमण करता रहता है। जब नाद-बिन्द और योगी की एक स्वभाव अर्थात् उस योगी का ब्रह्मचर्य योगसाधना ध्यान जब एक स्वभाव का अर्थात् एकाग्र होता है। तब **(नाद बाजे भई प्रतीत)** अनहद नाद का आवाज प्रतीत होकर सुनायी पड़ती है। तभी सद्गुरु की कृपा होती है और आत्मसाक्षात्कार होता है तब इस नाद सुनाई देने पर आत्मसाक्षात्कार होने पर वहां काल भी भाग जाता है और ॐ रूपी अनहद नाद द्वारा आत्मदर्शन आत्म ज्ञान की उपलब्धी (टोपी पहरी) हो जाती है। जिसको हमने प्राप्त किया है। **टिल्ले, बाडे घाटे टिल्ला, पीर मढीयाँ-पीठ पाटेश्वरी डंखनी शंखनी सकेसर**

नगरकोट महामाइ आदि शक्ति पीठों पर टिल्ला शिवपूरी (कैलास पर्वत) जो नाथ सिद्धों का मूल स्थान है इन सभी स्थानों पर चार जुगों से मान मर्यादा अनुसार नाथ सिद्ध योगी यहां मथ्याटेक या नाके घाटे मथ्या टेक आना है और उन्हें नादि बजाकर आदेश करना है। यह भेष भगवान की मर्यादा है, इस प्रकार यह मन्त्र का उच्चारण करते हुए तथा मान पान मर्यादा अनुसार आदेश कर मथ्या टेकेंगे तो छत्तीस भोजन अर्थात् अनेक प्रकार के पदार्थ युक्त स्वादिष्ट भोजन (का भोग) अखण्ड प्राप्त होता है और यही इस मन्त्र सिद्धि का प्रभाव है कि सर्वत्र तीन लोक में मान मर्यादा तथा इस प्रकार भोजन खान पान की कभी कमी नहीं आयेगी। किन्तु इस मन्त्र के बिना ही आचरण करोगे तो तीन लोक में कहीं भी ना स्थान मिलेगा ना भोजन मिलेगा ना मान पाण मर्यादा मिलेगी। इस प्रकार इस ॐकार प्रणव नाद (जो नादि पवित्री सह जनेऊ में है) का भेद या इसका सर्व व्यापक ॐकार शक्ति मय, सर्व सिद्धिदायक का रहस्य जो साधक जानता है वह आपही कर्ता कर्विता है आप ही आप देवी देवता स्वरूप है। इस प्रकार अनंत कोटी सिद्धों का यह शिवपूरी (कैलासलोक) या समुचि सम्पूर्ण शैव योगी नाथ सम्प्रदाय को मेला है। जो युगों-युगों से परम्परानुसार चलता आया है। इस प्रकार यह नाद जनेऊ मंत्र सर्व प्रकार से ॐकार रहस्यों से पूर्ण और व्यापक है।

अतः हे शिष्यों यह कर्ण कुण्डल यह नाद जनेऊ तथा भगवा बाना यह जैसे ॐकार मय है वैसे ही नाथ सिद्धों के पास जो भी ॐकार नाद युक्त अलंकार तथा साहित्य है जैसे शंख ध्वनि, नागफनी का ध्वनिनाद, शृंगी का नाद शृंगार, डमरू का ॐकार शब्दों का नाद, तुम्बडीनाद, एकतारा, चिमटा का नाद, झांजरी का नाद, यह जितने भी नाथ सिद्धो के साज शृंगार साहित्य है जिनमें से अनन्त सूर, ताल, लय लयात्मक नादों का प्रगटन होता है, मधुर संगीत के सप्त सूर ताल का नाद ब्रह्म प्रगट होता है। यह सभी ॐकार प्रणव नाद से ही बने है। जिनका सूक्ष्म रूप से सुनोगे तो ॐकार धुंद ॐकार नाद का ही अनुभव होगा प्रचीति होती क्योंकि यह सभी नाद वाद्य के साहित्य बजाते समय अपने नाभि चक्र से ही नाद को वायु द्वारा उठाना पड़ता है।

संसार में भी जितने भी नाद है वह सब जिसमें अन्तर मन

आनंदित होकर चैतन्यमय होता है। वह सब चैतन्यरूपी ॐकार नाद का ही अविभाज्यंक संवेदनात्मक प्रणव नाद है। जैसे नागदेवता जब पुंगी से बीन बजती है, तो वह मोहित होके डोलते है। हिरण-हिरणी भी नाद से बेसूद हो जाते है। इस नाद ध्वनि से हाथी जैसे बलवान प्राणी भी वश में हो जाते है। गायों का दूध संगीत में निकालना इन नादों से वृक्ष पौधे फूल फल भी पल्लवित हो जाते है। मेघ मल्हार के गान, औचक वर्षा होना दीपक राग से दीपक जल जाना यह सब नाद की अलौकिक शक्ति सिद्ध होती है। अपने नाथ सिद्ध शाबर तंत्र-मन्त्रों में भी यही नाद शक्ति नाद तरंग नाद ब्रह्म की शक्तियाँ विद्यामान है। जिससे यह हमारा शाबरी तंत्र मंत्र जगत विख्यात है। अपने शाबर मन्त्र उच्चारण ने जो ध्वनि कम्पन या नाद के तरंग जब टकराते है तब यह सूक्ष्म शक्तियाँ विराट रूप लेकर कार्य करती है। जैसे जल से अधिक शक्ति उसके बाष्प में होती है वैसे स्थूल नाद से सूक्ष्म नाद कम्पनों में अधिक शक्ति होती है। अतः मन्त्र तंत्र विधियाँ गुप्तता एवं अन्तरमुख अन्तर नाद से त्वरित सिद्ध होती है।

घड़ीयाल पर चोट मारो तो झनझनाट उत्पन्न होती है। ढोल पर या डमरू बजाने से डमडमाट उत्पन्न होता है। उसी तरह ॐ ऽऽऽ के उच्चारण से एक ऐसी स्वर लहर एक ऐसा नाद प्रगट होता है और क्षणमात्र से सारे ब्रह्माण्ड में फैलकर सृष्टि के सारे अनु रेनु जोड़ जोड़ कर सब संघटित शक्ति तथा सिद्धि का रूप लेकर ॐकार का नादब्रह्म तैयार हो जाता है और वह अत्यंत प्रभावी होता है। अतः ॐकार उपासना या ॐकार प्रणव उपासना श्रेयस्कर है अध्यात्मिक तथा भौतिक प्रगति को द्योतक है।

इतना कहते हुए गुरुदेव शान्त चित्त एक टक देखते रहे। कुछ समय पश्चात् गुरुदेव की चुप्पी को तोड़ते हुए योगीराज भर्तृहरि ने पूछा है गुरुदेव यह ॐ तथा प्रणव में क्या अन्तर है और यह कैसे प्रगट होते है? उनके तरफ देखते हुए गुरु गोरक्षनाथजी स्मित करते हुए कहने लगे बड़ा ही अच्छा प्रश्न पूछा अतः सुनो।

जहां क्रिया है वहां कम्पन अवश्य है और जहां कम्पन है वहां शब्द निःसन्देह होगा। अर्थात् सृष्टि रूपी क्रिया में इसी अवस्था में प्रकृति की सबसे पहले जो हिल्लोल की ध्वनि या उस कम्पन का नाद ही आदिनाथ रूपी ॐकार आदिनाथ ईश्वर को एक से अनेक **"अकोंबहुस्यामि"** होने की

इच्छा जाग्रत होती है तब इस ब्रह्माण्ड प्रकृति में कम्पन होते है और सारी ब्रह्माण्ड प्रकृति के कम्पन से जो सबसे पहले शब्द या नाद का अविर्भाव या प्रगटन होता है उसी को प्रणव नाद कहते है। उसी प्रकार समस्त प्राणवृत्तियाँ ईश्वर में लीन हो जाती है उसे प्रणव कहते है और सब उन्हें प्रणाम करते है। उसे भी प्रणव कहते है अतः हम सब आदेश नाथ सिद्धों का आदेश नाम ॐकार का यह भी प्रणव ही है। प्रणव अर्थात् जो नित्य नवीन रहता है जिसका क्षय नहीं होता। जो एक ही स्थिति में नेती नेती बना रहता है वह प्रणव है और हे योगेश्वरों हे अवधू जब हम प्राण को मूलाधार से सुषम्ना द्वारा ऊपर उठाते हैं तब दिव्य नाद की अनुभूति होती है। यह ॐकार ऊपर उठते हुए ऊपर चलते हुए जो जो चक्र का भेदन करते हुए नाद चलता है तो प्रत्येक चक्र के उनके अपने-अपने नाद सुनाई देते है। जिसे हम अनहद नाद कहते है और जब अन्त में जब सहस्त्रगार चक्र में पहुँचकर इस अनहद का सूक्ष्मतम नाद का साक्षात्कार होता है उसे ही प्रणव नाद कहते है। यह प्रणव एक अखण्ड, अद्वित चिन्मात्र प्रणव है। जो अनादि, अनंत अविनाशी है। अब सुनो ॐकार किस कारण कहा जाता है। इसलिए की ॐकार का उच्चारण करने में प्राणों को ऊपर खींचना पड़ता है प्राणरूपी ॐकार उठाना पड़ता है। इसी कारण हमको ॐकार कहा जाता है अर्थात् **कानन कुण्डल गले नाद करो सिद्धो नाद ओंकार** अतः हे सिद्धो आप नाद ॐकार उठावो और प्रणव अर्थात् नमस्कार अर्थात् आदेश करो। प्रणव कहने का कारण उसका उच्चारण करते समय उसे उस ॐकार को या सत्गुरु को अपने इष्टों को पीर, महन्तों को आदि आदरणीय को आदेश करो प्रणाम करो। इसलिए उसका नाम प्रणव है।

और भी कहता हूँ कि इस ॐकार और प्रणव में थोड़ा ही अन्तर है। जैसे कि यह प्रणव नाद (अनहद नाद) मन-चित्त-बुद्धि के निरोध होने पर ही सुनना संभव है और ॐकार उसी नाद का उसी अनहदनाद का गौण रूप से स्थूल रूप से उच्चारण करना या बोलना मात्र है। अर्थात् ॐकार यह त्रिगुणात्मक सगुण ब्रह्म है तो प्रणव उसी का निर्गुण ब्रह्म है अतः सुनो

कानन कुण्डल गल विच नाद।
करो सिद्धो नाद ओंकार ॥

इस प्रकार अपने गुरुदेव के यह अनमोल वचन यह गोरखबानी

सुनते-सुनते भर्तृहरि गोपीचन्दनाथ दोनों अत्यंत दिग्मूढ़ हो गये। आगे वह कुछ नहीं बोल पाये उनके मुखमंडल पर आनन्द तथा समाधान स्पष्ट दिखायी दे रहा था। वह दोनों ही एक अत्यंत गहरे आनन्द में समा गये थे। मानो वहां का सम्पूर्ण ॐकारमय ज्ञान में सब कुछ लीन होने जा रहा था फिर छायी स्थबद्धता और शान्ति उन्होंने गुरुदेव को नद्मस्तक होकर नमस्कार किया प्रणाम किया और सत्गुरुदेवा पुनः अपने ध्यान समाधि में लीन होने लगे।

।। इति श्रीनाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे
ॐकार नादब्रह्म नाम चतुर्थोऽध्यायः।।

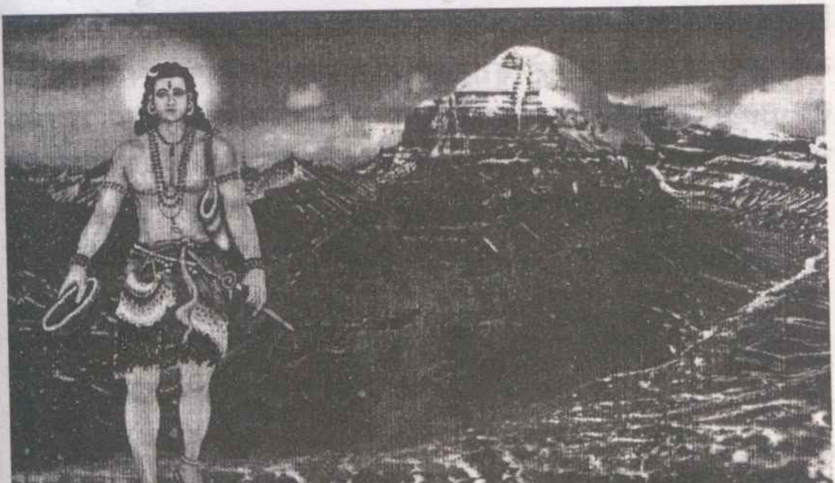

आगे आगे गोरख जागे (कैलाश भ्रमण)

पंचम: अध्याय

।। ॐकार महात्म्य।।

अलख निरंजन–अलख निरंजन –ऽ–ऽ... योगीराज गोपीचन्द बहुत देर से उस मकान सन्मुख खड़े–खड़े आवाज दे रहे थे। भगवा कोपिन पहरे हुए तेजस्वी मुखमण्डल भस्मी त्रिपुण्ड ऐसे नाथ सिद्ध गोपीचन्द जी भिक्षा के प्रति प्रतिक्षा कर रहे थे। उन्हें आज पूर्ण मायापुरी में कुछ भी भिक्षा नहीं मिली थी वह चिन्तित थे मध्यान समय हो रहा था, गुरुदेव को अवश्य भुक लगी होगी और गुरुभाई भर्तृहरिनाथ भी मेरा इंतजार करते होगे अगर आज यहां भी भिक्षा नहीं मिली तो क्या करेंगे इस चिन्ता में सोचते थे ही तो इतने में एक हसमुख सुहागन बहुत सारी भिक्षा लेकर आयी और नाथजी महाराज के झोली में डाल दी और बहुत नम्रता से नमस्कार किया तब सौभाग्यवति भव पुत्रवतिभव ऽऽऽ कहते हुए गोपीचन्दनाथ ने बड़े ही प्रसन्नता के साथ उन्हें आशीर्वाद दिया और वह चल पड़े उन्हें शीघ्र ही गुफा में पहुँचना था। जब वह गुफा में पधारे तो दोनों गुरुभाईयों ने मिलकर भोजन तैयार किया और गुरुदेव के संमुख भोजन प्रस्तुत किया। तब गुरुदेव बहुत आनन्द से भरपूर थे भोजन बड़े ही सन्तोष से कर रहे थे। तब उन्होंने गोपीचन्द का अन्तर भाव को समझते हुए कहने लगे देखो गोपीनाथ अपने नाथ सिद्धो का भिक्षा के प्रति सिद्धान्त है वह यह है कि

आप मिला तो दूध बराबर मांग लिया लो पाणी।
झगड़ लिया तो रक्त बराबर ऐसी भिक्षा नहीं खानी।।

अत: हे अवधू जो मिलता है वही सन्तोषपूर्वक अपनाना चाहिए अत: व्यर्थ चिन्ता नहीं करनी चाहिए और गुरुदेव विश्राम करने लगे इधर दोनों गुरुभाईयों ने अपना खाना पान और अन्य सभी कर्म करते रहे। काफी समय पश्चात् जब गुरुदेव अपनी आसन पर निश्चल एवं शान्त भाव में बैठे थे। वातावरण में सन्नाटा तथा शान्ति थी हिमालय की ठंडी–ठंडी हवा मन को मोह ले रही थी। इतने में योगीराज भर्तृहरि गोपीचन्द गुरुदेव के संमुख आकर सादर प्रणाम किया उन्हें बैठने को कहते ही दोनों ही गुरुदेव संमुख आसन में बैठ गये। उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने कहा हे कृपा निधान हे गुरुदेव आपने ॐकार ब्रह्म के विषय में विस्तारपूर्वक हमें जानकारी दी और हमें बहुत प्रसन्नता मिली अत: आप और भी कुछ विस्तारपूर्वक

बतलाने वाले थे। अतः हमें इस सत्संग से लाभवन्त करो। तब बड़े ही सन्तोषपूर्वक स्मित हास होते हुए गुरु गोरक्षनाथ जी कहने लगे।

हे योगीराज गोपीचन्द भर्तृहरि सुनो अपने वेद शास्त्र पुराणों ने ॐकार ही ब्रह्म है, सत्य है और आकाश के समान व्याप्त है। ऐसा कहा है। उसी प्रकार नाथ सिद्धों के सूक्ष्म वेद में भी ॐकार की मन्त्रना विधि विधान विशेष रूप से है। जिसमें यह ब्रह्मवाचक ॐकार की साधना करने पर सर्वथा संयम-आत्मनिरीक्षण-आत्मदर्शन एवं आत्मसाक्षात्कार को लाभांवित हो जाते है। हमारे नाथ सिद्धों के सूक्ष्म मन्त्र, तन्त्र, यन्त्रादि साधना में ॐकार को बीज वाचक, मूलवाचक कहा गया है जोकि सिद्ध लोक अपने धूनाकर्म, भण्डार कर्म, जोतपाट कर्म, योग साधना कर्म आदि कर्म धर्म में ॐकार परब्रह्म स्वरूप को हृदय में धारण करके ही सभी विधि विधान किया करते है। तब वे सर्व निर्विघ्न कार्य सम्पन्न हो जाते है। इस सिद्धान्त का कारण यह है कि

एक बार माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी ॐकार पर्वत शृंखला के क्षेत्र में भ्रमण यात्रा कर रहे थे वहां के निसर्गरम्य हिमाछादित पर्वतों में ॐकार पर्वत अत्यंत सुन्दर एवं प्राकृतिक शोभायमान दिख रहा था। वहां पर गुरुजी को एक गुफा मिली जहां पर परमज्ञानी वेदव्यासजी ने तपस्या की थी। कुछ काल के लिए मेरे गुरुदेव महायोगी मत्स्येन्द्रनाथजी वही पर विराजमान ध्यान तपस्या करने लगे तब उस तपस्या काल में एक शुभ मुहर्त पर वहां पर स्थित ॐकार चैतन्य विभु विराट का उन्हें दैदीप्य मान साक्षात्कार हुआ। उन दिनों वह अपनी अनुभूति प्रमाण पर शाबर मन्त्र तंत्र का अविष्कार कर रहे थे। अतः उस प्रकाश ही प्रकाशमान ॐकार विराट ने आकाशवाणी वत कहा हे पार्वती पुत्र मत्स्येन्द्रनाथ सुनो तुम्हारे शाबरी सिद्धि मंत्र-तंत्र के व्यापक कर्म में मुझ ॐकार बीज को सम्मिलित करके उनके सभी सूत्रों को ॐकार प्रणव में बान्ध दो जिससे आपके शाबरी सिद्धि में सकारात्मक, विस्तारपूर्वक तथा विजयात्मक, त्रिकालदर्शक सर्व गुण कलात्मक आदि से युक्त कार्य सिद्धि होगी। इस पर एक प्रमाण हम बतलाते है। पूर्वकाल में एकबार देव-असुर संग्राम में असुरों ने देवताओं के राजा इन्द्र और उस के इन्द्रपूरी को घेर लिया तब बड़ा घमासान युद्ध हुआ इन्द्र और देवताओं ने अपने अस्त्र-महाअस्त्र तंत्र-मंत्र से युद्ध करने लगे तब वह सब निस्तेज असमर्थ होने लगे अतः वह सब चिन्तित होकर

इतरत्र बाह्य शक्तियों की खोज करने लगे जब वह खोजते-खोजते इस सृष्टि जगत के शक्ति-परम-शक्ति- पराशक्ति-निजा शक्ति से भी मूल शक्ति-बीज शक्ति स्रोत में पहुँच गये वहां उन्होंने मुझ ॐकार को ही प्रगट होते हुए देखा अतः वह सभी देवता मुझ ॐकार की प्रार्थना करने लगे हे ॐकारों हे जंगत सृष्टि के मूलाधार आप इस सृष्टि में सर्व सम्मत सर्व शक्तिमान हो, आपके चैतन्यमय विराट शक्ति के सहायता से हम असुरों पर विजय को प्राप्त कर सकते है। अतः आपको हम नमन करते है। आप हमारी रक्षा करे धर्म की रक्षा करे और इस संकट का निवारण करो। तब हमने उनकी गलती बताकर उनसे एक शर्त पर स्वीकृति ले ली की ॐकार को सर्व प्रथम पठन, स्मरण और उच्चारण करे जो कि आपके सभी वेदों, शास्त्रों, पुराणों आदि तंत्र-मंत्रादि अस्त्रों कर्मकाण्डों में मुझ ॐकार प्रणव को सम्मिलित करोगे तो सभी कार्य सिद्ध होगे और तब सभी देवताओं ने यह मूलाधार शक्ति बीजवर्धक शर्त को स्वीकार किया और उन्होंने अपने सभी अस्त्र-शस्त्र को ॐकारमय करके वहां 'ऋ' ने आदेश दिया चलो देवताओं आगे बढ़ो और दृढ़मय होकर लड़ो ॐकार को उच्चारण करते हुए बढ़ो तो ॐ तुम्हें नई शक्ति, नई स्फूर्ति नई चेतना लायेगा और तुम सब विजयश्री को प्राप्त करोगे और ऐसा ही हुआ देवताओं ने सम्पूर्ण असुरजाति पर उस अधर्म पर विजयश्री प्राप्त कर ली।

अतः हे योगीश्वर मत्स्येन्द्रनाथ तुम भी मुझ ॐकार तत्व सूत्रों को सम्मिलित करके अपने शाबर सिद्धि की रचना करो। तो ॐकार स्वरूप आदिनाथजी तथा ॐ आदि शक्ति आपके 'गुरु' तत्व शक्ति से आप अपने शाबर सिद्धि में यशस्वी और त्रिभुवन विजयी होगे। तब मेरे गुरुदेव परम सन्तुष्ट हुए और कुछ दिन वहीं तपस्या करके तद्पश्चात् भ्रमण करते हुए कामाख्या क्षेत्र में पहुँचे और यही निवास करते हुए सम्पूर्ण शाबर तंत्र-मंत्र सिद्धियों की रचना की जिसमें ॐकार शक्ति का अनुभव सिद्ध सूत्र बनाये।

अतः हे अवधू इस प्रसंग का भावार्थ यह भी है कि जिस व्यक्ति के मन रूपी इन्द्रपुरी को काम क्रोध मोह लोभ आदि असुरों ने घेर लिया हो तो वहां ॐकार उपासना-साधना करके ॐकार के मूलाशक्ति के सहायता से वह मनोजिवा अर्थात असुरोंको हराकर मनोराज्य में सुख शान्ति पाओगे अतः ॐ सभी मंत्र-तंत्र का सूत्रधार है। बीज है और शक्ति एवं

सिद्धियों का प्रतीक भी है। देखो इस ॐकार को वेदों-उपनिषदों में तथा शास्त्र-पुराणों में एवं योगिक के सभी पक्षों, स्मृतियों में ज्ञान-विज्ञान में तंत्र-मंत्रों में अग्रगन्य स्थान दिया गया है। जो ॐ यह एक असाधारण सामर्थ सम्पन्न आनन्द से भरपूर एवं अमृत का मूल स्त्रोत है। अतः सुनो

सृनु शिष्यः ॐ असौ वा साधनामृतः।
आत्म-भैषज्य मात्म कैवल्यमोङ्कारः।।

अर्थात् – हे शिष्यों सुनो यह ॐकार ही (समस्त) साधना का अमृत है। जो आत्मा का राम बाण औषधी है वह कैवल्य रूप है मल विक्षेप और आवरण नाम से प्रथित आन्तरिक रोगों के (विकारों के) निर्मूलन के लिये ॐ से बढ़कर और कोई भी भैषज्य नहीं है।

यह ॐकार मन्त्रों का राजा है नायक है। क्योंकि मंत्र-तंत्रों में यह अपनी प्राणशक्ति डालकर अपेक्षित कार्य के सिद्धियों के लिये चेतना तथा शक्ति देकर उन्हें गतिशील बनाता है। जो कि कहा है।

मांगल्य पावनं धर्म्य सर्वकामप्रसाधनम्।
ओकारः परमं ब्रह्म सर्वमन्त्रेषु नायकम्।।

अर्थात् – ॐ सभी मंगल, पवित्रतता करने वाला धर्ममय है समस्त कामना की पूर्ति का प्रसाधन है। अतः यह परमब्रह्म स्वरूप ॐकार सभी मंत्र-तंत्रों का नायक है प्रधान है राजा है। देखो रूचि, विकास, स्तर प्रकृति और अनन्त भेद से सभी मंत्र-तंत्र अपनी-अपनी विशिष्टत और उपयुक्तता में रहते है। शिष्य संशोधन परीक्षा के उपरांत ही सक्षम सत्गुरु जी अपने प्रिय शिष्य को मन्त्र, गुरु मन्त्र देते है और वह मन्त्र, अवश्य ॐकारमय एवं कल्याणमयी सिद्ध होता है। अतः उसके प्रति अश्रद्धा, अविश्वास या उनमें दोष कदापि नहीं निकालना चाहिए और नाहि उसका परित्याग करना चाहिए योग-ध्यान-ज्ञान-सिद्धि-प्रचीति आदि प्राप्ति पित्यर्थ ॐ को सम्पूटि या विन्यास लगाके या विदर्भयुक्त या मन्त्र में ॐ को रोधन लगाना चाहिए जिसमें ॐ एक सत्वशील अमृततुल्य, योगवादि, औषधियों की हृद्य रसायण आदि गुण युक्त ॐ है। क्योंकि यह ॐकार बीज है बिन्द है। अर्थात्

यः ॐ अनादि निधान देव प्रमेय सनातनम्।
सरं परतरं बीजं निर्मलं निष्फल शुभ बिन्दं।।

अर्थात् – जो ॐ आदि अनादि है सबका निधान है और अद्वितीय देवता समान है। सनातन है और सबके परे निर्मल निष्फल परमानु से भी सूक्ष्म बीज है अति शुभ बिन्द है बिन्दु है। जैसे किसी बीज में सम्पूर्ण वृक्ष होता है वैसे ॐ में सम्पूर्ण जगत सृष्टि है। जैसे ही बिन्दु में सारा पिण्ड या पिण्ड में सारा ब्रह्माण्ड हो और बिन्दु में सारा ब्रह्म हो सत्य-सनातन-ज्ञान हो ऐसा ॐ अत्यन्त सूक्ष्म से विराट है। जैसे बीज को या मूल को खाद डाले या सिंचन करने से पेड़ पौधे पत्तों फूल फल हरे भरे हो जाते है वैसे ही ठीक बीज रूप ॐकार की साधना करने पर तंत्र-मंत्र की चैतन्यता फलती-फूलती है। अतः सबका उत्तम फल ॐ ही है। और देखो वेदों में सूक्ष्म वेद ॐ ही है नादों में सूक्ष्म अनहद ॐ ही है तथा सभी ब्रह्माण्ड का बीज ॐ ही है तो पिण्ड का बिन्दु ॐ है इस ॐ प्रणव से ही सभी मातृकाये अक्षर बने है।

बिन्दे ध्वनि (नाद) सकाशात्तुं प्रत्येक वर्णजातयः।
मातृकाणस्तितो जाता अक्षरेति यथाभवन्।।

अर्थात् – हमारे नाथ सिद्धों की स्वछन्द शाबरी तथा साम्भरी मंत्र-तंत्र-यंत्र के सूक्ष्मरूपी नाथों सिद्ध वेद भी कहते है कि शक्ति स्वरूपी नाद बिन्दु कलातील अर्द्धमात्रा चिदानन्दा जो नाथ बिन्द शक्ति साधना करते हुए प्रतीत करते है जो ॐकार प्रणव का ही उपाधिदान है।

अकारश्च उकारश्च मकारश्च तृतोयकः।
वर्णत्रयमिदं प्रोक्त ब्रह्माया देवतास्त्रयः।।
बिन्दुनाद समायोगादिश्वरश्च सदाशिवः।
एते वै प्रणवाः पञ्चहंसः प्राणयुतः सदा।।
ह्रस्व दीर्घ प्लुतं सूक्ष्ममतिरूक्ष्मं परं शिवम्।
प्रणवा पञ्चधा ज्ञात्वा भित्वा मोक्षो न संशय।।

अर्थात् – 'अ'कार 'उ' कार 'म' कार (•) बिन्दु ˘ नाद इन पञ्च कलाओं को ॐकार प्रणव के पञ्च प्रणव कहते है। ब्रह्मा विष्णु रुद्र ईश्वर और सदाशिव इनके देवता है। इन कलाओं से क्रमशः ह्रस्व दीर्घ प्लुत सूक्ष्म और अति सूक्ष्म नाम से भी अभिह्नित किया जाता है और यह प्रणव ही सम्पूर्ण प्राणियों का प्राण भी है। जिसके **प्रणव : प्राणिनां प्राणो जीवणं सम्प्रतिष्ठितम्।**

द्वारा जीवण प्रतिष्ठित रहता है।

अत: शिष्यों ॐकार प्रणव की कलायें सुनो कला का अर्थ है विशिष्ट शक्तियाँ जो इस प्रकार है।

'अ"उ' म बिन्दु, अर्द्ध चन्द्र निरोध नाद नादान्त कुण्डलीनि व्यापिनी, शक्ति समना और उन्मना यह ॐ की बारह कला पूर्ण ब्रह्माण्ड संचालित करती है। अत: इन कलाओं को और विस्तार से बताते है। जो सृष्टि के वेद शास्त्र पुराणो मंत्र-तंत्रों कर्मकाण्डों योग ज्ञान ध्यान आदि में सम्मिलित है। प्रणव 'अ' कारकी अष्ट कलाये है १. सिद्धि २. ऋद्धि ३. द्युति ४. लक्ष्मी ५. मेधा ६. कान्ति ७. धृति ८. स्वधा। यह कलाये पृथ्वी से महत्तत्वों तक व्याप्त है और प्राणी के पैर से हृदय तक व्याप्त है। प्रणव 'उ' कार की तेरह कला है जिसे वामकलाये कहते है।

१. रज २. रक्षा ३. रति ४. पाल्या ५. काम्या ६. तृष्णा ७. मति ८. क्रिया ९. वृद्धि १०. माया ११. नाड़ी १२. भ्रामणी १३. मोहिनी यह कलाये व्यक्ति के हृदय से कंठ तक अवस्थित है। इस 'उ' कारकी और भी अघोर आठ कलाये है १. तमा २. मोहा ३. क्षुधा ४. निद्रा ५. मृत्यु ६. माया ७. भया ८. जरा यह प्राणी के कंठ से लेकर तालू तक स्थित है। उसी प्रकार ईशान अर्थात् 'म' की कलाये १. तारा २. सुतारा ३. तरणी ४. तारयन्ती ५. सुतारणी ये सदा शिव रूप आदिनाथ के नाद में सम्बन्धित है। जिस बिन्दु की भी ईश्वर रूप कलाये है जैसे १. निवृत्ति २. प्रतिष्ठा ३. विद्या ४. शन्ति यह चार कलाये व्यक्ति के भ्रूमध्य में स्थित है। अब देखो अर्द्धचन्द्र की भी पांच कलाये है। १. ज्योत्सना २. जोत्सनावती ३. सुषमा ४. विमला ५. शिवा तथा ६.संधनी ७. रोधनी ८. रौद्री ९. ज्ञानबोधा और १०. तमोपहा ११. माम्नी १२. निरोधिका आदि कलाये है। जो शक्ति स्वरूप प्राणी के जीवन में कार्य करती है। अब नाद की कलाये देखो १. इन्धिका २. दीपिका ३. रोचिका ४. मोचिका तथा नादान्त की कला १. ऊर्ध्वगा २. नाम्नी है। अत: ॐकार की कुछ शक्ति कलायें देखो वह पांच है १. सूक्ष्मा २. सुसूक्ष्मा ३. अमृता ४. अमृतासम्भवा और ५. व्यापिनी अत: इस व्यापिनी की भी और चार कलाये है। १. व्यापिनी २. व्योमरूपा ३. अनन्ता और ४. अनाथा उसी प्रकार समाना से निगड़ित और छ: कला है। १. सर्वज्ञा २. सर्वगा ३. दुर्गा ४. सवना ५. स्पृहणा और ६. धृती।

इस प्रकार यह ॐकार प्रणव अनन्त कला युक्त इस सृष्टि में समाहित होकर सृष्टि का कार्य चलता है।

इस प्रकार हे भर्तृहरि गोपीचन्द हमारे तंत्र, मंत्र, यंत्र सिद्धि साधनाये आदि सब शक्ति का ही शास्त्र है। जो आद्या आदि माया-उदयनाथ जी मूलप्रकृत्ति, परा-अपरा आदि नामों से कहा गया है। अत: यह ॐकार प्रणव साधनायें शक्ति संयम शक्ति पात, शक्ति प्राप्ति आदि साधनाये है और इन शक्ति और इन सभी कलाओं से ही अपेक्षित मनोरथ इच्छा तथा भौतिक और आध्यात्मिक विकास निहित है।

ओम बारह कला सोखे सोलह कला सोखे चारी
कला साधे अनन्त कला जीवै।
उरम धूरम ॐ ज्योति ज्वाला सिद्धो साधत
चार ही कला पीवै।

अर्थात् – योगी ॐकार की साधना या ॐ प्रणव युक्त मन्त्र की साधना करता है। जिसमें वह अपनी चक्र कमलों को जाग्रत करता हैं तब मूलाधार स्थित ॐरूपी सूर्य की बारह कला को अपाण वायु की उष्णता से सोख लेने से प्रभावहित कर देने से योगी ब्रह्मरन्ध्र में स्थित ॐकार चंद्ररूपी सोलह कला का पोषण करने में समर्थ होता है। वह पवन वह प्राण या ॐकार अनहद नाद ब्रह्मरन्ध्र में संस्थित कर चन्द्रामृत का पान करके आत्मसाक्षात्कार के द्वारा अभय जन्ममृत्यु रहित परम शिव पद में प्रतिष्ठित हो जाता है और फिर सूर्य के बारह कला प्रभावहीन होने पर सोलह कला युक्त चन्द्रमा की कलायें विशेषत: ॐकार युक्त जो

१. केवला = नाम्नी मातृका (कला) विद्या ज्ञान देने वाली

२. सौम्य = प्रबुद्धि और उन्नति प्रदान करने वाली कला

३. बिन्दु = कुण्डलीनि सिद्धियां सुधा अमृत प्रदान करने वाली कला

४. सविसर्गा = जो ज्ञान-सत्य-परं-नेती नेती का प्रचार-प्रसार होने वाली कला जिन ॐकार की चार कलायें अमृतदायिनी है और इनसे ऐहिक और पारलौकिक प्राप्ति होकर कलाओं से पृष्ठ अमृत के द्वारा अनन्त कलामयी-शक्तिमयी ब्रह्मानुभूति प्राप्त होती है। ऐसी अवस्था में महाचैतन्य, महातेज ज्योतिस्वरूप परमात्मा ॐकार के अभिव्यक्त होने पर योग

साधक परमानंद भोगता है। अतः

ग्रास प्राणापाण का साम ज्यो ज्यो
ॐकार सेवन होय! तंत्र मंत्र सम
पराशक्ति का त्यो त्यो आप ज्ञान होय।

अर्थात् – ॐकार ही श्वास प्राण–अपाण तंत्र–मंत्र पराशक्ति ज्ञान आदि का ग्रास है। अतः शुद्ध वायु प्राण–अपान द्वारा ग्रास करते हो जिसमें ॐ हं–सोहं रूपी श्वास को ग्रहण करते करते ॐकार उपासना या साधना हो जाये तो सर्वाधिक शक्ति का संक्रमण होता है और त्यो त्यो तंत्र मंत्रादि द्वारा परम्परा शक्ति जब अनुभव हो जाता है तो उस परंज्ञान की उपलब्धि होकर वह मुक्त हो जाता है।

अतः ओकारः सर्व मन्त्राणामुत्तमः परिकीर्तितः।
ओकारेण प्लवेनैव संसाराब्धि तीरष्यति।।

अर्थात् – यह ॐकार सर्व मन्त्रों तंत्रों में सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है। वह सबसे उत्कृष्ट है। संसार रूपी सागर को पार करने के लिए ॐ ही एक मात्र नौका है।

अतः सुनो पूर्वकाल में एक बार हस्तिनापुर के राजा बृहद्रवा ने सोमयाग यज्ञ का आयोजन किया था उस समय उपस्थित साधू सन्त तथा विद्वान ब्राह्मण इन्होंने यज्ञ कुण्ड में अग्नि प्रगट करने हेतु कानन की काष्ट लाये थे उनमें से दो काष्ट एक दूसरों पर रगड़कर अग्नि को प्रगट किया था इसमें ऐसा है कि नीचे जो काष्ट रखा जाता था उसे अधरारणि कहते है और जो दण्डावत उसके ऊपर रगड़ने वाले काष्ट को उत्तरारणि कहते है। इस प्रकार उन्होंने दोनो काष्ट को रगड़ना प्रारंभ किया तब यह ॐकार प्रणव का गायत्री में सम्पुटि लगाकर मन्त्र उच्चारण करके अग्नि प्रगट किया था, जो सोमयज्ञ एक साल तक अखण्ड चेतन रहा जिसमें अखण्ड घृत युक्त साकल्यादि सामग्री से आहुतियाँ चल रही थी। एक दिन जलते हवन कुण्ड में से एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ और वह बालक को अपने पुत्र रूप में राजा बृहद्रवा और महारानी ने स्वीकार किया प्रेम स्नेह और अपार वात्सल्य उद्भाव प्रगट होकर उस महारानी ने उस बालको दुग्धपान कराया और वह बालक यज्ञ के ज्वालाओं में प्राप्त होने के कारण उसका नाम ज्वालंधर रखा और आगे वह ज्वालंधर बालक अपने नाथ सम्प्रदाय

में महासिद्ध परमज्ञानी ज्वालंदर नाथ जी नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी प्रकार हे भर्तृहरि गोपीचन्दनाथ अगर अपने अन्त:करण को अधरारणि और ॐकार प्रणव को उत्तरारणि बनाकर ध्यान रूपी मंथन कर दण्ड का रगड़ के बार-बार साधना करके अभ्यास से अपने अन्तरात्मा में छिपी हुयी परमात्म (अग्नि) ज्योति को देखोगे और सही मायने में यही नाथ सिद्धो का यज्ञ है। धूना है। यही ॐकार रूप प्राण में प्राणायाम रूपी हवन है। जिसके फल स्वरूप हे गोपीचन्दनाथ इसमें ही अपने परमात्म स्वरूप गुरुदेव ज्वालंदर नाथजी के दर्शन भी हो जाते है।

इस ॐकार प्रणव मन्त्रों में अगाध शक्ति है। यह व्यक्ति को केवल नाम-चिन्तन करने पर भी यदि वह अज्ञानी भी हो तो भी उसे मोक्ष मुक्ति क़रवाता है। इस विषय की एक कथा हमें याद आई जो दक्षिण देश में पूर्वकाल पुण्यमयी कावेरी नदि के तटीय प्रदेश में एक मूला नाम का गौ० चारवाहा था। वह मूला भोला भाला गांव की सभी गौवे लेकर चराने जाता था वह गौ पर बहुत स्नेह करता था उसके गांव में एक धर्मात्मा और विद्या सम्पन्न ब्राह्मण रहता था उसकी पांच गौ बड़ी सुलक्षणी थी जिन्हे मूला चरवाने वन में ले जाया करता था। एक बार उस ब्राह्मण ने मूला को कहा की तु रोज नित्य मेरे पांच गौ के पंचगव्य बनाके पी लिया कर और पीते समय ओम ओम बोलाकर तब वह मूला नित्य पंचगव्य उन पंच गौ का बनाके उसे ॐ .....ॐ कहते हुए पिया करता था।

एक दिन उस जंगल में वह सभी गाये जोर-जोर से रंभना लगी उनके हंभरडा में दु:ख भरी आवाज आ रही थी उसी समय उस वन मार्ग से एक बहुत बड़े सिद्ध नाथ महात्मा योगी तिरूमूलर वहां से प्रवास कर रहे थे उन्होंने वह आवाजे सुनकर घटना स्थल पर पहुँच गये और वहां बड़ा विचित्र दृश्य देखा, उन गायों का चरवाहा मूला मृत जा पड़ा था और वह गौवे अपने बछड़े सहित उसे घेर खड़ी-खड़ी रंभन कर रही थी उनके आँखों में अश्रु बह रहे थे और वह मृतक मूला के शरीर को प्यार में सूघंती-चाटती थी उसे परिक्रमायें करती थी योगी तिरूमूलर नाथ जी का हृदय यह शोकपूर्ण दृश्य देखकर दायार्द्र हो गया उस सच्चे और सिद्ध सन्त की बड़ी कसौटी यह है कि वह किसी भी प्राणी को दु:खी कष्टी होते हुए नहीं देख सकते अत: वह योगीराज परकाया प्रवेश सिद्ध थे उन्होंने उस अल्प आय

मूला को अन्तरमुख से देखा कि इसने ॐकार प्रणव से पंचगव्य का सेवन किया था और वह कायावाचामन गौमय हुआ था शुद्ध-पवित्र हुआ था। ऐसे शुद्ध सात्विक पवित्र काया में प्रवेश करने का उन्होंने निश्चय किया। जिससे उसे गौवों का दु:ख निवारण होगा और उन्होंने अपनी काया को सुरक्षित जगह स्थापित करके उस चरवाहे मूला के शरीर में प्रवेश किया और देखा कि मूला की आत्मा गौ लोक बैकुण्ठ में जा रही है। यह इसी ॐकार प्रणव का प्रभाव था। अपने प्रिय मूला को जीवित होते हुए देखकर सभी गौए आनन्द से नाच उठी गांव में पहुँचने पर वह ब्राह्मण तथा मूल की पत्नी एवं गांव वाले भी प्रसन्न हो गये थे आगे वह सिद्ध महात्मा उसी मूला के शरीर में रहते हुए वही मठ बनाकर तपस्या साधना में मग्न होकर रहने लगे। अत: हे भर्तृहरि गोपीचन्द इस प्रकार ॐकार प्रणव के जाप से पंचगव्य का सेवन करने वाला मुक्त हो जाता है तथा उसकी पवित्र काया भी मृत्यु उपरान्त नष्ट न होते हुए एक सिद्ध महापुरुष तिरूमूलर नाथ जी को काम आ गयी यह सब ॐकार का ही परिणाम है। इसी प्रकार यह पंचगव्य का स्नान संस्कार मृत्यु उपरान्त मृत काया को भी किया जाता है। जिससे मृतात्मा को उत्तम गति की प्राप्ति होती है।

मोक्ष मुक्ति का पद यह प्रणव ॐकार नाद बिन्दु साधना से प्राप्त होता है देखो अगर इस प्रणव को हंस कहा गया है। जिसका दाहिना पंख 'अ' कार है। बाया पंख 'उ' कार है और 'म' उसकी पूंछ है। अर्द्धमात्रा उसका शिश है। सत्व गुण शरीर तो रजो, तमो गुण उसके पैर है। उसकी नाभि से महर्लोक, कटी में स्वर्ग लोक जानुओं में भुवर्लोक और पैरों में भूलोक है और जन, तप और सत्य लोक उनके हृदय, कण्ठ और ललाट भौहों में स्थित है। अत: यह ॐकार प्रणव रूप हंस पर सवार होकर तुम उनके अनुष्ठान व ध्यान या उपासना चिन्तन या मनन करते हुए तुम सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर हंस से परम हंस होकर मोक्ष मुक्ति के पद को प्राप्त कर सकते हो। यह मेरा सत्य वचन है और भी सुनो कि हम नाथ सिद्धों को धूना का अग्नि देवता मुख्य इष्ट है जो तंत्र-मंत्र आदि साधना या योग साधना के लिए हम नाथों का मुख्य आधार है। उस धूना यज्ञ के अग्नि को भी ॐकार का स्वरूप मानते है। जिसका प्रमाण सृष्टि उत्पत्ति पूर्व ॐकार आदिनाथ जी ने एक प्रचण्ड अग्निस्तम्भ का प्रगटन किया था। जो

अनन्त अखण्ड प्रचण्ड स्वरूप ॐकार से ही प्रगट हुआ था। इससे यह सत्य स्पष्ट होता है कि ॐकार आदिनाथजी जो हमारे नाथ सम्प्रदाय के सर्वप्रथम आदि गुरु माने जाते है यह भी ॐकार से ही स्वयं ॐकार स्वरूप है जिन्होंने ब्रह्मा विष्णु तथा शिव को निर्माण किया था।

अत: इस अग्नि स्वरूपी ॐकार का विराट स्वरूप में जो अग्नि मण्डल कहा जाता है। उसमें अग्नेयी उसकी प्रथम मात्रा है। 'उ' कार उसकी वायु देवता है, वायु मण्डल की तरह ही उसका रूप है और वायव्या ही उसकी दूसरी मात्रा है। अब 'म' के देवता सूर्य है और सूर्य मण्डल की तरह उसका रूप है और यह तृतीय उत्तर मात्रा है। चतुर्थ अर्द्धमात्रा वारूणी के देवता वरूण है और अर्द्धमात्रा की बिन्दी अर्थात् बिन्दु जो नाथ सिद्धों का अनहद नाद की मात्रा है। इन सभी प्रकार की मात्राओं में तीन-तीन सुन्दर मुख है, इस कारण ॐकार प्रणव द्वादश कलात्मक कहा गया है और ध्यान धारणा समाधि ही उसे जानने का साधन है।

हे भर्तृहरि हे गोपीचन्द पूर्वकाल भगवान श्रीकृष्ण ने भी अपने विराट रूप में होते हुए कहा था कि सभी शास्त्र वेद पुराणों में प्रणव अर्थात् ॐकार मैं ही हूँ। जो मृत्यु समय ॐकार का इस एकाक्षर ब्रह्मरूप का स्मरण कर उच्चारण करता हुआ शरीर को त्यागता है उसे परमगति प्राप्त होती है। देखो हमारे परम योगी, सिद्ध सन्त, अयोनिज जती सती नाथ भी ॐकार को परमपिता तथा शून्य को माता मानते है। जिनका स्मरण चिन्तन तथा जाप एवं अर्थ का ज्ञान होते ही साधक समाधि में चला जाता है अर्थात् ॐकार परमपिता का अनन्य निरंतर एकरस ध्यान करते-करते शून्यमाता की आंचल में जाते ही वहां अमृतपान करता है और तद्पश्चात् उस शून्य माता के गोद में जाते ही समाधि शून्य में लग जाती है।

अत: यह ॐकार पूर्ण ब्रह्म है। इतना कहते हुए परमज्ञानी गुरु गोरक्ष नाथ जी इस परम ईश्वर ॐकार के चिन्तन में मग्न हो गये। अब वहां संध्या का समय होने जा रहा था।

।। इति श्रीनाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि

गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे

ॐकार महात्मे नाम पंचमोऽध्याय:।।

षष्टमः अध्याय

।। ॐकार महिमा।।

आज प्रातः काल सूर्य भगवान का आगमन हो रहा था इस गुफा के इर्द गिर्द परिसर में वन की लतायें एवं बेल पुष्पों से लद रही थी। उस ऊषा काल में विभिन्न पुष्पों आनन्द विभोर अपनी पंखुडियाँ खुलती हुई मधुर हास्य कर रही थी भौरों की मधुर ध्वनि वह गुंजन अनोखा संगीत दे रही थी वहां शीलत मन्द सुगन्ध समीर बह रहा था। माँ गंगा जी की स्वच्छ निर्मल लहरे कल-कल, छल-छ्ल बह रही थी। ऐसा सुन्दर मनोहर दृश्य का आनन्द गुरुदेव गोरक्षनाथजी शान्त चित्त होकर आस्वाद ले रहे थे। इतने में योगी राज भर्तृहरि- गोपीचंद नित्य नियम मर्यादानुरूप गुरुदेव को सादर आदेश वन्दना की गुरुदेव की तेज पुंज शान्त आनन्द भरी छवि देखकर उन्होंने पुनः कुछ उपदेश देने की अभिलाषा व्यक्त की। इस पर ॐ ॐ ऽऽ का उच्चारण करते हुए गुरु गोरक्षनाथजी कहने लगे।

एक बार देवभूमि पाताल भुवनेश्वर के मनोहर गुफा में योगी सत्यनाथ जी जो प्रजापति ब्रह्माजी के अवतार थे अपनी ध्यान समाधि में तपस्या कर रहे थे वहां महर्षि याज्ञवाल्क्य अपने और शिष्यों के साथ भ्रमण करते-करते इस गुफा में पधारे आदर अतिथि जलपान के उपरान्त उन्होंने योगी सत्यनाथ जी के सानिध्य में सत्संग किया। जब अपने गुरु ॐकार आदिनाथ जी के विषय में प्रणव ॐकार की महिमा बखान करते हुए उन्होंने कहा कि ॐकार ब्रह्म स्वरूप है। इसे त्रिलोक ब्रह्मा विष्णु महेश के प्रतिष्ठान है। जगत सृष्टि के समस्त साधनाओं के सार ॐकार प्रणव ही है। साधना हो या उपासना हो या कर्मकाण्डादि तंत्र-मंत्र पूजा पाठ, जाप तथा तपस्या इन सभी पक्षों में सर्वप्रथम ॐकार उच्चारण आवश्यक है जो सम्पूर्ण फल प्रदान करने वाला फलदाता है।

ॐ में त्रिदेव सह और भी उपलब्धियां है। प्रणव अ, उ, म, में अनुक्रम ब्रह्मा विष्णु महेश है त्रैवेद है त्रिविद्या है, 'अ' से ऋग्वेद 'उ' से सामवेद 'म' यजुर्वेद उसी प्रकार साहित्य में पद्यात्मक-गद्यात्मक- उभयात्मक (चम्पु) जोकि जिससे सत्यम्-शिवम् सुन्दरम् से सभी साहित्य ॐकार मय है। अग्नि ही तीन है, गार्हपत्य-आवहनीय-दक्षिणाग्नि उसी प्रकार यज्ञोपवित्र (जनेऊ) में भी तीन सूत्र होते है जो ऋषि ऋण-देव ऋण-पितृ ऋण यह

सब ॐकार प्रणव 'अ' 'उ' 'म' से ही है।

अब वैदिक पद्धति में देखो वसु–रुद्र और आदित्य उनके सवन भी तीन है १. प्रातः सवन वसुओं का २. मध्याह्न सवन रुद्रगणों का ३. तृतीय सवन आदित्यों का कहा गया है। यह भी प्रणव 'अ' 'उ' 'म' ही है जिस प्रकार त्रिदेव इनसे बने है उसी प्रकार त्रिशक्ति महालक्ष्मी–महासरस्वति और महाकाली यह तीन शक्तियाँ प्रगट हुई है। त्रिशूल–त्रिपुण्ड तिलक और त्रिविक्रम भी ॐ ही है।

हमारी संस्कृति में ३ गुरु मानते है मातृदेवभवः पितृदेवभव और आचार्य गुरुदेवभवः इन तीनों में ॐ ही श्रद्धा भाव रखने की प्रेरणा देता है। शास्त्रों में ३ ताप है, आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक इन तीनों तापों से निवृत्त होना ही मोक्ष है अतः ॐ के 'अ" उ" म' ही त्रिताप है इनके मध्यस्थ जो 'लुप्त' नाद या अनहद या स्थिर स्थित होना ही मोक्ष है। उसी प्रकार 'अ" उ" म' का अनुक्रम स्थूल सूक्ष्म और कारण यह तीन शरीर है। इन तीनों में जो व्यक्ति लुप्त में रुकता है अर्थात् ध्यान में समाधि रूप शून्य हो जाता है वही मोक्ष मुक्ति का अधिकारी है। अन्त में श्री याज्ञवल्क्य नाथ जी ने कहा कि हे गुरुदेव आपने हमें ॐकार तत्व का अतिउत्तम ज्ञान दिया। हम सब कृतार्थ हो गये और उन्होंने नमस्कार करके वहां से प्रस्थान किया।

अतः हे भर्तृहरि गोपीचन्द यह याज्ञवल्क्य नाथ जी बड़े ही विद्वान, ज्ञानी, ब्रह्म साक्षात्कारी थे और योगी सिद्ध सत्यनाथजी के प्रिय शिष्य में से थे। आगे उन्होंने गुरुकृपा से अनन्त साधना करके आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किया। अतः यह आत्मसाक्षात्कार भी देखो ॐकार के त्रिजीव 'अ" उ" म' से जीवात्मा–अन्तरात्मा–परमात्मा जिसमें कर्म योग–भक्तियोग और ज्ञान योग से यह आत्मसाक्षात्कार होकर साधक मोक्ष मुक्ति में विलय हो जाता है। जिसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ, श्रेष्ठ प्रज्ञ जो ओ३मविद है। उसी प्रकार ॐकार प्रणव 'अ" उ" म' से अनुक्रम भूर्लोक–भुवर्लोक और स्वः लोक अर्थात् भूः भूवः स्वः तथा पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक तथा स्थूल रूप में स्वर्ग मृत्यु पाताला इत्यादि सभी त्रिगुणमयी ॐकार ही है उसी प्रकार काल काल महाकाल या नाद बाजे काल भागे जो कि इस ॐकारमय अ–उ–म

में भी भूतकाल वर्तमान काल और भविष्य काल को भी उद्‌बोध किया है। लेकिन हमारे योग साधना सामर्थ्य में अगर 'अ"उ"म' अर्थात् इन भूत-वर्त-भविष्य जैसे काल में जब शून्य समाधि लग जाती है तो वहां काल भी रूक जाता है अर्थात् ॐकार जप या ध्यान विधि में जब 'लुप्त' अवस्था आती है, स्थिर या शून्य अवस्था आती है तो वहां एक तो काल रूक जाता है या तो भाग जाता है।

देखो उपनिषदों में भी कहा गया है कि **ओमिति ब्रह्म। ओमितीदं सर्वम् !!** अर्थात् ॐकार ही ब्रह्म है और ॐकार ही सम्पूर्ण जगत है। वैसे ही गीता कहती है। **'ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म'** अर्थात् ओंकार ही एकाक्षर ब्रह्म है और अन्यत्र कहा है कि

ओकार प्रणव चैक सर्वव्यायिनमेव च।

अनन्तञ्च तथा तारं शुक्ल वैद्युतमेंव च।

तुर्य, हंस परब्रह्म इति नामानि जानते।।

अर्थात्– ॐकार प्रणव सर्वव्यापि, अनन्त अपार तार शुक्ल वैदयुत तुर्य हंस और परब्रह्म इन नामों से ज्ञानी जन पूजते है इस दिव्यतत्व को जानते है। अपने गुरु योगी सत्यनाथ ब्रह्मा जी के कृपाआदेशानुसार जब योगी याज्ञवाल्क्य नाथ जी ने उपनिषद काल में उपासना और ॐकार की दिव्य साधना की तब वह कहे

अदृष्टविग्रहो देवो भाव-ग्राहो मनोमयः।

तस्योङ्कार स्मृति नाम तेनाहुतः प्रसीददति।।

अर्थात्– ईश्वर अदृश्य-विग्रह है, अरूप है भावों के द्वारा ही उसे पकड़ा जा सकता है, क्योंकि वह मनोमय है। स्मृति ग्रंथ में ॐ उसका नाम बताया गया है। ॐ के द्वारा उनका आवाहन करने पर वह प्रसन्न होता है। अर्थात् हे शिष्य हम ॐ को आवाहन करके ध्यान समाधि में उस ईश्वर परब्रह्म का साक्षात्कार कर सकते है। अतः हे अवधू इस ॐकार के अवधान साधना करते हुए सक्षम एवं परिपक्व साधना में ॐकार की अवस्थायें प्राप्त होती है जो क्रमशः प्रणव मात्रा कही गयी है प्रथम अ,उ, म, बिन्दु, फिर अर्द्धचन्द्र-निरोध-नाद-निदान-शक्ति-व्यापिनी और सभना फिर

आनन्ददायी ज्योत और साक्षात्कार का प्रकाश ही प्रकाश दिव्य एक अनुपम दिव्यात्मक अवस्था में योगी आरूढ़ होता है। मुक्त मोक्ष.... शून्य. आदि तक पहुँच जाता है। जैसे जब तक जल बहता है, यह गंगा माँ बहती है यह जीवन चलता है पर जब यह जल यह गंगा समुद्र में मिल जाती है तो जैसे उसका अस्तित्व खत्म होकर वह नदी समुद्र बन जाती है जैसे यह जीवन उस परमात्मा में लीन हो जाता है।

देखो जैसे हमें चलना है साधना पथ पर, प्रगति पथ पर जो विश्वात्मा है जो तेजस्वी आत्मा है आगे हम प्रज्ञात्मा में जाते है फिर हमें प्रज्ञा मिलती है फिर उसके परे तुर्या में जाते ही आनन्द प्राप्त होने लगता है और आगे चलकर तुर्यातित में प्रवेश करते ही एक दिव्य तृप्ति मिलती है। आगे और चलने पर वह नित्य या नेती नेती में हमें ले जाती है। यहां सब कुछ छूट जाता है। यहां आनन्द ही आनन्द ब्रह्मानंद आत्म तृप्ति का आत्मानंद जो नित्यानित्यानंद कहां है और यही नाथ सिद्धों की चरम उत्कृष्ट सार्थक योग प्रणाली है जिसको नित्यसमाधि कहो, सहज समाधि कहो जीवनमुक्त समाधि, परमपद परमानन्द कैवल्य समाधि कहो या अन्त में शून्य समाधि कहो यह अन्तिम चरम सीमा है। यही हमारा अन्तिम लक्ष्य है सिद्धान्त है। इसके आगे कुछ नही सब शून्यमय हो जाता है। जैसे नदी सागरमय हो जाती है। यहां ॐम ॐ मय होना है।

पूर्वकाल में शिबी राजा के पुत्र सत्यकाम अपने सद्गुरु महर्षि परम योगी श्री रामचंद्रनाथजी के शिष्य योगी पिप्पलादनाथजी को प्रश्न किया था कि हे गुरुदेव कोई भी साधक योगेश्वर मृत्यु शैय्या में होने तक अगर ॐकार ध्यान करने से किस प्रकार की गति प्राप्त होती है। तब महर्षि पिप्पलादनाथजी ने कहा हे सत्यकाम यह ॐकार परं ब्रह्म एवं अपरम्पार ब्रह्म स्वरूप है। अत: ॐकार का ध्यान ब्रह्म से एकरूपता है।

अगर साधक ने एक मात्रा वाले ॐकार प्रणव की साधना की है तो वह पुन: मृत्यु लोक में जन्म लेकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए साधना करते हुए मुक्ति पथ पर जाता है। अगर साधक ने दो मात्राओं वाले ॐकार प्रणव की साधना अर्थात् ध्यान करने पर साधक चन्द्र लोक में जाता है। जो कि यजुर्वेद के मन्त्र उसे वहां ले जाते है और त्रिमात्राओं वाले ॐकार का

ध्यान धारणा करने पर वह साधक तेजोमय सूर्य लोक सामवेद के द्वारा जाता है और भी साधक ॐ की सम्पुटी लगाकर ध्यान साधना करने पर वह साधक ब्रह्मलोक को जाता है। अतः हे साधकों ॐकार के अर्द्धमात्रा चिदानन्दा के ॐकार का ध्यान करने पर वह अनन्त शक्ति लोक को जाता है और बींद वाले नाद बिन्दु कलातीत वाले ॐकार की साधना ध्यान करने पर वह परम योगीश्वर आदिनाथ जी स्वरूप शिवलोक को प्राप्त होता है और जीव शिव का मिलान होकर परमपद को प्राप्त हो जाता है। अतः यह ॐकार परम ईश्वर अजर अमर निर्मिक शान्त और सर्वश्रेष्ट है।

इसी प्रकार एक बार भ्रमण करते-करते महर्षि नारद मुनि ब्रह्मलोक जाकर प्रजापति ब्रह्माजी से पूछा की हे भगवंत इस सृष्टि में बार-बार जन्म मृत्यु तथा अनेक व्याधियां सुख-दुःख रूपी भव सागर में पार होने का कोई उपाय बतलाओं या कोई मन्त्र विधि बतलावो। तब सहर्ष उद्‌भव भाव से ब्रह्माजी ने कहा हे भक्त शिरोमणि नारदमुनि इस धरा पर ऐसे प्रभाव करने वाला मात्र ब्रह्म स्वरूप ॐकार प्रणव ही तारक मन्त्र है। अतः इस ॐकार के व्यष्टि और समष्टि में ही साधना करे या चिन्तन करे। इस पर श्री नारद मुनि उत्सुक होकर अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए कहा हे भगवंत यह व्यष्टि और समष्टि का क्या भावार्थ है ? तब ब्रह्माजी ने कहा कि व्यष्टि और समष्टि ॐकार ब्रह्म प्रणव के ही अङ्क है। जो ब्रह्म प्रणव, संहार-प्रणव, सृष्टि प्रणव और उभयात्मक प्रणव इन तीनों भेदों वाला है। यह उभयात्मक प्रणव ब्राह्माभ्यांतरिक भेद है, इसलिए उसे उभयात्मक कहा गया है। इस ब्रह्म प्रणव का एक व्यवहारिक प्रणव भी है और व्यष्टि प्रणव को ही बाह्य प्रणव कहा गया है। एक आर्य प्रणव और है उभयात्मक प्रणव को विराट प्रणव भी कहते है। संहारादि चार मात्राओं वाले स्थूल आदि भेद से युक्त प्रणव को अर्द्धमात्रा प्रणव भी कहते है। अतः यह एकाक्षर ॐ ही ब्रह्म है।

अतः हे नारद मुनीश्वर इसी को अन्त प्रणव मानते है। जो 'अ"उ"म' (•) नाद, कला और शक्ति (˘) ये आठ भाग विभक्त है। इनके भेद भी है। 'अ' के १० सहस्त्र अवयव, 'उ' के १ सहस्त्र अवयव 'म' के शत अवयव, अर्द्धमात्रा के अनन्त अवयव गुणों से सम्पन्न है इस विराट प्रणव सगुण तो संहार प्रणव निर्गुण मानते है। सृष्टि प्रणव सगुणनिर्गुण दोनों सम्बंधित है,

विराट प्रणव 'अ' के चार मात्राओं समष्टिवाला है तथा संहार प्रणव चतुर्थ मात्रात्मक अर्द्धमात्रा रूप वाला है और इस ब्रह्ममय ॐकार प्रणव का भेद जानकर श्री नारद जी प्रसन्न हुये और ब्रह्मा जी को नमस्कार करते हुए अन्तरध्यान हो गये।

अतः हे भर्तृहरि गोपीचंद जिस प्रकार हमारे नाथ संप्रदाय में सम्पूर्ण ब्रह्मस्वरूप ॐकार रूपी नाथ दीक्षा संस्कार या नाद जनेऊ संस्कार होते है। ठीक उसी संस्कार उद्देश्य के प्राचीन काल में एक समय वेदों के ज्ञाता, महातेजस्वी एवं तपोनिष्ठ वेदव्यास जी ने कैलाश लोक प्रस्थान करके पार्वती सह भगवान शिव को प्रणाम करके उन्हें प्रार्थना कि हे देवादिदेव महादेव हे नाथों के महानाथ मेरे पुत्र शुकदेव के वेदाध्ययन प्रारम्भ किये जाने के लिए होने वाले यज्ञोपवित जनेऊ कर्म ॐकार प्रणव और गायत्री मन्त्रोपदेश का समय आ गया है आप संसार के सद्‌गुरु नाथ है। अतः आप ब्रह्म और परमात्मा का उपदेश करिये। तत् उपरान्त भगवान आशुतोष ने ॐकार स्वरूपी ब्रह्म और परमात्मा का उपदेश करके उन्हें शुकदेव को संस्कारित करने की अनुमति दे दी।

अतः हे अवधू इस प्रकार शुकदेव ॐकार प्रणव मन्त्र से संस्कारित होने पर आगे उन्होंने ॐकार साधना तपस्या एवं उपासना की और एक बार राजा परिक्षक को श्री मद्‌भागवत इस महान कृष्ण लीला का श्रवण करवाते समय भी ॐकार विषय में कहा कि।

हृद्यवच्छिन्नमोंकार घण्टा नादं विसोर्णवत।

प्राणनोदीर्य तत्राथ पुनः संवेशयेत् स्वरम्।।

अर्थात् – शान्त चित्त एकान्त स्थान में बैठकर ॐ का ध्यान करते हुए घण्टानाद के समान निरंतर ॐ ॐ ॐ...... का उच्चारण करे यह जाप अपने श्वास के साथ करे पुनः पुनः चिन्तन करके एक रूप एक रस हो जाये ऐसे एकाग्र और परिपक्व होने पर मन चित्त शान्त होकर दुःख दूर हो जाते है और समस्त विपदायें नष्ट होकर साधक सुख और आनंद भोगता है।

अतः हे भर्तृहरि हे गोपीचन्द नाथ तुम भी इस ब्रह्म स्वरूप इस जगत सृष्टि गुरु स्वरूप ॐकार प्रणव की उपासना करो–साधना करो और अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करो यही मेरा आदेश भी है और यही मेरा

आशीर्वाद भी समझो।

यह गुरुदेव के वचन सुनकर योगीराज भर्तृहरि और गोपीचन्द ने जिज्ञासापूर्वक पूछ ही लिया कि हे करूणा निधान हे कृपा निधान हे सद्‌गुरुदेव हम पर और कृपा कीजिए और हमें ॐकार ब्रह्म स्वरूप की उपासना एवं साधना कैसे करे ? यह बतलाने की अनुकंपा करे और उन्होंने गुरुदेव को सादर प्रणाम किया। शिष्यों की ऐसी जिज्ञासा और वह कृतित्व साकार करने की अभिलाषा देखकर गुरु गोरक्षनाथ जी अत्यन्त मन:पूर्वक प्रसन्न हुए और वह कहने लगे। हे मेरे प्रिय शिष्यों मैं अब अनन्त फलदायक और ध्येय प्राप्ति फल देने वाले ब्रह्मात्मा स्वरूप ॐकार की उपासना कैसे करे यह बतलाता हूँ अत: ध्यानपूर्वक सुनिए।

उपासना का अर्थ है पूर्ण सर्मपण और यह समर्पण साधना, सम्मान आदर, पूजन, ध्यान, भक्ति, योग और सेवा आदि द्वारा करना चाहिये, मुख्यत्वे भक्ति-ज्ञान-कर्म यह स्वर्ग प्राप्ति एवं मोक्ष मुक्ति प्राप्ति के लिये करते है किन्तु पूर्ण समरस या समर्पण में उस भक्त को ना स्वर्ग सूख की अपेक्षा ना मुक्ति की अपेक्षा उसका समर्पण के भगवान के आश्रय, उनका सानिध्य तथा भगवान में एकरूप होना ही है।

योगीश्वर जो नाथ सिद्ध योगी जो ध्यान साधना को सबसे श्रेष्ठ मानते है किन्तु यह योग भी उपासना ही है क्योंकि योग में भी उपासना जैसे ही परमात्मा का चिन्तन या मनन या ध्यान में तन्मय होना एकाग्र होना ही कहा है। उपासना का सर्मपण अर्थात् ऐसा समर्पण जिसमें अपने पास कुछ भी बचने की भावना न हो कुछ भी स्वार्थ ना हो।

कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
समीप सेवा विधिना उपास्तिरिति कथ्यते।।

अर्थात् – कर्म-मन-वाणी से एवं सदैव सभी अवस्था में अपने इष्ट के समीप रहकर सेवा-पूजा-भक्ति इ० विधि से समर्पित करना इसे ही उपासना कहते है।

अत: प्रवृत्ति और निवृत्ति यह २ प्रकार की उपासना है प्रवृत्ति मार्ग से भक्त देवता समान या स्वर्ग सुख प्राप्ति होती है लेकिन निवृत्ति उपासना मोक्ष मुक्ति दिलाती है। उसी प्रकार सकाम और निष्काम का भी

मतितार्थ ऐसा ही समान है। सभी इच्छा आकांक्षा त्याग कर भगवान के भरोसे रहना तो वह स्वयं भक्तों के योग क्षेम को देखते है। इसमें अपने नाथ सिद्ध आकाश वृत्ति पर रहना कहते है। अतः इसमें कोई संदेह हो या चिन्ता हो तो वह उपासना भटकाती उपासना है। भक्त इष्ट के गुणमय हो जाये, भक्त और भगवान भेद नष्ट होना, भगवान के प्रति इच्छाक्रिया, ज्ञान शक्ति का अनुभव या प्रगति होना अमरत्व प्राप्त होना और भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा, विश्वास भक्ति आदि यह सब उपासनायें ही है।

हे अवधू उपासना के लिए समर्पण होने के लिए जिसमें हमारा अहं, अहंकार नष्ट होने के लिए इष्ट या उपास्य होना आवश्यक है बिना इष्ट या आपास्य, उपासना नहीं हो सकती इष्टों में अनेक देवी-देवता है, अपने सत्‌गुरु है, तो कोई माता-पिता को मानते है कोई जन कल्याण तो कोई अपनी अन्तर आत्मा को मानते है अपने उपास्य होना उपासना के लिए अनिवार्य है। जिनका मार्गदर्शन अपने सत्‌गुरु ही करते है।

एक बार रन्त परीक्षक जो नेपाल दांग का राजकुमार जंगल में आखेट (शिकार) करने आया था। जहां हम तपस्या में रमन थे मुझे देखकर उसने जब हमें प्रणाम किया। तब हमने उन्हें उपदेश दिया था कि **"अहिंसा परंधर्मो"** अगर मारना ही है तो मन रूपी मृग को मारो, अपने अन्दर के काम क्रोधादि अवगुणों को मारो तो तुझे अपार बल प्राप्त हो और उस परमात्मा की उपासना करोगे तो साक्षात्कार होगा और परमात्मा में परमानंद को भोगोगे ॐरूप धनुष्य को ग्रहण कर उस पर तप के द्वारा तीक्ष्ण हुए बाण को चढ़ा कर खीचे और अविनाशी ब्रह्म को लक्ष्य मानकर उसे बीध डालो, जो कि ॐकार प्रणव धनुष्य और आत्मा बान है ब्रह्म उसका लक्ष्य है। जिसमें तुझे तन्मय होना है उसी शिकार में लय होना है और आगे यही परमात्मा की उपासना उस रत्नपरीक्षक ने की और आगे वह सिद्ध रतननाथजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अतः हे शिष्यों उस परमात्मा का सर्वप्रथम नाम ॐकार प्रणव ही है। जो विशाल-विराट-प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप है। अतः यह उपासना योग्य है। तुम इसकी उपासना करो और उस परब्रह्म को प्राप्त करो।

हे भर्तृहरि जैसे नाथों में कहा कि **"नादे बिन्दी योगी तीनों एक स्वभाव"** अर्थात् नाद अर्थात् ॐकार अनहद नाद अर्थात् आत्मस्वरूप

जिसे उपास्य कहा है बिन्द अर्थात् ब्रह्मचार्य, साधना तपस्या या पूजा पाठ आदि कर्म जिसे उपासना कहा गया है योगी अर्थात् योगेश्वर या नाथ सिद्ध अर्थात् उपासक अतः उपास्य-उपासना और उपासक यह तीनो एक स्वभाव अर्थात् यह तीनों एक रूप हो जाते है, या स्वभाव अर्थात् तीनों का एकीकरण हो जाए तो लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। अतः उपास्य उपासना और उपासक तीनों का एकत्व ॐकार ब्रह्मत्व सिद्ध हो जाता है।

अतः ब्रह्मत्व या ॐकार परंतत्व या परमात्मा की उपासना दो प्रकार होती है १. सगुण और २. निर्गुण सगुण उपासना स्थूल रूप में है उसमें उपासना करना अत्यंत सरल-सीधा साधापन है। ऐसा निर्गुण उपासना में नहीं होता, उपासना करने वाले उपासक को अपने उपास्य या इष्ट का नाम तथा रूप रंग चाहिये अन्यथा वह किस रूप की पूजापाठ स्तुतिगान करेगा या वह ध्यान करने बैठे तो किसका ध्यान करेगा अर्थात् पूर्वकाल के ऋषिमुनियों ने जन कल्याण के लिये सगुण उपासना का सरल उपाय बताया है आगे साधक या उपासक जैसे-जैसे सगुण में समरस या परिपक्व हो जाता है। उसे ज्ञान की उपलब्धियां होने लगती है ध्यान से धीरे-धीरे वह समाधि की अवस्था प्राप्त करता है तो वह निर्गुण उपासना में प्रवेश कर लेता है। उपासक जो भी भक्ति कर्मादि उपासना अगर निष्काम करना है तो उसे ज्ञान वैराग्य प्राप्त हो जाता है और जो सकाम कर्म उपासना करते है तो कर्म करने का अधिकार सबको है लेकिन फल तो परमात्मा ही देता है अतः निष्काम उपासनायें होनी चाहिये। निष्काम उपासना कर्म करने में उपासक का मन अधिक लगता है और संसारिक उसके सभी कर्म उपासना की ही अंग बन जाते है और वह जीवमुक्त की ओर जाता है। सच्चाई तो यह है कि उपासक या हम कुछ भी करो किन्तु मन चित्त-अंतकरण की भावनायें ईश्वर में ही लगी हो। इसी प्रकार उपासक भगवान के प्रति पुत्र माता-पिता के प्रति तथा शिष्य अपने सद्गुरु के प्रति पूर्ण निस्वार्थ, निष्काम एवं समर्पण होकर उपासना या सेवा करना ही सच्ची उपासना है। लोक अपने केवल स्वार्थ वही अपने इष्ट ईश्वर माता-पिता या गुरु की सेवा या उपासना करते है। जिसमें किसी को अनन्त धन चाहिये तो किसी को सुन्दर नारी और अच्छी संतान की इच्छा तो किसी को जन प्रतिष्ठा की कामनाये आदि के स्वार्थ में वह अपना

अस्तित्व ही भूल जाते है। फिर परमेश्वर आखिर में जिस स्वार्थ के लिए उपासना, कर्म करता है वही स्वार्थ उसे दे देता है और सत्य तो यह है कि वही स्वार्थ उसे दु:ख भी देता है। फिर वह चाहे कोई भी प्राणी हो।

सत्यनाथ ब्रह्मजी के शिष्य यज्ञवाल्क्य नाथजी अपने गुरु कृपा से उन्होंने ॐकार की निर्गुण निष्काम उपासना करने पर उन्हें ज्ञान और वैराग्य की उपलब्धि हुई। एक दिन वह विरक्त होकर अपना आश्रम छोड़कर जा रहे थे तब उन्होंने अपनी दोनों पत्नियों को आश्रम की सम्पत्ति को दो भागों में बंटवारा करने को कहा तब उनकी सौ० मैत्रेयी नाम की पत्नि ने बड़े मार्मिक शब्दों में पूछा हे गुरुदेव यदि धन दौलत से सम्पन्न यह संसार भी मुझे दिया तो भी क्या मैं अमर हो जाऊंगी इस पर याज्ञवल्क्यनाथजी कहते है कि हे मैत्रेयी इस धन दौलतों से तो तेरा जीवन वैसा ही (सुख दु:खादि भोगों में) हो जायेगा जैसा संसार में समस्त साधना या कर्मों से सम्पन्न प्राणियों का होता है। अत: धन दौलतों से अमर होने की अपेक्षा कभी हो ही नहीं सकती और ऐसा कहते हुए वह सब कुछ त्याग कर अपने परमेश्वर उपासना के लिए चल दिये।

अत: भर्तृहरि पूर्ण वैराग्य, ज्ञान, भक्ति, निष्काम कर्म करने पर ही मोक्ष-मुक्ति को उपासक प्राप्त करता है। बहुत से साधु-संत त्याग करके उन्हें सिद्धियाँ प्राप्त होती है जो उन्होंने नि:स्वार्थ होकर जन कल्याण करना भी एक त्याग है। किन्तु वह प्राप्त दैवी सिद्धियों से अपार धन और प्रतिष्ठा को प्राप्त करके अमर होना चाहते है। फिर जो भी हो चाहे योग साधना हो, सिद्धियाँ हो या परमेश्वर की भक्ति हो। ईश्वर का हम प्रचार-प्रसार कर रहे है या धर्म का प्रचार कर रहे है और इसके बहाने वह भगवान को धर्म को व्यापार बना देते है। धनी बनते है या गुरु बनते है या भगवान बन जाते है और इतना होने पर भी प्राणियों का ना सुख दु:ख खत्म होता है नाही उन्हें ज्ञान-भक्ति की प्राप्ति होती है और नाही जन्म-मृत्यु से छुटकारा मिलता है वहां केवल लेन-देन स्वार्थ-प्रतिष्ठा इ० व्यापार ही होता है। अत: ऐसा प्राणी भटकाव में वह ॐकार जैसे मूल बीज या परमतत्व या उस परम ज्ञानमय ईश्वर को कैसे प्राप्त करेगा या ॐकार मय कैसे होगा।? अत: श्रेष्ठतम उपासना तो वहीं है जिसमें त्याग, वैराग्य है भक्ति ज्ञान है, निष्काम कर्म है या निस्वार्थ सेवा है, जिसमें पूर्ण समर्पण है। जिसमें लय

हो जाना है।

अतः सगुण उपासना में षोडशोपचार-पंचोपचारों से विग्रह पूजन, स्तोत्र, स्तुति पाठ जप संकीर्त भजन व्रतोपवास तपस्या यज्ञ-याग, योग-साधना भक्ति जिसे जो विधि अनुकूल प्रतीत होता है, उसी का वह करता है। निर्गुण उपासना सभी मानसिक मनोभाव से करते है। अतः जो कुछ भी करना है वह मन लगाकर करना चाहिए वही उपासना को उपासना कहते है। मन लगाकर अर्थात् मन तो बड़ा चंचल और अस्थिर होता है, उसे वश में लाना बड़ा कठिन है। किन्तु बार-बार प्रयत्न से अभ्यास करने पर मन वश में आ जाता है। जोकि हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वर तथा साधु-संत योगी ज्ञानी भक्त आदि जिज्ञासु-मृमक्षुजन हटयोग साधना द्वारा मन को वश में लाते है या मन को स्थिर करते है या मन को अपनी-अपनी उपासना में लगाते है। किन्तु अगर इससे भी नहीं हो पाता तो इसका उपाय है वैराग्य. ... है भर्तृहरि वैराग्य ही सबसे योग्य और अधिक परिणामकारक उपाय है। अतः तुम वैराग्य से ही मन को वश में करो, लेकिन वैराग्य अगर क्षणिक हो, यह ऊपरी-ऊपरी भाव में हो, या नकली हो या उलथे हुये जल जैसा हो तो वहा मन अधिक चंचल हो जायेगा ऐसे वैराग्य निरर्थक होता है।

अतः हे भर्तृहरि सत्य वैराग्य, या श्मशान वैराग्य क्या होता है यह अनुभव किया हो तो ऐसे वैराग्य गुरु कृपा से होता है। सत्गुरु शिष्य को मन्त्र अर्थात् गुरु मन्त्र कान में देकर संस्कारित करते है और यह नाथ सम्प्रदाय की आदि परम्पर है। अतः यह गुरु मंत्र नाद से प्रगट होता है। यह नाद का आश्रय हर एक चीज में लिया जाता है जैसे उपासक अपने भगवान की स्तुति गान गाता है भक्त भगवान का संकीर्तन भजन उस स्तुति गान भजनों को सुर ताल देने के लिए भी ढोल घण्टा घड़ीयाल मृदंग इ० बाह्य प्रगट नाद लगाते है। तो वह गाता है नाचता है तो भी अन्तरात्मा का नाद ही बोलता है, पूजा पाठ यज्ञ वेद शास्त्र सभी मंत्र नाद से प्रगट होकर कार्य सम्पन्न होता है। योग साधना योगासनों प्राणायाम मुद्रा बंद आदि में भी श्वास-प्रश्वास से नाद का ही अध्ययन होता है। ज्ञानी ध्यानी त्याग तपस्वी सभी इस नाद का इस अन्तरात्मा का नाद का ही अभ्यास करते है। नाद का ही आश्रय लेते है। नादानुसंधान तथा नाद योगी सर्व इन्द्रिय बन्ध करके अपने अन्तरम स्थित अनहद नाद ही सुनते है। यह सभी

की ही नाद उपासनायें है। अत: यह नाद ही प्रत्यक्ष ॐकार स्वरूप परब्रह्म है। अत: यही नाद उपासना ॐकार प्रणव उपासना या परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर की उपासना बन जाती है। इसमें कुछ साकार उपासक तो कुछ निराकार उपासक होते है इसकी वास्तविकता तो यह है कि ॐकार या नाद या यह ब्रह्म एक ही है। जंगल प्राणी भी अंश रूप से ब्रह्म है। इसमें जीवात्मा+आत्मा+परमात्मा का चिन्तन या ध्यान करते हुए साधक समरस होकर लय को प्राप्त होता है अर्थात् समाधि साधन हो जाता है। जो कि **नाद बिन्द योगियाँ तीनों एक स्वभाव हो जाता है।** उस अनन्य एकाग्र लययुक्त भाव जो हो जाता है। वह लयभाव वह तन्मयता निराकार और साकार इन दोनों उपासना के प्रति हो सकता है। अपने मठ मन्दिरों में देवताओं की स्थापना या प्राणप्रतिष्ठा हो या स्वार्थवश अपेक्षित कार्य पूर्ति हो या भगवान की प्राप्ति कहो या ज्ञान की उपलब्धि हो या यज्ञ हवनादि कर्म काण्ड हो जो भी हो यह सब मंत्र उच्चारण मंत्र पाठ मंत्र अनुष्ठान यह सब यह नाद रूपी मंत्र शक्ति पर निर्भर है। चाहे सगे सम्बन्धी हो, मित्र-शत्रु हो देवी देवता या भूतप्रेत्रादि सब कुछ मंत्र शक्ति का ही द्योतक है। जिसमें अच्छा बुरा अर्थात् सात्विक-राजसी या तामसी प्रभाव पड़ता है। वह सब ॐकार मंत्रों के प्रथम लगाने से ही होता है। क्योंकि ॐकार ही सगुण तथा निर्गुण या गुणमयी है।

देखो अत्यंत पुरातन काल में ॐकार का ही का मंत्र जाप उपासना होती थी। जैसे **"ॐ क्रतो स्मरन"** या **'ॐ नम:'** या केवल **ॐ ॐ ॐ..** ... का ही उच्चारण करते थे क्योंकि इसमें उच्चारण या जप करते समय प्राण ऊर्ध्वरिता या प्राण उच्चारण या प्राण को ऊपर खींचना पड़ता है जिसमें अपार शक्ति से ज्ञान तक यह ब्रह्मस्वरूप ॐकार की महिमा है, जो अपरंपार है। यह सृष्टि के भूत, वर्तमान, भविष्य काल भी है और तीनों कालों के परे परमकाल परंतत्व भी ॐकार ही है। यह सर्वत्र व्यापक है उपासना के जितने भी मंत्र-तंत्र विधि विधान है यह सब ॐकार से परिपूर्ण है। इसे त्रीमांत्रिक परमात्मा भी कहते है। सृष्टि प्रज्ञा ओर तेजस इन रूपों में ॐकार विश्वमय है। इच्छा क्रिया और ज्ञान यह तीन शक्तियाँ ब्राह्मी-रौद्री और वैष्णवी यह तीनों मात्राएं परंज्योति स्वरूप ॐकार में ही स्थित है। इसके प्लुत मात्रा में प्रणव का जप करने से समस्त पापों का क्षय

हो जाता है। यह ॐकार कामनाओं की पूर्ति करने वाला, संकटों से रक्षा करने वाला, समस्त सिद्धियों को देने वाला और मोक्ष मुक्ति प्रदान करने वाला है।

अतः हे सिद्धो इस ॐकार प्रणव का भजन करो, चिन्तन करो, जप करो, साधना उपासना करो और इतना कहते हुए गुरु गोरक्षनाथजी अपने मौन में पुनः शान्त हो गये।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द संवादे ॐकार
महिमः नाम षष्टमोऽध्यायः।।

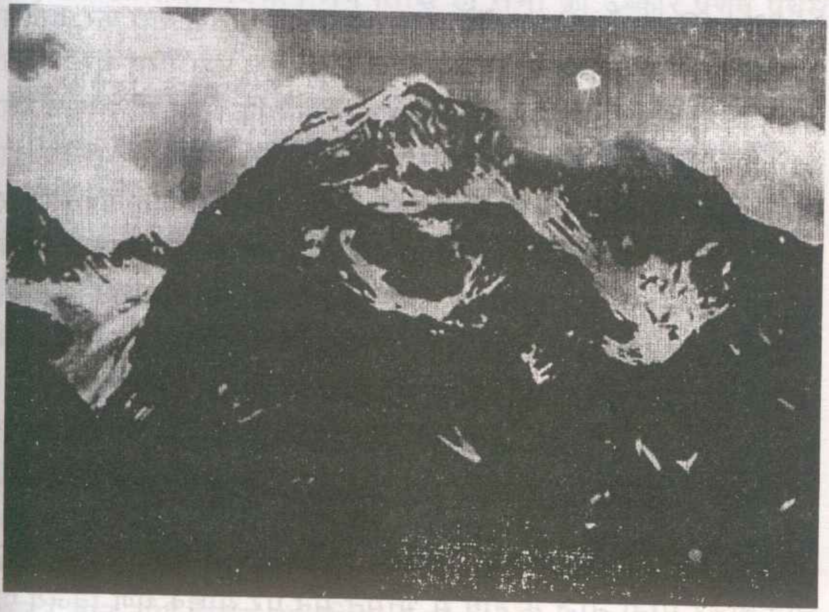

प्राकृतिक ॐकार पर्वत दर्शन

।। परब्रह्म ॐकार सिद्धि ।।

आज तो ऊषा काल प्रहर में चैतन्य ही चैतन्य अनुभव हो रहा था। शीतल-शीतल पवन की लहरे देह को सुख ही दे रही थी। सभी पशु पंछी अपनी-अपनी शुभ कार्यकारणी में मग्न हो गये थे। खिल-खिले पुष्प लतायें अपनी सुगंध से सभी ओर मधुरता सुगन्धित कर रही थी और उन अनन्त फूलों की मकरंद का आनन्द लेने हेतु भौरे इधर-उधर गुंजन कर रहे थे। फलों-फूलों के लदे हुए बहुत सारे वृक्ष झुके-झुके बड़े नम्रता से उस प्रकृति को नमन कर रहे थे। उन पेड़ों पौधों पर बैठे कुछ पंछी कोयल बार-बार कुहु ऽऽ कुहु बोल रही थी और यह सब देखते हुए गुरु देव भी अपनी अन्तरमुखता को भूलकर यह प्राकृतिक आनन्द का रसपान कर रहे थे और उस ईश्वरीय कला गुण आनन्द का वह मनोमन शुक्रिया अदा कर रहे थे।

इधर गंगा स्नानादि कर्म निपटकर शिष्य भर्तृहरि गोपीचन्द सद्‌गुरु सेवा में उपस्थित हो गये। उन्होंने चरण कमल पर मस्तक नवा कर आदेश प्रणाम किया और धूना में ही दूध गरम करके कुछ फल ऐसा गुरुदेव को अर्पण किया और संमुख बैठे हुए आशा करने लगे कि आज भी गुरुदेव हमें अमोघ और रहस्यमयी ज्ञान देंगे और वह चातक आँखों से गुरुदेव को निहारने लगे। तब अन्तर्यामि श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी अपने मधुर बाणी में बोल उठे, हे मेरे प्रिय शिष्यों आज भी हम इस ब्रह्मस्वरूप, सत्य सनातन ॐकार के कुछ रहस्यमय ज्ञान-विद्या तथा तन्त्र मन्त्रादि विधियाँ उपासना बतलायेंगे, जिनके द्वारा, आत्मकल्याण, जीव कल्याण और जनकल्याण होकर मोक्ष मुक्ति का भी लाभ हो सके अतः सुनो

बुद्धतत्वेन धीदोष शून्येनंकान्तवासिना।
दीर्घ प्रणव ॐ मुच्चार्य मनोराज्य विजीयते।।

अर्थात्- इस ॐकार प्रणव के उच्चारण या चिन्तन से ब्रह्म का, सत्य का ज्ञान होकर मौनी बुद्धि के दोष से भ्रमित मन पर साधक पूर्ण विजय पा लेता है।

देखो जैसे प्रातः के इस मनोहर दृश्य को देखे ? जोकि ईश्वर ने हमारे लिए एक दिव्य और चैतन्य भरा झूला बनाया जिसमें श्वास और

प्रश्वास को दो डोरियाँ लगायी है जिसका संचालन वह स्वयं करते है और हमें उस झूलें में बिठाया है। उस ॐकार जाप के संगीतमय मधुर गान में हम मग्न होकर आनन्द विहार कर रहे है जैसे यह सुबह का सुहावना दृश्य देखकर मुझे यह गीत गाने पर विवश होना पड़ा।

१. प्रातः सूर्योदय के समय नित्य एकान्त स्थान अपने सुखासन बैठ कर मन में ॐकार का स्मरण करके केवल अपनी श्वास और प्रश्वास पर ध्यान केन्द्रित करो और अपने गुरु निर्दिष्ट इस चिन्तन साधना को प्रतिदिन बढ़ता रखो आगे-आगे प्रगति होते हुए इस उपासना का उत्कृष्ट स्थान प्राप्त होगा और सभी संकट व्याधियाँ दूर होकर वह शिष्य अमृतमय और दिव्य परम पद को प्राप्त करेगा।

सूचना–१. गुरु आदेशानुसार नाथ योगी हो साधु-संन्यासी या वानप्रस्थी गृहस्थ भक्त साधक या उपासक जो कोई भी हो और कोई भी साधना-उपासना मंत्रजाप मंत्र सिद्धि हो सभी को ॐकार प्रणव प्रथम लगाना या स्मरण करना ना भूलिये।

२. उसी प्रकार कर्मकाण्डादि यज्ञ याग पूजा तर्पण मार्जनादि आहुति हवनादि उपासना में ॐकार का प्रथम अधिकार है। ॐ को सर्वप्रथम स्मरण करे।

३. वेद शास्त्र पुराण पाठ पूजन अभ्यास को सीखना या सीखाना हो या गुरु शिष्य संभाशन प्रश्न उत्तर वाद विवाद चर्चा हो वह भी ॐ को ही स्मरण कर के सम्मलित करना चाहिए।

॥ ॐकार मनोरथ सिद्धि ॥

पूर्ण दिन ॐकार के प्रति उपवास या व्रत करके रात्री को ॐकार प्रणव का एक सवा हजार जाप एकाग्र ध्यानपूर्वक करे। जप कुशासन पर सिद्धासन बैठे मौन का पालन करे मन्त्र जाप मन में करे और पूर्व दिशा को मुख करके करे ऐसा सवा मास, छः मास, सवा साल करने से सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होकर सभी समस्या का निराकरण हो जाता है। साधक के अन्दर ज्ञान और चैतन्य का प्रवेश हो जाता है।

देखो सिद्धो अन्तर आत्मा स्थित पर प्राण-अपाण से मंथन करके ॐकार प्रणव का कुम्भक करते हुए ध्यान करे तो असंख्य सूर्य की दीप्ति के सदृश्य हृदय में रहने वाले हंस रूपी ॐकार का साक्षात्कार होकर वह सिद्ध

निष्पाप, निष्कलंक हो जाता है।

।। ॐकार द्वारा आनन्दाऽनुभव ।।

हमारे नाथ सिद्ध परम्परा में मुद्राये तथा बंध की साधना प्रणाली होती हुई आयी है जिसमें मुद्रा = अर्थात् काया की विशिष्ट विधि से शरीर के किसी अवयव विशेष को विशेष स्थिति में रखने को मुद्रा कहते है। बंध = अर्थात् बांधना जो कि शरीर के अंग विशेष को धीरे-धीरे हटपूर्वक संकुचित करके बांधना को ही बंध कहते है हमारे हटयोग में १० तथा २४ बंध मुद्राये है।

ॐकार प्रणव	देह-स्थान	देवतायें	तत्व	ग्रन्थियाँ	प्राप्ति आनंद
'अ'	नासाग्र/नेत्र	ब्रह्माजी	अग्नि	ब्रह्मा ग्रन्थी	ब्रह्मानंद
'उ'	हृदय	विष्णुजी	अग्नि	विष्णु ग्रन्थी	आत्मानंद
'म'	भ्रकुटी मध्य	रुद्र	अग्नि	रुद्र ग्रन्थी	कैवल्य/परमानंद

अतः इस विधि में बंध-मुद्रा का अभ्यास करके उपरोक्त दर्शाये हुई ॐकार प्रणव के स्थान देवता तत्व ग्रंथियाँ को समझते हुए उनपर अपने प्राणशक्ति को संलग्न करना चाहिए वहां प्राणों का मंथन करने पर उन अक्षर वायु द्वारा उनका भेदन करने पर अन्त में अपने कण्ठ को संकोचन करके नाड़ी शक्ति स्तभित करे फिर जिह्वा को दबाकर सोलह आधार वाली ऊर्ध्वगामिनी या ऊर्ध्व रेता इंडा पिंगला के मध्य सुषम्ना नाड़ी को ॐकार युक्त कुण्डलीनि शक्ति को भ्रकुटि के तरफ ले जाकर आत्म दर्शन करे यहां प्रकाश ही प्रकाश होता है फिर कुण्डलीनि के संग प्राण शक्ति को चलित करके शिश मंडल सहस्त्रागार का भेदन करे और यहां उस ॐकार नाद-बिन्द का साक्षात्कार होकर परमानन्द तथा कैवल्यानंद की प्राप्ति होगी और यही मुक्ति या मोक्ष का द्वार है।

हे भर्तृहरि एक सीधी-साधी मनोभाव संकल्प सिद्धि विधि बतलाता हूँ और यह विधि सभी कर सकते है। देखो इस सृष्टि में ज्ञान और चैतन्य के स्वरूप में सभी सृष्टि संसार ॐकार मय ही है। अतः साधना करने बैठने पर ॐकार की मात्रा 'अ' सृष्टि 'उ' प्रज्ञा 'म' समाधित आनंद ऐसा दृढ

भाव से चिन्तन करे और चिन्तन करते-करते स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से कारण में हम जीव-शिव मिलन हेतु जा रहे है ऐसा अन्तकरण सह भाव करे और उस चिदात्मा में लीन हो जाये, जोकि चिदात्मा ही मेरा रूप है ऐसा मनोभाव दृढ़ संकल्प करे कि मैं ही नित्य शुद्ध-बुद्ध मुक्त एवं परमानन्दमय पूर्ण आनन्द स्वरूप प्रणव रूपी ॐकार हूँ तथा इस दु:खमय संसार और यह सब प्रपंच मेरा नही है। ऐसा भाव से त्याग कर के वैराग्य तत्व निष्ठता को प्राप्त करे और ॐकारमय हूँ आनंदमय हूँ मैं ही ब्रह्म हूँ ऐसा करने पर तुम लीन हो जाओगे और उस परम अवस्था के प्राप्त होंगे।

।। ॐकार सिद्धि ।।

इसमें निर्जन और एकान्त स्थान में बैठकर ॐकार की लुप्त मात्रा होती है जहां ओम् का उच्चारण होता है वहां ओं को बोलो और म् के लुप्त होकर काया अन्दर प्राण को स्थित करो रूक जाओ लुप्त हो जाओ फिर प्रणव जाप करो फिर लुप्त स्थिति में रहो...... ऐसा अभ्यास करो अत: यह जो लुप्त मात्रा जब परिपक्व अवस्था में आते-आते सम्पूर्ण काया पवित्रता के साथ सिद्धियाँ भी प्राप्त होगी और सभी संकटों, पापों एवं दोषों से मुक्त हो जाओगे।

।। स्वर्गारोहन ॐकार जाप ।।

साधना में बैठे हुए पहले निश्चित करे की ब्रह्मलोक जाना है या बैकुण्ठ धाम जाना है या कैलास लोक जाना है यह तीनों धाम अनुक्रमे 'अ"उ"म' के स्वरूप है। जिस धाम को जाना है। उसका निश्चयात्मक संकल्प करे और ॐकार की (श्री ॐकार यंत्रम् की) पूजा कर प्रार्थना करे कि मुझे इस धाम को दर्शन कराये। तब हृदय स्थित विष्णु जी को साक्षी बनावे और गंगा के किनारे मार्ग भ्रमण करते-करते ब्रह्मलोक जाये वहां से स्वर्गारोहन रथ पर सवार होये जिसके मन के कामक्रोधादि विकारों के घोड़ों पर प्राण का लगाम लगाये और प्राणायाम के प्राण-अपाण के दो पैरो से प्रवास करते हुए बैकुण्ठ धाम आओ यहां पर स्वर्गानन्द का अनुभव विष्णु ग्रंथी हृदयाकाश में होगी तद्उपरांत प्राणयाम के कुम्भक क्रिया को बढ़ाते हुए रथ को आगे-आगे जाना चाहिए उन्हें ॐकार पर्वत का अर्थात् ॐकार प्रणव का दर्शन होगा फिर मानसरोवर में सूर्योदय के लालिमा में स्नान कर पवित्र होकर फिर उनका प्राणायाम रूपी रथ कैलास के अष्टपदी के (आठ सिद्धियाँ) पास आनेपर

प्राणायाम (रथ) को त्यागना पड़ेगा फिर वह केवल लुप्त प्रणव मात्रा से कैलास पर्वतारोहण अष्टपदी से करते हुए कैलास लोक पहुँचेगे और वहीं जीव का शिव मिलन होकर परमानंद में विलीन हो जायेंगे।

अत: यह ॐकार रूपी प्राणायाम की हम विधि बताते है।

।। ॐकार रूपी प्राणायाम ।।

देखो ॐकार में 'अ"उ"म' यह वर्ण ही क्रमश: पूरक कुम्भक और रेचक है। जब यह तीनों वर्णों का एकीकरण होता है। उसे प्रणव कहते है। अत: प्राणायाम को ही प्रणवमय करना है। जोकि हमारी इडा (ह) सूर्यनाड़ी, पिंगला (ठ) चन्द्र नाड़ी और दोनों के मध्य में सुषम्ना योग (ह+ठ) नाड़ी करते है। अत: इड़ा (सूर्य) नाड़ी द्वारा प्राण को धीरे-धीरे काया अन्दर मूलाधार तक भरना है इसे पूरक कहते है यहां प्राण सोलह मात्राओं से युक्त प्रणव 'अ' कार का ध्यान करना है तद्पश्चात् काया अन्दर मूलाधार में प्राण को धारण किये रोकना है इसे कुम्भक कहते है। यह कुम्भक चौसठ मात्राओं के युक्त 'उ' कार का ध्यान करते हुए प्रणव का जाप करना चाहिए उसके बाद कुम्भक से रूका हुआ प्राण बत्तीस मात्रा 'म' कार के ध्यान पूर्वक धीरे-धीरे बाहर निकाल देना है इसे रेचक कहते है। यह विधि पुन: दुबारा उलट रीति से करे तब एक प्राणायाम होता है यह बार-बार विधि कर करने से समस्त काया की नसे नाड़ी सह काया शुद्ध होकर, सुषम्ना जाग्रत होकर कुण्डलीनि तथा अनहद नाद ऊर्ध्वरिता होकर सहस्त्रागार में पहुँच कर आत्मसाक्षात्कार या ॐकार दर्शन होकर ज्ञान मोक्ष मुक्ति को साधक प्राप्त हो जाता है।

ॐकार प्रणव	प्राणायाम	नाड़ी	हठयोग	नाड़ी सूर	मात्रा	क्रिया
'अ'	पूरक	इड़ा	'ह'	सूर्य	१६	दोनों (तरफ)
'उ'	कुम्भक	सुषम्ना	योग (ह+ठ)	प्रकाश	६४	दिशा से प्राणायाम
'म'	रेचक	पिंगला	'ठ'	चन्द्र	३२	करे

इस प्रकार हठयोग प्राणायाम से साधक ॐकारमय होकर आत्मानन्द को पाकर मोक्ष मुक्ति को जाता है।

।। ॐकार नादानुसंधान ।।

हे भर्तृहरि गोपीचन्द ॐकार नाद से इस अनहद नाद से नादानुसंधान साधना करने पर बिन्दु रूप नाद जो कि अनहद नाद का ब्रह्मरन्ध्र में कैसे साक्षात्कार होता है यह हमने इससे पूर्व "ॐकार नाद ब्रह्म" इस प्रवचन में बहुत ही विस्तृत भाव से बताया है। अतः ॐकार मय ध्यान पर हम प्रकाश डालते है जो सर्व साधारण प्राणी भी कर सकता है।

।। ॐकारमय ध्यान ।।

इस ॐकारमय ध्यान के उपासना करने के लिए ॐकार प्रणव का जाप करना सर्वत्तोपरि उत्तम है। देखो सृष्टि में समस्त स्थूल-सूक्ष्म कारण ॐकार मय ही है। कि ॐकार का सगुण-निर्गुण रूप उपासना करके उसका अनुभव लेना ही सिद्धि कहा जायेगा। अतः हे अवधू उसी का ध्यान कर सच्चिदानंद, परब्रह्म, परमात्मा का सर्वत्र व्यापक अनुभव करो वह एक दिव्य शक्ति है। जिस प्रकार हमारे काया पिण्ड में चेतना स्वरूप आत्मा दिखाई नहीं देता किन्तु उसके चैतन्य के अस्तित्व से ही हम खाना पीना सोनादि कार्य करते है। उसी प्रकार यह ॐकार का दिव्य स्वरूप दिखाई नहीं देता किन्तु वह सम्पूर्ण जगत सृष्टि का संचालन करता है। अतः ॐकार की ध्यान करने, उपासना करने पर उस ॐकार के ब्रह्म स्वरूप चैतन्य का अनुभव अवश्य होगा या ॐ की सम्पूष्टि लगाकर अपने गुरु मन्त्र का भी भावार्थ पूर्वक जाप या ध्यान या साधना की जा सकती है।

इसलिए हमारे श्वसन क्रिया में जो प्राण हम लेते है और छोड़ते है इस प्राण-अपान के क्रिया पर ध्यान लगाकर केन्द्रित करो और साथ-साथ ॐकार का जाप करो। इसके अभ्यास से काया मन इन्द्रियों के समस्त दोष और बूरे संस्कार धीरे-धीरे खत्म होगे और जब तुम पूर्ण रूप से द्रष्टा बनकर श्वास-प्रश्वास को स्थूल से सूक्ष्म रूप में ॐ का ध्यान प्रत्येक श्वास पर करोगे और धीरे-धीरे अनुभूति होनी शुरू होगी अतः श्वास को लेना/छोड़ना को एक मिनट दे और द्रष्टा होकर भीतर देखो और ॐकार जाप करो इस प्रकार अभ्यास करने पर तुम सूक्ष्म ॐकार अनुभूति साक्षी बन जाओगे फिर यही क्रिया यही ध्यान उपासना दीर्घ समय तक करोगे तो वह सहजयोग बन जायेगा ऐसी उपासना करते हुए तुम उस सच्चिदानंद ब्रह्म स्वरूप के साथ

एकरूप हो जाओगे जैसे तुम समाधि में ॐ चैतन्य का आनंद लोगे। आप सोते-जागते, काम करते सभी अवस्था में ॐकार मय हो जाओगे और यह साधना साधक मुख्यता: नित्य सवा घण्टा एकान्त बैठकर करोगे तो जीवन के सभी कुसंस्कार अपने पापों, अपने दु:खों को नष्ट होकर अपने आत्मा से परमात्मा का उस परमतत्व का साक्षात्कार अवश्य होगा।

फिर आगे-आगे गोरख जागे अर्थात् आगे-आगे वह साधक या उपासक उस परम ईश्वर ॐकार का ध्यान इतना तल्लीन तदरूप एकीभाव सा हो जायेगा कि वह अपना स्थान, समय, अतएवं स्वयं को भी भूल जाता है और उसे यह ॐकार मय परमात्मा की भाव समाधि से शून्य समांधि में वह परमानंद कैवल्यानंद भोगता है। जो आनंद शान्ति चैतन्यमय दिव्यमयी अवस्था में जाता है कि कोई भी भेद कोई भी अस्तित्व ना कोई अहंकार सब कुछ शून्य शून्यातीत तथा सत्य शिवम् सुन्दरम् में स्थित हो जाता है। अब सुनो गोरखबाणी

ॐनादानुसंधान समाधिभाजाम्।
योगीश्वराणां हृदि वर्धमानम्।।
आनंदमेकं वच सामगम्यम्।
जानीत् तं श्री गुरुनाथ एक:।।
कर्णो पिधाय हस्ताभ्या यं शृणोति ध्वनि मुनि।
तत्र चितं स्थिरी कुर्याद्यातस्थिर पदं वज्रेत्।।
अभ्यास्य मानो नादोऽ यं।
पक्षाद्विक्षेपमखिल जित्वा योगी सुखी भवेत्।।

अर्थात्-ॐकार नाद के अनुसंधान से जो ध्यान समाधि या उपासना होती है। यह करने वाले उपासक या नाथ योगेश्वर के हृदय में बदला हुआ एक चैतन्यमय आनन्द होता है। जो अनुभूति मुख द्वारा वर्णन नहीं की जाती जिसे केवल मैं गुरु गोरक्षनाथ जी ही या श्री नाथ सद्गुरु जी ही जानते है। अपने हाथों से (अंगुलियों से) कानों को बन्द करके जो मुनि या उपासक या नाथ सिद्ध नाद (ॐकार) शब्द का ध्वनि सुनता है, तो वहां वो चित्त को, मन को स्थिर करके, स्थित स्थापित अर्थात् स्थिर अवस्था को प्राप्त कर

लेता है और ऐसे अभ्यास किया हुआ ॐकार ब्रह्मनाद बाह्य शब्द का आवरण करता है जिससे वह उपासक पल भर में सब विक्षिप्त संकटों, दु:ख को जीतकर सुखी हो जाता है। हे अवधू यह ॐकार नाद रूपी अंकुश मदमस्ती हाथी स्वरूप मन चित्त अहंकार को वश कर लेता है। इसलिए नादानुसंधान ॐकार उपासना उपासक योगी ने करनी चाहिए।

देखो इसमें एक विधि ऐसी भी है उसे भ्रामरी-प्राणायाम कहते है। जिसका स्थूल सूक्ष्म विधि पूर्व अध्याय में वर्णन किया हुआ है।

॥ मृत्युन्जय ॐकार ॥

हे भर्तृहरि गोपीचन्द यह ॐकार मृत्यु से भी उस उपासक की रक्षा करता है। इस बारे में पूर्व पुराणों में एक कहानी आती है कि एक बार माँ शक्ति देवी मृत्यु से डरकर ॐकारमयी वेदों में छूप गयी तब वेदों ने मन्त्रों द्वारा अपने आप को अछादन कर लिया था तब काल रूपी मृत्यु ने यह देख लिया। जब देवताओं को यह सब ज्ञात हुवा तो वह भी ऋग् यजु साम इन वेदों के कर्मों को त्याग कर ॐ में प्रवेश किया तब वह काल परम मृत्यु उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकी। अत: ॐकार शुद्ध परब्रह्म है काल से भी परे है और परब्रह्म है इसलिए सभी देवी-देवता ॐकार में प्रवेश करने से अजर, अमर और अभय हो गये।

अत: ॐकार उपासना करते हुए साधक ॐकार को पूर्ण समर्पित होकर उसका आश्रय लेवे और उसे अमृत और अभय जानकर उपासना करे तो उसका ॐकार में प्रवेश अर्थात् एकरूप हो जाना निश्चित है।

भौतिक-स्वास्थ्य में ॐकार हे अवधू अपने पुरातन नाथ सिद्धों ने तथा अन्य सन्तों ने ॐकार के प्रणव और बीज मन्त्रों से शरीर के अंगों पर प्रभाव पड़ता है और वह सब ठीक हो जाते है विशेषता प्रणव मन्त्रों का जाप करते हुए हृदय, मस्तिष्क, हाथ-पैर और सभी सूक्ष्म इन्द्रियों पर भी प्रभाव पड़ता है। इन बीज मन्त्रों का जाप ताम्बे के बर्तन में शुद्ध जल लेकर संमुख रखकर (थोड़ानजदीक) और ऊँची आवाज में बीज मन्त्र का जाप करके रोगी को दे दो उससे उन्हें आराम आ जाता है। विशेषत: मानसिक, बौद्धिक, बीमारियों पर भी प्रभाव पड़ता है।

।। ॐकार से सन्तान प्राप्ति।।

अतः हे भर्तृहरि पूर्व काल में इस ॐ परमतत्व की उपासना से संतान प्राप्ति होती है ऐसा प्रमाण भी मिलता है जो उपनिषदों में किसी कोषीतकि ऋषि ने भगवान सूर्य की ॐकार प्रणव से उपासना की और भगवान सूर्य की कृपा से उन्हें पुत्र प्राप्ति हुई थी। अतः जब उसी की पुत्र ने जब अपने पिता कोषीतकि ऋषि को पूजने पर उन्होंने कहा की मैंने यह सूर्य नारायण का ॐकार प्रणव से ध्यान उपासना करने से तु मेरा एक पुत्र हुआ। अतः तुम भी यह सूर्योपासना कर लो अर्थात् इसमें सूर्यनमस्कार जिसमें सम्पूर्ण शरीर को आरोग्य एवं शक्ति तथा तेजस्वीता ओजस प्राप्त होता है वह सब बारह आसन नमस्कार है। फिर ॐकार प्रणव द्वारा प्राणायाम तथा ध्यान करना सूर्य नारायण को स्नान उपरान्त अर्ध्य देना तथा पूजन नमस्कार वन्दना प्रार्थना इत्यादि सूर्य स्वरूप ॐकार की उपासना है। अतः हे पुत्र जो सूर्य का ध्यान करते हुए प्रणव ॐकार की साधना करता है। उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। क्योंकि सूर्य ही ॐकार प्रणव है। जिसके उपासना से मनवांछित अनेक फल की प्राप्ति होती है।

अतः उपनिषद में कहा है कि जो सत्चित ब्रह्म है वही ज्योति है; जो ज्योति है वही आदित्य है और आदित्य है वही ॐ प्रणव है। ऐसा ध्यान करने पर अपने आत्मा के साथ संगठन हो जाता है।

।। ॐकार प्रणव से ईश्वर-दर्शन ।।

हे शिष्य-यह ॐकार ईश्वर के दर्शन भी करवाता है।

अवधू एशा इषदरश आपा मिटे त्र्यतापा।
अमीरस पीये भरी भरी सींचत सो भय निष्पापा।।

अर्थात् – हे अवधू इस ॐकार ध्यान से जब ईश्वर के दर्शन होते है तो दैहिक, दैविक और भौतिक इन त्रय तापो के दुःख अपने आप नष्ट हो जाते है और वह जैसे-जैसे घट में भर-भर से (सहस्त्रागार में) चंद्रामृत का सिंचन होता है और वह अमृतरस को वह पीता है तो वह सभी दोषों से सभी दुःखों से निवृत्त होकर निष्पाप, निर्मल, पवित्र अलख निरंजन हो जाता है।

विधि – इसलिए हे अवधू तुम एकान्त शान्त एवं निर्मल वन में कुशासन या कम्बलासन पर पद्मासन या सुखासन में बैठकर जो कि मेरूदण्ड का सीधा रखते हुए दोनों आंखों के मध्य भृकुटी के आज्ञाचक्र में इस ब्रह्मज्योति स्वरूप ॐकार का ध्यान तैल की धारावत निरंतर एकाग्र होकर करे जब कि नेत्रों को बंद या अर्द्ध मिलित रखे तथा ब्रह्मचर्य का खानपान संयम करे और ध्यान काल में मौन रखना चाहिए। फिर धीरे–धीरे साधना में प्रगति पथ जाने पर ध्यान परिपक्व होता है और अवधू को अपने शरीर से ऊर्जा प्रगटने का अनुभव आता है अपनी काया के सभी ओर ॐकार की दिव्य तेजस्वी वलयोका मण्डल दिखायी लगता है। अवधू पूर्ण अन्दर बाहर ॐकारमय होता है। वह आनंदित होकर आत्मविभोर हो जाता है। कभी कंपन रोज–रोज रोमांच तो कभी सम्पूर्ण काया रूई के समान हल्की होती है। मन चित्त में शीतलता आती है अवधू में दिव्य तृप्ति, उत्साह ऐसे अनेकों आनंददायक अनुभव आते–आते ६ तो ७ मास में उन्हें उस चैतन्य मय ब्रह्म स्वरूप ॐकार का साक्षात्कार हो जाता है। उस अवधू को आत्म सत्कार रूपी ॐकार के ईश का दर्शन सर्वत्र व्यापक लगता है वह जाग्रत, स्वप्न, सुषम्नी, तुर्या तुर्यातीत इन सभी अवस्था में अपने सभी ओर जगत को ब्रह्म स्वरूप में ही देखने लगता है सर्व ईश्वर रूप देखता है ॐकार रूप देखता है। जबकि इस अवस्था को वह वर्णन भी नहीं कर पाता वह सम्पूर्ण ईश्वर मय हो जाता है। अन्त में अपनी साधना में नित्य नित रहते हुए वह तुर्यातीत अवस्थामय शून्य समाधि तक पहुँच कर मोक्ष मुक्ति का अधिकारी बन जाता है।

अतः हे अवधू तुम भी इस कर्म योगी बन जाओ। इस ॐकार परब्रह्म के उपासक बनकर समर्पित होकर साधना करो, तप करो, तपस्या करो।

ऐसा कहते हुए गुरु गोरक्षनाथजी उस परमात्म स्वरूप ॐकार के प्रगट सृष्टि के नैसर्गिक सौंदर्य का अस्वाद लेने लगे। मध्याह समय भोजन तृप्ति के उपरांत गुरुदेव विश्रान्ति में रमन हो गये।

इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द संवादे परब्रह्म
ॐकार सिद्धि नाम सप्तमोऽध्यायः।।

अष्टमः अध्याय

।। त्रिगुणातित ॐकार साधना ।।

संध्या की बेला थी। धूना तथा गुफा की सब स्वच्छता करके पूजा पाठ करके चेतन धूना पर आरती करने लगे गोपीचन्दनाथ बड़े ही तन्मय होकर आरती कर रहे थे। तद्उपरान्त आदेश प्रणाम भोग भण्डारा आदि निवृत्त होते हुए वह अवधू भर्तृहरि एवं गोपीचन्दनाथ गुरु चरण सेवा में उपस्थित हुए। तब गुरुदेव गोरक्षनाथजी के झीलमील जटाये ज्योति प्रकाश में सुनहरी दिख रही थी मुख मण्डल अत्यंत तेजस्वी जती स्वरूप दैदिप्यमान दिख रहा था। बीच-बीच में कानों में सुवर्ण कुण्डल चंद्र-सूर्य समान अपनी किरणों से चमक रहे थे। रुद्राक्ष मालाओं नाद जनेऊ ऐसे उच्चासन बाघाम्बर बैठे हुए गुरुदेव प्रत्यक्ष ॐकार आदिनाथ जी का स्वरूप दिखाई पड़ रहा था। तब नदमस्तक होकर अवधू योगी भर्तृहरिनाथजी ने कहा हे गुरुदेव आपने ॐकार साधना का सुन्दर वर्णन बताकर हमें कृतार्थ किया और ऐसी साधनायें हम जीवन में अवश्य अपनायेंगे आपकी कृपा और आशीर्वाद निरंतर हमारे साथ रहे। अतः गुरुदेव इस कलयुग समय इंसान बड़ा ही स्वार्थ परायण होने लगा है। जाने-अनजाने में वह पापी का भागी भी बन जाता है। यह कलयुग का प्रभाव इंसान को हर प्रकार विवश कर देता है अतः इससे पार होने के और भी कोई ॐकार मय उपासनाये होगी तो हमें बताने की अनुकंपा करे।

तब्र बड़े ही प्रसन्नता से गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा हे शिष्यों तुम ने बहुत ही अच्छा उपाय पूछा। इस कलयुग में कठिन साधना लोको से नहीं हो पायेगी। अतः ॐकार की अत्यंत सहज और सरल उपासना एवं भक्ति करने का सहज उपाय है, जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हो सकेगी। अतः कुछ उत्तम एवं सहज साधनायें ॐकार की बतलाता हूँ। यहां जो दर्शाया गया "श्री ॐकार यन्त्रम्" को तुम समझ लो। इस श्री ॐकार यन्त्रम् को भोज पत्र अथवा ताम्र पत्र या अन्य सुवर्ण चांदी इत्यादि के द्वारा दर्शाये हुए पांच वेद चारों धर्म चारों ज्ञान वाक्य दिशा उसमें ॐकार प्रणव रचना और गुरु यंत्रम् इत्यादि देखकर तैयार करे यहां साधना करते समय यह यंत्र अति उत्तम एवं शीघ्रम् अपना प्रभाव दिखलायेगा अतः ऐसे श्री ॐकार यंत्रम् को अपने आश्रम या मन्दिर या धूना स्थान या घर,

मकान के एकांत कक्ष में विधिपूर्वक स्थापन करे और जब भी साधु-संत हो या नाथ सिद्ध या भक्त-सेवक हो वह प्राथमिक सभी विधि से निवृत्त होकर यह यन्त्र संमुख आसन पर विराजे प्रथम यंत्र की पंचोपचारे या पंचतत्वाउपचारे या षोडोपचारे पूजन करना चाहिए जैसे प्रथम जल स्नान कराये-वस्त्र या लाल सूत चढ़ाये चंदन गंध तिलक करे सुगंधी पुष्प-पुष्पमाला, बिल्वपत्र या तुलसी दल या दुब चढ़ाये फिर धूप-दीप-अगरबत्ती इत्तर से सुगंधित आचवावे और भोग नैवद्य इत्यादि पूजन पश्चात हाथ जोड़कर नमन या साधु संत अपने पद्धतियों को नमस्कार करे नाथ सिद्ध नादी बजाकर आदेश कर सकते है फिर संकल्प करे या प्रार्थना करे। हाथ में जल अक्षद लाल पुष्प लेकर कहे की मैं (अपना नाम) अमुक सतुगुरु का शिष्य या अमुक पिता का पुत्र अमुक कार्य हेतु अमुक समय अमुक मंत्र या आपकी शरण में आप ॐकार प्रणव का जाप साधना या उपासना करता हूँ। अत: आप इस साधना को सफलतापूर्वक पार करे और हमें आशीर्वाद प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ। यह कहते हुए वह जल अक्षदादि यंत्र संमुख छोड़ दे और नमन करके साधना को प्रारंभ करे।

प्रथम श्री गणेशायन नम: फिर अपने सत्‌गुरु जी का नाम लेकर कम से कम २१ प्राणायाम की विधि करे और श्वास को बारह बार श्वास-प्रश्वास लेकर स्थिरतापूर्वक श्वास बाहर छोड़े और फिर ॐकार प्रणव मंत्र जाप या ध्यान को प्रारंभ करे।

।। ॐकार परब्रह्म का दर्शन ।।

अत: हे प्रिय शिष्यों पूर्वकाल हमारे नाथ सिद्धों ने अपने-अपने अनुभव से सिद्ध किया है, कि अगर ॐकार प्रणव की उपासना या साधना यथा विधि किया तो अपेक्षित कार्य सिद्धि तथा तत्व ज्ञान हो जाता है। अत: इस परमतत्व परब्रह्म का साक्षात्कार दर्शन करना चाहते है तो ॐकार प्रणव उपासना में उपरोक्त श्री ॐकार तंत्रम् का पूजन प्राणायामादि सब श्रद्धा और भक्ति से करना चाहिए। जो धर्म अर्थ-काम-मोक्ष यह चारों में से केवल मोक्ष की इच्छा होनी चाहिए और जिनको इस माया जगत में कोई भी इच्छा ना रही हो जिसे जन्म मृत्यु का यथा ज्ञाता है और वह केवल मात्र परमात्मा परब्रह्म को चाहता हो तो उसे करना चाहिए कि ॐकार

श्री ॐकार यन्त्रम्

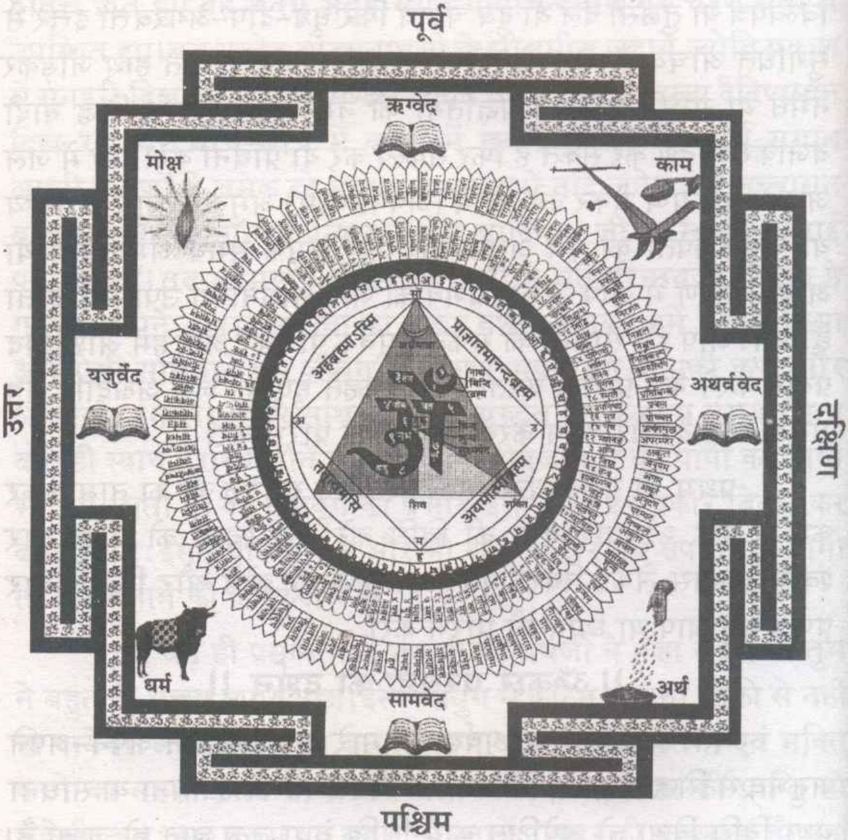

चित्रांकन – योगी विलास नाथ

प्रकाशक – श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर

जिला – रोहतक (हरियाणा)

प्रणव का जाप सवालाख होने पर साधक सभी पाप मुक्त हो जाता है और जिसने शान्त एकान्त में विधिपूर्वक बारह हजार से सोलह हजार प्रणव ॐकार का सवा वर्ष तक जाप करता रहेगा तो ॐकार भगवान उसी समय प्रगट होकर दर्शन देते थे। जो कि सबके अपने भाव इच्छा भक्ति श्रद्धा युक्त इष्ट होते है उन्हें अपने-अपने इष्ट भगवान का दर्शन हो जाता है अतः यह विधान नाथ सिद्ध योगेश्वर करे तो ॐकार आदिनाथ जी (शिव) के दर्शन अवश्य हो जाते है। अतः यह विधान सभी के लिए मान्य है। जीवन का पुरुषार्थ या सिद्धान्त या उद्देश्य संसार के भोगों में नहीं वरन भगवत् भक्ति और उसका सानिध्य या परब्रह्म स्वरूप मुक्ति ही है।

।। श्री ॐकार तंत्रम् द्वारा देवताओं का साक्षात्कार ।।

साधक ने श्री 'ॐकार यन्त्रम्' का ताम्र यंत्र या अन्य धातु का यंत्र संमुख रखना चाहिए यंत्र के सवा हाथ दूरी पर एक शुद्ध गौ के घी का दीपक जो मृतिका का रखना चाहिए ऐसा रखे कि उस ज्योति का प्रतिबिंबित प्रकाश यंत्र के बीचों-बीच आना चाहिए और उसके सामने सवा हाथ दूरी पर साधक अपना आसन (सुखासन) रखना चाहिए और साधक आसन ग्रहण करके उस दीपक के शिखा ऊपरी भाग पर एक टक देखता रहे अर्थात् त्राटक करे और साथ-साथ अपने इष्ट का अथवा ॐकार प्रणव का जाप करे। अपने इष्ट देव के नाम को या अपने गुरु मंत्र को ॐ कार का सम्पुष्टि लगाकर जाप कर अर्थात् जैसे "श्रीराम" इस नाम मंत्र को ॐ श्री राम ॐ या ॐ शिव गोरक्ष योगी को ॐशिव गोरक्ष योगी ॐ इस प्रकार त्राटक करते हुए जाप करे और इष्ट देव को दर्शन हेतु मनपूर्वक प्रार्थना करे। शुरू-शुरू से एकटक देखते हुए आँखों में पानी आयेगा उसे स्वच्छा वस्त्र से पोछकर पुनः एकटक ध्यान शुरु करे दीपक की ज्योति स्थिर रहना आवश्यक है जो उसे हवा नहीं लगने के लिए उस स्थान कमरे के खिड़की दरवाजे बन्द करना चाहिए जो कि यह साधना के लिए वह कमरा कोठरी या वह मन्दिर एकान्त निर्जन शान्त स्थान में होना आवश्यक है। समय प्रातः सूर्योदय से पहले २-३ घण्टे या रात्री ११ से २-३ बजे तक करना चाहिए जिससे एकान्त के लिए यह समय उचित होगा। आगे-आगे समय अनुसार साधना एकाग्रता एवं परिपक्वता अनुरूप ॐकार प्रणव (प्रकाश मात्र) या इष्टदेव के दर्शन होने लगते है तथा पूछे गये अपेक्षित प्रश्न का

जवाब भी प्राप्त होता है। जो लोक आँखों से कमजोर है, जिनकी श्रद्धा विश्वास नहीं है तथा गुरुमुख या सत् गुरु मार्गदर्शन नहीं है, जो सात्विक भाव वाले नहीं है उन्होंने यह विधान नहीं करना चाहिए। श्रद्धा विश्वास भक्ति इस आधार पर ही यह विधि सिद्ध हो सकती है।

।। ॐकार द्वारा मनोवांछित फल प्राप्ति।।

हे भर्तृहरि गोपीचन्द यह प्रयोग कोई भी साधारण मनुष्य कर सकता है। किसी भी शुभ मुहुर्त अवसर पर यह विधि का प्रारम्भ करना चाहिए प्रथम श्री ॐकार यंत्रम् के संमुख आसन पर बैठकर यंत्रम् पूर्वोक्त विधि से पूजन करके हाथ में जल+अक्षद+लालपुष्प लेकर संकल्प करे कि

"संकल्प"

मैं अमुक नाम का मेरे अमुक सद्गुरु कृपा से मेरे अमुक कार्य के लिए हे ॐकार प्रणव रूप परमात्मा मैं आपकी उपासना करने जा रहा हूँ। अतः आप अनन्त कृपानिधान मेरी उपासना निर्विघ्न पार करके मुझे मनवांछित फल प्रदान करे।

या "**कार्य सिद्धि मन्त्र**"

"ॐ परमात्मा नमः मम् अमुक कर्म कुरु कुरु स्वाहा"

या

ॐ परमात्म ने नमः मम् अमुक कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

उपरोक्त संकल्प कहकर या कार्य सिद्धि मंत्र कहते हुए जल अक्षदा लाल पुष्प यंत्र संमुख भूमि पर छोड़ देना। उपरोक्त कार्य सिद्धि मंत्र यंत्र के संमुख बैठकर १ माला (१०८ बार) जप करे त्रिकाल करे मनोकामना शीघ्र सिद्ध होगी।

अतः संकल्प के पश्चात् यंत्र को नमस्कार या नाथ सिद्धों ने आदेश करके किसी खुली जगह वाले निर्जन एकान्त स्थान पर अर्थात् जंगल, नदी तालाब किनारे या खेत में जहां घर या गांव के बाहर एकान्त मिले, मन्दिर मठ के बाहर खुला मैदान में ऐसा स्थान को चुनकर रखे और वहां नित्य रात्री या सूर्यास्त के पश्चात् या निर्जन वन हो तो प्रातः भी जा सकते हो यहां आकर साधक ने उत्तर दिशा को देखते हुए खड़े होकर दोनों हाथ

जोड़कर पुनः वह संकल्प या प्रार्थना या कार्य सिद्धि मंत्र बोले तदनन्तर दोनों हाथों को फैलाकर आकाश की दिशा में उठाते हुए ऊँची आवाज में ॐ....ॐ....ॐ प्रणव मंत्र का लम्बा-लम्बा मधुर सुर के साथ उच्चारण करते हुए लगातार जाप करो। यह जाप कम से कम ३२५ बार या ६२५ या १२५० बार उच्चारण करना आवश्यक है और भी मंत्र जाप को बढ़ाया तो आपका कार्य शीघ्र ही फलित होगा जिसमें दिशा फल भी है। प्रातः सूर्योदय के समय पूर्व दिशा को मुख करके साधना करे। जिसमें वशीकरण या सम्मोहन या आर्कषण सिद्धि द्वारा कार्य सिद्धि हो जाती है।

संध्या सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में साधना करे जो कि इससे धन प्राप्ति ऋद्धि-सिद्धि प्रदान होती है।

रात्री में दक्षिण दिशा को मुख करके साधना किया तो अभिचारक कर्म जैसे उच्चाटन, मारन, मोहन इत्यादि फलश्रृति होती है। सबसे उत्तम उत्तर दिशा को मुख करके जाप करने से योग-ध्यान-ज्ञान-वैराग्य एवं परम शान्ति का लाभ होता है। यह दिन में त्रिकाल कर सकते है।

यह उपासना विधि का सीधा प्रकृति के साथ तथा पंचतत्व के साथ संजोग होने से फल प्राप्ति शीघ्र ही हो जाती है। श्रद्धा भक्ति तथा विश्वास से यह ॐकार साधना नित्य दिन प्रतिदिन करते रहने से योग संजोग मनोकामना कार्य सिद्धि के प्रचीति आना प्रारम्भ होगा और यह विधि सभी भक्तजन कर सकते है।

॥ ॐकार कामना सिद्धि ॥

इस विधि में साधक नित्य प्रातः सुर्चिभूत होकर शुद्ध और पवित्र स्थान जहां स्वतंत्र एकान्त कमरा हो वहां एक लकड़ी की चौकी (चौरंग या पाटला) लेवे उसे लाल कच्चा सूत ३ या ७ लपेटे देकर बान्ध देवे। उसपर ताम्र या कास्य का पात्र रखकर उसमें लाल फूल विशेषतः गुलाब की पंखुड़ियाँ से भर देवे और उसपर यह श्री ॐकार यंत्रम् को स्थापित करके ॐकार के यंत्र की (पूर्व वर्णित) विधिवत भक्ति सह पूजन करे धूप दीपादि पंचोपचारे या षोडोपचारे पूजन करके ॐकार प्रणव का जाप करे जाप सवा महीना या सवा साल करे। तब यथार्थ ॐकार कामना सिद्धि प्राप्त होगी, नियम में पवित्र विचार-आचरण, ब्रह्मचर्य पालन भूमि पर ही खानपान

शयन करे हजामत वर्ज, नशा, झगड़े, वाद-विवाद का निषेद है। कामनायें पूर्ण होगी, भूत-भविष्य वर्तमान का स्वप्न में ज्ञान होगा इत्यादि सारी कामनायें पूर्ण होगी।

अगर साधक विधि विधान करने में असमर्थ हो या समय का अभाव हो तो वह किस फूरसत के समय में ॐकार की धूंद में रहे, प्रातः उठते समय स्नान, खाते-पीते, चलते-फिरते समय लेटे हुए रात्री में सोते समय, काम करते समय, खेल-खेल कला विशेषतः गायन कला में ॐकार धूंद बहुत ही प्रभावशाली होती है। अलग अलग राग गायन शैली के शब्द रसों में उन स्वरों में ॐकार पूर्णता व्याप्त है। ऐसा भक्ति के एकरूपता में ॐकार परब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है और मनोकामनायें आप ही पूर्ण हो जाती है। विशेषतः इच्छित वस्तु या व्यक्ति या कार्य की पूर्ति भी हो जाती है।

अगर रात्री सोने से पूर्व श्री ॐकार यंत्रम् की पूजन पाठ जाप करने के उपरान्त १०८ या १००८ बार जप करते-करते निन्द्राधीन हो जाये ऐसा प्रतिदिन करे ६ मास में दैवी वाणी स्वप्न में सुनाई देती है। इस प्रकार अनेकों ॐकार साधक को प्रत्यक्ष प्रमाण एवं साक्षात्कार होकर साधक कृतार्थ होता है।

।। ॐकार से नवग्रह शान्ति।।

हे भर्तृहरि हे गोपीचंद पूर्वकाल ऋषि मुनियों ने जन्म मृत्यु कुण्डली, नवग्रह शान्ति आदि भविष्य शास्त्र की खोज की उसमें अनेकों शास्त्र अनेकों विधि और क्रियायें बतलाई गयी अपने नाथ सिद्धों के शाबरी मंत्र द्वारा भी ग्रह शान्ति की जा सकती है जिसमें सम्पुष्टि रूप ॐकार लगावे यह नित्य पूजा और प्रार्थना है। जो ॐकार प्रणव साधक का सुख और शान्ति की प्रार्थना नव ग्रहों को पहुँचाते है।

अपने आसन संमुख श्री ॐकार यंत्रम् के संमुख साधक अपनी जन्म कुण्डली भोज पत्र पर बनाकर एक पाटले पर शुभ्र वस्त्र बिछाकर स्थापित कर वहां ९ ग्रह के नाम ९ दीपक लगावे और प्रथम श्री ॐकार यंत्र का पूजन पंचोपचारे (धूपदीपनैवद्य) से करे और अपने इष्ट भगवान के या गुरु मन्त्र के नाम को ॐ का सम्पुष्टि लगाकर अर्थात् नाम के आगे पीछे ॐ लगाकर १०८ बार जपे और ॐकार को प्रार्थना करे कि मेरे नवग्रह का

शान्ति और सुख की प्रार्थना दे दे। फिर नवग्रह दीपक प्रज्ज्वलित करके उन्हीं का पूजन करे और नवग्रह के नामों को ॐ का सम्पुष्टि लगाकर ९, ९ बार प्रत्येक ग्रह का जप करे और भोग लगाकर प्रार्थना करे की हमारे संकटों को दूर करके हमें सुख और शान्ति दो। फिर प्रसाद ग्रहण करके अपने-अपने काम-काज के स्वच्छन्द होकर मन लगाकर कार्य करो जिसमें यश आनन्द प्राप्त होगा।

यह नित्य विधि रविवार को सूर्योदय के समय करे और जो दिन जिस ग्रह का हो प्रथम उसकी पूजा जाप करे फिर अन्य ग्रहों का पूजन जाप करे। निम्न ९ ग्रहों को ॐकार की सम्पुष्टि लगाकर जप करे।

ग्रह/वार	मंत्र
१. सूर्य (रविवार)	**ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रौं ॐ स: ॐ सूर्याय ॐ नम: ॐ**
२. चन्द्रमा (सोमवार)	**ॐ श्रां ॐ श्रीं ॐ श्रौं ॐ स: ॐ चन्द्रमसे ॐ नम: ॐ**
३. मंगल (मंगलवार)	**ॐ क्रां ॐ क्रीं ॐ क्रौं ॐ स: ॐ भौमाय ॐ नम: ॐ**
४. बुध (बुधवार)	**ॐ ब्रां ॐ ब्रीं ॐ ब्रौं ॐ स: ॐ बुधाय ॐ नम: ॐ**
५. गुरु (गुरुवार)	**ॐ ग्रां ॐ ग्रीं ॐ ग्रौं ॐ स: ॐ गुरवे ॐ नम: ॐ**
६. शुक्र (शुक्रवार)	**ॐ द्रां ॐ द्रीं ॐ द्रौं ॐ स: ॐ शुक्राय ॐ नम: ॐ**
७. शनि (शनिवार)	**ॐ प्रां ॐ प्रीं ॐ प्रौं ॐ स: ॐ शनैश्चराय ॐ नम: ॐ**
८. राहु (शनिवार या अमावस्या)	**ॐ भ्रां ॐ भ्रीं ॐ भ्रौं ॐ स: ॐ राहवे ॐ नम: ॐ**
९. केतु (शनिवार या अमावस्या)	**ॐ स्रां ॐ स्रीं ॐ स्रौं ॐ स: ॐ केतवे ॐ नम: ॐ**

इस प्रकार उपरोक्त ग्रहों का उपरोक्त दिन (प्रथम ९ बार जप करके) बाकि ग्रहों का ९-९ बार जाप करके प्रार्थना करे तद उपरांत अगर घर-मकान में ज्यादा जटील समस्यायें हो तो मंत्र जाप ८१-८१ बार या १०८ बार करे समय अनुसार एक हफ्ते से ही अनुभव या सुख या कार्य यश की प्रचीति आने लगेगी जो कि यह विधि सवासाल करने पर अनिष्ट ग्रह भी सुख देने लगते है।

(आवश्यक सूचना : नवग्रहों के शाबर मंत्र श्री नाथ रहस्य ग्रंथ में द्वितीय खण्ड पृ०स० २५९ पर उपलब्ध है।)

हे अवधू यह मंत्र जप तंत्र विधियाँ, उपासना इनमें अद्भूत शक्तियाँ है। जिसका सीधा सम्पर्क हमारे अंदर के आत्मशक्ति, इच्छाशक्ति एवं ॐकार रूपी चैतन्य शक्ति से जुड़ा हुआ है। जिस मनुष्य प्राणी को इन मंत्र जप, मंत्र ध्यान मंत्र उपासना करने की धुन लगती है। उसे भाग्यवान कहना चाहिए। आज के कलयुग में ऐसे भाग्यवान लोक पाये जाते है जो नियमित गुरुमंत्र का जप-ध्यान अनुष्ठानादि उपासना करते है और अपना भाग्योदय कर लेते है।

अब मैं सर्व कल्याणकारी ॐकारी विधि बतलाता हूँ।

।। सर्व कल्याणकारी ॐ रूप मन्त्र ।।

पूर्ववर्णित विधि से सुर्चिभूत होकर प्रातः साधना के एकान्त कक्ष में आये प्रथम श्री गणेशाय नमः, फिर अपने सद्गुरुजी को उनके तस्वीर को नमन करे या उनके नाम लेकर नमन करे तद् पश्चात् श्री ॐकार यंत्रम् की (पंचोपचार आदि) विधिवत् पूजन-भोग करे। फिर ११ या २१ प्राणायाम करे या २१ बार दोनों नथूनों से प्राण अन्दर लेकर कुम्भक करके पुनः बाहर छोड़े साथ में ॐकार का जाप करे। फिर ॐकार प्रणव जप विनियोग कहकर ॐकार प्रणव का १०८ बार (९ माला) जप करे। तद् पश्चात् निम्न मन्त्रों का जाप सवा घण्टा करे।

मन्त्र

१. **ॐ ब्रह्मास्मि ॐ प्राज्ञानम ॐ आनंद ॐ ब्रह्मं ॐ**
अयम् ॐ आत्मां ॐ ब्रह्म ॐ तत् ॐ त्वम ॐ असि।

या

।। ॐकारमय गायत्री मंत्र ।।

२. **ॐ भू ॐभूर्वः ॐ स्वः ॐतत् ॐसवितु ॐ वरेण्य**
ॐ भर्गो ॐ देवस्य ॐ धी मही ॐ धियो ॐ यो
ॐ नः ॐ प्रचोदयात्।

या

३. **ॐ शिव ॐ गोरक्ष ॐ योगी।**

इन मन्त्रों का जाप सवा घण्टे से ज्यादा किया तो भी उत्तम है। यह विधि ७ दिन, २१ दिन, ४० दिन तक अनुष्ठान करके कर सकते हो जिसमें व्रतस्थ रहना ब्रह्मचार्य पालन, भूमि पर भोजन शयन करना, हजामत नहीं करना, सत्य सत्व शील चरित्र का पालन करना, तामसी भोजन नहीं करना आदि नियम का पालन करे।

अतः जप होने के पश्चाद हाथ में जल लेकर "**ॐकार अर्पण मस्तु**" कहकर जल छोड़ दे।

पुनः हाथ में जल अक्षद लाल पुष्प लेकर "**ॐकार स्मरणात् परिपूर्णतास्तु**" कहते हुए छोड़ देवे।

मंत्र जाप संख्या अनुसार दशांश हवन दशांश तर्पण दशांश मार्जन दशांश दानपूण्यादि कर्म करे।

यह विधि निस्वार्थ करने पर सर्वथा कल्याण होगा। अपेक्षा मूर्ति या कार्य सिद्धि या कामना होतो वैसे विधिपूर्व संकल्प करके विधि करे। यथाविधि ॐकार मंत्र अनुष्ठान के उपरांत प्रचीति अवश्य आयेगी।

हे भर्तृहरि गोपीचन्द इस संसार में ॐकार के त्रिगुण अनुसार

१. सत्गुण से देवता जो निस्वार्थ ज्ञान, तेज, दया, कृपा, आशीर्वाद इत्यादि से पूर्ण होते है।

२. रजोगुण से मनुष्य प्राणी ये स्वार्थ भाव में रहते है स्वार्थ सिद्ध होने के लिए यह प्राणी सब कुछ कर लेते है इनके गुण–अवगुण जो भी सब स्वार्थ से भरे मिलेगे।

३. तामसी – यह राक्षस वृत्ति के गुण होते है यह गुण चाहे साधु हो चाहे राजा हो चाहे मनुष्य नर–नारी हो इस तामसी गुण की अधिकता के कारण अज्ञान में सबका अहित ही करते है।

सृष्टि में प्रकृति ने बहुत साची वस्तुये, अर्थात् साधन की उपलब्धियां है उसे कैसे उपयोग में लाना है उस मुनष्य का स्वभाव गुण पर ही निर्भर है जबकि इस ॐमय के तीनों गुण (सत रज तम) हर प्राणी में विद्यमान है और मन बुद्धि और अन्तर मन (आत्मा) के द्वारा वह जीवनयापन करता है। तंत्र–मंत्र भक्ति उपासनायें यह भी साधन जीवन सुखी करने के लिए है। समस्त जीव प्राणी सुख–आनन्द–सौख्य–इच्छापूर्ति, कार्य सिद्धि आदि सभी स्वार्थों के लिए ही ये साधन को साधना बनाके उपयोग में लाता है जो उसे जैसा उपयोग में लाता है उसे वैसा ही फल मिलता है। इन तंत्र–मंत्र साधना में विश्वास श्रद्धा भाव होना जरूरी है जिससे उसके अन्दर की ॐकार मय त्रिगुणी शक्ति चैतन्य बनकर कार्य करती है।

हे भर्तृहरि गोपीचंद ऐसे स्वार्थ सिद्ध अनेक साधन तथा तंत्र–मंत्र विधियाँ बता देते है जिनसे जन कल्याण हो जाये।

।। सर्व सम्पत्ति प्राप्ति हेतु ।।

यह यंत्र स्वर्ण पत्र पर बनाके श्री ॐकार यन्त्रम् के साथ पूजन करके दूध, शहद, खीर का भोग लगावे और ॐ श्रीं श्रीं ॐ का एक सहस्त्र जाप ४० दिन में करे भोग प्रसाद स्वयं ही ग्रहण करे। अन्त में यंत्र जेब में या तिजोरी में या भगवान के मंदिर में रखे।

।। स्मरण शक्ति, बुद्धिमान होने के हेतु ।।

यह यंत्र ३×३ इंच या से.मी. सुवर्ण बनावे श्री ॐकार यंत्रम् के साथ पूजन करे मधु और अनेक प्रकार के फलों का भोग लगावे

मन्त्र = ॐ श्रीं ॐ का नित्य एक सहस्त्र जाप करे भोग स्वयं ही ग्रहण करे विधि ४५ दिन या सवा साल तक कर सकते है। यन्त्र अपने पास या मन्दिर में रखे।

।। शारीरिक–बल ओज की वृद्धि हेतु ।।

यह यन्त्र ३×३ इंच या से.मी. या फूट में सुवर्ण धातु या ताम्र धातु में बनावे या संमुख ताम्र के बर्तन में जल लेकर जल ऊपर यह यंत्र बनाकर श्री ॐकार यंत्रम् के साथ इसका भी पूजन करे और चावल–शहद का भोग लगावे यह विधि ७, ११, २१, ४१ दिन करे।

मन्त्र = ॐ ह्री ॐ का १००० जाप नित्य करे। बाद में भोग प्रसाद स्वयं ही खाये। अन्त में यह यन्त्र अपने पास या मन्दिर में रखे।

।। शौर्य–धैर्य–पराक्रम प्राप्ति के लिए ।।

यह यन्त्र ३×३ इंच या से.मी. या हाथ की ३ अंगुल इतना, सुवर्ण पत्र पर बनाये और श्री ॐकार यंत्रम् के साथ इस यंत्र का पूजन करे।

मन्त्र = ॐ ह्रीं ॐ का नित्य १६ या ३२ या ५१ दिन १००० बार रोज जाप करे भोग त्रिमधु, और चने के गुल–गुले का लगावे और स्वयं ही ग्रहण करे।

।। रोग निर्मूलन तथा बल स्फूर्ति के लिए ।।

उपरोक्त यन्त्र ३×३ इंच या से.मी. या ३ अंगुली का सुवर्ण पत्र पर चेतन धूना के विभूति से बनाये और ॐकार यंत्रम् के साथ पूजन करके नमस्कार प्रार्थना करे भोग शहद का लगावे यह विधि ४५ दिन असाध्य बीमारी हो तो सवा साल करे मंत्र ॐ ह्रीं ॐ का नित्य प्रतिदिन २००० जाप करे। इसमें रोगी यह विधि करने में असमर्थ हो तो उससे (सच्चा) प्रेम स्नेह करने वाला व्यक्ति भी कर सकता है उसके नाम का संकल्प करे भोग प्रसाद उसी रोगी को ही देवे।

।। अभीष्ट कार्य सिद्धि हेतु ।।

यह यन्त्र ३×३ इंच से.मी. या ३ अंगुल का सुवर्ण पत्र पर बनाये श्री ॐकार यंत्रम् के साथ पूजन करे भोग फलों और गिरि गोला का लगावे और स्वयं ही

ग्रहण करे।

मन्त्र = ॐ ह्रीं का जाप नित्य प्रति १०,०००० करे (एक लाख) करे। विधि ४५ दिन या सवा साल करे कार्य सिद्धि हो जायेगी।

॥ इच्छित कार्य सिद्धि हेतु ॥

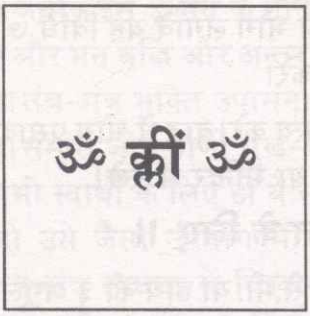

यह यन्त्र ४×४ इंच या से.मी. या ४ अंगुल ४ रंगों से भोजपत्र या सुवर्ण पत्र पर बनावे ॐ क्लीं ॐ नित्य प्रतिदिन यह मंत्र का १२ दिन १००० जाप करे। पूर्व दिशा को यंत्र बनाये और पूर्व को मुख करके जप करे नित्य १० संस्कारों से श्री ॐकार यंत्रम् के साथ पूजन करे प्राणं प्रतिष्ठा पंचदश संस्कार करके मिष्ठान फलों का भोग लगावे अन्त में त्रिमधु से १/१० हवन १/१० तर्पण १/१० मार्जन करे अन्त में कुमारी कन्या को दान दक्षणा भोजन कराये। नित्य भोग स्वयं ही ग्रहण करे।

॥ शत्रु पर विजय पाने के लिए ॥

उपरोक्त यन्त्र श्मशान की राख पर रखे पूर्व दिशा को मुख करके ४५ दिन ॐ क्लीं ॐ मंत्र का १००० बार जप करे फिर यंत्र शीश पर धारण करे दूध चावल भोग लगाकर स्वयं ही ग्रहण करे शत्रु पर विजय प्राप्त होगी।

॥ जेल से मुक्ति हेतु ॥

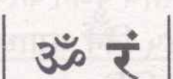

यह यंत्र २ इंच या से.मी. या २ अंगुल का बनाये लाल चन्दन से यंत्र बनावे लाल फूल, लाल वस्त्र, लाल सूत ॐ रं का १२०० जप करें कालीमिर्च भोग लगाकर स्वयं ही भक्षण करे। इससे जेल से मुक्ति हो जावेगी।

॥ नौकरी–व्यापार में प्राप्ति के लिए॥

लाल कमल पर कोयला+घी मिलाकर ३ अंगुल यंत्र बनाये १५ दिन नित्य नेम से भी ॐकार यंत्रम् के साथ तथा संमुख २००० जाप करे पूजन तथा भोग = शहद और फलों का लगाके स्वयं खाये अन्त

में इसीका टीका मस्तक पर लगा के कार्य करे। कार्य हो जायेगा। मंत्र ॐ क्लीं

।। नपुंसकता दूर करने के लिए ।।

यह यन्त्र सुवर्ण पत्र पर बनाये और श्री ॐकार यंत्रम् के साथ पूजन करके यह यन्त्र ताम्बे के पात्र में शुद्ध जल रखकर उसमें रखे फिर ॐकार का १००० जाप तथा पूजन और भोग = खजूर और खीर का लगावे और स्वयं ग्रहण करे। यह विधि ४५ दिन या सवा साल विधि करे।

।। सिद्धि प्राप्ति के लिए ।।

ॐ सुवर्ण पत्र पर यन्त्र बनाके श्री ॐकार यंत्रम् के साथ पूजन नमस्कार भोग = मधु-त्रिमधु पान सुपारी का लगावे और स्वयं ही ग्रहण करे मन्त्र ॐ का नित्यप्रति १००० जाप करे। जप ३ मास ६ दिन तक एकान्त में एकाग्र होकर करे प्राणायाम करने के पश्चात् यह विधि करे। फिर यंत्र को हाथ में बांधे सिद्धि की प्राप्ति होगी।

।। मान सम्मान प्राप्ति के लिए ।।

श्री "ॐकार यंत्रम्" को नऊ अंगुल या ३ अंगुल सुवर्ण पत्र पर बनाये यथा विधि पूजन करके एकान्त में ॐकार प्रणव का नित्य नियम से १००० जाप (ध्यान) १ मास १५ दिन तक करे या ६ मास या सवा साल करे भोग दूध में मधु डालकर लगाये और स्वयं ही ग्रहण करे। समाज में मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

।। विज्ञान-रसायन-प्रयोग सिद्धि के लिए ।।

ॐ यं ॐ यह बीजाक्षर सुवर्ण पत्र पर बनाये श्री ॐकार यंत्रम् के संमुख रखकर पूजन पाठ करे मंत्र ॐयंॐ का नित्यानित्य १००० जाप करे। भोग में काले चने की रोटी लगाकर स्वयं ही ग्रहण करे यह ४५ दिन विधि करे।

।। व्यापार में वृद्धि ।।

अतः यही उपरोक्त यंत्र और मंत्र प्राणप्रतिष्ठा-पूजन पाठ कर मन्त्र जाप रोज नित्य १००० करे ढेड़ मास और प्रगति अनुसार ढेड़ साल तक कर भोग बेसन का मालपोहे का लगाये और स्वयं ही ग्रहण करे यह

यंत्र अपने दुकान, गल्ला, तिजोरी आदि व्यापारिक जगह रखे तो व्यापार में वृद्धि होगी।

॥ भूत–प्रेत–ब्रह्मराक्षस की बाधा दूर करने के लिए ॥

| ॐ रं |

यह ताम्र पात्र में मंत्र लिखकर जल डाले और श्री ॐकार यंत्रम् के संमुख रखकर १५ से ३० दिन नित्य ५ हजार जाप के मंत्र ॐ रं एकान्त में करे पूजा पाठ जप होने पर फलो–खजूर खोआ का भोग लगाकर वह स्वयं ग्रहण करे और ताम्रपात्र का वह जल पी लेवे।

॥ वशीकरण हेतु ॥

यह उपरोक्त मन्त्र की सुवर्ण अंगुठी बनाकर ॐकार यंत्र संमुख रखे और पूजन पाठ भोग = शहद का लगा के ग्रहण करे।

ॐ रं मन्त्र का नित्य ४ हजार जाप ४१ दिन करे। अन्त में अंगुठी अंगुली में पहन ले वशीकरण कार्य सिद्ध होगा।

॥ नारी एवं प्राणी के दूध वृद्धि के लिए ॥

ॐ		ॐ
	हां	
ॐ		ॐ

यह यंत्र स्वर्ण पत्र (४ अंगुल) पर बना के श्री ॐकार यंत्रम् के साथ पूजन पाठ भोग दूध और शहद का लगा के स्वयं ग्रहण करे या ताम्र पात्र में जल डालकर जल में लिखे और ७ दिन नित्य ॐ हां मन्त्र का १ हजार जाप करे और जल पी लेवे।

॥ शुद्धि ॥

ॐ श्री, ॐ श्री ॐ श्री यह केवल ३ बार उच्चारण करने से मुख शुद्धि हो जाये ७ या ९ बार कहते हुए स्नान करे तो काया शुद्धि हो जाये और १०८ बार करे, मन शुद्धि हो जाये और १०००८ बार उच्चारण करे तो बुरे संस्कार भी मिट जाये और सभी पापों से शुद्धि हो जाये। सवालाख बार उच्चारण करे तो सुख–दुःख से परे होकर सत् चित्त आनंद या सत्यं शिवं सुन्दरम् हो जाये।

अतः भक्त जन अपने इष्ट अभीष्ट या आराध्य देवताओं के

निस्वार्थ रूप से दर्शन लेकर आनन्द को प्राप्त करना चाहते है। उन-उन मंत्रों को भी ॐकार बीज सम्पूष्टि युक्त लगाते हुए उपासना करने पर दर्शन हो जाते है।

।। इष्ट, अभीष्ट, आराध्य देवताओं के दर्शन हेतु ।।

मन्त्र = ॐ हुं ॐ स्वाहा ॐ वं ॐ स्वाहा ॐ अमुक ......

.... देवतायै या (नाथाय) ॐ नमः ॐ

देवताओं को या श्री नाथ सिद्धों को प्रसन्न करने के लिए अपने घर के देव स्थान एकान्त या रात्री एकान्त में "श्री ॐकार यंत्रम्" की स्थापना एवं पूजन करके मिष्ठान या शहद युक्त खीर या फलों का भोग लगावे और उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार या नित्य सवा घण्टा जाप करे। मंत्र के अमुक स्थान पर अपने इष्ट का नाम अवश्य डाले यह विधि ४० दिन करे। दर्शन होने के पश्चात् मंत्र का हवन तथा दान धर्म अवश्य करे दर्शन की अनुभूति किसी को ना बताये (अतः अपने सद्गुरु जो हितैषी है उन्हें बता सकते है।)

।। देवताओं से आशीर्वाद कृपा या कोई कार्य सिद्धि करने हेतु ।।

मन्त्रः - ॐ हं ॐ स्वाहा ॐ वं ॐ स्वाहा ॐ (अमुक).....देवताय या नाथाय ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ क्रिं भैरवाय ॐ फट् ॐ फट् ॐ स्वाहा ॐ

यह मन्त्र भी २१ या ४० दिन या सवामास अनुष्ठान करके श्री ॐकार यंत्रम् की स्थापना एवं पूजन करे भोग में मिष्ठान या ७ प्रकार की मिठाई, या रोट प्रसाद खीर इ० का भोग लगावे। नियमों का पालन अवश्य करे।

मन्त्र में अमुक..... स्थान में अपेक्षित नाम डाले इस विधि उपासना से पितृ को भी प्रसन्न करा सकते है। अतः इस मन्त्र से

१. पितृ उपासना ७ या २१ दिन में फलित होगी।

२. सात्विक देवता सवा मास में प्रसन्न होकर कार्य भी कर देगी।

३. राजसी देवता ३ से ६ मास में प्रसन्न होकर अपेक्षित कार्य करेगी।

४. तामसी देवता ६ से १२ मास में प्रसन्न होकर कार्य कर देगी।

अपने-अपने मन स्वभाव आचरण नियम पालन से देवताओं की प्रसन्नता या कार्य प्रणाली समय अनुरूप शीघ्र भी हो जायेगी।

अतः देवाङ्गना सिद्धि प्राप्ति भी ॐकार प्रणव से प्राप्त होती है।

।। देवाङ्गना–सिद्धि प्राप्ति ।।

मन्त्र : ॐ ह्रीं नमः ॐ

विधि : श्री ॐकार यन्त्रम् का पूजन लाल पुष्प, लाल चन्दन टीका, लाल वस्त्र, लाल पदार्थ को भोग आदि से पूजन करे और लाल आसन पर बैठकर लाल पुष्प का कुमकुम की माला पहन कर ५ से ७ प्रतिदिन जप करे तो ७ से ११ दिन तक मन्त्र सिद्ध हो जायेगा और अपेक्षित कार्य भी पूर्ण हो जायेगा।

अब देखो जब कभी अन्य उपायों से कार्य निष्फल होते है तो निम्न ॐकार मय मंत्र नित्य जपे तो भी योग्य समयानुसार कार्य सफल हो जाये।

मन्त्र : ॐ हर, ॐ तत्सत् ॐ गुरुवे नमः

तथा "श्री ॐकार यंत्रम्" पूजन में रखे और उपरोक्त मंत्र का मनन करे। इसी प्रकार उपरोक्त विधि से निम्न मंत्र प्रयोग करने से कार्य सिद्धि विशेषतः व्यापार या व्यवसाय में वृद्धि, होकर व्यापारी में विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त होती है।

।। कार्य सिद्धि–व्यापार–व्यवसाय वृद्धि हेतु ।।

मन्त्र : ॐ ह्रीं ॐ क्लीं ॐ स्वाहा

यह मन्त्र ताम्र पत्र या सुवर्ण पत्र में बनाकर घर, मकान या दुकान में स्थापित करके मन्त्र जाप नित्य १०८ बार करे ४५ दिन में प्रचीति आना प्रारंभ होगा हमेशा करना हो तो नित्य नियम से २१ या ५१ बार जाप करे नमस्कार करे भोग खीर या शहद या रोट प्रसाद नित्य लगावे और केवल स्वयं ही ग्रहण करे। हफ्ते में एक दिन या मास में एक दिन दान धर्म अवश्य करे दान अपंग–असहाय निराश्रित वृद्ध दाम्पत्य को दान करे तथा विरक्त साधु संत को करे।

वाक् सिद्धि के हेतु

मन्त्र : ॐ क्लीं ॐ खेचर्ये ॐ नमः

यह मन्त्र श्री ॐकार यंत्रम् के साथ स्थापन पूजन भोग (फल–शहदयुक्त खीर) के पश्चात् प्रतिदिन १८०० जाप करने पर ६ मास

से १ साल तक वाक् सिद्धि प्राप्त होगी मंत्र जाप निर्जन एकान्त स्थान में करे, उत्तरार्ध विधि में सफेद वस्त्र या वस्तु तथा पदार्थ दान करे दान गरीब व्यक्ति असह्या वृद्ध दाम्पत्य या साधु सन्त को करना चाहिए। या

मन्त्र : ॐ नमो ॐ अन्तरिक्षाय ॐ स्वाहा

यह विधि उपरोक्त विधि अनुसार स्वाति नक्षत्र में बोरडी वृक्ष की लकड़ी ३, ९ या १८ अंगुल हाथ में लेकर जप करे।

उसके वाक् या वचन सिद्धि अनुकूल समय से प्रचीति आना शुरू होगा।

।। गुप्त वार्ता या गुप्त धन ज्ञान हेतु ।।

मन्त्र : ॐ ह्लीं देवी पद्मावतैय त्रैलोकी नमः स्वाहः ॐ

इस ॐकार सम्पूटी मन्त्र को श्री ॐकार यंत्रम् के संमुख पूजन पाठ उपरान्त एकासन एकान्त रात्री सोने से पूर्व १०८ बार जप करे। सवा साल में प्रचीति आ जायेगी प्रचीति उपरान्त गरीब निराश्रीत वृद्धा तथा साध्वी को शुभ रंग की वस्त्र, भोजन या वस्तु दान करे।

।। भूत–वर्तमान–भविष्य का ज्ञान हेतु ।।

मन्त्र : ॐ ब्रह्मणे ॐ नमः या

ॐ परं ॐ ब्रह्मणे ॐ नमः

यह मन्त्र सूर्य प्रकाश या चन्द्र प्रकाश के नीचे खड़े होकर अपने छाया को देखते हुए जप करे या चलते–चलते छाया के साथ देखते हुए करे समय अनुसार त्रिकाल ज्ञान हो जाता है। गुरु मार्गदर्शन से यह साधना करे।

।। सन्तान प्राप्ति हेतु ।।

मन्त्र : ॐ हं ॐ सः।

यह मंत्र श्री ॐकार यन्त्रम्'' की नित्य सुगंधित फूल (लाल) लाल चन्दन तथा लाल पदार्थ का भोग लगाकर फिर रोज १००० बार जाप करे सवामास या सवासाल में सन्तान की प्राप्ति होगी।

।। विजय प्राप्ति हेतु ।।

मन्त्र : ॐ हुँ ॐ फट्

यह मन्त्र जाप मुख्यता अपने घर या स्थान के बाहर करना चाहिए जप १०८ बार करे जप करते समय अपना विरोधी का चित्र मन में अंकित (स्मरण) करके करे और फिर उस व्यक्ति के संमुख जाय तब वह व्यक्ति तुम्हारी हर बात मानेगा तथा तुम्हारे कार्य में सहयोग भी करेगा या विरोध होने पर उसका शमन भी हो जायेगा। अतः कोर्ट में जवाब देने, नौकरी के मुलाकात के लिए, व्यापारी व्यापार वृद्धि के अनुसार अपने ग्राहक को अनुकूल करने तथा वाद विवादों में आपकी अवश्य विजय होगी। अतः

।। अनुकूलता के लिए ।।

मन्त्र : ॐ श्रीं ॐ श्री ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ हूँ ॐ फट् ॐ स्वाहा

यह मन्त्र भी उपरोक्त विधि से ही करना है किन्तु इसका १०८ बार मन्त्र जाप देवता के मन्दिर में या वटवृक्ष (बरगद) पेड़ के नीचे बैठकर करे फिर जिनके सामने जाना है तब जाकर उसे अपने अनुकूल करते हुए कार्य सिद्ध करो।

।। अप मृत्यु या बीमारी निवारक हेतु ।।

मन्त्र : ॐ जूं ॐ सः।

१. नित्य प्रति 'श्री ॐकार यन्त्रम्' स्थापन पूजन करके इस मन्त्र का त्रिकाल (प्रातः दोपहर-संध्या) जाप १००८ बार करे प्रथम ॐ ॐ का १०८ बार जप करे अप मृत्यु टल जायेगा।

२. यही मन्त्र प्रतिदिन या शनिवार या अमावस्या या पूर्णिमा या प्रदोष या सोमवती अमावस्या शनि अमावस्या को निम्ब या पीपल या बरगद के वृक्ष के नीचे बैठकर त्रिकाल १००८ बार जाप करे तो सब अरिष्ट संकटों का नाश होगा एवं शत्रु का भी कुछ नहीं चलेगा।

।। कवित्व शक्ति के लिए ।।

मन्त्र : ॐ ऐं ॐ हं ॐ ऐं ॐ हं ॐ वंद ॐ वंद ॐ स्वाहा

यह मन्त्र "श्री ॐकार यन्त्रम्" स्थापित करके पूजन पाठ भोग गौ-दूध, फलो, शहद का लगावे और स्वयं ही ग्रहण करे। जाप प्रथम १०८ बार ॐकार प्रणव का करे साथ में ११ या २१ प्राणायाम भी करे तद्नन्तर यह मन्त्र १००० बार प्रतिदिन ग्यारह दिन या सवामास करे कवित्वता प्राप्त होगी।

।। विद्या तथा ज्ञान प्राप्ति हेतु ।।

मन्त्र : ॐ ह्रीं सूक्ष्म वेदं नमः स्वाहा

यह मन्त्र साधक ने श्री ॐकार यन्त्रम् स्थापना पूजन और ॐकार प्रणव का १०८ बार जप करके इस मन्त्र को नित्य ७०० बार जप करे भोग पश्चमेवा या खीर + शहद फलों का लगावे स्वयं ग्रहण करे। फिर १/१० दशांश हवन करे। ब्राह्मण कुमार ८ से १२ वर्ष के यज्ञपवित संस्कारित बाल ब्रह्मचारी को खान पान वस्त्र इ० यथेच्छ दान करे। तब साधक विद्या का ज्ञाता होगा यही साधना सवा साल करे तो ज्ञान की उपलब्धि होकर साधक मुक्ति मार्ग पर आरूढ़ होगा। इस शुभ घड़ी, शुभ दिन को जप अनुष्ठान करे ब्रह्मचार्य व्यसन संसारिक भोग व्यर्थ, भूमि शयन संयमित सात्विक आहार दाढ़ी बाल हजामत वर्ज करे।

।। व्यापार वृद्धि के लिए।।

मन्त्र : ॐ श्री ॐ श्रीं ॐ परं ॐ सिद्धि ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ

यह मन्त्र प्रदोष व्रत में करे संध्या समय से नागौरी के फूल अष्टगंध मिलाकर रखे मन्त्र १००८ बार करे और १०८ आहुतियाँ उन फूलो से दे ऐसे ७ या ९ प्रदोष व्रत करने पर व्यापार में अपार वृद्धि होगी।

अतः हमारी प्रसन्नता तथा दर्शन साक्षात्कार या आत्म साक्षात्कार हेतु सीधा सरल कलयुग में शीघ्र फलदाई मन्त्र-विधि बतलाता हूँ।

मन्त्र

१. ॐ नमः शिवाय ॐ

२. ॐ ह्रीं ॐ नमः शिवाय ॐ

३. ॐ शिव गोरक्ष ॐ

४. ॐ गो गोरक्षाय नमः ॐ

५. ॐ ग्रो ग्रों गोरक्षं नमः ॐ

६. ॐ गोरक्ष निरंजनात्मने: नमः ॐ

७. ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ

उपरोक्त कोई भी एक मन्त्र के लिए प्रथम श्री ॐकार यंत्रम् की अपने

आसन संमुख यथा उचित और एकान्त स्थापना करे तद्न्तर भगवान शिव या मेरा या सूर्य भगवान का स्मरण करे सतगुरुदेव हो तो उन्हें साक्षी भाव से आमंत्रित करे स्मरण के पश्चात् श्री ॐकार यन्त्रम् की पंचोपचारे या षोडोपचारे पूजन करे। वहां एक ताम्र लोटे में शुद्ध जल भरके रखे और पंचमेवा खीर+शहद या फलों का भोग लगावे विशेषता कच्चा रोट का भोग प्रदान करे। जिसमें पंचमेवा+काली मिर्च लंवग इलायची आदि मेवा मिश्रित हो। फिर धूप अगरबत्ती से वह कक्ष सुगंन्धित करे एक घी के दीपक में इत्तर के १, २ बूंद डाल कर उसे प्रज्जवलित करे या शुद्ध गौ घी की ज्योत ऐसी लगावे।

यह विधि रात्रौ १२ बजे से लेकर प्रातः सूर्योदय तक एकासन में बैठकर करनी है। जबकि घी की ज्योत रात्री १२ से प्रातः सूर्योदय तक (जलनी) चेतन रहनी चाहिए फिर प्रातः नमस्कार आदेश करके वह ताम्र लोटे का जल सूर्य उदय होते हुए सूर्य भगवान की सूर्य गायत्री या सूर्य भगवान के १२ नाम लेकर प्राशन करे।

यह विधि सवा मास करने पर दर्शन होकर आनंद को प्राप्त होगे और सवा साल विधि करने पर आत्मसाक्षात्कार होकर आत्मानन्द को परमानन्द को प्राप्त होगे। विशेषतः साधक गुरुमुख अर्थात् दीक्षित होना आवश्यक है। क्योंकि सद्गुरु बिना परमेश्वर साक्षात्कार की अनुभूति का ज्ञान नहीं हो सकता ऐसे दर्शनों एवं साक्षात्कार हो जाता है किन्तु उसका गूढ़ ज्ञान केवल सद्गुरु ही बतला सकते है।

साधक – ब्रह्मचार्य पालन, संयमित आहार, खान पान शयन साधना आदि भूमि पर ही करे। आसन शुद्ध पवित्र कुश या कम्बल का होना चाहिए माला लेनी हो तो रुद्राक्ष की लो विधि अनुष्ठान काल में दाढ़ी, हजामत नाखून आदि वर्जित है। साधक निर्वेसनि होना चाहिए रात्री का अल्प आहार लेना चाहिए या फलाहार करे। उपरोक्त मन्त्र जपने से पूर्व ॐकार प्रणव का १०८ बार जब उसके पूर्व श्री गणेश स्मरण गुरु स्मरण–आवाहन आवश्यक है। यह मन्त्र गुरु मुख द्वारा ग्रहण करने पर या उनके अनुमति लेकर करेंगे तो जल्दी फलदायी साधना होगी। चैतन्यमय ॐकार इस कार्य को अवश्य सफल करेंगे।

साधना में साधक ने ११ या २१ प्राणायाम करे तो उत्तम मनचित्त

काया शुद्ध पवित्र हो जावेगी और साधना में एकाग्रता आयेगी।

।। स्वप्न में या जाप (ध्यान) में उत्तर मिले ।।

मन्त्र : ॐकार निर्विकार, ॐ कार निराकार ॐकार नमो नमस्कार

यह मन्त्र "श्री ॐकार यंत्रम्" संमुख बैठकर पूजा-पाठ भोग होकर मंत्र जाप नित्य १००८ बार करे ४० वे दिन दशांश हवन दशांश दानधर्म करे मन्त्र सिद्धि उपरान्त आवश्यक प्रश्न या कोई निर्णय लेना हो तो श्री ॐकार यंत्र को हाथ में जल अक्षद लेकर प्रश्न पूछकर १०८ बार मन्त्र का जाप को (ध्यान) जप क्रिया में या सोने उपरान्त सपने में जवाब मिल जायेगा।

।। सर्व कार्य सिद्धि भाग्योदय हेतु ।।

३	४ ॐ	५
२ ॐ	१ नाम	६ ॐ
९	ॐ ८	७

यह ॐकार अंकमय यंत्र किसी ताम्र पत्र पर बनाये बीच में अपना नाम अंकित करे। फिर किसी एकान्त स्थान घर में यह स्थापित करके उसका यथोपचारे पूजन करे मिष्ठान पंचमेवा-पंचफल का भोग अर्पण करे और निम्न सूक्त की १०८ बार जाप करे।

सूक्तम्

नमो ॐकार सर्वार्थ साक्षम्।

धर्म, अर्थ काम मोक्षम्।।

देहि मम्, भाग्य सत्वम्।

नमः ॐकार परमात्म तत्वम्।।

इस सूक्त १०८ जाप के उपरान्त अपने गुरु मन्त्र का या गुरु गोरक्ष गायत्री का १०८ बार उच्चारण निम्न प्रकार से करे।

१. गुरुमंत्र उदा० = ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ

२. गोरक्ष गायत्री = ॐ ह्री श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य पूत्राय धीमहि। तन्नो गोरक्ष निरंजनः प्रचोदयात ॐ

या

ॐ ह्रीं श्रीं गों हुँ फट् स्वाहा ॐ।

या

ॐ ह्लीं श्रीं गों गोरक्ष हुँ फट् स्वाहा ॐ।

या

ॐ ह्लीं श्रीं गों गोरक्ष निरांजनात्मने हुँ फट् स्वाहा ॐ

या

ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ

उपरोक्त भोग स्वयं ग्रहण करे। विधि नियम बद्ध सवा मास अथवा सवावर्ष नित्य प्रात: करे। कार्य सिद्धि अत: आपका भाग्योदय अवश्य होगा।

।। जीवन भाग्योदय हेतु राशियों के ॐकारमय मन्त्र ।।

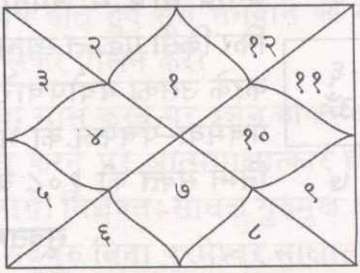

अगर साधक अपने जन्म राशि के अनुसार श्री ॐकार यंत्र की पूजन करके अपने राशि के इष्टदेव संमुख राशिमंत्र का सवालाख जाप किया तो जीवन के सभी भौतिक आध्यात्मिक आदिभौतिक दु:खों का निवारण होकर सुख समृद्धि एवं शान्ति को प्राप्त कर सकते है।

या

तो नित्य प्रतिदिन श्री ॐकार यंत्र के संमुख अपनी जन्मराशि कुण्डली भोजपत्र ऊपर अष्टगंध के स्याई से अनार के लेखनी से बनाकर शुभ मुहर्त पर रखे या अपने जन्मदिन वैदिक तिथि अनुसार स्थापना करके जाप विधान विधि प्रारंभ करे। भोग ऋतु अनुसार फलों का लगावे और स्वयं ग्रहण करे। अगर जन्मराशि मालूम नहीं है तो अपने प्रचलित नाम के अनुसार राशि मंत्र का विधि विधान करे।

अनुभूति के पश्चात् या जीवन के महत्वपूर्ण कार्य होने पर उस

मन्त्र का हवन–दान धर्म भी कर सकते है।

।। राशि एवं मन्त्र ।।

१. **मेष** (चु, चे, चो, ला, ली, लू, ल, लो, अ)

मन्त्र – ॐ ऐं क्लीं सौः ॐ नमः यह जप साधना अग्नि अर्थात् धूना या यज्ञ या घृत ज्योत के सहवास में करे।

२. **वृषभ** – (इ, उ, ए, ओ, व, वि, बृ, वे, वो)

मन्त्र – ॐ ऐं क्लीं श्रीं ॐ नमः यह जप विधि के नियम साधक भजन भोज शयन भूमि पर ही करे।

३. **मिथुन** – (क, कि, क, घ, ङ, छ, के, को, ह)

मन्त्र – ॐ क्लीं ऐं सौं ॐ नमः २१ प्राणायाम अवश्य करके जाप करे।

४. **कर्क** – (हिं, हु, हे, हो, ड़ा ड़ी ड़ डे, डो)

मन्त्र – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ नमः जल में खड़े होकर जप साधना फलित होगी।

५. **सिंह** – (म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे)

मन्त्र – ॐ ह्रीं श्रीं सौं ॐ नमः धूना–यज्ञ के सानिध्य में जप विधि करे।

६. **कन्या** – (टो, पा, पी, पू , ष, ण, ठ, पे, पो)

मन्त्र – ॐ क्लीं ऐं सौः ॐ नमः यह जप विधि के नियम साधक भोजन–भजन–शयन पृथ्वी पर ही करे।

७. **तुला** – (रा, री, रु, रे, रो, ता, ति, तु, ते)

मन्त्र – ॐ ऐं क्लीं श्रीं ॐ नमः २१ प्राणायाम करके ही जप को प्रारम्भ करे।

८. **वृश्चिक** – (तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

मन्त्र – ॐ ऐं क्लीं सौः ॐ नमः यह जप विधि जल में या जल सानिध्य में की तो शीघ्र फलदाई होगी।

९. **धनु** – (ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

मन्त्र – ॐ ह्रीं क्लीं सौं ॐ नमः धूना यज्ञ को प्रज्जवलित करके जाप करे शीघ्र फलदाई होगा

१०. **मकर** – (भो, ज, जी, खी, खु, खे, खो, ग, गी)

मन्त्र – ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः ॐ नमः विधि काल में साधक ने भजन–भोजन–शयन सभी पृथ्वी पर ही करे।

११. **कुम्भ** – (गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द)

मन्त्र – ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं ॐ नमः जप के पूर्व २१ प्राणायाम–कुम्भक करके करे।

१२. **मीन** – (दी, दु, थ, झ, त्र, दे, दो, चा, चि)

मन्त्र – ॐ ह्रीं क्लीं सौः ॐ नमः यह साधना जल में या जल सानिध्य करो।

।। ॐकार से मनोकामना यन्त्र ।।

ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐकार नमः	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ

पूर्णिमा के संध्या को भोज पत्र पर ३×३ या २×२ पत्र अष्टगंध स्याई अनार के कलम से लिखकर 'श्री ॐकार यन्त्रम्' संमुख पाटले पर स्थापन करे यथाविधि पूजन करे भोग शहद या गौ–घृत की खीर लगावे और '**ॐ शरणं मम्**' इस मन्त्र का नित्य १०८ बार जाप करे ४० दिन में मनोकामनायें सिद्ध होगी।

।। सर्व सिद्धि ॐकार यंत्र ।।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

यह यंत्र रविवार के दिन गोरोचन द्वारा भोजपत्र लिखकर "श्री ॐकार यंत्रम्" संमुख स्थापन करके यथा विधि पूजन करे भोग केवल शहद का लगाये और स्वयं ग्रहण करे तथा ॐकार प्रणव का १००८ बार जप करे प्रतिदिन रुद्राक्ष माला से करे ऐसा ४१

दिन करने पर इसे चाँदी का छोटा ताबीज बनाकर बाये बाजू में बांधे, सभी सिद्धियाँ आपका सहयोग करेगी विधि उपरान्त दशांश हवन दान पुण्य करे साधक शुद्ध पवित्र सात्विक होना चाहिए।

।। ॐकार बीज मन्त्र मनोकामना पूर्ति यन्त्र ।।

मं.४	ह्री १	ॐ ७
महा ५	ह्लीं २	श्रीं ८
रु ६	ह्लीं ३	ह्लीं ९

यह यंत्र भोजपत्र पर गोरोचन से अनार की कलम से लिखे और पूर्णिमा को श्री ॐकार यंत्रम् संमुख स्थापित करे और ११ या २१ दिन पूजन पाठ करके ॐ..... का १०८ या १००८ बार जप करे। अन्त में इस यंत्र को अपने दाहिने हाथ में बांधे इससे आपके कार्य सफल होकर मनोकामनाएं पूर्ण होगी।

।। व्यापार में प्रगति हेतु ।।

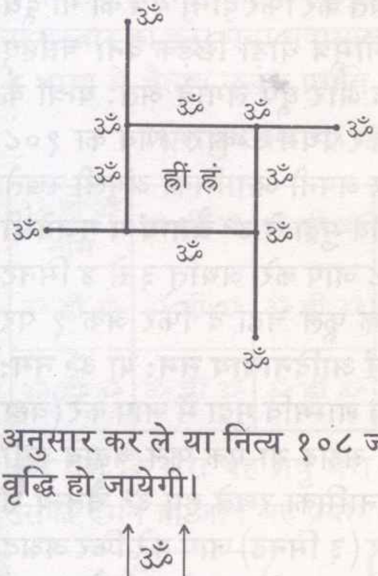

वसन्त ऋतु में व्यापारी रक्त चन्दन शाई से सोने की तार से इस यंत्र को भोजपत्र या शुभ्र कागज पर बनाये। फिर इसे "श्री ॐकार यंत्रम्" संमुख पूजा स्थान में स्थापित करे और यथा उचित पूजन करे भोग शहद युक्त खीर का भोग लगाये और स्वयम् ग्रहण करे।

मन्त्र ॐ ह्लीं ॐ हं ॐ स्वाहा

इस मन्त्र सवालाख जाप अपने समय अनुसार कर ले या नित्य १०८ जाप तथा पूजन करते रहे तो व्यापार में वृद्धि हो जायेगी।

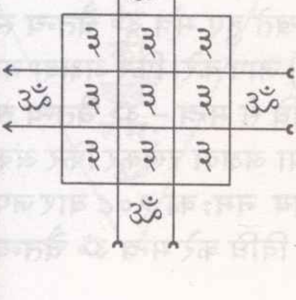

।। ॐकार त्रिगुणमयी कष्ट निवारण यंत्र ।।

"श्री ॐकार यंत्र" के सन्मुख यह त्रिगुणमयी ॐकार यन्त्र स्थापित करे जो कि यह यन्त्र भोज पत्र या सुवर्ण पत्र पर बनाये अष्टगंध से अनार की कलम से बनाकर यथोपचारे पूजन करे। जो कि और ॐकार प्रणव का १००८

बार जाप करे। सभी कष्ट निवारण होकर सुख सम्पन्नता प्राप्त होगी यही यंत्र पीपल के पत्ते पर सिन्दूर से लिखकर विधि उपरान्त रोगी के गले में पहनने से रोग की सभी कष्ट निवारण हो जाता है तथा उपरोक्त यन्त्र घर में रखे तो ऋद्धि-सिद्धि या वास करती है, गुरुवार को सफेद वस्त्र में लपेटकर दुकान में, तिजोरी में रखा तो धन सम्पन्नता प्राप्त होगी। यंत्र पर लाल सिंदूर, लाल फूल, तेल का दीपक लगाकर जप करे सभी संकट दूर हो जाते है।

।। सर्वागीण उन्नति हेतु नवनाथ जाप यन्त्र ।।

गं ६	आं १	मं ८
चौं ७	अं ५	सं ३
उं २	गों ९	सं ४

चैत्र पूर्णिमा के दिन यह यंत्र सुवर्ण पत्र पर बनाये या भोज पत्र पर गोरोचन या अष्ठगंध या केसर से अनार के कलम से बनावे और श्री ॐकार यन्त्रम् के संमुख यह यंत्र चौकी या पाटला पर थोड़ा ऊँचाई पर स्थापित करे फिर दोनों यंत्र को गौ दूध से स्नान करके गोमूत्र थोड़ा छिड़क देना चाहिए और यथेष्ठ पूजन करे गौघृत का दीपक और धूप लगावे अतः यन्त्रों के संमुख कुशासन या कम्बलासन पर बैठकर प्रथम ॐकार प्रणव का १०८ बार जाप कर लो फिर यंत्र के अंक ६ पर अपनी अनामिका अंगुली रखते हुए आँखे बन्द एकाग्र होते हुए या शाम्भवि मुद्रा से **ॐ चैतन्यं गं गजबेली गजकंथड नाथाय नमः** इस मंत्र का १०८ जाप करे। अर्थात् ३ से ४ मिनट लगेंगे फिर उस खाने पर अक्षद या एक फूल चढ़ा दें फिर अंक १ पर अनामिका रखकर **ॐ चैतन्य ॐकार आं आदिनाथाय नमः** या **ॐ नमः शिवाय** का १०८ बार आँखे बंद करके या शाम्भवि मुद्रा में जाप करे (यहा भी ३-४ मिनट) उसी प्रकार खाने पर अक्षद या एक फूल चढ़ावे इसी प्रकार अंक २ पर उपरोक्त विधि से अनामिका रखते हुए **ॐ चैतन्य उं उदयनाथाय नमः** इस मंत्र का १०८ बार (३ मिनट) जाप करे फिर अक्षद या फूल रखकर आगे अंक ३ पर अनामिका रखते हुए मंत्र **ॐ चैतन्य सं सत्य नाथाय नमः** का १०८ अर्थात् (३ मिनट) जाप करे। फिर अक्षदा या पुष्प रख दे तदुपरान्त अंक ४ पर उपरोक्त विधि से मन्त्र - **ॐ चैतन्य सं सन्तोषनाथाय नमः** १०८ बार जप करे फूल या अक्षदा रखकर फिर अंक ५ पर मन्त्र - **ॐ चैतन्य अ अचल अचम्भेनाथाय नमः** का १०८ बार जप करे और पुष्प या अक्षदा रखते हुए अंक ७ का विधि करे मन्त्र **ॐ चैतन्य**

चौ चौरंगीनाथाय नमः का १०८ बार जाप करे और पुष्प रखते हुए अंक ८ पर पुनः अनामिका रखते हुए मन्त्र **ॐ चैतन्य मत्स्येन्द्रनाथाय नमः** का १०८ बार जाप करे और लाल पुष्प रखते हुए। अब अंक ९ पर उपरोक्त विधि अनुसार अनामिका रखे और आँखे बन्द करे या शाम्भवि मुद्रा करके मंत्र **ॐ चैतन्य गों गोरक्षनाथाय नमः** का १०८ जाप करे फिर उस पर अक्षद या लाल पुष्प रखे इन सभी १०८ मंत्र जाप बाये हाथ के अंगुली के पेरो पर अर्थात् करमाला से जाप कर सकते हैं।

अतः श्री ॐकार यन्त्रम् से साथ इस यंत्र का चन्दन - लाल सुवासिक पुष्प, बिल्व पत्र या बिल्व फल धूप दीप पूजनादि करके दूध के मिठाई का भोग (८ प्रकार की मिठाई हो) या कच्चा-पक्का रोट और दूध का भोग लगावे या पंचमेवा इत्यादि का भोग लगावे और स्वयं ग्रहण करे तथा भिक्षुक साधु-संत को और गौ को खिलाये। इसमें व्रत भी सोम-रवि या गुरुवार का करे। ऐसा सवामास या सवासाल भी विधि करने पर साधक के भाग्य में चैतन्य उत्कर्ष प्रगति होकर सर्व संकट नष्ट हो जायेंगे।

॥ शत्रुदमन या शत्रु मित्र होने के हेतु ॥

ॐ ह्लीं ॐ नाम	ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ
ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ
ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ

यह यन्त्र भोज पत्र या सफेद कागज पर श्मशान के काले कोयले से लिखे प्रथम भाग में शत्रु का नाम लिखे और अमावस्या के रात्री श्मशान में या अन्य एकान्त स्थान में इसे गाड़कर उसपर एक नींबू काटकर थोड़ा मद्य चढ़ा देवे और कहे कि मेरा यह शत्रु मेरा मित्र बन जाये वह शान्त हो जाये या उसका दमन हो जाये यह प्रयोग एक बार में एक ही शत्रु के लिए करे।

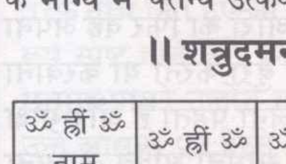

॥ उच्चपद के लाभ के लिए ॥

यह यंत्र भोज पत्र पर बनाके श्री ॐकार यन्त्रम् के साथ पंचोपचारे पूजन करे भोग खीर + शहद का लगाये और स्वयं खाये मन्त्र **ॐ क्लीं क्लीं नमः ॐ** सवा लाख जाप करने पर उच्चपद प्राप्त होता है विशेषतः तुलसी के जड़

में बैठकर शीघ्र फलदाई होता है।

उपरोक्त विधि से सुवर्ण पत्र या भोज पत्र पर यन्त्र बनाके सवालाख जाप **ॐ ह्रौं ॐ नमः** मंत्र का करने पर उच्च पद प्राप्त होता है। अगर अकोल वृक्ष के जड़ में बैठकर सवा लाख जाप करने पर राजपद प्राप्त होता है।

अतः हे गोपीचन्द भर्तृहरि हमने इस कलीयुग अनुसार ॐकार त्रिगुणातीत अर्थात् सत्व गुण – मोक्ष मुक्ति की साधना।

राजसी गुण – स्वार्थपरायण साधना।अर्थात् धर्म–अर्थ–काम–अन्त में मोक्ष साधना।

तामसी गुण – विध्वंसक नष्ट भ्रष्ट अर्थात् शत्रु का नाश करना, दूसरों का बुरा करना आदि।

जिसका फल केवल दु:ख कलेश है अत: औरों का फिर वह अपना पराया हो मित्र या शत्रु हो या दुष्ट हो औरो का बुरा करना या करवाना इन सबका फल (सुख–दु:ख) भोगने पुन: जन्म लेना पड़ता है और मोक्ष मुक्ति कोसों दूर चली जाती है। अत: ॐकार की साधना भक्ति उपासना ही ऐसी करो कि ॐकार परमात्मा तुम्हारी रक्षा करके मोक्ष मुक्ति स्वरूप को ले जाये। अत: प्रथम तामसीगुण (साधना) का त्याग करे फिर राजसी गुणातीत साधना का त्याग करे तो सात्विक गुणों की साधना अपने आप प्राप्त होगी किन्तु अन्त में इसे भी त्यागना पड़ेगा तभी तुम्हें वैराग्य और ज्ञान होकर मोक्ष मुक्ति को प्राप्त होगे।

ऐसा ज्ञानानंद होते–होते, लेते–लेते रात बहुत हो चुकी थी और फिर गुरु गोरक्षनाथजी योगनिद्राधीन हो गये।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि

गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे

त्रिगुणातीत ॐकार साधने नाम

अष्टमोऽध्यायः।।

नवम: अध्याय

।। ॐकार स्वर ज्ञान ।।

आज प्रात: की अत्यंत रमणीय बेला थी। प्रकृति ने चारों तरफ कोहरा की चादर बिछाई थी। हवाओं की ठंडी-ठंडी लहरे स्वछन्द घूम रही थी। फूल पत्ते, पेड़-पौधे, पशु पंछी सभी सूर्य भगवान आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। आज श्री नाथजी का धूना अत्यंत प्रज्जवलित हो रहा था संमुख गुरु गोरक्ष नाथ जी ध्यान समाधि में मग्न थे। नाथ भर्तृहरि गोपी चन्द ने आज बड़ी शीघ्रता से स्नान-ध्यान आरती पूजादि कर्म करके गुरुदेव के संमुख आसन लगाकर बैठे थे। इतने में अन्तरयामि शिव स्वरूप गुरु गोरक्ष नाथ जी आकाश की ओर देख रहे थे वह स्पष्ट देख रहे थे कि कुछ विशुद्ध आत्मायें जो साधु सन्त तपस्वी दिख पड़ते थे उनके स्वरूप को देखकर वह सभी शिवभक्त मालूम पड़ते थे। वह उत्तर से पश्चिम दिशा को आकाश मार्ग से प्रयाण कर रहे थे, जब भर्तृहरि गोपीचंद भी देखने लगे तो उन्हें केवल ज्योति स्वरूप वह आत्मायें दिख रही थी। इतने में वह उन्हीं गुफा के तरफ नीचे होते हुए आ रही थी जैसे-जैसे वह नजदीक आने लगे तो उनके रूप स्पष्ट होने लगे वह धरती पर स्पर्श करते हुए गुरु गोरक्षनाथजी के सन्मुख पधारे उन्होंने सादर प्रणाम किया और सकुशल मंगल पूछते हुए उन्हें आसनों पर बैठने को गुरु देव ने इशारा किया। उन्होंने कहा हम श्री ॐकार पर्वत और कैलास मानसरोवर से दर्शन मेला करते हुए हमारे धाम जा रहे थे आपके दर्शन हेतु हमने यहां आये हम आपके दर्शन पाकर बहुत ही कृतार्थ हो गये है। और तब भर्तृहरि गोपीचन्द ने सभी को दुग्ध फलाहार दिया तथा उनका आदर अतिथ्यि किया और अपने-अपने आसन ग्रहण करके बैठ गये। फिर उन सबका गुरु शिष्य संवाद (उपनिषद) अर्थात् सत्संगत प्रारम्भ हुआ। तब उन तपस्वियों विशुद्ध आत्माओं ने ॐकार स्वर सिद्धियाँ के विषय में कहा कि हे शिव स्वरूपी अलख निरंजन गुरुदेव आप हमें स्वर विद्या का ज्ञान कराईये जो इस कलयुगी मनुष्य प्राणी तथा साधु-संतों को वरदान होते हुए मुक्त मार्ग पर आरूढ़ करे।

इस प्रकार संतों की बाणी सुनकर गुरु गोरक्षनाथजी बहुत ही प्रसन्न हुए और कहने लगे आप महान आत्माओं आपने बहुत अच्छा ज्ञान विवेक और वैराग्य सूचक प्रश्न किया है। पूर्व समय में भगवान आशुतोष

शिवजी ने यही ज्ञान माता पार्वती को सुनाया था। तदपश्चात् माता उदयनाथ पार्वती ने सद्गुरु मत्स्येन्द्रनाथजी को सुनाया, जो मुझे उन्होंने प्रदान किया था। वही मैं आप महात्माओं को सुनाने जा रहा हूँ।

यह स्वर विद्या-स्वर ज्ञान-स्वर सिद्धि ब्रह्म स्वरूप ॐकार प्रणव से ही प्रगट हुए है। इस सृष्टि के पूर्व यह निरंजन निराकार ॐकार नाथ का स्वर अर्थात् नाद उत्पन्न हुआ जिसका कम्पन, अखिल ब्रह्माण्ड व्यापक था जिससे पंच तत्व ने आकार लिया, ॐकार से आकाश, फिर आकाश से वायु फिर वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी, बने जैसे कि नाथ सिद्धो के योग गायत्री में कहा है कि

ॐ अनहद शब्दे उत्पन्न भए निरंजन निराकार निराकाल ले उत्पन्ना आकास। आकास ले उत्पन्ना वायु वायले उप्पन्ना तेज तेज ले उत्पन्ना तोया तोयाले उप्पन्ना मही।।१।। फिर महीरूप देवी का रंगा, जल रूप ब्रह्मा का वरण, तेज रूप विष्णु की माया, पवन रूप ईश्वर की काया।।२।। आकाश रूप नाद की छाया, सो सो नाद अवगति उपाया। सुन और निरंजन भूचर देवता भूचर का लहे ने भेव।।३।।

यह सब ॐकार, से ही बनता हुआ आया है जिनका निरंजन निराकार रूप ॐकार आदिनाथजी है। अतः यह ब्रह्माण्ड इन तत्व देवता से बनता है बिगड़ता है पलता है और इसी में लीन हो जाते हैं।

अतः इन पांच तत्वों के सूक्ष्म रूप से नरनारी प्राणी की काया बनती है। इस देह ज्ञान में मनुष्य के नाभी ऊपर अंकुर समान बहत्तर हजार (७२०००) नाड़ियाँ फैली हुयी है। इनमें मुख्य सर्प के समान सोती हुई कुंण्डलीनि शक्ति है। जिसके १० नाड़ी ऊपर की ओर १० नाड़ी नीचे की ओर गयी है। शरीर में २४ नाड़ीयाँ प्रधान है। जिसमें १० नाड़ियाँ वायु प्रचारक मुख्य है। इनमें ३ नाड़ियां श्रेष्ठ है जिन्हें इडा-पिंगला-सुषम्ना कहते है। जो इडा बाम भाग में, पिंगला दक्षिण सुषम्ना मध्य, गान्धारी वाम नेत्र में, दक्षिण नेत्र में हस्तजिह्वा दक्षिणकर्ण में पूषा वाम कर्ण मे यशस्विनी, मुख में अलम्बुषा लिंग में कुहु गुह्य स्थान शङ्खिनी इस प्रकार

१० नाड़ियाँ होती है। इनमें इडा-पिंगला सुषम्ना यह प्राणमार्ग में आश्रित है। इसी प्रकार काया के अन्दर बाहर दस वायु होते है। जो नाड़ियों के आश्रय में रहते है। प्राणवायु हृदय में, अपान गुह्यं में नाभी में समान कण्ठ में उदान और काया व्याप्त व्यान वायु होता है। उसी प्रकार उगलने में नाग आँखों में कुर्म, छींकने में कृकल जंभाई में देवदत्त और धनंजय वायु तो मृतकाया को भी नहीं छोडना। अत: काया में प्राण इड़ा पिंगला और शुषम्ना इन नाड़ियों से है। जो वामभाग में इड़ा नाड़ी है वह चन्द्रमा और दक्षिण भाग के नाड़ी को पिंगला जो सूर्य नाड़ी कहते है और मध्य में सुषम्ना नाड़ी शम्भु हंस रूप में स्थित है। काया अन्दर से निकलने वाला स्वर 'ह'कार जो शिव स्वरूप है तो काया अन्दर प्रवेश करने वाला स्वर 'स'कार शक्ति स्वरूप कहा है। वाम (इडा) नाड़ी प्रवाहक चन्द्रमा शक्ति रूप से दक्षिण (पिंगला) नाड़ी का प्रवाहक सूर्य शिव रूप स्थित है।

ॐकार स्वरूपी स्वरों का काया की स्थिति		
बाया स्वर वाम भाग में इड़ा स्वर का प्रवेश सीधा निकलना उलटा चन्द्रमा 'स' कार शक्ति स्वरूप अमृत (जगत पोषक) शुभकर्म (सम)	दाया स्वर दक्षिण भाग में पिंगला स्वर का बाहर सूर्य 'ह' कार शिव स्वरूप चर (जगत पैदा करते है) विषम	मध्य में सुषम्ना स्वर स्थिर या ऊर्ध्व आकाश हं स शिव + शक्ति मिलन क्रुरा (कर्म के प्रति द्रष्टा है।)
स्त्री गौरवर्ण गमन के समय शुभ	पुरुष कृष्णवर्ण प्रवेश के समय शुभ	विकृत

हे सिद्ध संतों यह ॐकार स्वरूपी स्वर अपने-अपने प्राकृतिक गुणों से चल-अचल होते रहते है। जोकि इनका चलन-वलन निर्धारित समय नियम से चलता है। मास के शुक्ल पक्ष में प्रथम चन्द्र (इड़ा) स्वर चलता

है। फिर सूर्य (पिंगला) फिर चन्द्र (इडा) स्वर चलता है। प्रतिपदा से लेकर तीन-तीन दिन तक चन्द्र और सूर्य स्वर बलवान रहता है तथा पक्षानुसार सूर्योदय काल से पहले चन्द्र स्वर चला तो एक घण्टे बाद सूर्य स्वर चलता है। फिर एक घण्टे बाद चन्द्र स्वर चलेगा ऐसे क्रम से दिनरात २४ घण्टे में २४-२४ बार चलते है। इनके साथ-साथ क्रम से पृथ्वी, जल, अग्नि वायु और आकाश तत्व भी चलते है। ऐसे स्वरों के प्राकृतिक नियम है।

अत: हे संतजन सुनो साधना काल में स्वरों की अवस्था को सुनाता है।

।। साधना पक्ष ।।

अगर इडा नाडी (चन्द्र स्वर) के समय पिंगला नाड़ी (सूर्य स्वर) चले और सूर्य स्वर के समय चन्द्र स्वर चले तो तब कोई भी साधना नहीं करे, क्योंकि इसका विपरित प्रभाव होता है। अत: साधना में मन चित्त की एकाग्रता के लिए स्वरों का कार्य निर्धारित प्राकृतिक नियम से होना चाहिए। अगर साधक रात्री को साधना करनी हो तो रात्री के समय चन्द्र स्वर का विचार ना करे और दिन में सूर्य स्वर की कोई भी साधना ना करे क्योंकि सूर्य के स्वर में सूर्य और चन्द्रमा के स्वर में चन्द्र स्वर बंद रहता है। जो कि जो स्वर सूर्यकाल में चलता है वही स्वर सूर्यास्त समय बन्द हो जात है और यह नियम कृष्ण पक्ष में सूर्य स्वर में सूर्य का और शुक्ल पक्ष में चन्द्र स्वर से चन्द्रमा का होना सिद्ध करता है। अत: शिव ॐकार आदिनाथजी का कथन है कि यदि चन्द्र स्वर में सूर्य का उदय हो और सूर्य स्वर में सूर्यास्त हो तो इस समय ॐकार प्रणव या गुरु यंत्र की साधना करे क्योंकि इसमें साधक में प्रणवात्मक या गुरु तत्वों के सभी गुण प्राप्त होते है और इसके विपरित स्थिति में उपरोक्त साधना ना करे जिसमें नुकसान या कष्टदायक फल होता है। अत: जिस प्रकार इडा पिंगला को चन्द्र-सूर्य मे बटाया उसी प्रकार इन स्वरों को अलग-अलग दिन भी दिये है। जिसमें आदिनाथजी ने कहा सूर्य (पिंगला) स्वर के लिए रविवार, सोमवार मंगलवार यह दिन उत्कृष्ट है और चन्द्र (इड़ा) स्वर के लिए बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार जो सूर्योदय में चन्द्र स्वर शुक्लपक्ष की प्राप्ति होगी अत: इन स्वरों अनुसार दिनों में ॐकार सिद्धि तथा गुरु मन्त्र या कोई भी शाबर सिद्धि को साधना करने पर फलदाई होगा। उसी प्रकार पक्ष

के विचार से कृष्ण पक्ष से सूर्य (पिंगला) स्वर मंगल और शनिवार तंत्र-मंत्र के सभी पक्ष की साधना शीघ्र फलदाई होगी इसी प्रकार शुक्ल पक्ष में गुरु-शुक्र-बुधवार में इडा (चन्द्र) नाड़ी आध्यात्मिक कर्म धर्म जाप ध्यान दानादि साधना उत्तम फलदाई होगी।

इसके विपरित साधन करने पर अशुभ फल प्राप्ति होगी।

॥ चक्री पंचतत्व के स्वर ॥

देखो एक-एक घण्टे चलने वाले स्वरों में पांच तत्व भी आधे-आधे घड़ी प्रत्येक स्वर में चलते है। जोकि प्रथम वायु आधी घड़ी फिर अग्नि-पृथ्वी-जल- आकाश यह भी क्रमशः आधी घड़ी चलते है और पुनः वायु तत्व से चलते जो चक्री में चलते है। इन तत्वा अनुसार स्वर साधना करने पर प्राकृतिक सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती है।

इसी प्रकार बारह राशियाँ भी दोनों स्वरों में बटे है। जो कि चन्द्र स्वर (बाई इड़ा) के राशियाँ - वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन और सूर्य स्वर (दाई पिंगला) नाड़ी के राशियाँ - मेष, सिंह, कुम्भ, तुला, मिथुन, धनु और इनके ज्योतिष्य के अनुसार शुभ-अशुभ फल होते है। अर्थात् उन्हीं स्वर में उन्हीं के राशी वालों ने साधना या उपासना करने पर शुभ फल मिलता है तथा ग्रह शान्ति का भी लाभ होता है।

॥ विवेक स्वर से ज्ञान प्राप्ति ॥

अगर कोई वस्तु देखी-सुनी ना हो किन्तु सूर्य (पिंगला) स्वर चल रहा हो और उसके विषय में विवेक करने पर उसका ज्ञान हो जाता है और अगर चन्द्र (इड़ा) स्वर चलता हो तो उस दृष्टादृष्ट चीज का ज्ञान हो जाता है। अगर साधक प्रणव ॐ कार से सक्षम प्राणायाम करे तो सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान हो जाता है।

॥ कार्य सफलता का तिथि स्वर ॥

अगर शुक्ल पक्ष में दौज को सूर्य अर्थात् दाया पिंगला स्वर में चन्द्र (इड़ा) स्वर चलने लगा तो उस साधक के लिए अति उत्तम समय होता है। इस समय में कोई भी जटिल कार्य सफल होकर सुख समृद्धि की प्राप्ति होती हैं।

॥ प्रातः स्वर लाभ ॥

प्रातः उठने पर जो स्वर चल रहा हो वही अंग के हथेली को अपने मुख से चूमे और ॐकार प्रणव का मनोमन जाप करे। तो वह दिन आनन्दमय और लाभदायक होता है।

॥ कार्य सिद्धि ॥

अगर किस से कुछ लेना देना हो तो जो स्वर चल रहा है वही हाथ से कर्म करे तो वह कर्म सिद्ध हो जाता है। अपने इष्ट देव गुरुदेव माता पिता यास अधिकारियों को मान सम्मान देकर उस हाथ से नमन या अभिवादन करे जिस अंग का स्वर चले अगर दोनों स्वर चलते हो तो हाथ जोड़कर ॐकार का उच्चारण मन में या प्रगट करके नमस्कार करे। तब उनके आशीर्वाद एवं कृपा का लाभ होता है।

॥ प्रवास या यात्रा हेतु स्वर ॥

प्रातः जो भी स्वर चलता हो वही पैर जमीन पर रखे और ॐकार का उच्चारण करे तो उस दिन का मनोरथ या कार्य सफल हो जाता है। किसी वाहन, (गाड़ी-घोड़ा इ०) सवार होना हो तो चलते हुए स्वर के पैर उठाकर सवारी करे कार्य सफलता प्राप्त होगी। मात्र ॐकार उच्चारण अवश्य करे।

प्रवास प्रारम्भ करते समय बाया स्वर चलते बाया पैर उठाते समय अर्थात् चन्द्र स्वर में समपाद चले २, ४, ६, ८, १० पूर्व पैर आगे रखकर चले उसी प्रकार दाया स्वर चले तो दाया पैर उठाते सयम अर्थात् सूर्य स्वर में विराम पाद चले जैसे ३, ५, ७, ९ पूर्व पैर आगे रखकर चले तो मनोरथ या इच्छानुरूप कार्य सिद्ध होता है।

॥ परदेश जाने का स्वर ॥

अगर दूर के विदेश जाना हो तो चन्द्र (बाया) स्वर के चलने जाना चाहिए जो विदेश यात्रा सफल हो जाती है तथा नजदीक जाना हो तो सूर्य (दाया) स्वर चलते हुए पर जाना चाहिए।

॥ स्वरों का दिशाशूल ॥

पूर्व और उत्तर में चन्द्र तथा पश्चिम और दक्षिण में सूर्य स्थिर रहता है। बाये (चन्द्र) स्वर चलते हो तो दक्षिण और पश्चिम दिशा जाने पर फल प्राप्त

होगा। दाया (सूर्य) पिंगला स्वर चलने पर पूर्व और उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करे जोकि शत्रु का भय रहता है। बाया (चन्द्र) स्वर चलते में पूर्व और उत्तरा की यात्रा करे तो वापस आने मे देर होगी या वापस लौटेगा ही नहीं।

अतः हम इन स्वरों की विपरित चलने का फल बताते है।

।। विपरित स्वर का फलादेश ।।

अगर प्रातः काल में पक्ष अनुरूप विपरित स्वर चलता है अर्थात् सूर्य (पिंगला) दाया स्वर के उदयकाल में चन्द्र (इड़ा) बाया स्वर और चन्द्र (इड़ा) बाया स्वर के उदयकाल में सूर्य दाया स्वर चलने लगे तो उनके फल अत्यंत विपरित मिलते है। जिसमें प्रथम विपरित स्वर हो तो मन में उद्वेग (खेदाखेदी) दूसरी बार चले तो धन का नाश तीसरे में गमन चौथे में इष्ट का नाश, पाँचवे में शत्रु बढ़ेंगे, छटे में सब अर्थो को नाश, सांतवे में व्याधि दुःख और आठवे मृत्यु कहा है। इसमें प्रातः मध्याह्न और सायंकाल तीनों काल में लगातार आठ दिन स्वर विपरित चलते है तो अति दुःख कष्ट दृष्टदायक फल प्राप्त होता है और जब प्रातः और मध्याह्न में, चन्द्र स्वर और सायंकाल में सूर्य स्वर चले तो वह दिन अत्यंत लाभदायक होता है।

।। स्वरों के फल ।।

देखों अगर चन्द्र स्वर चलता है तो मनुष्य सहनशील बनता है और सूर्य स्वर चलते में बलिष्ठों को काबू में कर लेते है। संमुख नाड़ी में युति चल रही हो तो स्वर त्रिगुण रूप धर कर तीनों जनों को धारण किया रहता है।

यदि नाड़ी शून्य में चलती हो तो व्यवहार, उच्चाटन ठगीधंधा की चोरी-यारी करना तो यह शून्य नाड़ी अशुभ फल देती है। कि संघर्ष पर विजय पाने के लिए स्वर के अनुसार तैयारी करके जाना चाहिए जैसे दूर देश की यात्रा में चन्द्र स्वर योग्य है। जहां प्रवेश करना या कुछ करना हो तो सूर्य नाड़ी सुयश देती है।

अतः किस स्वर में कौन से कार्य करना चाहिए जो हम बताते है।

।। इडा (चन्द्र) बाया स्वर ।।

देखो कार्य २ प्रकार के है १ स्थिर कार्य २. अस्थिर कार्य इस चन्द्र स्वर में सभी स्थिर कार्य करे जैसे मंदिर, मठ, मकान बनाना, वस्तुओं का

संग्रह करना, गहन-अलंकार बनाना, खेती बावड़ी, कूप तालाब बनाना मूर्ति चित्र बनाना नृत्य कला को साकार करना प्रवास दान विवाह वस्त्र अलंकार फूलों का श्रृंगार गहने पहनना, शान्ति पुष्टि वर्धक कार्य करना कसम खाना औषधी उपचार बनाना, करना माता-पिता गुरु स्वामी मित्रों के दर्शन साक्षात्कार व्यापार, अनाज खरीदी विक्री संग्रह करना, गृह प्रवेश सेवा खेती बीज बोना विद्यारम्भ जन्म-मृत्यु मोक्ष धर्म यज्ञ दीक्षा पूजन मन्त्र सिद्धि आदि कर्म काल परिचय पशु-पंछी लाना खरीदी बिक्री भयंकर रोग चिकित्सा करना हाथी-घोड़े-वाहन की सवारी, शस्त्र धारण करना, परोपकार सहयोग करना, खजाना स्थापन करना गायन-वादन-नृत्य करना गाँव शहर देश गृह मन्दिरा ही प्रवेश करना, तिलक लगाना, रोग शोक विषाद ज्वर मूर्च्छा अपनों को संबंध अन्न-काष्ट संग्रह नशा जहर से निवृत्ति योग साधना करना, इस प्रकार दिन रात यह चन्द्र स्वर सभी शुभ कार्य में अति उत्तम है।

।। अतः पिंगला (सूर्य दाया) स्वर ।।

इस सूर्य स्वर में सभी चार अस्थिर कर्म सिद्ध होते है, जैसे भोजन द्वारा मन्दाग्नि करना, सोना, स्नान करना राजा अधिकारियो को मिलना शुद्ध करना, भोग भोगना, खरीदी बिक्री व्यवहार करना, गधा, ऊँट, भैसा, हाथी, घोड़ा पर सवार होना, नदी को पार करना, औषधी करना, लीपापोथी-लेखन करना, व्यायाम करना, कष्टदायक कर्म करना, किला या पर्वत पर चढ़ना, जूआ खेलना, चोरी करना, शिकार करना, प्राणी पशु को बेचना, ईट काष्ठ पत्थर रत्न इनको घिसना, चीरना तोड़फोड़ इ० भ्रष्ट कार्य, नशा करना विह्वल होना दुश्मनी देश, द्रोहीना करना इत्यादि कर्म किये जाते है। उसी प्रकार शास्त्र अध्यापन, गमन-यंत्र-मंत्र-तंत्र वीरमन्त्र भैरव-भैरवी साधना जारन, मारन, मोहन, उच्चाटन स्तभन, विद्वेषण प्रेरण, आकर्षण क्षोभ, भूत प्रेत आकर्षण दण्डित करना नारीवशीकरण आदि कठिन से कठिन, अधम, भ्रष्ट कार्यो में यह स्वर यश देता है। अतः सुषम्ना स्वर को समझों।

।। सुषम्ना स्वर का कार्य ।।

अध्यात्म में ॐकारमय परमेश्वर चिन्तन-ध्यान-समाधि तथा

कुण्डलीनि उत्थान के लिए यह सुषम्ना अग्नि समान कार्य करती है। जब भी चन्द्र सूर्य स्वर बार-बार बदलता है तब यह सुषम्ना स्वर चलता है। इस अग्नि रूप स्वर में कोई भी कार्य करने पर वह निष्फल होकर भस्म कर देता है। अगर यह इडा (चन्द्र) पिगला (सूर्य) स्वर घण्टे में बदले तो समझ लेना चाहिए कि कुछ बूरी घटना होने वाली है। अगर यह दोनों स्वर मिलकर भूमि तत्व में चले तो दानधर्म पुण्य व्रत कार्य भी ना करे। अतः इसमें योगासनों प्राणायाम ॐकारमय ध्यान करना उचित है। इसी प्रकार यही सूर्य स्वर ऊपर नीचे दाये-बाये आगे पीछे तिरछे चले तो यह किसी भी कार्य फल को निष्फल कर देता है। यह सुषम्ना स्वर को संध्या स्वर भी कहते है इसमें व्रतस्थ रहकर ब्रह्मचिन्तक करे तो योग-ध्यान-ज्ञान की प्राप्ति होती है।

अगर चन्द्र (बाया) स्वर पहले या बाद में अथवा दाहिना (सूर्य) स्वर पहले या बाद में क्रिया गुण स्वर चले तो इस वक्त विवेकपूर्ण रहने पर सिद्धि को प्राप्त होता है।

॥ पंचतत्वात्मक स्वर ॥

हे संत महात्माओं अब हम तत्व स्वरों का विवेचन करते है जो समझने पर साधक सिद्ध होकर कार्य सिद्धि को पाता है। यह सृष्टि निगुर्ण निराकार ॐकार से पंचतत्व बनकर उत्पन्न हुई है और उसी में ही विलीन हो जाती है। वह जो पंच तत्व है जो ॐ से आकाश उत्पन्न हुआ फिर आकाश से वायु फिर अग्नि फिर जल और पृथ्वी और इससे सृष्टि बनी अतः इनमें स्वर के पंचतत्वात्मक भेद भी है।

देखो भूलोक से सत्यलोक तक सभी प्राणी पंच तत्व स्वरूप है किन्तु उनके नाड़िओं का तथा स्वरों का भेद पृथक पृथक है। प्राणी के वाम और दक्षिण या दक्षिण और वाम भाग में स्वर के चलते प्रत्येक स्वर के साथ यह पाँचों तत्व भी चलते है। जो प्रत्येक आधी-आधी घड़ी अर्थात् २४, २४ मिनट चलते है और क्रम से बदलते भी है। यह पंच तत्वात्मक स्वर पहचान ने के आठ प्रकार है।

१. तत्व की संख्या २. श्वास की सन्धि ३. स्वरों का चिन्ह ४. स्वरों का स्थान ५. तत्वों के रंग ६. प्राण ७. स्वाद का संयोग ८. गति के लक्षण

देखो योगी, सिद्धों ने प्रातः ही इन स्वरों का अभ्यास करना चाहिए।

१. स्वर तत्व अनुसार रंग – कानों में दोनों अंगूठे, मध्य अंगुली से नाक के दोनों पुटों में फिर नेत्रों पर तर्जनीया और मुख पर कनिष्ठिका लगा के तब जो रंग दिखते वह पृथ्वी का पीत, जल का श्वेत तेज का लाल वायु का श्याम आकाश का चित्रवर्ण दिखाता है।

२. स्वरों के चिन्ह के लिए दर्पण ऊपर श्वास छोड़े और आकारों को देखते हुए तत्व जाने चौकोर हो तो पृथ्वी, अर्द्ध चन्द्र– जल, त्रिकोन–अग्नि गोल–वायु और बिन्दु बने को आकाश तत्व जान लेना चाहिए।

३. स्वरों का स्थान – नाक के नथूओं के बिल्कुल बीच में स्वर चले तो पृथ्वी, नीचे जल ऊपर अग्नि, तिरछा वायु और दो स्वरों का भिंचकर (संक्रम) चले तो आकाश तत्व जानो।

४. स्वरों के स्थान – मस्तक में आकाश, नाभि के मूल में वायु, दोनों कन्धों पर अग्नि, चरण के अन्त में जल, जानुवों में पृथ्वी, स्वरों के स्थान है।

५. स्वरों के स्वाद – मुख में कडुवा स्वाद आकाश तत्व का होता है। वायु का खट्टा, अग्नि का चटपटा, जल का कसेला (खारा), पृथ्वी का मीठा, ऐसे तत्वानुसार मुख में स्वरों के स्वाद आते है।

अतः हे भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ यह सब स्वरों की पहचान तत्वों का ज्ञान और उनके सिद्धि विधान का अभ्यास निरंतर करने पर प्राप्ति हो जाती है किन्तु वह साधक अंतकरण से काया इन्द्रियों से, चित्त–चिन्तन से शुद्ध पवित्र श्रद्धाभाव युक्त होना आवश्यक है अतः हम इन स्वरों के गतियों का ज्ञान देते है।

।। स्वरों के गति के लक्षण तथा सिद्धियाँ ।।

स्वर नासिका से चार अंगुल हो तो अग्नि तत्व होता है। वायु का आठ अंगुल पृथ्वी का बारह अंगुल, जल का सोलह अंगुल चलता है।

।। स्वर गतिनुसार कर्म ।।

स्वर नासिका से नीचे चले तो शान्ति कर्म करे। ऊपर चले तो मारनजारन कर्म करे तिरछा चले तो उच्चाटन कर्म करे। अगर नासिका के संमुख मध्य

में चले तो प्राणायाम कुम्भक साधना करना उचित होगा और स्वर बराबर चले तो मध्यम कर्म करना चाहिए इसी प्रकार पृथ्वी तत्व में स्थिर और सक्षम कर्म करे, जल तत्व में चर कर्म तथा अग्नि और वायु तत्व में मारण उच्चाटन आदि क्रूर कर्म करे और आकाश तत्व में योगसाधना-ध्यानादि कर्म जो उन्नति करता है। ऊर्ध्वरिता होते हुए सहस्त्रागार चक्र जागृति को यह आकाश तत्व स्वर सहायक होता है।

।। विशेष लाभ ।।

पृथ्वी तत्व में विशेष लाभ तो जल से तत्काल लाभ वायु और अग्नि से हानि और आकाश तत्व में निष्फल कार्य होता है।

।। तत्व स्वरों का उपयोग तथा लक्षण ।।

आकाश तत्व – वर्ण-नीला, स्वाद-खट्टा गति यह सब काया में हर जगह तत्वों के चलने चलता है। अर्थात् गति अव्यक्त है। अत: यह काया के सभी तत्व को सहयोग और बढ़ावा देता है। यह सीधा चलता है, इसमें संसारिक या भौतिक कोई भी कार्य कर्म नहीं करना चाहिए जो कि वह निष्फल हो जाता है। इस आकाश तत्व में योगासनों प्राणायाम कुण्डलीनि योग ध्यान समाधि को करना उत्तम है। क्योंकि हमारी ऊर्ध्वगामिनि चेतना को आकाश रूपी सहस्त्रागार में चैतन्य प्रगट होने को यह स्वर यश देता है।

वायुतत्व – रंग-काला/नीला, हरा स्वाद – खट्टा वर्ण –शीतल, चंचल तथा तिरछा चलने वाला है। आठ अंगुल प्रवाह है आकार गोल है, यह वायु चल, चर कर्म के लिए उत्तम है।

अग्नि तत्व – वर्ण-गरम रंग-लाल (रक्त)

आकार – तिकोना प्रमाण – चार अंगुल, गति – वेगवान ऊपर को (भौहो में) प्रकाश मान स्वाद – तीखा यह स्वर अग्नि तत्व महान स्वरूप तेज है तिरछा चलने वाला इससे क्रूर कर्म मारण उच्चाटन दी करते है।

जल तत्व – वर्ण शीतल रंग – श्वेत प्रमान सोलह अंगुल गति – नीचे के तरफ शीघ्र गति वाला आकार अर्द्ध चन्द्राकार स्वाद कसेले इस तत्व में शुभ कार्य करना चाहिए उत्तम फल देता है।

पृथ्वी तत्व – वर्ण-पीत रंग पीला, प्रमान – बारह अंगुल आकार – चार

कोन वाला, स्वाद-मधुर, मीठा, गति - मध्यम गति धीरे-धीरे चाल लम्बाई ठोडी तक यह स्थिर पृथ्वी तत्व में सभी कार्य सफल होते हैं विशेषतः धर्म, साधना इ० स्थिर कर्म सिद्ध होते है। मुख्यता पृथ्वी और जल तत्व शुभ फल देते है। अग्नितत्व मध्यम तो आकाश एवं वायु तत्व हानि, मृत्यु आदि अशुभ फल देते है।

।। स्वर तत्व के दिशा एवं इष्ट ।।

पूर्व से पश्चिम दिशा में पृथ्वी और जल तत्व जिनका इष्ट चन्द्र है। दक्षिण में अग्नि तत्व जिनका इष्ट सूर्य भगवान है। उत्तर दिशा में वायु तत्व तथा मध्य में आकाश तत्व स्थित रहता है।

।। स्वर तत्वों की कार्य सिद्धि तथा समय ।।

दिन में पृथ्वी तत्व और रात्री में जलतत्व के कार्य सिद्धि होती है अग्नि तत्व से मृत योग तो वायु तत्व से बीमारी क्षय रोग होता है। इनमें आकाशतत्व थोड़ा ही फल देता है।

अतः इन अग्नि, वायु और आकाश तत्व में ॐकार प्रणव से प्राणायाम करे तथा मृत्युजंय मंत्र से जल को प्रशन करे तो संकट को नाश होता है।

।। स्वर तत्वोनुसार फलादेश ।।

अगर चन्द्र स्वर में पृथ्वी और जल तत्व या सूर्य स्वर में अग्नि तत्व स्थित हो इस समय अच्छे तथा बुरे कर्म सिद्ध हो जाते है। जीवन, जय लाभ खेती-व्यापार करना, मंत्र तंत्र सिद्धि गमन और आगमन शुद्ध प्रश्न फल इन सब के समय पृथ्वी तत्व श्रेष्ठ होता है। यदि जल तत्व हो तो शत्रु का आगमन समझे, पृथ्वी तत्व में शुभ, वायु में शत्रु का पलायन और आकाश या तेज तत्व में शत्रु की हानि या मृत्यु होगी। स्वरज्ञानी उपरोक्त बातों को ध्यान में लेते हुए प्रश्न पूछने वाले को जवाब देना चाहिए। उसी प्रकार प्रश्न कर्ता मुक (मौन में) बैठा हो तो उस समय पृथ्वी तत्व चल रहा हो तो तो उसको मूल की चिंता होगी, वायु और जल तत्व हो तो जीव की चिन्ता है, अग्नि तत्व हो तो धातु की चिंता समझे और आकाश तत्व है तो उनके सभी प्रश्न निरर्थक समझे उसी प्रकार पृथ्वी तत्व चलते समय उसे कहे कि तुम्हे अनेक मनुष्य का संग (दोस्ती-प्रेम इ०) करने की इच्छा है। जल तत्व

चलता हो तो उसकी शादी करने की इच्छा समझे या शादी हो चुकी हो तो संतान की इच्छा समझे या प्रेम अन्य की इच्छा बताये। विशेषत नारी हो तो तथा कुंवारी कन्या हो तो विवाह या प्रेम विवाह की इच्छा बताये। अगर अग्नि तत्व चलता हो तो उसे चार पैर वाले अर्थात् प्राणी जैसे गाय, बैल, भैस सवारी घोड़ा, हाथी ऊँट इ० हो सकते है। यदि आकाश तत्व चलते समय प्रश्न करता कही बाहर नहीं जा सकता या बाहर नहीं जा सकता है। अत: जवाब देना उसके योग्यता पर ही निर्भर है।

।। स्वर तत्वों में ग्रहों का निवास ।।

पृथ्वी तत्व में बुधग्रह का निवास रहता है। जल में चन्द्रमा, अग्नि में शुक्र, रवि, मंगल का निवास, वायु में राहु, शनि का तो आकाश तत्व में बृहस्पति का निवास रहता है।

।। चन्द्र/सूर्य स्वरों में ग्रह संग ।।

अगर चन्द्र स्वर अर्थात् बाया (इडा नाड़ी) स्वर चलते जल तत्व को पाया तो उस समय चन्द्र ग्रह का संग होता है। पृथ्वी तत्व हो तो बुध ग्रह का, वायु तत्व हो तो गुरु ग्रह का, अग्नि तत्व हो तो शुक्र ग्रह का संग अर्थात् विद्यामानता होती है।

उसी प्रकार अगर सूर्य अर्थात् दाया (पिंगला नाड़ी) स्वर चलते अग्नि तत्व को पाया तो वह मंगल ग्रह विद्यामान होता है। पृथ्वी तत्व हो तो सूर्य, ग्रह का संग, जल तत्व हो तो शनैश्वर, वायु तत्व हो तो राहु ग्रह का संग होता है।

।। विदेश गये हुए मनुष्य के विषय प्रश्न ।।

अगर प्रश्नकर्ता विदेश गये हुए मनुष्य का प्रश्न करे और इस वक्त सूर्यस्वर में राहुग्रह हो तो परदेशी अन्य जगह जाने को चाहता है। अगर इस समय जल तत्व बहता हो तो विदेशी वापस आयेगा अगर पृथ्वी तत्व हो तो विदेशी वहां सुख समृद्धि में खुश है। अगर वायु तत्व हो तो विदेशी अन्य जगह चला गया है और अग्नि तत्व हो तो विदेशी के प्राण संकट में है या उसकी मृत्यु हो गयी है। ऐसा बताना चाहिए।

।। तत्वानुसार उत्तर ।।

यदि पृथ्वी तत्व हो तो मूल (जड़ को) जाने, जल तत्व हो तो शुभकार्य हो,

अग्नि तत्व हो तो धातुओं का ज्ञान हो और आकाश तत्व हो तो किसी प्रश्न को उत्तर ना दे। इसी प्रकार प्रश्न के समय पृथ्वी या जल तत्व हो तो वह परदेशी सन्तोष पुष्टता, प्रीति, रति, क्रीडा जय और हर्ष में है। यदि अग्नि या वायु तत्व हो तो वह (आलसी) सोना, ज्वर, से बीमार होता है और आकाश तत्व होते तो वह विदेशी मृत जाने।

।। दिशानुसंधान बल ।।

पूर्व में पृथ्वी, पश्चिम में जल, दक्षिण में तेज और उत्तर में वायु तत्व अपने-अपने दिशानुसार बलवान होते है।

इतना सब स्वर ज्ञान की चर्चा करते-करते गुरु गोरक्षनाथजी रूक गये। अतः दिन का सूरज बहुत ऊपर आया था। नाथ भर्तृहरि और गोपीचन्द ने जलपान की व्यवस्था करने लगे। तब मीठे-मीठे फल कुछ राम कंदमूल गौ का दूध यह सब अन्न ग्रहण करके सभी सन्त लोक संतुष्ट हुए और कुछ समय विश्राम में लग गये।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द
नाथ संवादे ॐकार स्वर ज्ञाने नाम नवमोऽध्यायः।।

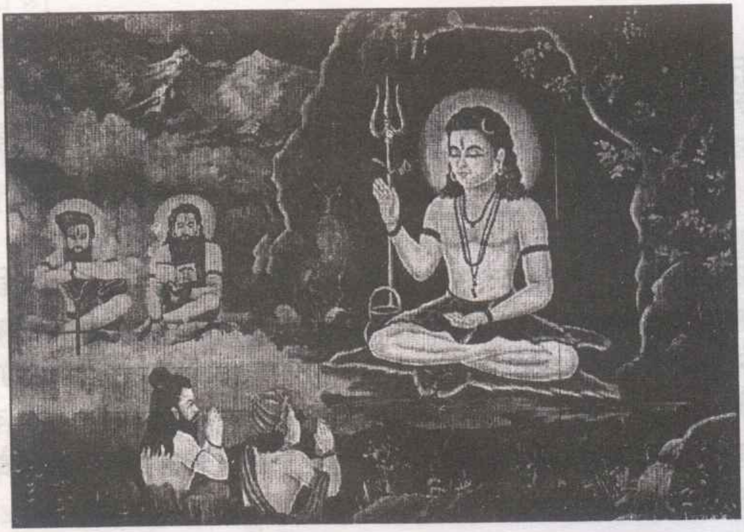

गुरु गोरक्षनाथ जी भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ तथा अन्य संतों को ज्ञान देते हुए ।

दशमः अध्याय

।। ॐकार स्वर तत्व ज्ञान ।।

शाम को ठीक सूर्य नारायण अस्त हो रहे थे। सभी सन्त भागीरथी माँ गंगा में स्नान संध्या आनन्द में मग्न हो रहे थे फिर गुफा स्थान में आकर आरती आदेश प्रणाम करके पुनः सभी संत सिद्ध महात्मा गुरु गोरक्ष नाथ जी के संमुख विराजमान हुए और पूछने लगे हे शम्भुजती शिव स्वरूप गुरु गोरक्षनाथजी आप कृपया हमें और भी स्वर ज्ञान-विज्ञान तथा ज्ञान सिद्धियाँ बताइए और ॐकार स्वरूपी स्वरयज्ञ त्रिकाल ज्ञान रूप ॐकार स्वरूप स्वर से इस भव सागर से कैसे पार कर सकते हैं।

यह प्रार्थना युक्त प्रश्न सुनकर श्री नाथ जी प्रसन्न मुद्रा से कहने लगे हे संत सज्जनों आपने बहुत ही उत्कृष्ट प्रश्न किया है। जो सभी ज्ञानी योगी संत और भक्तों को बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। अतः सुनो

पृथ्विव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च।

पञ्चभूतात्मको देहो ज्ञातव्यश्च वरानने।।

अर्थात् – हे सिद्धों पृथ्वी जल तेज वायु और आकाश इन पाँचो तत्वों से ही हमारा शरीर (पिण्ड) जानना चाहिए।

जैसे **पंचतत्व की काया नगरी बीच पवन का खम्बा।**

आवत जावत कहिन दिखे यही बड़ा अचम्बा।

।। काया गढ़ में पृथ्वी तत्व ।।

हमारे शरीर के हाड़-माँस-त्वचा-स्वर और रोम नाड़ी में पृथ्वी तत्व विद्यमान है। प्रकृति के पाँचों गुण पृथ्वी तत्व में है। अथ ॐकार मय इस तत्व की साधना करने पर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

।। काया गढ़ में जल तत्व ।।

हमारे शरीर में वीर्य-रक्त-मज्जा-मूत्र-लार इनमें जल तत्व विद्यमान है। इनको स्वरोदय शास्त्र और ब्रह्मज्ञान का बोध हो जाता है।

।। काया गढ़ में अग्नि तत्व ।।

हमारे शरीर में भूख-प्यास-निद्रा-आलस्य-क्रांत इनमें अग्नि तत्व विद्यमान है। यह अग्नि तत्व शरीर में कम हो जाये तो हमें ना भूख

लगेगी ना प्यास ना निद्रा आयेगी आलसी वृत्ति होगी काया तथा चेहरे का तेज कम होकर कमजोर होकर मंदाग्नि से काया रोगी होकर कर्महीन हो जायेगे।

।। काया गढ़ में वायु तत्व ।।

हमारे शरीर में दौड़ना-चलना-फिरना, आकुचन फैलना इन्हीं में चेतना रहती है। वायु काया में न रहने से काया चेतना शून्य हो जायेंगी।

।। काया गढ़ में आकाश तत्व ।।

हमारे काया में प्रेम स्नेह राग द्वेष लज्जा भय तथा मोह में आकाश तत्व विद्यमान है। इस तत्व के बिना मनुष्य पत्थर दिल निडर निर्लज्य द्वंद्व रहित हो जायेंगे अतः साधना करते समय योगिओं को इन दुर्गुणों को हटाना पड़ता है। अतः ॐकार प्रणव से किया प्राणयाम से यह आकाश तत्व के दुर्गुण हट जाते हैं।

।। तत्व प्रमाण ।।

पूर्ण शरीर में पृथ्वी ५० पल जल ४० पल अग्नि ३० पल, वायु २० पल और आकाश १० पल प्रमाण में रहते है। यह पल कम ज्यादा होने से काया अस्वस्थ या बीमार हो जाती है। ऐसे समय साधक को सूर्य नमस्कार सूर्य साधना तथा चिकित्सा करनी चाहिए जिससे पंच तत्व संयमित हो जाती है।

।। विवेक तत्वों से गुण और लाभ ।।

जैसे हम कुछ महत्वपूर्ण बात पर एकाग्र होकर सोच रहे या विवेक साध रहे है तब यदि पृथ्वी तत्व चलता हो तो उस सोच का बहुत दिनों के बाद लाभ होगा। जल तत्व हो तो उसी क्षण या त्वरित लाभ होगा। वायु तत्व हो तो साधारण लाभ और अग्नि तत्व चलता हो तो हानि होगी अतः पृथ्वी ५ जल ४ तेज ३ वायु २ तो आकाश १ गुणा फल समझना चाहिए। अतः अपने विवेक फल के लिए ॐकार प्रणव या गुरु मंत्र का कुम्भक में तत्व गुण अनुसार प्राणायाम करे तो उस पर निर्णय भी ले सकते हैं।

।। तत्व गुणतीत फल ।।

पृथ्वी तत्व गुण – शब्द, स्पर्श, रूप रस गंध या पाँच गुण जैसी पृथ्वी

टूटी-फूटी रूप से तथा फूटकर रंग से फल देती है।

जल– स्पर्श रूप रस शब्द यह ४ गुण जैसे जल श्वेत रंग का निर्मल तथा एक रसता तथा फल में कोई कमी नहीं ऐसा फल देता है।

तेज– शब्द स्पर्श, रूप यह ३० गुणों से जैसा रूप वैसा गुण और तेज रंग कारण त्वरित फल देता है। अग्नि भस्म करने के कारण फल को भस्म कर देती है कि कुछ बचा तो तुरन्त किन्तु थोड़ा फल मिलता है।

वायु – शब्द स्पर्श, यह २ गुणों से यह कर्म फल को उड़ा देता है किन्तु जो नहीं उड़ सकते जड़वत कोई-कोई फल मिल जाता है।

आकाश – शब्द इस गुण से और शून्य निराकार रूप होने से भौतिक विचारों का फल शून्य मिलता है। किन्तु शब्दगुण से ॐकार शब्दमय साधना करने पर निर्गुण निराकार परब्रह्म की प्राप्ति होती है।

।। अब कार्य सिद्धि स्वरयोग ।।

अगर बहते हुए स्वर या नाड़ी की तरफ बैठे हुए व्यक्ति शुभ-अशुभ पूछे तो वह कार्य सिद्ध हो जायेगा और इसके विपरित शून्य में पूछे तो कार्य सिद्ध नहीं होगा। यदि दोनों चन्द्र सूर्य स्वर पूर्णतः चलते है तो भी कार्य सिद्ध नहीं होगा अगर दोनों नाड़ी संग्रहित (मिलाप) हो तो सम्पूर्ण कार्य सिद्धि फल देता है।

हे सिद्धों संतों सुनो शब्द अन्तकरण या निस्वार्थ भाव के सात्विक साधक जिसे जन्म-जन्मान्तर के शुभ संस्कार हो या सत्गुरु कृपा हो जो ब्रह्ममय ॐकार की उपासना का साधना करता हो उसे ही यह ॐकाररूपी स्वर तथा ॐकार से प्रगट पांच तत्व का तत्व ज्ञान या ब्रह्मज्ञान हो जाता है। अतः यह ॐ प्रणव साधना इन स्वर युक्त तत्व में कि तो साधक अनेकों सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। जिसमें स्वर ज्ञानी सत्गुरु की कृपा भी होना आवश्यक है।

ॐकार अर्थात् ओहं-सोंह अर्थात् जपा-अजपा अर्थात् प्राण-अप्राण अर्थात् ॐकार प्राण रूपी स्वर जो इडा पिंगला सुषम्ना नाड़ियों द्वारा चन्द्र-सूर्य जो शीतल और ऊष्म को संयमित करके अर्थात् प्राणायाम करके इन स्वरों से प्राकृतिक सिद्धियाँ तथा कुण्डलीनि साधना सफल हो जाती

है। जिसे नाथ सिद्धों का हटयोग भी कहा जाता है। अतः देखो तत्व बीज के साधना से भी सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

॥ तत्व बीज सिद्धि ॥

१. पृथ्वी तत्व – मंत्र = ॐ लँ लँ लँ नमः या ॐ लँ लँ लँ ॐ नमः

विधि – जब साधक का स्वर पृथ्वी तत्व में चलता हो तब उपरोक्त मन्त्र कि ११ माला जाप करना चाहिए। विशेषतः जाप दिन में प्रातः पूर्व दिशा तथा शाम पश्चिम दिशा को मुख करके पीला आसन बैठकर तथा पीला वस्त्र पहनकर जाप करे शुभ दिन – बुधवार तथा नक्षत्र घनिष्ठा रोहिणी ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवण अभिजीत और उत्तराषाढ़ शुभ राशि – मेष (अशिंक) कुम्भ मकर वृषभ वृश्चिक इन राशि वाले साधक की विशेष लाभ होगा। जप एक समय या त्रिकाल या १ घण्टा ३६ मिनट के बाद पृथ्वी तत्व चलते समय कर सकते है।

प्रचिति – जप ध्यान में शक्ति उपासना स्मरण करके ध्यान करे। तो सुवर्ण समान प्रकाश पीत वर्ण तथा सुगंध तथा मुख में मीठा स्वाद आता है।

फल – पृथ्वी तत्व में गूढ़ रहस्य, देह से लाघव बन जाता है और बलवान होकर सभी कर्म सिद्ध कर लेता है।

२. जल तत्व – मंत्र = ॐ वँ वँ वँ नमः या ॐ वँ वँ ॐ नमः

विधि – जब साधक का स्वर जल तत्व में चलता हो तब उपरोक्त मन्त्र की ११ माला जप (रुद्राक्ष माला) करना चाहिए। विशेषतः मन्त्र जाप रात्री में या शाम को पूर्व तथा प्रातः पश्चिम दिशा को सफेद आसन पर बैठकर सफेद वस्त्र पहनकर या जल में खड़ा/बैठकर जाप करे।

शुभ दिन– सोमवार तथा शुभ नक्षत्र – पूर्वाषाढ़ा, आश्लेषा, मूल, आर्द्रा, रेवती उत्तराभाद्रपदा, शतभिषा शुभ राशि – धनु मिथुन मीन कुम्भ कर्क इन राशि के साधक को विशेष लाभ होगा। जप – संध्या या संध्या-मध्यरात्री–प्रातः तक या प्रति १ घण्टा ३६ मिनट के पश्चाद अर्थात् २ चड़ी पश्चात् भी स्वर में जल तत्व चलते हुए कर सकते है।

प्रचीति – जाप ध्यान में शुभ्र प्रकाश दर्शन तथा शान्ति शीतलता आती है। भगवान शिव का या अर्द्ध चन्द्र दर्शन स्मरण या उपासना करके हृदय

में ध्यान धरके धारणा करके जाप करे। साधना करते समय मुख में कसेला स्वाद आता है।

फल – भूख-प्यास पर विजय पाकर अगाध शक्ति प्राप्त होगी जल का प्रभाव नहीं होगा। जल सिद्धि प्राप्त होगी, जल पर चलना, पार करना, जल में कभी नहीं डुबना इ० सिद्धि प्राप्त होती है।

३. अग्नि (तेज) तत्व – मंत्र = ॐ रँ रँ रँ नमः या ॐ रँ रँ रँ ॐ नम

विधि – जब साधक का स्वर अग्नि तत्व में चलता है। तब उपरोक्त, किसी एक मंत्र की ११ माला (रुद्राक्ष माला) का जाप करना चाहिए।

विशेषतः मन्त्र जाप दिन में दक्षिण दिशा में मुख करके लाल आसन पर बैठकर लाल वस्त्र धारण करके करे।

शुभ दिन-रविवार-मंगलवार-शुक्रवार तथा शुभ नक्षत्र-भरणी, कृतिका, पुष्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वा भाद्रपदा स्वाति शुभ राशि – मेष सिंह कर्क कुम्भ तुला इन राशि के साधक को विशेष लाभ हो सकता है। जप-दिन में प्रातः या त्रिकाल या प्रति १ घण्टा ३६ मिनट (२ घड़ी) पश्चात् जो कि स्वर में अग्नि तत्व चलते हुए करे।

प्रचीति – ध्यान जाप करते समय रक्त वर्ण तिकोना प्रकाश दर्शन सूर्य भगवान का ध्यान हृदय में स्थित करे। मुख में तीखा स्वाद आता है।

लाभ – बहुत अन्न पाणी ग्रहण करने का सामर्थ्य आता है तथा धूप और अग्नि के वेग को सह लेता है। वह अग्नि पान कर लेता है। अग्नि से भय नहीं होता और नाही जलता यह साधक कामी क्रोधी कपटी आदि सभी को सह लेता है। देखो अपने नाथ सिद्ध पंच अग्नि के मध्य में सूर्याभिमुख आसन लगाकर अग्निवशी सिद्ध की साधना करते है।

४. वायु तत्व – मन्त्र = ॐ यँ यँ यँ नमः या ॐ यँ यँ यँ ॐ नमः

विधि – जब साधक का स्वर वायु तत्व में चलता हो तब उपरोक्त एक मन्त्र की ११ माला (रुद्राक्ष) से जाप करना चाहिए मरुत देवता का हृदय में ध्यान लगाना चाहिए।

विशेषतः मन्त्र जाप दिन या रात या दिन रात उत्तर दिशा में मुख करके शाम या हरे रंग के आसन पर बैठकर तथा शाम (नीले/हरे) वस्त्र पहनकर जाप करे।

शुभ दिन – रविवार तथा शुभ नक्षत्र – विशाखा, उत्तर फाल्गुनी हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनी, मृगशिरा में मेष, मिथुन, वृषभ, कन्या इन राशि वालों साधक को विशेष लाभ हो सकता है। जप – दिनरात में प्रातः या त्रिकाल या प्रति २ घटी अर्थात् १ घण्टा ३६ मिनट पश्चात् स्वर वायु तत्व में चलते समय करे।

प्रचिति – ध्यान में नीले/हरे प्रकाश चक्र दर्शन शरीर हल्का-फूलका हो जाता है। मुख में खट्टासा स्वाद आयेगा।

फल – आकाश में उड़ने समतुल्य तेज गति चलने वाला हो जाता है। क्षण मात्र में इधर का उधर जा सकता है। अतः अपने नाथ सम्प्रदाय में, नाथ सिद्ध पवनहारी सिद्धि प्राप्त कर आकाश गमन सिद्ध तक पा लेते है।

५. आकाश तत्व – मन्त्र = ॐ हँ हँ हँ नमः या **ॐ हँ हँ हँ ॐ नमः**

विधि – जब साधक का स्वर आकाश तत्व में चलता हो तब उपरोक्त एक मन्त्र की ११ माला (रुद्राक्ष) से जाप-ध्यान करना चाहिए। ॐकार आदिनाथजी या श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी या सत् गुरुजी का स्मरण ध्यान हृदयस्त धारण करना चाहिए।

विशेषतः यह मंत्र जाप दिन-रात मध्य दिशा अर्थात् अन्तरमुख सहस्त्रागार या मस्तक त्रिपुण्ड में ध्यान जाप करे। कुशासन या कम्बलासन सीधे बैठे जाप करे।

शुभ दिन- गुरुवार शुभ नक्षत्र – अभिजीत मकर राशि वालों साधक को विशेष फायदा होगा जाप – त्रिकाल या प्रति २ घटी (१ घण्टा ३६ मिनट) पश्चात् जब-जब स्वर आकाश तत्व में चलते समय साधना करना चाहिए।

प्रचीति – त्रिपुण्ड में प्रकाश दर्शन या इष्ट दर्शन शरीर हल्का मुख में खट्टा स्वाद या बाद में निर्गुण निराकार में कोई स्वाद नहीं रहता, ध्यान निर्गुण निराकार शून्य में लग जाता है।

फल – आत्म साक्षात्कार होता है। अपना इष्ट का दर्शन-कृपा प्राप्त होती है, निर्गुण समाधि भी लग जाती है। साधक त्रिकाल दर्शी हो जाता है। अनुमागरिमादि सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

इस प्रकार स्वर सिद्ध या स्वरज्ञानी साधक से बढ़कर और कोई धन

नही। वह बिना परिश्रम से धन दौलत मान-पान-प्रतिष्ठा का प्राप्त कर लेता है। किसी भी प्रकार की दुर्गुण तथा पंचतत्वादि इन्द्रियातीत-संसारिक माया उससे दूर रहती है। आत्म तत्व, परम तत्व, निर्गुण निराकार तथा वह मुक्त अवस्था में रह सकता है।

सभी ऋद्धि सिद्धियाँ तथा शक्ति या उसके सेवा में हाजीर हो जाती है।

अतः उपरोक्त पंचतत्व सिद्धि साधना करते समय संमुख श्री ॐकार यन्त्रम् की स्थापना अवश्य करे अतः स्वर सिद्धि की कोई भी साधना ॐकार यन्त्र के संमुख करे विशेषतः वह "श्री ॐकार यंत्रम्" ताम्र पत्र चाँदी, सोना इ. धातु का होना चाहिए।

।। ॐकार प्राण-अपाण स्वर साधना ।।

सुनो सिद्ध साधो प्राण यह ॐकार रूपी प्राण ही जीव को परम मित्र-सखा-ईश्वर-गुरु-माता-पिता तथा बन्धु है। यह प्राण हमारे शरीर की रख वाली तथा सुरक्षा करता है। यह प्राण शरीर में प्रवेश करता है तब वह १० अंगुल होता है जब शरीर बाहर अपाण होकर निकलता है तो १२ अंगुल होता है। जब हम चलते फिरते है तो २४, जब दौड़ते उछलते समय ४२ भोग के समय ६५ सोते समय १०० अंगुल का होता है। अतः योगीजन, स्वर सिद्ध जन नाथ योगेश्वरों का स्वाभाविक या प्राकृतिक गति १२ अंगुल तथा भोजन और बोलते समय १८ अंगुल हो जाती है। यदि योगी अपने ॐप्रणव प्राणायाम तथा स्वर सिद्धि साधना करते हुए अपने प्राण की गति एक अंगुल कम करे तो उसमें निष्कामता आती है अगर दो अंगुल कम कर ले तो चिन्ता रहित अति आनन्द प्राप्त होगा अगर तीन अंगुल कम कर ले तो काव्य स्फूरण होकर काव्य रचना ग्रंथ रचना करता है।

इस प्रकार अभ्यास करते योगी प्राण आती को घटा कर कम कर लेता है और उसे सिद्ध कहलाता है। जैसे-जैसे (प्राण) श्वास की गति कम होती है वैसे-वैसे अनेकों गुणातीत सिद्धियाँ भी प्राप्त होती है।

अतः उस साधक ने स्वर साधना अभ्यास द्वारा जब उस स्वाभाविक प्राण गति को चार अंगुल कम किया तो उसे वाक् सिद्धि प्राप्त होती है अर्थात् वह जो भी वरदान, आशीर्वाद, कृपा या श्राप इ० कहे वह सत्य हो जाता है

और वह किसी का भी भला बुरा कर सकता है। जिसे देवता भी नहीं टाल सकते। अगर वही श्वास गति पाँच अंगुल कम की तो योगी दुरी देखो सिद्धि मिलती है अर्थात् वह दिव्य दृष्टि से चाहे वहां का हाल देख लेता है। उसी प्रकार श्वास गति छ अंगुल घटाते है तो योगी आकाश गमन, पवन सिद्धि को प्राप्त होता है। वह सिद्ध योगी पंछी की तरह हवा में वेग से उड़ता हे। जब प्राण की गति सात अंगुल घटाते है तो उसकी उड़ने की गति ओर तेज, चंद्र वेग – मनोवेग जैसी हो जाती हैं अगर आठ अंगुल वायु घटायी तो योगो अष्टसिद्धियाँ अनीमा गरिमादि प्राप्त कर लेता है। जब प्राण को नौ अंगुल घटाया तो अष्टसिद्धि नवनिधि या नवविद्या भक्ति को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार जब साधक वायु को दस अंगुल कर लेता है तो दश अवतारी या अनेक रूप को धारण कर लेता है। अगर ग्यारह अंगुल प्राण को घटाया तो उस साधक के देह की छाया तक अदृश्य हो जाती है और वह गुप्त होने की क्रिया तक कर लेता है। अतः साधक उच्च कोटी स्वर साधना द्वारा बारह अंगुल श्वास के स्वर को कम किया तो वह नित्य अमृतपान करके भोजन अन्नपाणी से निवृत्त हो जाता है और हंस के समान होकर गंगाजल सा पवित्र होकर अमृतपान करता है। इस प्रकार स्वर सिद्धियों को केवल मात्र सद्गुरु शब्द गुरु कृपा से प्राप्त कर लेता है अतः नाही विद्या सीखने से और ना ही ग्रंथ पाठ से यह सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

।। स्वरों का योग ।।

यदि प्रातः चन्द्रस्वर और शाम को सूर्य स्वर दैववश ना मिले तो मध्याह्न बाद पीछे चन्द्र स्वर और आधी रात के बाद सूर्य स्वर चलते हुए प्राप्त होते है।

।। स्वर को चालू करने का उपाय ।।

प्रथम ११ या २१ प्राणायाम कर के अगर बायां चन्द्र स्वर चालू करना है तो दांये करवट पे लेट जाये २, ३ मिनट में बायां या चन्द्र स्वर चालू हो जाता है। उसी प्रकार दूसरे स्वर के लिए इसके विपरित क्रिया करने पर स्वर का प्रवाह चालू हो जाता है। लेकिन यह स्वर सिद्धि विधि विधान साधना में या उपासना मे प्राकृतिक या स्वाभाविक स्वरों के चलना गति ही लाभ दायक होता है।

।। रक्षा स्वर मन्त्र ।।

जो योद्धा शरीर पर सुरक्षा वस्त्र पहनकर, युद्ध में **"ॐ जीवं रक्ष" "ॐ जीवं रक्षं"** ऐसा मन्त्र जाप करते युद्ध करता है। वह सम्पूर्ण जीत को प्राप्त कर लेता है।

।। संग्राम ।।

(वाद विवाद–युद्ध–न्याय मांगना इत्यादि विजय के लिए कुछ स्वर संकेत सिद्धियाँ।)

यदि दूर स्थान युद्ध करने जाना हो तो चन्द्र स्वर और समीप या नजदीक युद्ध करने जाना हो तो सूर्य स्वर चलने वाले स्वर विजय प्राप्त कराते है तथा निकलते समय जो भी सूर्य या चन्द्र दायां या बायां स्वर चलता हो वही पैर उठाकर या आगे रखकर चले तो सब कार्य सिद्ध होता है अयन, तिथि वार इनके स्वामियों से युक्त योद्धा का स्वर अपने तत्व के साथ दैवयोग से बहे तो वह योद्धा शत्रु के स्वर को रोकने से ही जीत जाता है और उसे कोई भी संकट नहीं आता ।

।। स्वर के द्वारा शस्त्र बांधना ।।

जीव स्वर अर्थात् स्वाभाविक या प्राकृतिक जो भी (दायां या बायां) स्वर चलता हो उसी हाथ में शस्त्र उठाये और शत्रु से लड़ते समय उसी हाथ से शस्त्र खोले या फैंके या मारे तो निश्चित विजय प्राप्त होगा। यदि अपूर्ण स्वर में शत्रु शस्त्र सामग्री हो और सम्पूर्ण स्वर में अपनी शस्त्र सामग्री का बल हो तो वह योद्धा अकेला ही सब कुछ जीत लेता है। इसके विपरित स्वर का चलना विपरित फल देता है।

जो मनुष्य योद्धा प्राण–वायु को खींचकर घोड़े पर या रथ, सवारी पर सवारी चढ़के और प्राण को उतारकर रकाब में पाँव रखे वह सम्पूर्ण कार्य सिद्ध विजयी होता है। योद्धा ने प्रथम मुद्रा को करे फिर युद्ध पर जाकर युद्ध करे विशेषतः सर्प मुद्रा हो करे जिसमें वह युद्ध में विजय प्राप्त कर लेता है।

।। ॐकार ध्यान साधना में स्वर ।।

अतः साधक जब ॐकार ध्यान साधना या अपने इष्ट की ध्यान साधना को आरूढ़ होने से पहले सक्षम प्राणायाम खींचकर या कम से कम

२१, ५१ प्राणायाम करके ही साधना (पर आरूढ़) प्रारम्भ करे या दश मुद्रा करके प्रारंभ करे जिससे शत्रु अर्थात् साधक के साधना भक्ति जाप ध्यान करते समय काम क्रोध मोह इत्यादि (पापी संस्कार) शत्रु के समान व्यत्यय लाते है। उनपर विजय पाकर उन्हें भगाकर ही साधना के ध्यान पर विजय पाता है अतः उपरोक्त स्वर (नियम) सिद्धि तथा तत्वानुसार साधक साधना योग्य समय पर कर सकता है। यहाँ शस्त्र बांधना का अर्थ प्राणायाम मुद्रा बंद करके ही साधनारत होये। तो साधक अवश्य विजय प्राप्त करेगा।

।। विजयी तत्व स्वर ।।

यदि चन्द्र या सूर्य स्वर अनुसार उन स्थान में गया हुआ योद्धा विजय को प्राप्त कर लेता है यदि उस वक्त वायुतत्व चल रहा हो तो शत्रु की बहुत ज्यादा सैन्यबल होगा, तब शून्य स्वर होगा तो हार होगी अतः जिस दिशा को वायु तत्व हो उसी दिशा को जाकर शुद्ध करने से विजय मिलती है। जिस दिशानाड़ी का वायु तत्व चलता हो उसी नाड़ी के पवन को कान तक खींचकर गमन करने से बड़ी से बड़ी जीत प्राप्त होगी

रण मैदान में शत्रु के वार-प्रहार से अपने सम्पूर्ण अंग की रक्षा करता है। वह योद्धा विजय प्राप्त कर लेता है। अगर चन्द्र या सूर्य स्वर में युद्ध करते समय वायु तत्व चलने लगे तो उसे कोई भी बलवान शत्रु हरा नहीं सकता।

अतः हे योगी जनो **"ह" कार** और **"ठ" कार** के भेद बिना स्वर सिद्धि या स्वर ज्ञान कैसे होगा अर्थात् हठयोग जिससे जीव ॐकार युक्त प्रणव ओहं-सोहं इन दो हंस पदों से सदा सर्वदा युद्ध हो संग्राम हो या फिर योग ध्यान हो ज्ञान वैराग्य हो इनमें हमेशा उनकी जय होती है।

।। प्रश्न कर्त्ता को स्वरों का जवाब ।।

प्रश्नकर्त्ता युद्ध विजय का सवाल करे तो स्वर अनुसार जवाब दे। अगर उस समय पूर्ण स्वर अन्दर जाता है तो उसकी इच्छा पूर्ण होगी। अर्थात् पूछे हुए बात पूरी हो जायेगी और उस समय प्राकृतिक स्वर निकलते हुए प्रश्नकर्त्ता पूछे तो उसके सभी कार्य सफल होंगे। ऐसी श्वास बाहर निकलते समय पूछे तो उसका सभी कार्य नष्ट हो जायेगा।

।। युद्ध का नाड़ी संकेत ।।

नरपक्ष की दक्षिण नाड़ी और नारी पक्ष की वामनाड़ी ये नाड़ी प्रधान है। किन्तु युद्ध के समय कुम्भक अर्थात् सुषम्ना नाड़ी उत्तम होती है। इस प्रकार तीन प्रधान नाड़ी कि ३×३=९ नाड़ियों की गति होती है। अतः कुम्भक नाड़ी नाड़ी में किया हुआ युद्ध जीत लेता है।

।। चलते युद्ध के संकेत ।।

युद्ध हो रहा है और कोई दूत या प्रश्नकर्त्ता चालू युद्ध के विषय में प्रश्न करता है तो देखे वह वाम स्वर या दक्षिण स्वर में बैठा हुआ प्रश्न कर रहा है तो जवाब दे कि बिना किसी को जख्मी होते विजय को प्राप्त होंगे यदि सूर्य नाड़ी में पूछे तो जख्मी होकर मृत्यु होगी तथा सैन्य भाग जायेंगे। वही समय अगर पृथ्वी तत्व हो तो उदर में, जल तत्व हो तो पैरों में अग्नि तत्व हो तो, जंघों में वायु तत्व हो तो, हाथों में और आकाश तत्व हो तो शीश पर जख्मी या घाव होंगे। ऐसे पंचतत्वात्मिक स्वर संकेत स्वर शास्त्र में कहे है।

।। स्वरं युद्ध की चढ़ाई के स्वर संकेत फल ।।

स्वर युद्ध की चढ़ाई करना स्वर ज्ञान से अनुचित है। ऐसे समय अगर चन्द्रमा बाया स्वर चलते में जिस पर चढ़ाई की जीत उसकी होगी इसके विपरीत सूर्य याने दाहिना स्वर चलते समय चढ़ाई कने वाले की जीत होगी। अगर चढ़ाई करने वाले की नाड़ी मध्य में चलती हो तो युद्ध विजय पाने में सन्देह होता है। अगर प्राण सुषम्ना नाड़ी में चलता हो तो संग्राम में शत्रु को संकट होगा। अगर योद्धा युद्ध में खड़ा हो तो वह देखे कि कौन से नाड़ी का स्वर चल रहा है। जिस ओर स्वर होगा उसी ओर युद्ध करने पर जीत जायेगा।

।। दिशानुसार स्वर संकेत ।।

यदि युद्ध या संग्राम के समय चन्द्र नाड़ी का स्वर बहता है। तो शत्रु की विजय होकर, योद्धा बन्दी हो जायेगा। इसके विपरित सूर्य नाड़ी का स्वर बहता हो तो योद्धा को कोई भी बलवान हरा नहीं सकता, योद्धा की विजय हो जायेंगी। अतः इसी के विपरित यदि संग्राम पर जाते समय योद्धा की चन्द्र नाड़ी का स्वर चल रहा हो तो शत्रु की जीत होगी और यदि

दाहिना स्वर अर्थात् सूर्य नाड़ी युद्ध पर जाते समय चलती है तो वह शत्रु को हराकर जीत ले के आयेगा और यदि तब मध्य नाड़ी अर्थात् सुषम्ना नाड़ी चलती है तो युद्ध में दोनों पक्ष की सन्धि होगी। इसी प्रकार जो पूर्णनाड़ी में युद्ध पर गया है तो शत्रु पीठ देकर भाग जाये शून्य नाड़ी में शत्रु सन्मुख आये और शून्य स्थान में शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

।। युद्ध विषयी प्रश्नकर्त्ता को स्वर जवाब ।।

यदि प्रश्नकर्त्ता युद्ध विषय में पूछने के समय चन्द्रमा स्वर चले तो मेल या सन्धि या मैत्री हो जाये इसके विपरित सूर्य के स्वर में प्रश्न करे तो उनका विग्रह शत्रुता जानना चाहिए।

यदि कोई उत्तर दिशा में बैठकर प्रश्न करे तो उसके नाम के और पूछे हुए प्रश्न के अक्षर समाक्षर २-४-६-८-१० हो तो शत्रु की विजय हो जाती है। अगर प्रश्नकर्त्ता दक्षिण दिशा बैठकर पूछे और नामों से सम (२-४-६-८) अक्षर वाले की पराजय और अगर विषम ३-५-७-९-११ तो प्रश्नकर्त्ता की विजय होगी जवाब देने वाले का उस समय चन्द्र स्वर चलता हो तो वही सन्धि हो जायेगी तथा इस समय जवाब देने वाले का सूर्य स्वर चलता हो तो युद्ध अवश्य होगा तब आगे ऐसा जवाब देना पड़ेगा कि जो जवाब देने वाले का पृथ्वी तत्व चलता हो तो युद्ध आरंभ होगा और दोनों पक्ष बराबरी के रहेंगे। जल तत्व चलता हो तो युद्ध में जय होगी, तेज तत्व में युद्ध भंग हो जायेगा, वायु और आकाश तत्व से उसकी मृत्यु होगी यदि एक ही समय युद्ध के दो प्रश्न पूछे तो उस समय पूर्ण स्वर बहता हो तो पहला प्रश्न पूछे तो उस समय पूर्ण स्वर बहता हो तो पहला प्रश्न या पहला व्यक्ति की जय होगी खाली स्वर बहे तो दूसरे प्रश्न या व्यक्ति की भी जय होगी। इसके विपरित पराजय होगी।

।। प्रश्न का पुष्प गति से जवाब ।।

जो भी प्रश्न पूछने स्वर सिद्ध के पास जाये तो जाते समय सुगन्धित पुष्प ले जाये और उत्तर देने वाले स्वर सिद्ध के हाथ पर वह पुष्प रख दे और दूसरे हाथ से उसे गिरा दे अगर वह पुष्प सन्मुख आकर गिरता है तो कार्य सिद्ध होगा और इर्द, गिर्द या दूर गिर जाता है तो कार्य सम्पन्न नहीं होगा।

।। व्यापार में उन्नति के लिए स्वर क्रिया ।।

अगर व्यापार करने वाला अपने प्राकृतिक स्वर द्वारा वायु की स्थापना करके फिर उसी वायु को बाहर निकाले और फिर भीतर ले जाकर स्थापन करके अपेक्षित वस्तु की बिक्री करे अवश्य फायदा होता है। यह क्रिया द्यूतक्रीड़ा में भी कर सकते है। किन्तु द्यूतक्रीड़ा खेलना अधर्म है।

।। स्वर ज्ञानी की शक्ति ।।

हे सिद्ध महात्माओं इस सृष्टि से जो प्राकृतिक स्वर ज्ञान को भली-भाँति जानता है तो वह स्वर शास्त्र ज्ञानी सभी में अत्यंत शक्तिशाली और श्रेष्ठ है। जो कि वह एकान्त में यह प्राकृतिक ॐकारमय स्वर साधना करता है। विशेषता ॐकार प्रणव युक्त प्राणायाम करके स्वरों की गति कम करके सच्चितानंद परम परब्रह्म ॐकार स्वर से ध्यान करता है। उसे वन्य पशु चोर डाकू भयानक शस्त्र, अस्त्र, आधि-व्याधि आदि संकटों का भय नहीं रहता। स्वर ज्ञानी लोक-परलोक में सदैव बलवान रहता है।

हे सिद्ध सन्तजनों जो साधक स्थिर होकर ॐकार निरंजन निराकार परब्रह्म परमात्मा जो सृष्टि उत्पत्ति कर्त्ता का ध्यान करे और प्राकृतिक ॐकार स्वरूप स्वरों का संगम करके कुम्भक करते हुए प्राण वायु स्वरूप स्वरों का होम हवन करे वह साधक महाज्ञानी महासिद्ध महाबली और जय को प्राप्त कर लेता है। यह ॐकार स्वर साधना 'श्री ॐकार यन्त्रम्' के सन्मुख करना चाहिए।

।। ॐकार स्वर से वशीकरण ।।

हे सिद्धो ॐकार चन्द्र-सूर्य स्वर संगम युक्त प्राण का सतत् हवन करने पर और उसे स्वाभाविक या प्राकृतिक स्वर में काल अनुसार स्थित या टिकाने से देवी-देवता भी वश में हो जाते है। अतः मृतलोक में भी वशीकरण देखे।

।। स्वर नर नारी वशीत्व ।।

अगर नारी के चन्द्र स्वर की नर अपने सूर्य स्वर में आकर्षक करके प्राकृतिक जीव स्वर में स्थित करे तो वह नारी जन्म भर उस नर के वश में हो जाती है। उसी प्रकार नर अपने प्राकृतिक स्वर में नारी के प्राकृतिक स्वर

को पकड़कर दो स्वर मिलकर एक हो जाते है अर्थात् एक स्थान पर टिक जाते है तब नर नारी के और नारी नर के वश में हो जाते है। यह विधि विवाहित नर नारी करे तो जन्म भर दोनों पति-पत्नि एक दूसरे के प्रेम में यानि वश में रहते हुए सुख समृद्धि से जीवन यापन करते है। इसी प्रकार विवाहित सौख्य प्राप्ति का अन्य मार्ग भी है।

।। विवाहित सौख्य के स्वर सिद्धि ।।

जब रात्री के तीसरे प्रहर से सब लोक सो जाये तब एकान्त एक गुप्त स्थान में जो पति अपने सुषम्ना स्वर को सिद्ध अर्थात् स्थित कर लेगा वह अपनी पत्नि को वश में कर लेगा। पति-पत्नि मिलन के समय पति अपने सूर्य स्वर में चन्द्र स्वर को मिला देता है तो वह पति पत्नि तो क्या सौ स्त्रियों को वश कर लेता है। अर्थात् यदि शिव स्वर (सूर्य) शक्ति स्वर (चन्द्र) से पति-पत्नि मिलन पर आपस में मिल जाये या पति अपना चन्द्र स्वर पत्नि को दे दे तो वह पति अनेक पत्नियों को वश में या मोहित कर लेता है। रात्री के पिछले प्रहर में अष्टाक्षर मन्त्र **ॐ ह्रीं क्लीं वशाय हूँ फट** का जप कर जो पति अपना चन्द्र स्वर अपनी स्त्री को देता है वह पत्नि कामिनी बनकर उसी क्षण वश में हो जाती है। इसी प्रकार पत्नि के साथ प्रणय या अलिंगन मिलन इत्यादि समय में पति अपने सूर्य स्वर में पत्नि का चन्द्र स्वर को पीता है। वह पति कामदेव समान हो जाता है। अतः जो पति अपने चन्द्र स्वर को पत्नि के सूर्य स्वर में मिला देता है तो वह ३-५-७-९ बार संग करके भी नहीं थकता और पत्नि के चन्द्र स्वर में पति अपने सूर्य स्वर को ४-६ बार मिलाकर संग करे तो वह पत्नि उसकी प्रिय अनुगामिनी बन जाती है। उसी प्रकार पति अपने चन्द्र सूर्य स्वरों को सूर्य की गति/दिशानुसार पत्नि को खींच कर अलिंगन वैगरा करता है तो भी वह वश में होती है। यही क्रिया पत्नि सोई हुई पट क्रिया और वँह जागने पर उसके नेत्र गले का प्राण किया तो भी वह वश में हो जाती है। इस प्रकार स्वर ज्ञान द्वारा पति-पत्नि एक-दूसरे के प्रेम वश पाश एक होकर सुखी संसार में रमते है।

सूचना

अतः हे सिद्धो यह विदित स्वरज्ञान कामी लम्पट नर नारी को नही

बताना चाहिए। अगर स्वरज्ञानी भी इस स्वर ज्ञान को लगातार उपयोग करेगा और अनेक स्त्रियों को या स्त्री अनेक पुरुषों को आर्कषण करके अति कामक्रिया में लिप्त होगे तो वह स्वर ज्ञानी का पतन होकर वह निर्बल होकर उसकी जल्द ही मृत्यु होगी। अतः स्वर ज्ञानियों को संयमित रहना गो+रक्ष अर्थात् इन्द्रियों की रक्षा करना अनिवार्य है।

॥ संतान प्राप्ति पर स्वर संकेत ॥

जो भी पत्नि ऋतु-स्नान के ४ रात्री त्याज्य करके शेष १२ रात्री में सम ६-८-१०-१२-१६ इन रात्री में सहवास करते वक्त पति का सूर्य स्वर चल रहा हो और पत्नि का चन्द्र स्वर चल रहा हो उस वक्त सहवास क्रिया पूर्ण होने पर पुत्र का गर्भ ठहरकर निःसंदेह पुत्र रत्न प्राप्त होगा और इसी स्वर शास्त्र से की हुई क्रिया अगर ऋतु स्नान पश्चात् विषम याने ५-७-९-११-१३-१५ रात्री में सहवास करने पर कन्या रत्न प्राप्त होगी। अतः श्रवण, हस्ता, अनुराधा, स्वाति, शतभिषा, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा मूल और रोहिणी यह नक्षत्रों में उपरोक्त स्वर संकेत साधकर पति-पत्नि संग करने पर अत्यंत उत्कृष्ट योग सर्वगुण सम्पन्न संतान प्राप्त होगी। उसी प्रकार चित्रा, पुनर्वसु पुष्य और अश्विनी यह मध्यम प्रकार की संतती देगी तथा शेष नक्षत्र निषिद्ध है।

॥ स्वर तत्वानुसार गर्भधान ॥

पत्नि के ऋतु दर्शन के ५, वे रात्री को जिस समय पृथ्वी और जल तत्व के स्वर चल रहा हो तब प्रथम शिव और शक्ति को प्रार्थना करे कि हे भगवान शिव हे माता पार्वती हमें पुत्र रूप संतान देने की कृपा करे। क्योकि पति का सूर्य स्वर शिव स्वरूप होता है तो पत्नि का चन्द्र स्वर शक्ति स्वरूप होता हैं अतः पति अपने पत्नि को गौ के दूध में शंखल्ली औषधी को पिलावे और पत्नि अपने पति को तीन बार भोग या संग करने की प्रार्थना करे। जब दोनों अपने स्वर मिलाकर मिलन या संग करे जिससे रूपवान पराक्रमी तथा सुन्दर गुण सम्पन्न पुत्र की प्राप्ति होगी।

॥ स्वर की तिथि या दिन अनुसार संतान ॥

अगर पत्नि की ऋतु दर्शन पश्चात् जब उसका चन्द्र स्वर चल रहा हो तब ३-५-७-९-११ तिथियों में जब पति का सूर्य स्वर दिन-रात

चलता हो उस समय पृथ्वी या जल या अग्नि तत्व चल रहा हो ऐसे योग में दोनों के संग करने से गर्भधान होकर उत्तम पुत्र प्राप्ति होगी। इसी विधि से अगर बांझ स्त्री भी पति से संग करे तो वह भी पुत्रवती होगी। उसी प्रकार पति का सूर्य स्वर और पत्नि का चन्द्र स्वर चलता हो तब उत्तम तिथि, जैसे नन्दा और भद्रा अर्थात् १-६-११-२-७-१२ यह पुरूष संज्ञक तिथि पूर्णा, जया अर्थात् ५-१०-१५-३-७-१३ इनमें संग करने से कन्या रत्न प्राप्त होगी और बाकि ४-९-१४ यह तिथियाँ में नपुंसक संतान प्राप्त होगी। इसी प्रकार गुरु-रवि-मंगलवार इन दिनों गर्भधान करे तो पुत्र और शुक्र-सोमवार के दिनों गर्भधान करे तो कन्या तथा शनि-बुधवार में गर्भधान करे तो नपुंसक संतान प्राप्त होगी।

॥ विदृप संतान संकेत ॥

अगर पतिदेव अपने सूर्य स्वर के चलने में सुषम्ना नाड़ी के योग से अपने पत्नि के साथ संग की या अथः ऋतुदान किया तो ऐसे गर्भधान से विदृप संतान लंगड़ा-लुला, मंद बुद्धि, कुब्ड़ा, नाटा ऐसी संतान को जन्म दिया जायेगा।

॥ संतान के प्रति स्वर संकेत ॥

अगर गर्भवती नारी को ही प्रश्न किया कि तुम्हारे गर्भ से क्या प्रगट होगा, ऐसे वक्त स्वर ज्ञानी का चन्द्र स्वर बहता हो तो कन्या रत्न, सूर्य स्वर बहता हो तो पुत्र रत्न का जन्म होगा। यदि दोनों स्वर चल रहे हो तो गर्भ गिर जायेगा या नष्ट हो जायेगा। स्वर ज्ञानियों ने बड़े सतर्क सुधबुध तथा एकाग्रता से ऐसे जवाब देना चाहिए जो कि स्वर ज्ञानी की ॐकार प्रणव प्राणायामादि साधना परिपक्वता होना आवश्यक है।

अगर गर्भवती या गर्भ के विषय में प्रश्न पूछते है कि पुत्र होगा या कन्या। तब स्वर ज्ञानी ने सुध-बुध से जवाब देना चाहिए। तब उस समय पृथ्वी तत्व चल रहा हो तो निसंदेह कहो कि कन्या होगी, अगर जलतत्व चलता हो तो पुत्र रत्न होगा। अगर वायु तत्व बहता हो तो कन्या ही होगी, अगर अग्नि तत्व बहता हो तो गर्भपात होगा और आकाश तत्व चलता हो तो गभवति को नपुंसक संतान होगी। उसी प्रकार यदि सुषम्ना स्वर चलता हो तो भी नपुंसक संतान होगी। यदि प्रश्न कर्त्ता का सर्व अंग शून्य

हो तो शून्य फल होगा अगर दोनों स्वर चल रहे होगे तो गर्भपात समझे।

।। तत्वानुसंधान गर्भधान योग ।।

पति-पत्नि संग द्वारा गर्भधान होते समय अगर पृथ्वी तत्व हो तो दिव्य और गुण संपन्न अनेकों भोग-भोगने वाला सुन्दर धनवान पुत्र रत्न जन्मेगा, गर्भधान के समय अगर जल तत्व प्रधान होगा तो धनवान सुख सम्पन्न सभी भोग-भोगने वाला पुत्र प्राप्त होगा, अगर तेज तत्व से गर्भधान हुआ तो गर्भपात होगा या गर्भ में पानी कम होकर गर्भ सुख जायेगा। फिर भी किसी कारणवश जन्म हुआ तो अल्पयुशी होगा। अतः वायु तत्व में गर्भधान होने पर संतान दुःख भोगी शरीर दुबला-पतला अतः दुदैवि उत्पन्न होगी आकाश तत्व में गर्भ ठहरेगा तो वह नष्ट हो जायेगा। अतः साधारणतः पृथ्वीतत्व में गर्भधान हो तो पुत्र रत्न तो जलतत्व में हो तो कन्या रत्न की उत्पत्ति होती है। शक्यतो अग्नि/वायु/आकाश तत्वों में गर्भ की हानि या पैदा होते ही मृत्यु होती है।

इस प्रकार गृहस्थ संसारी माया में भी यह ॐकार स्वरों का कार्य चलता है। जो स्वभावता एवं प्राकृतिक है। ऐसा मायामय स्वरूप ॐकार स्वर ज्ञान सुनाते हुए गुरु गोरक्षनाथ जी ने पुनः माया को अलग करते हुए अपने अन्तर मुख ध्यान में शान्ति में लीन हो गये।

देखा तो मध्यरात्र हुई थी चारों तरफ संनाटा छा गया था। सभी जीव प्राणी शान्ति निन्द्रा में लीन थे। अतः योगी राज भर्तृहरि गोपीचन्द तथा अन्य आकाशगामी सिद्ध सन्त अपने-अपने योग लीला में बैठ गये।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे
ॐकार स्वर तत्व ज्ञाने नाम दशमोऽध्यायः।।

।। त्रिकालदर्शी ॐकार स्वर ।।

प्रातः की बेला में शंख ध्वनि से वातावरण में चैतन्य छा गया जपी तपी भर्तृहरि गोपीचन्द तन्मयता से धूना देवता की आरती पूजा कर रहे थे गुरु गोरक्षनासथ जी पवन गामी सिद्ध जन सभी के उपस्थिति में एक नवचैतन्यता पवित्रता एवं धुन्ध मधुर सुगंधित वातावरण छा गया था आकाशीय ग्रह तारों पर आरूढ़ देवता यह सब देखते हुए आत्मविभोर हो रहे थे। सभी ने अपने-अपने मर्यादा अनुरूप आदेश प्रणाम करके सद्‌गुरु देव गुरु गोरक्षनाथ जी के सन्मुख बैठ गये सभी ने जलपान, दूधपान किया और गुरुदेव को हाथ जोड़कर विनती करने लगे। हे गुरु देव हे ज्ञानेन्द्र हे श्री नाथजी आज भी हमें ज्ञानामृतपान करने की इच्छा है। अतः कृपया वह पूर्ण करे।

यह सुनकर गोरक्षनाथजी प्रसन्नतापूर्वक कहने लगे, उनकी सोच विवेक जाग्रत होकर ज्ञान की ग्रन्थियाँ खुलने लगी उन्होने कहा हे सिद्ध महा सन्तों यह ॐकार रूपी स्वय ज्ञान बहुत गहरायी का तथा रहस्यमय है। जो साधक सच्चा योगी इस स्वर तत्व का अभ्यास साधना करता है उसे स्वरोदय से ज्ञानोदय होकर उस जीव का कल्याण हो जाता है। उसे चारों मोक्ष प्राप्त हो जाते है और वह इस ॐकारमय स्वर ज्ञान से जगत सृष्टि को भी जान लेता है।

।। स्वर तत्व से सवंत्सर फल ।।

स्वर तत्व दर्शी ज्ञानिओं ने चैत्र शुद्ध शुक्लपक्ष प्रतिपदा के दिन प्रातः काल सूर्योदय में सूर्य नमस्कार तथा सूर्योर्ध्य देकर ॐकार यंत्र के सन्मुख स्वर साधना करे और देखे कि सूर्य भगवान दक्षिणायन है या उत्तराण है और उस दिन के तत्व के प्रवाह से पूर्ण वर्ष भर का फलादेश देखे। तब अगर चन्द्र स्वर चलते समय यदि पृथ्वी, जल या वायु तत्व चले तो सभी खेती का उत्पन्न फल-फूल जाता है। यदि अग्नि और आकाश तत्व होगा तो भय और घाटे का नुकसान होगा दुर्भिक्ष होगा। इस प्रकार उसी विधि से प्रतिवर्ष का, प्रति मास का, प्रति दिनों का भी सभी तत्व का फल जानना चाहिए। इसी समय सुषम्ना नाड़ी चलती है तो अत्यंत क्रूरता मिलेगी और सभी कर्मों में दुष्टता तथा घर, मकान, गांव, देश में भंगता आयेगी या महारोग क्लेश-कष्ट इत्यादि सम्पूर्ण दुःख ही दुःख दर्शाती है।

।। मेष संक्रान्ति में स्वर संकेत भेद ।।

देखो मेष की संक्रान्ति अर्थात् सूर्य मेष राशि में प्रवेश करते समय स्वर ज्ञानी अपने स्वर की चाल को और तत्वों के स्थिति को देखते हुए सम्पूर्ण सवत्सर अर्थात् वर्ष काल का फलों को बता सकते है।

अतः मेष संक्रान्ति के समय स्वरों के प्रवाह में पृथ्वी तत्व चलता हो तो वह दिन महीना और वर्ष का फल शुभ होता है। जिसमें देश की प्रगति, खेती बाड़ी में भरपूर अन्न धान्य उत्पन्न होगा अति वृष्टि (वर्षा) होकर भरपूर सुख शान्ति रहती है। अगर मेष संक्रान्ति में जल तत्व चलता हो तो अति वर्षा धन-धान्य अनाज उत्पन्न सभी आरोग्य धन सम्पदा आदि सुख को प्राप्त होंगे, यदि अग्नि तत्व चलता है तो देश का विभाजन, गाँव शहरों में झगड़े फसाद जातीयवाद धार्मिक विवाद वर्षा कम होकर मंहगाई तथा धन सम्पत्ति नाश होगा अगर आकाश तत्व हो तो उत्पाद, झगड़े फसाद जातीय दंगल लूट मार वर्षा कम होने से अकाल अतः सर्वत्र दुःख की व्यापकता रहेगी।

।। सर्वार्थ सिद्ध स्वर योग ।।

अगर स्वरवेत्ता का पूर्ण चन्द्र और सूर्य स्वर चलता हो और उसमें तत्व का उदय हो तो उसने अन्नपूर्णा सिद्धि की विधि जाप साधना की तो वह अन्नपूर्णा सिद्धि प्राप्त करेगा। यदि और तत्व के उदय समय सूर्य और चन्द्र स्वर विपरित हो जाये अर्थात् चन्द्र योग में सूर्य और सूर्य योग में चन्द्र चल जाये तो उसे कुबेर सिद्धि की भी प्राप्ति होगी और वह अन्नधान्य का संग्रह होकर बहुत लाभ ही होगा। अगर दक्षिण स्वर में अग्नि और आकाश तत्व हो तो वह जिन वस्तुओं का संग्रह करे वह वस्तु दो माह में महंगी होकर उसे लाभ होगा।

।। भूमि उत्पाद भूकम्पादि स्वर तत्व से संकेत ।।

अगर स्वर ज्ञानी को रात्री के समय सूर्य (पिंगला) नाड़ी बहे और प्रातः काल से समय चन्द्रमा (इड़ा) नाड़ी चलती है और इस वक्त, आकाश-वायु और अग्नि इन तत्वों का मेल तथा योग हो तो पृथ्वी तल पर बड़े से बड़े अनर्थ जैसे भूकंप जल प्रताप धरती फट् जाये जैसे अनेक अनर्थ होते है।

अत: हे सिद्धों यह स्वर शास्त्र स्वर-योगी, जती-सती और सिद्धों को ही अनुभूत होगी जो कि उनका स्वर ज्ञान अभ्यास परिपक्वता आ जाये।

अत: देखो सिद्धों इन स्वर ज्ञान द्वारा रोग बिमारी का भी ज्ञान तथा संकेत मिलता है।

।। स्वर तत्व द्वारा रोग निदान ।।

यदि अपने दु:ख बिमारी के विषय में पूछने वाला प्रश्न पूछते समय स्वरयोगी का पृथ्वी तत्व चल रहा हो तो वह उसका प्रारब्धनुसार कर्म भोग रहा है। अगर जल तत्व बहता हो तो जल देवी या जल मातृकाओं का दोष या कोप होगा, अगर तेज तत्व प्रवाहित है तो खेटवाटी राकिनी शाकिनीओं का दोष हो या पितृदोष हो अगर आकाश या वायु तत्व हो तो भौतिक या शारीरिक दोष समझना चाहिए।

अगर जिस दिशा में प्राकृतिक स्वर चलता हो उसी दिशा में बैठकर पूछने वाला रोगों से पीड़ित हो तो भी जीवित रहेगा। अर्थात् दवादारू करके वह बिमारी ठीक हो जायेगी। अगर स्वर ज्ञानी की सुषम्ना नाड़ी चलती हो और प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करता है जिसके रोगी नाम अक्षर (१-३-५-७-९) हो तो विपरित फल होता है। अगर नाम अक्षर सम (२-४-६-८-१०) हो तो उत्तम फल जानना चाहिए।

।। रोगी प्रित्यर्थ पूछने वाले दूत को स्वर संकेत ।।

अपने रोगी के लिए पूछने वाला दूत स्वरज्ञानी के शून्य अंग की तरफ आया हो और बाद में पूर्ण अंग के तरफ बैठ जाये तो वह रोगी निश्चित ठीक हो जायेगा।

अगर दूत भयानक वचन (प्रश्न) बोल रहा हो और स्वरयोगी का वायु तत्व का स्वर दक्षिण को चल रहा हो तो उसका रोगी ठीक होकर जिन्दा रहेगा और चन्द्र स्वर चलेगा तो रोगी दीर्घ समय में ठीक होगा। स्वर योगी की दोनो इड़ा पिंगला नाड़ी चल रही हो और दूत अपने बीमार व्यक्ति विषय पूछ रहा हो तो वह रोगी तुरन्त ठीक हो जायेगा। यदि दूत अधोभाग में बैठे पूछे तो रोगी निश्चित ठीक होकर जीवेगा और ऊर्ध्व भाग में पूछे तो उसके रोगी की मृत्यु होगी।

।। स्वर से मृत्यु संकेत ।।

यदि स्वरयोगी का प्राकृतिक स्वर चन्द्रमा में स्थिर हो और प्रश्नकर्त्ता का सूर्य में स्थित हो तो उसका रोगी अवश्य मर जायेगा। चाहे अनेक वैद्यों से उपचार क्यों ना करे पर वह नही बच सकता।

यदि प्राण या स्वर पिंगला नाड़ी में स्थित हो और दूत वाम भाग में बैठकर अपने रोगी के बारे में पूछे तो उसका रोगी अवश्य मर जायेगा वहाँ देवी-देवता भी नहीं बचा सकते।

।। काल मृत्यु का स्वर प्रमाण ।।

देखो सिद्धो मृत्यु यह अन्तिम सत्य है और उसे सबको स्वीकारना पड़ता है। अतः भोग-मृत्यु है योग-जीवन है और जो ॐकार प्रणव स्वर योग से ज्ञानी होता है वह अमर हो जाता है यह दीपक रूपी पंचभूतात्मक देह को ॐकार शिव नाम जाप से तैल स्वरूपी ॐकार शिव नाम जाप से हमेशा सिंचन कर के सूर्य रूपी प्राणवायु जो जीव की रक्षा करता है वह प्राणी अमर हो जाता है। जो योगी प्राणवायु बांधकर सूर्य स्वर का बन्धन करता है इस योग अभ्यास बल से सूर्य के संबंध से वह जीव १२०, २००, २५० वर्ष तक मृत्यु को ठगता है अर्थात् जीवित रहता है। जो योग साधना द्वारा ब्रह्मरन्ध्र स्थित चन्द्रामृत का पान करता है वह योगी अमर हो जाता है। जो योग रात्री में चन्द्र स्वर और दिन में सूर्य स्वर का ॐकार प्रणव का जाप करते निवारण करता है वह इस प्रकार के अभ्यास से योगी का ही परम योगी हो जाता है।

।। मृत्यु का स्वर संकेत।।

जिसका प्राणवायु एक स्थान बहता है वह ३ वर्ष में मृत्यु सदन को जाता है।

जिसकी श्वासगति दिन-रात पिंगला में है वह २ वर्ष में मरता है। जिसका प्राण ३ रात्री एक ही नाक द्वार स्थित है वह १ वर्ष में मरता है। जिसका रात्री में चन्द्र स्वर और दिन में सूर्य स्वर निरंतर चलता है उसकी छः मास में यम सदन को जायेगा।

।। सूर्य प्रतिबिम्ब का मृत्यु संकेत।।

जिस प्राणी को निश्चल जल में सूर्य का प्रतिबिम्ब कटा हुआ

दक्षिण दिशा में दिखता है वह छः मास जिन्दा रहेगा अगर पश्चिम दिशा में प्रतिबिम्ब देखेगा तो ३ माह ही जीवेगा अगर उत्तर दिशा में देखेगा तो २ मास ही जीवित रहेगा, अगर पूर्व में देखे तो मात्र १ मास से मृत्यु हो जायेगी ऐसा हमारे पूर्वज नाथ सिद्ध मुनिवरों का कहना है।

॥ मृत्यु लक्षन ॥

यदि प्रश्नकर्त्ता दूत, काले, लाल वस्त्र धारण किये, उसके दाँतों में घाव हो, मुण्डनहार या तैल लगाये हो हाथ में रस्सी, भस्म, अंगार, कपाल, मूसल धरे हो, उसके पैर शून्य हो ऐसा दूत सूर्यास्त समय आया हो तो उसके रोगी की मृत्यु होगी।

जिस रोगी को चित्त अस्थिर विक्षिप्त जो कि त्वरित विकारी हो जाये तो त्वरित उंत्तम हो जाये तो तुरन्त कामी हो जाये, आकस्मांत उत्पात क्रोध यह सब सन्निपात के लक्षण समझे। हम और लक्षण बतलाते है। जिसका शरीर ठंडा हो प्रकृति में विकार हो उनकी गति देखो। जो बुरा-बुरा कहे तो क्षण में अच्छा कहे तो क्षण में पश्चाताप करे, क्षण में रोता, क्षण में हँसता है ऐसे पागल की गति मृत्युवत होती है जिसका हुंकार ठंडा हो, फूत्कार गरम हो, जो आकाश के तारे एक-एक करके ना देख या समझ पाये, ऐसा रोगी १ वर्ष में कालातीत हो जाता है। जो सूर्य, चन्द्र, अग्नि के किरण नहीं देख पाता ११ मास ही जिन्दा रहेगा। जो सपने में या जागते हुये बावड़ी में मल-मूत्र, सुवर्ण-चाँदी दिखे वह १० मास बीमारी आकर मर जायेगा, जिसका मोटा शरीर एकदम पतला हो जाये या पतला शरीर एकदम मोटा हो जाये तथा काल शरीर एकम सुवर्ण गोरा हो जाये या गोरा एकमद काला हो जाये व मात्र आठ मास ही जीवित रहता है।

जिसके हाथ के तलुवे पर जिव्हा के मूल में खून काला हो जाये उसे नोचना-चुभना को कोई असर नहीं होता वह ७ मास में मर जायेगा जिसकी उंगलिया ना मुड़े, कण्ठ सुख जाये जड़ता आये वह छः मास में मर जायेगा और जिसे स्तनों का चमड़ा बधिर हो जाये वह ५ मास में यमपूरी में चला जायेगा, जिसके नेत्रों की ज्योति प्रकाशित ना हो नेत्रों में पीड़ा हो, उसके दाँत, अष्डकोशो दबाने पर पीड़ा ना हो वह ३-४ मास में

मृत्यु हो जावेंगे।

अतः हे सिद्धो काल समान इस मृत्यु से बचने के लिए ॐकार युक्त प्राणयाम, योग साधनायें बंध-मुद्रायें तथा स्वर ज्ञान का सदा सर्वदा अभ्यास करना चाहिए। देखो और भी कुछ मृत्यु के लक्षण बतलाते है।

जिसका १ से १५ दिन तक केवल सूर्य स्वर चलता है और चन्द्र स्वर कभी चलता ही नहीं ऐसे मनुष्य की १ पक्ष में मृत्यु होती है। जिसका मल-मूत्र वायु एकी बार निकसे, वह मृत्युसन्न योग में है, जिसका केवल चन्द्र स्वर निरंतर चलता है और सूर्य स्वर नहीं दिखता वह १ मास में मृत्यु को चला जायेगा।

जिसको भृकुटी ना दिखे तो ९ दिनों में, कानों में शब्द न सुने तो ७ दिन में तारा ना दिखे तो ५ दिन में नासिका न दिखे तो ३ दिन में जिव्हा ना दिखे तो १ दिन में मरणासन्न होता है।

अतः हे भर्तृहरि गोपीचंद इस प्रकार अनेक बीमारी दुःखादि कर्मभोग तथा अपमृत्यु इत्यादि दुःख से मुक्त होने के लिए मनुष्यो को भगवत् भक्ति तीर्थ यात्रा दान पुण्यादि कर्म करना चाहिए विशेषतः पूर्व संचित सभी पाप ताप कर्म और मरनासन्न भोग मिटाने के लिए, सद्गुरु प्राप्ति करके ॐकार प्रणव युक्त गुरुमन्त्र से जप-तप-ध्यान योग इत्यादि मन एकाग्र होकर ना ही माने तो हठ योग से करना चाहिए जिससे आया कलु काल भी टल जाता है। इसमें सर्व श्रेष्ठ ॐकार प्रणव युक्त ॐकार आदिनाथ शिव स्वरों ज्ञान ही योग ध्यान द्वारा उपासना करनी चाहिए।

॥ स्वरों के ॐकार प्रणव साधना ॥

साधक ने "श्री ॐकार यन्त्रम्" की स्थापना करके नित्य प्रातः यन्त्र का पूजन करके यन्त्र के सन्मुख पद्मासन में बैठे और प्राणायाम विधि से २१ प्राणायाम करे जिसमें इड़ा (गंगा) पिंगला (जमुना) सुषम्ना (सरस्वति) नाड़ियों का त्रिनाड़ी संगम करे अर्थात् पूरक-कुम्भक-रेचक करे पूरक जो प्राणवायु को काया भीतर खींचना जो वर्षा करके देह धातुओं का सर्व समान रखता है फिर कुम्भक जो काया अन्दर प्राण को स्थिर करके धातुओं को स्तम्भन और प्राणी की रक्षा बढ़ाता है। फिर रेचक अन्दर की वायु बाहर निकालते जो पापों को हरता है। यह प्राणायाम क्रिया अर्थात

स्वाभाविक ॐकार प्राण वायु को अपने शक्ति अनुसार चन्द्र स्वर (इड़ा) से रेचक करे, सूर्य (पिंगला स्वर) से पूरक करे और मध्य (सुषम्ना) स्वर में कुम्भक करे इस प्रकार चन्द्र और सूर्य स्वर को परस्पर समय-समय पर पीवे जिसे दीर्घ आयुष्य प्राप्त होता है। इस प्रकार सिद्धो प्राकृतिक स्वरों को काया अन्दर रोके जो मुख से ना निकाले और सभी इन्द्रियों का निग्रह अर्थात् आसन-वासन खान-पान तथा आलस निन्द्रा इन सब पर संयम करके उपरोक्त चन्द्र-सूर्य स्वर बार-बार पीवे तो वह साधक न मरता है ना बूढ़ा होता है वह अमर हो जाता है।

आसन दृढ़ आहार दृढ़ जो निन्द्रा दृढ़ होय।

नाथ कहे सुन बालक मरे ना बूढ़ा होय।।

इस प्रकार ॐकार प्रणव प्राण-अपान या जपा-अजपा अर्थात् चन्द्र सूर्य स्वर की साधना करे और आशा निराशा रहित काम क्रोध मोहादि वासनाओं को त्यागकर शुद्ध पवित्र अन्तकरण से मन को एकाग्रता से ॐकार स्वर को एक प्रहर अथवा घड़ी दो घड़ी स्थिर करता है वह स्वरज्ञानी अमर हो जाता है।

।। कुण्डलीनि स्वर योग ।।

अतः हे योगेश्वरों इस प्रकार ॐकार प्राण-अपान-जपा अजपा चन्द्र-सूर्य स्वरों से प्रातः एकासन एकीकाल, पद्मासन बैठकर प्राणायाम द्वारा मूलाधार से स्वर को उठाते हुए मध्य नाड़ी सुषम्ना द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में आकाशमार्ग में छोड़ देना जिससे जीव-शिव एक परब्रह्म की प्राप्ति होती है। जिसमें मोक्ष मुक्ति का अमोघ फल मिलता है।

इस प्रकार सब वेद-ब्राह्मण-सूर्य-चन्द्र ब्रह्माण्ड तीन लोक में स्वर ज्ञानी साधक पूजनीय है। ॐकार रूपी स्वर ज्ञानी को धन ऐश्वर्य ऋद्धि सिद्धियाँ चारों मोक्ष (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति स्वाभाविक ही प्राप्त हो जाती है।

परब्रह्म ओंमकारो निर्विकल्प च सतत् ध्यानं।

ॐ कार शून्यमादाय आत्मानन्दाय शून्यम्।।

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

अर्थात् – ध्यान अवस्था में परब्रह्म ॐकार निर्विकल्प की स्थिति में सब कुछ ॐकारमय शून्य अवस्था में जो कि ध्यान के आत्मानन्द, आत्मानुभव या आत्मदर्शन की अवस्था में भी जब शून्यमय हो जाती है और बस शान्ति इसी अवस्था में प्राप्त होगी जो शाश्वत शान्ति कहलाती है। ॐ शान्ति शान्ति शान्ति।

इस प्रकार अन्त में गुरु गोरक्षनाथ जी ने शान्ति पाठ सुनाकर पुन: मौन में स्तब्ध हो गये। वह सब सिद्ध योगी भर्तृहरि गोपीचन्द तथा आकाशगामी सिद्ध सन्त जन भी यह ॐकार स्वर ज्ञान की पूर्णता को समझ गये और शान्ति को प्राप्त हुए उनके मुखमंडल पर एक अपूर्व शान्ति तथा समाधान झलक रहा था। वह प्रात: के स्तब्ध वातावरण में एक अपूर्व शान्ति का अनुभव हो रहा था। इतने में दूर से घंटा शंख नाद सुनाई दिया और सभी संत जाग्रत हो गये तब सभी ने दुग्ध पान किया आदेश नमन के पश्चात् सभी संतों ने जाने की बिदा ले कर वह पुन: आकाश गमन करते हुए जाने लगे। उन्हें देखते-देखते वह संत छवियाँ छोटे-छोटे पंछी की तरह होती गयी अन्त में वह आकाश में अदृश्य हो गये।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि

गोरक्ष भर्तृहरि गोपीचन्द नाथ संवादे

त्रिकालदर्शी ॐकार स्वरे नाम एकादशोऽध्याय:।।

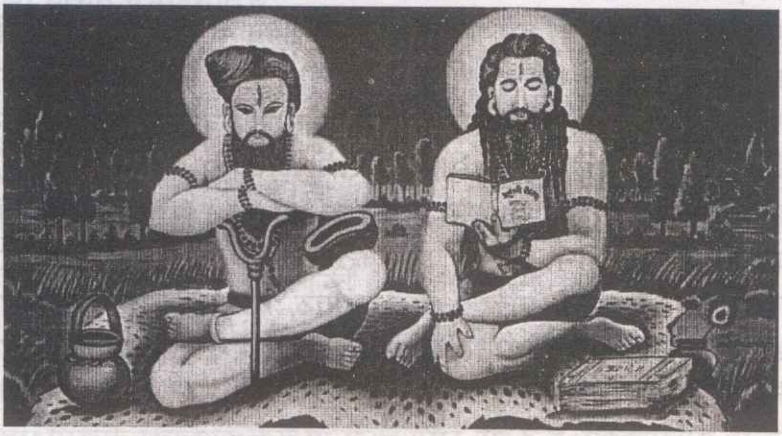

श्री अमर सिद्ध योगी गोपीचंद, भर्तृहरि नाथ जी

द्वादशोः अध्याय

।। ॐकार हवन विधि ।।

ॐकार प्रणव के हवन से सभी मन्त्र तन्त्र योग उपासनाये और देवी-देवता सभी शक्तियाँ की संतुष्टि और प्रसन्नता का लाभ होकर उन सभी का कृपा आशीर्वाद वरदान और भी अपेक्षित कार्य सम्पन्नता प्राप्त होगी। क्योंकि ॐकार सभी तत्वों का बीज है, आदि अनादि है और परमतत्व परमात्मा है।

।। हवन विधि ।।

प्रथम ऐसा स्थान का चुनाव करे जो एकान्त पवित्र हो जहां धूंआ आसानी से बाहर जा सके वह स्थान जल युक्त गोमूत्र से धो ले वहां एक चौकी सफेद या लाल वस्त्र लाल रखे उस पर "श्री·ॐकार यंत्रम्" की तथा सद्गुरु के प्रित्यर्थ एक कलश की स्थापना करे निगुरु वाले अपने इष्ट या कुलदैवत के प्रति स्थापना कर सकते है। फिर हवन कुण्ड अपने सुविधा अनुसार छोटा-बड़ा इटों की या मिट्टी की या बालू की वेदी सह वर्तृला कार बनाये वेदी ऊपर 'ॐ रं' ऐसा अष्टगंध चावल से लिखे। जो कि सर्व मान्य है। फिर पूजनादि सर्व सामग्री, समिधाएं जो सुखी हो वह लाके रख दे। हविष्यान्न, सामग्री मेवा पूर्णाहूति के लिए गीरी-गोला कलावा धूप अगरबत्ती कर्पूर हवन पात्र इत्यादि सभी साहित्य एकत्रित करके रखना चाहिए जो कि बीच-बीच में सामान लाने हेतु ना उठना पड़े, हवन सामग्री में शुद्ध घृत या दूध मिला दे। इसमें हवन के लिए हविष्यान्न के रूप में एक भाग, चावल दो भाग में ले, तीन भाग में तिल (काले या सफेद) और चीनी (शक्कर) चार भाग में तथा पंचमेवा जैसे काजू बदाम गीरी गोले का कद्दूकिस, किशमिश, चिरौंजी, मुनक्का, पिस्ता, अखरोट, मखाना इत्यादि बारीक करके ले सकते है। इस हवन सामग्री में अनेक प्रकार की औषधियाँ भी मिलाई जा सकती है जैसे पुष्कर, मूल, शतावर, देवदारू, छार छबीला, गोखरू, खस, मनीठ, धाय के फूल, शंखपुष्पी, ब्राह्मी चिरायता, बावची शीतल चीनी, केशर, मोचरस, चन्दन (लाल या सफेद) मुलेहठी पवार के बीज पटोल पत्र गिलोय, नागकेशर, बालछड़ आंवला, कर्पूरीकचरी, इन्द्र जौ, लौंग छोटी या बड़ी इलायची तालसी पत्र, दालचीनी, जावित्री, जायफल, गुग्गल, अगर, तगर आदि सुगन्धित द्रव्य

भी मिलाया जा सकता है। हवन हेतु विभिन्न पात्र भी तैयार कर लेवे जैसे स्त्रुवा,स्त्रुची, प्रोक्षणी, प्रणीता और स्फेय आदि।

इस प्रकार सब तैयरियां होने के पश्चात् साधक जिसने ॐकार प्रणव की उपासना साधना तंत्र मंत्रादि अनुष्ठानों को कर चुका है, वह प्रात: सम्पूर्ण रूप से सुर्चिभुत होकर अपना आसन ग्रहण करे। यहां वह साधक यजमान भी है और करवाने वाले क्रियावान भी है।

।। पवित्रीकरण ।।

हाथ में जल लेकर उसे.... ले और निम्न मन्त्र कहते हुए अपने ऊपर तथा सभी सामग्री यजमान आदि के ऊपर वह जल छीड़क दें।

मन्त्र–ॐ गुरुजी। अलख निरंजन तेरी माया, जल बीम्बाय विद्महे निलपुरूषाय धीमहि तन्नो अलील प्रचोदयात! इदं सर्व पवित्र भवाय।

निम्न मन्त्र से फिर ३ बार आचमन करे।

मन्त्र–ॐसत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।

।। शिखा या जटा बन्धन ।।

निम्न मंत्र से शिखा या जटाये (संतों के लिए) बान्ध लेवे। औरतों ने अपने चोटी को जलयुक्त हाथों से स्पर्श करे।

मन्त्र – ॐ जटा जुट रुद्राय, तत्सविर्तुवरेण्य नाथ सिद्धि देवस्य धीमही शिखा बन्धनं प्रचोदयात्।

अत: साधक ने दोनों हाथ गीले करके शिश से पैरो तक स्पर्श से (ऊपर से नीचे तक) हाथ घुमाये और पद्मासन या सुखासन में बैठे ओंकार प्रणव युक्त विधि से २१ प्राणायाम करे। फिर पृथ्वी का पूजन कर लेवे और धरती गायत्री को उच्चारण करे **मन्त्र**=ॐ पृथ्वी दैव्ये विद्महे सहस्त्र भूत्यै धीमही तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात और पृथ्वी को नमस्कार करके प्रार्थना करे की हे धरती माता हमें हवन करने हेतु थोड़ी भूमि प्रदान करे।

।। कलशपूजन ।।

अत: अपने-अपने गुरु मन्त्र से तथा गुरुजी के नाम से आवाहन करके गुरु मंत्र को ॐ प्रणव सम्पुष्टि लगाकर पूजन करे। सद्गुरु ना हो तो अपने इष्ट अथवा कुलदेवता के नाम आवाहन पूजन करिये या निम्न मंत्र

से पूजन करे।

।। कलश स्थापना मंत्र ।।

सत् नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदि शक्ति ले आगे खड़ी, आदि कमल के कुम्भ धरी तले बैठे ब्रह्मा बैठे कण्ठ रुद्र, मुख पर बैठे महाविष्णु, शक्ति बैठी दो कर जोड़ देव मुण्डे तैतिस करोड़ बहे गंगा बहे जमुना बहे सरस्वती कलश थापा निरंजन यति। अखा तरे गत तरे तिसकी रक्षा श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी करे, तार तार माता तारीणी सकल दु:ख निवारणी पंच पाण्डव छटे तलाई धर कर कलश थाप्या शक्ति महामाई। थर्पे धर्ती थर्पे आकाश थरपे सुमेर मण्डल, कैलाश थापे कलश रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

।। प्रार्थना ।।

तद्पश्चात् सभी देवी देवता कलशस्था सर्व नदियाँ को निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे।

।। कलश-देवताओं को नमन ।।

ॐ सत् नमो आदेश! गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ कलश-देवताओं तुम्हें आदेश। हृदय तन्त लगाय। सत्गुरा पूरा मिल्या जिन मार्ग दिया बताय। ॐ शिव पूंजू शक्ति पूंजू पूंजू गुरु जी के पाव पाँच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू कलश देवता के पाव। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

।। परमतत्व परमात्मा ॐकार का पूजन ।।

अत: चौकी पर स्थित "**श्री ॐकार यंत्र**" भगवान की निम्न मंत्र से धूप दीप नेवैद्य, चन्दन, अक्षद तथा पुष्प आदि यथोपचारे पूजन करे और निम्न ॐकार गायत्री का जाप-पाठ कीजिए।

।। ॐकार गायत्री ।।

सत् नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐगुरुजी। ओहंम-सोहंम ओंकारा, अलख निरंजन और नही दूजा। ॐकार निरंजन-निराकार सुमिरू पर्वत पर बैठे ॐकार ॐकार बैठे ब्रह्मा, ॐकार बैठे विष्णु ॐकार बीज रूपी शिव शम्भु। कहो कौन होते है 'अ' का रूप, कौन होते है "उ" का रूप कौन

होते है 'म' का रूप कौन होती है अर्द्धमात्रा कौन होती बिन्दतत्मात्रा। ? ॐ गुरुजी ! ॐकार प्रणव का रूप ॐकारा,। त्रिलोकी त्रिगुण का भया उजियाला 'अ' कार रूप होते है विष्णु जी सत्गुण बोलिये। 'उ' कार रूप होते है ब्रह्माजी रजोगुण बोलिये। 'म' कार रूप होते है रुद्र तम रूप बोलिए। अर्द्धमात्रा चिदानन्दा शक्ति स्वरूप बोलिए परम बिन्द रूप अनहदनादा जहा बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। ॐकार उत्पत्ति ॐ कार स्थापना ॐकार लय रूपी शिव गोरक्ष समाना, ॐकार ज्ञान रूप प्रणव बोलिये ज्ञान का स्वरूप सद्गुरु बोलिए अज्ञान रूपी माया बोलिये। गुरु तो गोरक्ष काया तो गायत्री ॐ ब्रह्म सोहंम शक्ति शून्य माता–अविगत पिता गायत्री ॐकार भई प्रकाशा, ॐ हम्–सोहम् विद्महे चैतन्य रूपाय धीमही तन्नो ॐकार प्रचोदयात। इतना ॐकार गायत्री मंत्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: "श्री ॐकार यंत्रम्" का निम्न पंचतत्वादि पूजन करे।

।। मूल मन्त्र ।।

ॐ ओहंम्–सोहंम् हंसाय विद्महे चैतन्य रूपाय
धीमही तन्नो ॐकार प्रचोदयात्।

या

ॐ, ॐ, ॐ कार नम:

पञ्चतत्व–पूजनम्

निम्न मंत्र पढ़ते हुए "श्री ॐकार यन्त्रम्" ऊपर जल छिड़ककर चन्दन या केशर या अष्टगंध का तिलक लगाये और अक्षद (चावल) चढ़ाये।

मन्त्र – ॐ–ॐ–ॐ कार नम: ॐ वं वं अमृततत्वात्मकं (जलतत्व) दिव्य स्नानं च तिलकाक्षतान समर्पयामि।

अत: निम्न मन्त्र से यंत्र ऊपर भगवे या लाल वस्त्र सुगन्धित सुन्दर पुष्प या पुष्पमाला तथा बिल्व पत्र या बिल्वफल अर्पण करे।

मन्त्र – ॐ–ॐ–ॐ कार नम: ॐ हँ हँ हँ आकाशात्मकं नादउपनयन कुण्डल च रुद्र समर्पयामि।

अत: निम्न मन्त्र से यंत्र के ऊपर धूप अगरबत्ती, गौ–घृत दीप तथा कर्पूर

आदि प्रज्ज्वलित करके आंचवायें या अर्पण करे।

मन्त्र – ॐ–ॐ ॐ कारा नमः ॐ रं रं रं तेजतत्वात्मक धूपं दीपं–कर्पूरं समर्पयामि।

अतः निम्न मंत्र से "श्री ॐकार यंत्रम्" को पंचफल या पंचमेवा या शहद युक्त खीर या रोट प्रसाद (कच्चा या पक्का) खिचड़ी या गौ का कच्चा दुग्ध या मिठाई आदि भोग (नैव्यद्य) लगाये।

मन्त्र – ॐ.... ॐ.... ॐ कार नमः ॐ लं, लं लं पृथ्वी तत पृथ्विव्यात्मकं पश्चफलं या पश्चमेवाच या पायसं या रोट या कृशरान्न या दुग्ध या मिष्ठान्नं समर्पयामि।

यहाँ पर साधक "श्री ॐकार यंत्रम्" की षोडशोपचार या यथाउपचार विस्तृत भाव से पूजन कर सकते है तथा ॐकार भक्ति उपासना स्वरूप नित्य नियम प्रातः यह उपरोक्त विधि उपरांत मन्त्र **ॐ ॐ ॐकार नमः** का १०८ या १००८ बार मंत्र जाप कर सकते है।

।। स्वस्ति वाचनम् (प्रार्थना) ।।

अतः दाये हाथ में अक्षद पुष्प और जल लेकर निम्न मन्त्र को पढ़कर नमस्कार करे और नीचे छोड़ दे।

मन्त्र – ॐ.... ॐ.... ॐकार नमः ॐ गं गणेशाय नमः ॐ गुरवे नमः ॐ गों गोरक्षाय नमः, ॐ नवनाथाय नमः ॐ देवी–देवताय, चौरासी सिद्धादि नमः ॐ क्षेत्र दिग् रक्ष पाल नमः ॐ भ्रां भ्रीं भ्रों भैरवाय नमः ॐ कुल ॐ ग्राम ॐ इष्ट ॐ मातृ पितृ देवताय नमः ॐ सर्व सिद्धो आदेश नमो नमः

।। रक्षा विधानम् ।।

अतः बाँये हाथ में सिन्दूर + अक्षद लेकर दाहिने हाथ से निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए सभी दिशाओं को अक्षद फेके और भावना करे देवता या नाथ सिद्ध शक्तियाँ हमारे इस यज्ञ कार्य की रक्षा कर रहे है।

।। रक्षा–मन्त्र ।।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐकार हूँ ॐकार, यूं ॐकार लूं ओकार नमो नमः ॐ सर्वांग दिग विरोधी नम कुल–कष्ट–अरीष्ठ

विनाशाय नमो नाथ गोरक्षाय ॐ ह्रीं हूँ हूँ फट् स्वाहा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

।। अग्नि स्थापना ।।

अत: स्रुवा (चम्मच) में अग्नि को प्रगट करे या कर्पूर जलाते हुए निम्न सूर्य गायत्री का उच्चारण करे।

।। सूर्य गायत्री ।।

ॐ नमो गुरुजी। ॐ सप्त तुरंगाय विद्महे सहस्त्र किरणार धीमही तन्नो रवि प्रचोदयात् ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: उस जलती हुई अग्नि को हवन कुण्ड में निम्न मन्त्र से स्थापित करे।

।। अग्नि गायत्री ।।

ॐ नमो गुरुजी ॐ महाज्वालाय विद्महे वज्रहस्ताय धीमही तन्नो अग्नि प्रचोदयात्। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: इन अग्नि देवता की पूर्ववर्णित पंचतत्वादि पूजन करे।

।। ॐकार स्तवन ।।

अब दोनों हाथ जोड़कर बन्द आँखे एकाग्र होकर ॐकार का स्तवन करे या ॐकार मन्त्र ॐ ॐ ॐ नमो नमः का १०८ बार जप करे या निम्न ॐकार स्तवन पढ़ो।

।। ॐकार स्तवन ।।

ॐ सत् नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ शून्य शून्य महाशून्य, महाशून्य शून्य में ॐकार आओ सिद्ध ॐकार नाद का करो विचार ॐकार कुंजी ॐकार ही ताला ॐकार से भया ब्रह्माण्ड उजाला, ॐकार नाद घट-घटवासी ॐकार ज्ञान परमप्रकाशी ॐकाराय नमो नमः।

ॐकार ॐकार अनहद नादा भया ॐकार निरंजन निराकारा, निराकार ले उत्पन्ना ॐ आकाश, आकाश उत्पना ॐ पवन का प्रकाश पवन से उत्पन्ना ॐकार तेज, तेज से भया ॐकार तोया, तोया उत्पन्ना मही रूप ॐकार माया तत् ॐकाराय नमो नमः

एक ओंकार ब्रह्मा करता, दूजा ओकार ले हरि अवतार तीजा ॐकार रूप ले भवल्यापार अर्द्धमात्रा शक्ति अपार बिन्द रस श्री नाथ संसार त्रिरूप त्रिगुणसार ॐकाराय नमो नमः कौन आसन धरू ध्यान कौन ध्यान पवन प्रकाश। ॐकार आसन धरू ध्यान ॐकार ध्यान पवन प्रकाश, शक्ति शक्ति ले बिन्द प्रकाश ॐकाराय नमो नमः।

ॐकार नाद है ब्रह्माकार शबद सद्‌गुरु ब्रह्मज्ञान, नीत नीत जापो ॐकार ध्यान ॐकारनादा आत्मप्रकाश चारों धर्म, चारों धाम वेदवद ॐकाराय नमो नमः।

दस दरवाजे कूंची सार प्रणव ॐकार बारम्बार, भीतरी मनवा झुंझन हार, चहूदिशी प्रकाशा अपरम्पार ॐकार जोई ज्योत के माही ॐकार पवन ले रहे समाई परमात्मानन्दाई ॐकारनाथ ॐकाराय नमो नमः।

नाम ॐकार सच्चितानंद नाद ॐकार है आत्मानन्द।

सूरत निरत जो ॐकार ध्यान पीजो अमृत अमर प्रमान।

जपो, तपो श्री ॐ कार ध्यान पाप ताप सब संकट निवार।

आदि अन्त सब है ॐकार ज्ञान, ॐकाराय नमो नमः

ज्योर्ति ज्योत में बैठे गुरु गोरखनाथ। नाथ चौरासी ॐकार ध्यान ॐकार आदिनाथ ने किया विस्तार नवनाथ ॐकार नमो नमः जपो तपो नित ॐकार भाव भजो भजन में जो रहे नरनार, भवसागर से हो जाये पार। इतना ॐकार ध्यान वन्दना स्तवनम् सम्पूर्णम्।

इस प्रकार स्तवन होने पर नमस्कार करके अब अग्नि कुण्ड में काष्ठ डालकर अग्नि प्रदीप्त करे और चार समिधाएं जो ९,९ अंगुल की ले लेवे और निम्न मन्त्र पढ़ते हुए संमिधायें घी में डुबोकर अग्नि में स्वाहा कर डाले।

समिधाधानम्

मन्त्र – १. ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ नमः स्वाहा (प्रथम संमिधा डाले)

२. ॐ ह्रीं श्रीं हूं ॐ फट् स्वाहा (द्वितीय संमिधा डाले)

३. ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष ॐ फट् स्वाहा (तीसरी संमिधा डाले)

४. ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरंजनात्मने ॐ हूं फट् स्वाहा (चौथी संमिधा डाले)

अत: आचमनी में जल लेकर निम्न मंत्र से सांकेतिक दिशा में जल छिड़के।

।। जल प्रसेचनम् ।।

पूर्व में – ॐ अदित्तेऽनुमन्यस्व,

पश्चिम – ॐकार अनुमतेऽनुमन्यस्व

उत्तर – ॐ सरस्वत्यमनुमन्यस्व

अत: सभी दिशा में – **ॐ देव सवित: प्रसुव यज्ञ प्रसुव यज्ञ पति भगाय। दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतन्न: पुनातु वाचस्पतिर्वाचं न: स्वदत्तु।**

अत: आज्याहुति हवन के लिए निम्न मन्त्रों से घी की आहूति देनी चाहिए आहूति देने पश्चात् सृवा से बचा हुआ घी बायी ओर रखे प्रणीता या जलपात्र में टपकाना चाहिए।

।। आज्याहूति हवन ।।

१. ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

२. ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इदमिन्द्राय न मम।

३. ॐ अग्नेय स्वाहा। इदं अग्नेय न मम।

४. ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

५. ॐ भू: स्वाहा। इदं अग्नवे न मम।

६. ॐ भुव: स्वाहा। इदं वायवे न मम।

७. ॐ स्व: स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

अत: श्री गणेश और गौरी हवन करे।

१. ॐ वक्रतुण्डाय विद्महे एक दन्ताय धीमही तन्नो गणेश प्रचोदयात्। ॐ गं गं गणपतीय नम: स्वाहा

२. ॐ गौरी गौरजा विद्महे अम्बिकाय धीमही तन्नो रुद्र प्रिय: प्रचोदयात् ॐ गौरी गौरजा देवी नम स्वाहा

अत: अपने सद्गुरु जी के प्रति हवन करे

१. ॐ श्री चैतन्य सद्गुरुदेवो श्री........ (गुरुजी का नाम) नमः स्वाहा।

अतः प्रज्ज्वलित समिधाओं पर ॐकार हवन करे।

।। ओंकार मन्त्र द्वारा हवन ।।

मन्त्र – ॐ.... ॐ.... ॐ कार नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए हवन सामग्री एवं घृत से यथेष्ट और अभीष्ट आहूतिया देनी चाहिए जो कि मध्यमा और अनामिका इन अंगुलियों के ऊपर अंगूठा लगाते हुए हवन कुण्ड में बिल्कुल प्रज्ज्वलित अग्नि में ही आहूतियाँ पड़नी चाहिए जो कि हवन सामग्री हवन कुण्ड के बाहर ना बिखरे पाये।

ॐकार का हवन अपने-अपने साधना, अनुष्ठान तथा नित्य किये हुए ४०, ४५ दिन की संख्या या सवा वर्ष के मंत्र संख्या के १/१० हवन करे तथा यह हवन नित्य प्रतिदिन कर सकते है।

यहां तक मुख्य ॐकार हवन, ग्रंथ में दिये हुए सभी साधना मंत्र-तंत्र टोटके के प्रति प्रथम ही कर देना चाहिए तद् पश्चात् अपने अपने कार्य अनुष्ठानादि हवन करे।

।। गुरु मन्त्र – हवन ।।

अतः जिन साधकों ने गुरु धारण (सगुरु) किये हुए है उन्होंने अपने-अपने सद्गुरु से (प्राप्त) दीक्षित गुरु मन्त्र का कम से कम १०८ बार गुप्त हवन करे अर्थात् रुद्राक्ष (१०८ दानों की) माला को जप झोली या वस्त्र से ढककर और मन में ही गुरु मन्त्र (मनन) बोलते हुए केवल स्वाहा यह शब्द प्रगट बोलते हुए आहूति डाले।

उदा – ॐ शिव गोरक्ष योगी नमः (मन में उच्चारण) और स्वाहा (प्रगट उच्चारण) करे।

तद्पश्चात् अन्य हवन अपने-अपने इष्ट, कुलदेवतायें, देवी-देवता, सिद्धियाँ आदि क्रिया विधानों का करना चाहिए।

उदा – श्री नवनाथो का हवन

१. ॐकार 'आं' आदिनाथ जी नमः स्वाहा।

२. ॐ 'उ' उदयनाथ पार्वतीजी नमः स्वाहा।

३. ॐ 'स' सत्यनाथ ब्रह्माजी नमः स्वाहा।

४. ॐ 'सं' सन्तोषनाथ विष्णुजी नमः स्वाहा।

५. ॐ 'अं' अचलअचम्भे नाथ जी नमः स्वाहा।

६. ॐ 'गं' गजबेली गजकन्थडनाथ गणेशजी नमः स्वाहा।

७. ॐ 'चौ' चौरंगी नाथ जी नमः स्वाहा।

८. ॐ 'मं' मत्स्येन्द्र नाथ जी नमः स्वाहा।

९. ॐ 'गों' गोरक्षनाथजी नमः स्वाहा।

इसी प्रकार, स्वतंत्र गुरु गोरक्षनाथ जी का भी हवन कर सकते है तथा ८४ सिद्धो का भी हवन अलग सा कर सकते है। ९ ग्रह, ९ दुर्गा, १० महाविद्याये अष्ट भैरव, (गुरुमंत्र) सद्गुरुजी का धरती गायत्री, योगमाया, नाथ सिद्ध जोगनी इत्यादि शक्ति हवन, ऋद्धि-सिद्धि, क्षेत्रपाल, रक्षपाल दश कोतवाल तथा अस्त्र शस्त्रादि हवन कर सकते है। (इन सभी का विस्तृत वर्णन श्री नाथ रहस्य द्वितीय खण्ड में पृ. स. २४९-३३६ दिया गया है।)

विशेषताः - इस ग्रंथ (श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि) के अन्य विधि विधानादि सभी पक्ष पर यहां हवन करना चाहिए।

॥ स्विष्टकृत हवन ॥

अतः यथेष्ट आहूतियाँ देने के बाद स्रुवा (चम्मच) में खीर, हलुवा, मिष्ठान और घृत डालकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहूति डाले।

मन्त्र-ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इद्मग्नये स्विष्टकृते न मम्

॥ पंचफल हवन ॥

उपरोक्त मंत्र से पंच फलों का भी आहूतियाँ डाल सकते है। प्रत्येक फल पाण के ऊपर रखे फल पर थोड़ी हवन सामग्री + घृत + अक्षद+ पुष्प रखते हुए दोनों हाथों से अग्नि में स्वाहा करे।

॥ पूर्णाहूति ॥

अतः एक गिरी गोला के ऊपर से छेद करके उसमें घी भरे और उस

लाल वस्त्र तथा कलावा से लपेटे और मुखपर सामग्री+घृत+अक्षद+पुष्प रखते हुए निम्न मन्त्र से पूर्णाहूति की आहूति डाल दे। अगर गीरी गोले का अभाव हो तो (गीला हरा, पानी वाला) नारियल या सुपारी या केवल हवन सामग्री का भी प्रयोग कर सकते है।

मन्त्र :– ॐ निरंजन निराकारो ॐ निर्विकल्पञ्च सतत्ध्यानम् ॐ शून्य शून्यमादाय ॐ आत्मानन्दाय शून्यम् ॐ नमो नमः स्वाहा।

ॐ सर्वे वै पूर्ण शून्य पूर्ण शान्ति स्वाहा

या

ॐकार गायत्री मन्त्र का भी उच्चारण कर सकते है।

।। वसोर्धारा (घृत की धारा) ।।

अतः बड़ी स्रुवा (चम्मच) में घृत लेकर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए धारा से हवन कुण्ड (अग्नि) में डाले

मन्त्र :– ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। श्री नाथ सिद्ध देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।

या

मन्त्र – ॐ गुरुजी को आदेश। ॐ शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पांव ५ महेश्वर आज्ञा करे तो सिद्धो ने शतधारं धृतामृत अतः सहस्त्र घृतामृत धार लगाई। ॐ सिद्धो धर्म अर्थ काम मोक्षार्थ् भरपूर पवित्रो शत घृतामृत धारे नं कुरु कुरु स्वाहा।

कर्पूर आरती

अतः थाली में दीपक तथा कर्पूर जलाकर यज्ञ को आरती घूमाकर आचवाये।

ॐ कर्पूर गौरम् करूणावतारम् संसारसारंम् भुजगेन्द्रहारम्। सदा वसन्तम् हृदयांरविन्दे भवं भवानी सहितम् नमामि।। मन्दारमाला कलिनाल कायै कपाल मालाकिंत कन्थराय। नमः शिवाय च नमः शिवाय, नमः शिवाय च नमः शिवाय।।

।। क्षमा प्रार्थना ।।

इस कर्मकाण्ड उपासना में अगर कोई भूल हुई हो तो यज्ञ के ॐकार भगवान से निम्न क्षमा प्रार्थना करे।

आऽऽसनं न जानामि न जानामि तव साधनम्।

ध्यानं चैव न जानामि क्षम्यता ॐकारेश्वरम्।।१।।

योगहीनं, ध्यानहीनं भक्तिहीनं जतीश्वर।

तन्त्रहीन क्रियाहीनं मुद्राहीनं ॐकारेश्वरम्।।२।।

मन्त्रहीनं जपहीनं तपहीनं तपीश्वर।

यत् सेवितं मया ॐकारनाथम् परिपूर्ण तदस्तुमे।।३।।

।। साष्टांग नमस्कार या आदेश ।।

१. अतः साधकों ने घुटने के बल झुककर या हाथ जोड़कर ॐकार यज्ञ भगवान को प्रणाम करे।

२. नाथ सिद्ध योगेश्वरों ने निम्न मन्त्र पढ़कर तीन बार अर्थात् नाथ सम्प्रदाय के संस्कार अनुसार नादि आदेश करे। नाद जनेऊ ना हो तो शम्भु आदेश करे।

उपरोक्त आदेश और नमस्कार निम्न मन्त्र हाथ जोड़कर उच्चारण करे मन्त्र पूर्ण होने के पश्चात् नमस्कार विधि करे।

।। आदेश गायत्री मन्त्र ।।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।

एक ॐकार तेरा आधार तीन लोक में जयजयकार।

नाद बाजे काल भागे ज्ञान की टोपी गोरख साजे।।

गले नाद पुष्पन की माला रक्षा करे श्री।

शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज बाला।।

चार खाणी चार बाणी चंदा सूरज पवन पाणी।

एको देवा (ॐकार) सर्वत्र सेवा जोत पाटले परसो देवा।।

कानन कुण्डल गले नाद करो सिद्धो नाद ॐकार

सिद्धो गुरुवरों को आदेश। आदेश।।

।। शुभकामना ।।

अत: सभी ने हाथ जोड़कर सभी प्राणी मात्र के प्रति निम्न मन्त्र पढ़कर शुभकामना करे।

।। श्लोक ।।

ॐकार निरंजन निराकार ˘ सृणु मम शुभकामना।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दु:खमाप्नुयात।।

श्रद्धा मेधा यश: प्रज्ञा विद्या पुष्टिं श्रियम बलम्।

तेज आयुष्यमारोग्य देहि में हव्यवाहम्।।

।। मन्त्र पुष्पांजलि ।।

अंजुलि बँधे हाथों में पुष्प + अक्षद लेकर और निम्न मन्त्र का उच्चारण करके ॐकार यज्ञ भगवान को पुष्पांजलि अर्पित करनी चाहिए।

।। मन्त्र ।।

ॐ ओहंम्–सोहंम् हंसाय विद्महे चैतन्य रूपाय धीमही तन्नो ॐकार प्रचोदयात्। ॐ.... ॐ.... ॐकाराय मन्त्र पुष्पांजलि समर्पयामि।

।। घृत–भस्म–जलादि अभिषिचनम् ।।

अन्त में प्रसाद रूप में अपने–अपने सद्‌गुरु मन्त्रों का उच्चारण करते हुए या ॐ ॐ ॐ कार नमो नम: का उच्चारण करते हुए।

घृत – प्रथम प्रणीता में टपके घी को दोनों हाथों पर थोड़ा थोड़ा मलकर और अग्निपर तपाकर उसे थोड़ा सूंघे और नेत्र कान (कुण्डल) गले नाभी आदि पर लगावे।

भस्म – अत: स्रुवा या चम्मच को जल में भिगोकर यज्ञ की भस्म ले और अपनी अनामिका अंगुली से मस्तक–गले बाहु और हृदय (छातीपर) नाभी को तिलक समान लगावे। नाथ संत त्रिपुण्ड भस्म लेपन करे।

जल – अत: कलश के जल से पुष्प या कुशा या आम या बिल्व या पीपल

के पल्लव से अपने ऊपर अभिसिंचन कर लेवे।

अत: "श्री ॐकार यन्त्रम्" तथा यज्ञ कुण्ड की धूप-दीप पंचज्योत से आरती करे।

।। श्री नाथ ॐकार की आरती ।।

श्री नाथ ॐकार की आरती किजै ताल मृदंग सह अनहद बाजै।
ॐकार नाद है अलख निरंजन, ॐकार ज्योत है पतित पावन।
डम डम डमरू शंख ही बाजै। परमानन्द तहा ज्योत विराजै।
जती-सती सब त्याग बैरागी। तुम ॐकार का गीत ही गयी।
सकल सृष्टि सब तुम्हरे कारण। तुम बिन हमरा कौन है तारण।
ज्ञान, ध्यान सब विद्यादाई। परमयोगी तुम सम और न कोई।
परा अपरा सब शक्ति माया। जुगक्ति भक्ति सब तुमरी छाया।
तीन देवता सब तुम उजियाला। त्रिगुणमय सब तुमरी माया।
लालन-पालन सब संकट हारा। तुम बिन जगत का कौन सहारा।
भक्ति-भाव सब तुम्हरी पूजा। ॐकार देव बिन और नहीं दूजा।
गले नादी बीच पुष्पन की माला। हाथ मे ग्रंथ बैठ मृगछाला।
ज्ञान मुगुट त्रिपुण्ड भस्म। ॐ-सोंह घट में विराजे हंस।
सुमिरन कीजो तुम ॐ ॐकारा। टारे संकट मिले सुख अपारा।
ब्रह्म रूप ॐकार की आरती जो गावै सुख सौख्य
भरपूर धन वैभव पावै। श्री नाथ ॐकार की आरती कीजे
ताल मृदंग सह अनहद बाजै......

।। प्रार्थना ।।

अत: हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ॐकार नाथ त्रिकालज्ञानी, गोरक्षमीन नाथ वंश सिद्धम्।।

अनन्त कोटी नवनाथ सिद्धम्, कुर्वन्तु सर्वे मम् सुजीवनम्।।

दक्षिण अथर्वेदस्य वामे च यर्जुवेद:।

पुरतो ऋकवेदस्य तम वन्दे ॐकारम्।।

ॐकार ज्योर्ति चैतन्यं नित्य ध्यायन्ती योगिन:।

मुक्ति च मोक्षदा चैव ॐकाराय नमो नम:।

अनन्त कोटी ब्रह्माण्ड ॐकाराय सचराचरम्।

दर्शनम् मुक्ति लाभं च तस्मै श्री ॐकाराय नमः।।

।। अर्घ्य दान ।।

निम्न सूर्य नाम मन्त्रों से जल द्वारा सूर्य भगवान को (जो ॐकार तेज स्वरूप है) अर्घ्य देना चाहिए। प्रत्येक नाम मन्त्र उच्चारण साथ अर्घ्य देना चाहिए

१. ॐ सूर्याय नमः २. ॐ भास्करायनमः ३. ॐ आदित्यायनमः

४. ॐ मित्राय नमः ५. ॐ विष्णवे नमः ६. ॐ वरूणाय नमः

७. ॐ तपन नमः ८. ॐ इन्द्राये नमः ९. ॐ खगाये नमः

१०. ॐ गभस्ति नमः ११. ॐ यमाय नमः १२. ॐ हरन्यरेताय नमः

या

ॐ ओं ह्रां ह्रीं ह्रों सः सूर्याय नमः

ॐ ह्रीं ह्री सूर्याय नमः

।। प्रदक्षिणा ।।

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए हवन कुण्ड या ''श्री ॐकार यन्त्रम्'' को चारों ओर बाये से दाये परिक्रमा करनी चाहिए।

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणाया पदे पदे।।

।। विसर्जन ।।

हाथ में अक्षद लेकर निम्न मंत्र से हवनकुण्ड और इष्टदेवता के वेदी पर छोड़ते हुए उन के विसर्जन की भावना करे।

मन्त्र – गच्छत्व भगवन्नग्ने स्वस्थानं कुण्ड मध्यतः।

हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्र देहि प्रसीद मे।।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि

ॐकार हवन विधि नाम

द्वादशोऽध्यायः।।

त्रयोदशः अध्याय

।। ॐ कार उपासना ।।

जब शुद्ध–निस्वार्थ–अन्तरिक प्रेम, जहां श्रद्धा है निष्ठा है विश्वास है अर्थात् एक तादात्म भाव–भक्ति है। इस अवस्था को उपासना कहते है। उपासना अर्थात् उप+आसन जो भक्त अपने भगवान से निकटता समीपता स्वरूपता सायुज्जता तक प्राप्त कर लेता है और यह सिद्ध होता है कि जीवात्मा परमात्मा एक ही है, आत्मा + परमात्मा एक ही है। जीव शिव एक है यही उपासना का अन्तिम उत्तर है। यही सार है और यही सिद्धता भी। सन्तजन कहते है कि उपासक भक्त को उपास्य अर्थात् भगवान के साथ अनन्यता भाव, तादात्म भाव होना चाहिए।

इस जगत में मानव प्राणी मात्र सुख शान्ति की खोज में लगे है वह दु:ख नहीं चाहते वह सुख चाहते है जिसके लिए वह बहुत सारा सामान इकट्ठा करता है और धन दौलत, मान, प्रतिष्ठा मकान–दुकान, गाड़ी घोड़े इत्यादि सब कुछ धन की ही करतूत है। लोग इसी को सुख शान्ति मानकर चलते है और अज्ञान वश इसी में रम जाते है। लेकिन इन सांसारिक भोगे में ना सुख है ना शान्ति ? इनकी तृष्णा में बढ़ती रहती है अन्त में वह दु:खी हो जाते है। लेकिन संसार का सच्चा सुख ईश्वर भक्ति, ईश्वर उपासना में है और शाश्वत शान्ति अपने उपास्य की उपासना करते हुए एक रूप होने में है। यहां अनेकों साधु संतों, भक्तों ने अनेक उपदेश दिये है और ईश्वर भक्ति उपासना में ही सुख शान्ति है यह सिद्ध भी किया है। उसी प्रकार अनेकों सम्प्रदाय बने मठ मन्दिर बने, बहुत से धर्म उनकी अनेक मान्यताये, अनेक उपासनाये खड़ी हो गयी हम कह नहीं सकते कौन सही कौन गलत पहले लोक संतों का देखते हुए उनके आदर्श से त्याग वैराग्य तपस्या भक्ति उपासना करते थे अत: अभी भी करते है किन्तु आज–कल लोगों को जो अच्छा लगता है। उसे देखते हुए संत अपने–अपने सम्प्रदाय, धर्मो के उद्देश्य रखने लगे है और फिर परमार्थ को परम को अर्थ ही अर्थ बना दिया है। भगवन प्रचार–प्रसार के नाम पर दिखावे मनोरंजन और अनेक प्रकार की दक्षणा से सारा दिखावा बन गया, जो भी करेंगे सार्वजनिक करेंगे जो करना है वह सब दिखावे में करेंगे और देखो हम ऐसा परमार्थ को करते है। यहाँ सब मन बुद्धि को आनंद देने

वाली दिखावे करने पड़ते है। तभी लोक इकट्ठा होते है। आत्मानंद को तो वह जानते ही नहीं ना दिखाने वाले जानते है अत: यह उपासना यह आत्मानन्द यह आत्मदर्शन यह परमात्मभाव मात्र एक अकेला ही इसका शाश्वत सुख भोग सकता है। यहाँ ना भीड़ है ना मनोरंजन ना दिखावा है ना कोई दान दक्षिणा, यह अन्तकरण की उपासना मात्र उस भक्त की है। उस उपासक की है जिसे अपने आपमें एकाग्रता से तादात्म भाव से एक विश्वास श्रद्धा से करनी होती है। हमारे नाथ सिद्धों में कहते है

अेक निरंजन सदासूखी दोनो देना धीर।

तीन चवार मे खटपटी दस पाचो विवादी।

और बहूत बन उद्योगी संसार की उपाधि।।

इस प्रकार त्याग हो वैराग्य हो योग साधना हो या कर्मकाण्ड भक्ति हो या फिर अपने इष्ट की उपासना हो हमें एकान्त में एकाग्र होकर तन्मय होकर करना चाहिए जो अलख निरंजन स्वरूप को पा लेता है। अपने इष्ट से तादात्म भाव को पा सकता है। आत्मा परमात्मा का मिलन हो सकता है। इसमें धैर्य चाहिए यह धीरज अपने सद्‌गुरुजी ही देते है वह कृपा आशीर्वाद देकर हमारा पूर्णत्व प्राप्त कर देता है। तीन चार इकट्ठा होने पर एकाग्रता भंग होकर साधना में व्यवधान उत्पन्न होता है वहाँ खटपटी ले जाती है और दस पाँचों में तो वाद-विवाद होता है इनका एक मत एक विचार होना कठिन है। इस प्रकार साधना उपासना में जितने अधिक भीड़ होगी उतना ही प्रपंच बढ़ेगा।

अेक संत सिद्ध भया दो सन्त सेवा।

तीन चार वादविवादी दस पाचो कुटुम्बी।।

और पंथ अपारा देखत भया लस्करा।।

अत: उपासना साधक करने में एकाग्रता और विश्वास आवश्यक है। तब साधक ने अपने स्थान में एकान्त शुद्ध पवित्र स्थान में श्री ॐकार यंत्रम् की स्थापना कर और यथा उचित पूजन करके निम्न ॐकार पश्चविंशतिः शतम् नाम स्तोत्र, ॐकार १२५ नाम स्तोत्र का पाठ करे।

ॐकार पञ्चविंशतिः शतम् नाम स्तोत्र
(ॐकार १२५ नाम स्तोत्र)
"दोहा"

सतगुरु नाथ ॐकार को सुमिरो बारंबार।
नमो आदेश गुरु ॐकार को पाओ फल ही चार।।
हो जाये ॐकारमय हम करो कृपा अपरंपार।
क्षमा करो हीन–दीन पर सतगुरुदेव ॐकार।।धु।।

"चौपाई"

जय जय जय ओङ्कार गुरु नाथा।
जय हो जय जगजीत विधाता।।१।।
जय जय जय जगबीज निरमाता।
जय हो जय जग पालन करता।।२।।
अनन्त रूप धर सिरजन हारा।
घोर रुद्र रूप धरी करत संहारा।।३।
सत्य सनातन ॐ अविनाशी।
नित्य निरन्तर परम परकाशी।।४।।
प्रथम शून्य महा शून्य अतीत था।
निर्गुण निराकार आद्य अतीत था।।५।।
फिर बनता रहा जो सगुण साकारा।
सृजन सृष्टि ॐ जगत विस्तारा।।६।।
आदि अनादि भेद ही उसका।
पार नहि पाये कोई भी उनका।।७।।
आदि ईश्वरीय श्री नाथ ईश्वरा।
ब्रह्म मायातीत मूल ॐकारा।।८।।
ॐ हं सों जीव में प्राण अपाण।
श्वास–श्वास है ॐ जग जीवन।।९।।

सूक्ष्म सांस है सूक्ष्म नाद है।
सृष्टि सम्पूर्ण ॐकार मय है।।१०।।
त्रिगुण गुणातीत है ॐकारा।
बीज प्रणव है गुण विस्तारा।।११।।
'अ'कार 'उ'कार गुण 'म'कारा।
त्रिगुण मयी है, सब जगऽकारा।।१२।।
शक्ति बीज है जो तूं मात्रा।
चंद्र चकोरी जो अर्द्ध मात्रा।।१३।।
नाद बीन्द जो अनहद सुन्दर।
नाद बीन्द है जिसके अन्दर।।१४।।
'अ''उ''म' नाद अरू बीन्दु स्वरूपा।
पंच तत्व जग सृष्टि स्वरूपा।।१५।।
और शक्ति मात्रा सह महामाया।
नाथ सिद्धो की वह योग छाया।।१६।।
नाद बिन्दु अरू कलातित माया।
नाथ सिद्धो ने सिद्ध जीन किया।।१७।।
ॐकार मन्त्र है नाथ सिद्धो का।
गुरु–शिष्य आदि परम्परा का।।१८।।

"दोहा"

परब्रह्म निज रूप है, असंख्य रूप ॐकार।
किया विस्तार ॐकार ने माया अपरम्पार।।धु।।
एक स्वर्ग लोग में देवी देवता।
जिसमें सुख ही नित्य भोगता।।१९।।
दुजा मृत्यु लोक ही कहते।
पापपूण्य के कर्म ही करते।।२०।।

तीजा पाताल लोक जो कहना।
भोगे दुर्जनों यम यातना।।२१।।
तीन लोक का ॐ अधिकारा।
कर्म धर्म के न्याय आधारा।।२२।।
सृष्टि जगत ब्रह्माण्ड बनाया।
सर्व व्याापक है ॐ की माया।।२३।।
भूत भविष्य और वर्तमान।
ॐ सभी में है विद्यमान।।२४।।
काल कालातीत स्वयं महाकाल।
रहता ॐकार में सर्वकाल।।२५।।
वेद शास्त्र कहते महापुराण।
सभी के अन्दर ॐकार प्रमाण।।२६।।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
गीता ज्ञान में ॐ है सत्यत्।।२७।।
ॐ ॐ खँ ब्रह्म वेद बखान।
चारो वेदो जानो ॐ सुजान।।२८।।
ॐऽहं ब्रह्मास्मि शास्त्र ही कहते।
काया गढ़ ॐ ॐकार ही रमते।।२९।।
ॐ हं–सोहं श्री नाथजी ही करते।
ॐ ध्यान मे आत्मा नंद ही पाते।।३०।।
शब्द ब्रह्म है आदि ॐकारा।
नाद ब्रह्म जो बिन्दु ॐकारा।।३१।।
प्राण अपाण ॐ प्रणव सहोकारा।
श्वास श्वास मे है ॐकारा।।३२।।

जीव–शिव सबको ॐ प्यारा।
प्रणव ॐकार है सब आधारा।।३३।।
धरती आकाश पवन अरू पाणी।
पंचतत्व सब ॐकार खाणी।।३४।।
स्थूल सूक्ष्म और महाकारण।
तीन ही अवस्था ॐकार ही जान।।३५।।
आदि पुरुष और मूल प्रकृति।
सृजन सृष्टि मे ॐकार प्रिती।।३६।।
सृष्टि जगत का सब विस्तारा।
ॐ ॐ कार है जगत उजियारा।।३७।।

"दोहा"

प्रकृति माया महाभवसागर का तारक है ॐकार।
नाम जपतप–साधन से पार हो जावत् संसार।।धु।।
जती सती सब योग योगीश्वर।
ज्ञानी ध्यानी तपी तपोश्वर।।३८।।
साधु संत सब नर अरू नारी।
ॐकार जपन के है अधिकारी।।३९।।
ॐकार जप है ब्रह्म वाचक।
माया ब्रह्म सह यही है पूरक।।४०।।
ऋद्धि सिद्धि और चार ही मुक्ति।
ॐकार मन्त्र ही देता है शक्ति।।४१।।
जो जो जैसा ॐ से ही चाहता।
वो वो वैसा ॐ से ही पाता।।४२।।
करे विद्यार्थी विद्या ही पाता।
धन्याढय चाहे धन ही लाता।।४३।।

ॐकार, ॐकार धर्म का दाता।
काम मोक्ष सब अन्त मे देता।।४४।।
अनुरागी अरू निवृत्ति मार्ग।
मोक्ष मुक्ति सह पाये स्वर्ग।।४५।।
ॐ, ॐ सुमिरन वेद ही कहते।
दुःख संकट पार ही लगतें।।४६।।
हरि ॐ तत्सत्, गीता ज्ञान कहावे।
चारो वर्ण और धर्म ही पावे।।४७।।
श्वास श्वास मे ॐ ॐ समावे।
त्रिकाल ज्ञानी उसे समझावे।।४८।।
ॐकार साधना साधे योगी।
त्याग वैराग्य भये बैरागी।।४९।।
ॐ हम् सों नाथ सिद्ध जो जपते।
सुख दुःख के पार हो जाते।।५०।।
ॐ समाधि खड़ दर्शन पाये।
ग्यान ध्यान महायोगी कहाये।।५१।।
माया रहित है एक ओंमकारा।
नाथ सिद्धो का है अधिकारा।।५२।।
ॐ मन्त्र आदिनाथ ने दीन्हा।
मात पार्वती हृदय से लीन्हा।।५३।।
क्षीर समुन्दर के तीर एकान्तक्।
कि तपस्या मन्त्र ओमान्तक्।।५४।।
नाथ उदय से भयी वो जोगन।
नाथ सिद्धो की माता पावन।।५५।।
यही मंत्र तत्क्षण मत्स्येन्द्र सूना।
मीन गर्भ मे सुमिरन कीना।।५६।।

नाथ मत्स्येन्द्र गुरु गुण ज्ञानी।
तीन लोक मे चली कहानी।।५७।।
यही ज्ञान–ध्यान गुरु गोरख लीन्हा।
अजरामर पद से सब जग जाना।।५८।।
आगे परम्परा श्री नाथ सिद्धो की।
नवनाथ चौरासी भेष भगवान की।।५९।।
सब ही ॐ ॐ के शरण में ही जाई।
माया जगत में अमर पद पाई।।६०।।

"दोहा"

गुरु–शिष्य–परमात्मा को जोड़ दिया ओंकार।
सत्य–सत्य अरू नेती नेती पार हुआ संसार।।धु।।
ध्यान ॐकार मन मे जोड़ो।
पाप–ताप कर्म सब ही छोड़ो।।६१।।
ॐकार जीव जीव प्राण विराजे।
पाप–पुण्य वही ॐकार समझे।।६२।।
सर्व व्यापक है ॐकार परमात्मा
साक्षत्कार ॐ है अन्तरआत्मा।।६३।।
भक्ति भाव जब ॐ से ही करते।
प्रेम–प्रीत में सबसे ही रहते।।६४।।
अजरामर है ॐकार अविनाशी।
पार लगावे सब लख चौ–प्याशी।।६५।।
अेक बार जब श्री नाथ पाणिनी।
ॐ ॐ मन्त्र जप तपस्या कीनि।।६६।।
परमज्ञान आदिनाथ ॐकार।
दर्शन देकर किया चमत्कार।।६७।।

स्तुतिगान जब पाणिनी करने लागे।
ॐकार नाथ नृत्य ही नाचने लागे।।६८।।
ताण्डव नृत्य जब डमरू बजाया।
नाद ॐकार जो बहुत बरसाया।।६९।।
डमक डमक डम डमरू नादा।
छमक छमक पद घुंगरू बाजा।।७०।।
चौदह सूत्र अरू चौदह विद्या।
नाथ पाणिनी कु बहूत सूनाया।।७१।।
देखो पाणिनी सूनो सावधान।
ॐ ब्रह्मतत्व का यह बखान।।७२।।
दिशा एक में हुआ 'अ' कारा।
दुजा दिशा में भया 'उ' कारा।।७३।।
और तीजा मे स्वर 'म' कारा।
दिशा चतुर्थ में चन्द्रकारा।।७४।।
शक्ति बिन्दी अरू नाथ बिन्दु मे।
भया पुरण जो ॐकार ब्रह्म मे।।७५।।
फिर बने स्वर–व्यजन सारा।
लघु–दीर्घ और नाद विस्तारा।।७६।।
आगे वेदो शास्त्रों पुराण।
तन्त्र मन्त्र जप अभिचारण।।७७।।
धर्म–अर्थ–कर्मोक्ष का पसारा।
बना ॐ सब कुछ मूल आधारा।।७८।।
गले कण्ठ और दन्त नासिका।
तालू जिव्हा अधर सभी का।।७९।।
नाद छेड़कर सप्त स्वरों का।
भया उच्चारा ब्रह्मनाद का।।८०।।

वेद पुराणों और चारो बाणी।
ॐ है सुत्र और अक्षरखानी।।८१।।
श्वास श्वास और प्राण अपाण।
सभी का है ॐकार गुणगान।।८२।।
साम–गायत्री नानाविध छंद।
लय ताल पर सब है धुन्द।।८३।।
आगे आगे ॐ सब विस्तार।
यज्ञ–यागादि कर्म फलाचार।।८४।।
ॐकार रचना धरती अम्बर।
पर निराकार ॐ सदा दिगम्बर।।८५।।
दिव्य तेज है ॐकार नाथं
रवि–राशि सम उनके साथ।।८६।।
रज तम और सत्य गुणवत्ता।
नर असुर बने देवी देवता।।८७।।
चित्त बुद्धि मन अहंकार।
सबमें ॐकार है भरपूर।।८८।।
ज्ञान ज्ञेय और ज्ञात विज्ञान।
ऐसा है ॐ बड़ा गुणवान।८९।।
सप्त लोक और सप्त पाताल।
सब ही सब है ॐकार जाल।।९०।।
परब्रह्म और ब्रह्मज्ञान।
मंत्र महान जो ॐ सुजान।।९१।।
ऐसी सृष्टि का रूप साकार।
जिसका मूल है बीज ॐकार।।९२।।

"दोहा"

मोहमाया सब त्याग कर ॐकार मे रहो लीन।
जनम–मरण अरू मोक्ष मुक्ति, सब ॐकार आधीन।।ध्रु।।
ॐकार ॐकार मन मे जपना।
दयाधर्म लो त्यागो अभिमाना।।९३।।
परम पुरुष है परमानन्द।
ॐकार ॐकार सहजानन्द।।९४।।
लेलो ॐकार से देहानन्द।
और स्वरूप से जगतानन्द।।९५।।
कर्ता धर्ता और जगत संहारा।
त्रिलोक का है ॐ अभयंकारा।।९६।।
काल दहन और कालातीत है।
ॐकार सबका मूलातीत है।।९७।।
सब ही काज करधर ॐकार भरता।
सृष्टि जगत जो नदमस्तक ही करता।।९८।।
ॐकार मन्त्र सुमिरन भगवन्ता
मानव–दानव ऋषि मुनि सन्ता।।९९।।
ॐकार महिमा गात सब लोका।
मोक्ष मुक्ति सम फल मिल चोखा।।१००।।

"दोहा"

ॐकार जीवन जन्म है, ॐ कालमृत्यु समान।
अजर अमर सब होत है। ॐकार मन्त्र महान।।ध्रु।।
ॐ साधना पाणिनी ने कीन्ही।
शब्द ब्रह्म सब विद्या लीन्ही।।१०१।।
याज्ञवालक्यनाथ ॐ ही जपते।
ब्रह्म स्वरूपी ॐकार को कहते।।१०२।।

जैसे नर और मादा मैथुन तृप्ति।
वैसे बाणी प्राण में ॐकार प्राप्ति।।१०३।।
और ऋचा से साम को जोड़ते।
तभी पूर्ण ॐकार रूप ही बनते।।१०४।।
कौपितिक ऋषि ने की जो भक्ति।
ॐ से हुई उन्हें पुत्र की प्राप्ति।।१०५।।
ॐकार महिमा गाये पिप्पलाद।
यम नचिकेता भक्त प्रह्लाद।।१०६।।
सप्तऋषि और पंच देवता।
साधु सन्त, अरू नाथ सिद्धता।।१०७।।
ॐकार ॐकार महिमा गाते।
विस्मय ॐ के फल को पाते।।१०८।।
ॐकार मात्राओं की महिमा देखो।
मात्रा जप का फल ही परखो।।१०९।।
मात्रा एक जप से पुनर्जन्म पावो।
दो मात्रा जप से चन्द्रलोक जावो।।११०।।
त्रि मात्रा से सूर्य लोकी जाता।
पूर्ण ॐ जपता ब्रह्मलोक पाता।।१११।।
ॐकार मंत्र है सिद्धि दाता।
ॐकार ध्यान है मुक्ति दाता।।११२।।
ब्रह्म विद्या और ब्रह्मज्ञान।
ॐकार भक्ति में मिले सुजान।।११३।।
ॐकार मै हूँ, श्री गोपाल ही कहते।
ॐ ॐ सूर्यवंशी श्री राम ही जपते।।११४।।
ॐकार याने आत्मानन्द धन।
ॐकार माने अमृत संजीवन।।११५।।

गगण ज्योत और जगद् प्रकाशा।

जन्म मृत्यु फेर को पल में नाशा।।११६।।

प्रभु परमात्मा ॐ परं ज्ञानी।

शान्ति परं और परं कल्याणी।।११७।।

भक्ति भाव जो ॐकार ध्याये।

जीव–शिव मे एक ही हो जाये।।११८।।

मंगल–मंगल ॐकार मंगलम्।

शिव–शिव जीव का सदा कल्याणम्।।११९।।

पहर पहर जब रटना ॐकारा।

रोम रोम हो मुक्त करतारा।।१२०।।

खो जावो ध्यान ॐकार निरन्तर।

परमानन्द पाओ अपने अन्दर।।१२१।।

कन–कन मे ॐकार विश्वंभर।

पल–पल पावो परं परमेश्वर।।१२२।।

कलयुग मात्र ॐकार आधारा।

आत्मज्ञान परंगति को प्यारा।।१२३।।

ॐकार ॐकार एक ही सहारा।

जपो तपो ॐ भव उतरो पारा।।१२४।।

सवासौं (पञ्चविंशतीशतम्) नाम ॐ का ही गावे।

जो सहृदय अपरम्पार ही भावे।

परंगति और परंपद को पावे।।१२५।।

"दोहा"

तीन लोक सब देवता वेद शास्त्र पुराण।

नित नित सती भाषत है करत ॐ गुणगान।।

नेती नेती जो सत्य है ॐकार प्रणव महान।

लोक पर लोक की सम्पदा कर ॐ कल्याण।।

श्री ॐकार नाथजी को आदेश आदेश।।।

।। इति श्री नाथ विलास विरचित ॐकार पञ्चविंशतीशतम्

(१२५) नाम स्तोत्र सम्पूर्णम्

ॐकार शिव स्वरूप गुरु गोरक्षनाथ जी
(आरती)

जय देव जय देव जय गोरक्षनाथ। जय सत्गुरु ॐकार शिव अवतार।।धृ।।

चौरासी योणि घूम-घूम कर मै दुःखी हो चुका।
त्रिविध ताप जीवन में बहुत हूँ थका॥
जनम-जनम पुण्याई से तेरो चरण में आ झुका।
अब तो सदबुद्धि देकर मुझ दिन को तार॥ जय देव जय देव ....॥१॥

अनन्य भक्ति दो मुझको जो सेवा ही लेकर।
प्रपंच माया से छुड़ावो निज ज्ञान देकर॥
कर्म धर्म सब करते नाम तेरा वदवावोकर।
मारो मारो सब दुष्कर्म, अब देदो दरशनहार॥ जय देव जय देव ....॥२॥

योग, ज्ञान ध्यान सब दासता तुमरा होये।
तुम्हरे ही लीला मे मै समरस हो जाये॥
तन मन धन तुम स्वरूप में ही एक हो जावे।
दे दो ज्ञान वैराग्य तेरो नाम से करो उद्धार। जय देव जय देव ....॥३॥

भक्ति आनन्द ज्ञानानन्द दो तुम्हरे चरणनमें।
जले बले टले वासना तेरा नाम से चिन्तन में॥
तुम रंगों में निजरंग रंग दो सन्त संगत में।
नाथ विलास करू विनती करो भवसागर पार॥ जय देव जय देव ....॥४॥

।। गुरु गोरक्षनाथ जी का भोग।।

भोग लगाऊं श्री गुरु गोरखनाथ तुम्हारे।
थाल सजाऊ ताल बजाऊ भाव भक्ति भरे.........।।धृ।।

रोट लंगोट भोग चढ़ाऊ नारियल के संगा।

नित गाऊ भजन तुम्हरे, भजरे भज अभंगा..........॥१॥

खिच्चड़ बनाऊ भक्ति भाव जो तुमको भावे।

जैसे शक्ति ज्वालाई नित-नित गुण गावे..........॥२॥

दूध पंचफल पंचामृत सूखा पंचमेवा।

नाथ सिद्धों सन्तजन करते नित-नित सेवा..........॥३॥

बड़ा मुगदाल संग भोग बन भक्ति प्यारी।

गुरु भक्ति अरू शक्ति गुरु की तृप्ति ही न्यारी..........॥४॥

छप्पन भोग अरू अष्टोशत भोग लगाऊँ।

नौनाथ चौरासी सिद्ध सहकृपा तोरी पाऊँ..........॥५॥

लौंग इलायची अरू पान सुपारी ताम्बुल है भारी।

लों मुख शुद्धि मुखोम्बृत रसपान है न्यारी..........॥६॥

अब तो भोग लगा लो नाथ मेरा भोग लगाऊ।

यह तो भक्ति भोग है मैं प्रित आस लगाऊँ..........॥७॥

भोग लगाऊँ....................

॥ ॐकार आरती-भजन ॥

ॐकार आरती

जय ॐकार, जय ॐकार, जय ॐकार देवा।

ज्योति में ज्योत मिलावु करू आरती सेवा॥धृ॥

सद्‌गुरु नाथ, आदि ईश्वर तुम जग उद्धारा

ज्ञान-ध्यान त्याग बैराग है सब कुछ तुम्हारा॥१॥ जय ॐकार...

सगुण-निगुर्ण सब तुम्हरी महिमा है अपरम्पारा।

काल महाकाल सब सृष्टि पार नहीं पाया॥२॥ जय ॐकार...

सुरनर मुनि जन धर ध्यान वेद ही सारा।

देवी देवता एक का मूल तुम पालन हारा॥३॥ जय ॐकार...

ॐकार ॐकार गुणनिधान सृष्टि सर्जनहारा।

त्रि जगत ब्रह्म के मूल करो सब उद्धारा॥४॥ जय ॐकार...

पाप ताप हारन तरो नाम सुख धाम निर्धारा।

दो मोक्ष मुक्ति वरदान है भवसागर पारा॥५॥ जय ॐकार...

जय ॐकार जय ॐकार जय ॐकार देवा

ज्योति में ज्योत मिलावु करू आरती सेवा॥धु॥

ॐकार मंगलम् भजन

ॐ मंगलम्, ॐकार मंगलम् ॐ नम शिवाय मंगलम्.........

ना मंगलम् न-कार मंगलम्

नाद बिन्दु कलातीत वेद मंगलम् ॐ मंगलम् ॐकार................॥१॥

मा मंगलम् म-कार मंगलम्

महादेव दया सिन्धु ईश मंगलम् ॐ मंगलम् ॐकार................॥२॥

शिव मंगलम् शिवाय मंगलम्

सिद्ध बुद्ध आत्म रूप वेद मंगलम् ॐ मंगलम् ॐकार................॥३॥

वा मंगलम् व-कार मंगलम्

वाद भेद रहित पर ब्रह्म मंगलम् ॐ मंगलम् ॐकार................॥४॥

या मंगलम् य-कार मंगलम्

यथा तत्व परिज्ञान वेद मंगलम्

ॐ मंगलम् ॐकार मंगलम् ॐ नम शिवाय मंगलम्.................................॥५॥

॥ इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि

यज्ञवेदी ॐकार उपासनानाम

त्रयोदशोध्यायः॥

चर्तुदश: अध्याय

।। साधना सिद्धि के संकेत–नियम।।

१. आहार – शुद्धि = मन को शुद्ध पवित्र अत: सात्विक आहार लेना चाहिए जैसे खाये अन्न वैसे होये मन अत: तामसी भोजन से मनोवृत्तियाँ विकृत होकर इन्द्रियों का बल बढ़ता है और संयम न रहे पाने से इन्सान क्लेश को पाता है अत: वह ईश्वर भक्ति साधना नहीं कर पाता। अत: शुद्ध पवित्र ताजा और सात्विक आहार लेना चाहिए तथा संयम अर्थात् अति खाना नहीं चाहिए या बिल्कुल नहीं खाना भी नहीं चाहिए अत: संयमित भोजन करना आवश्यक है।

अत: सात्विक आहार का भोजन करे। तामसी तथा रजोगुणी भोजन से अपने आपको बचाना चाहिए। वर्ज्य कर देना चाहिए।

२. स्थान – साधना चाहे वह मन्त्र साधना हो सिद्धि या भक्ति साधना हो जिसमें एकाग्रता आवश्यक होती है। इसलिए एकान्त शान्त पवित्र स्थान आवश्यक है जो पूर्व काल की तपो भूमि हो पुण्य क्षेत्र हो, नदी किनारा या २, ३ नदियों का संगम स्थान हो वन पहाड़ गुफा पर्वत की तले, सिद्धपीठ या शक्तिपीठ, बिल्व, पीपल, वटवृक्ष की छाया में गोशाला या कोई देवालय हो अगर अपने घर आश्रम मठ मन्दिर में भी एकान्त हो पवित्रता हो तो भी साधना फलीभूत होती है।

३. आसन विधान – आसन ऐसा हो जो अधिक देर तक बैठकर साधना कर सके आसन असंक्रामक अर्थात् साधक की साधना शक्ति पृथ्वी में प्रवाहित ना हो जिसमें कुशासन मृगचर्म, व्याघ्रचर्म ऊन का, काष्ठ की चौकी या गोबर की चौकी कम्बलासन आदि असंक्रामक आसन उपयोगी है। जिसमें कुशासन सात्विक उपासना के लिए तो सूती ऊनका कम्बलासन यह रजोगुणी और मृगचर्म व्याघ्रासन आदि तामसी साधना के लिए होती है। बिनासन नग्न भूमि पर आसन ना लगाये, पद्मासन, सिद्धासन या सिधापालथी मारकर बील कुल सीधा बैठे जो मेरुदण्ड सदा सीधा रहे जो कि इडा पिंगला सुषम्ना प्राण के प्रवाह सीधा–सीधा (ऊर्ध्वरेता) चल सके।

४. वस्त्र परिधान – काया शुद्ध पवित्रता के लिए स्नान करके साधना को बैठना चाहिए, शरीर पर कम से कम वस्त्र पहनना चाहिए ठण्ड के दिनों

में गरम-नरम कम्बल, शाल का प्रयोग करे, वस्त्र धूले हुए पवित्र हो।

५. समय – प्रात: ब्रह्ममहूर्त का समय सर्वोकृष्ठ है। विवशता: हो तो शाम को सूर्यास्त के पश्चात् १ घण्टे बाद या रात्री अल्पभोजन कर रात ग्यारह बारह बजे भी कर सकते है और शक्यतो साधना का नियमित और निश्चित समय होना चाहिए।

६. दिशानिर्देश – इच्छापूर्ति या उद्देश्य हेतु दिशा निर्देश दिये गये है। अत: अपने अभिलाषा अनुसार उस दिशा के ओर मुख करके साधना करे। साधारण प्रात: को पूर्व और सायंकाल में पश्चिम को मुख करके साधना करे। जो कि सूर्य भगवान से ऊर्जा प्राप्त होती है तथा शान्ति के लिए, या सिध्दि या मुक्ति के लिए उत्तर दिशा श्रेष्ठ है। पूर्व में वशीकरण, पश्चिम में स्वार्थ सिध्द धन प्राप्ति इ० दक्षिण में तामसी साधना सिध्दि या शत्रु का नाश इ० उद्देश्य अनुसार साधना करते है।

७. जप साधना – जप साधना में शिव को इष्ट मानने वाले विशेषत: नाथ सम्प्रदाय सन्यासी इत्यादि रुद्राक्ष माला से (१०८ मनके) या ५४ दाने की सुमिरन से जप करते है तो वैश्नवी मान्यता वाले तुलसी या चन्दन (१०८ दाने) माला से जाप करते है तो शक्ति प्रधान साधना में कमल कट्टा मूंगा स्फटिक हड्डियों इत्यादि की माला से जप करते है।

उद्देश्य १. सकाम – कार्य सिध्दि = चन्दन कमल कट्टा रुद्राक्ष इ०

२. तामसी = हड्डियों की माला, कौड़ी, शंख फत्तरो की मालायें।

३. सात्विक = अन्तरमुख जाप श्रेष्ठ है।

इसमें कम से कम नित्य प्रतिदिन सवा घण्टा जाप करने पर मन्त्र शक्ति की अनुभूति आना प्रारम्भ होता है या तो ११ माला का जाप करना चाहिए। इससे जाद्या भी कर सकते है।

८. सामूहिक साधना – यह साधना करनी हो तो माला ढक्कर या गोमुखी में रखकर करे। एकान्त में खुली रूप से जाप कर सकते हो।

विधि = मन्त्र जाप मौन में करना चाहिए। जो कि मंत्र और कोई ना सुन पाये। माला जाप पूर्ण (१०८ बार) होने पर वह आँखों को और मस्तक पर स्पर्श करे विशेषत: रुद्राक्ष चन्दन, स्फटिक, मूंगा आदि हो तो आँखों पर

और हृदय को स्पर्श करे और पुनः जप करना हो तो माला सुमिरु के स्थान उलटकर पुनः शुरूवात कर सकते हो।

यहाँ केवल समय अन्तराल सवा घण्टा या सवा दो घण्टा ऐसा निश्चित करके ही जाप मन में करना उचित है।

९. **निर्माल्य** – पूजन साहित्य उपलब्ध न होने पर मानसिक पूजा श्रेष्ठ है तथा साहित्य द्वारा पूजा पाठ करने उपरान्त निर्मलय बहते जल में विसर्जित करना चाहिए, चावल अन्न धान्य हो तो पंछिओं को खिला दें जल, सूर्य को अर्ध्य दे या पीपल बरगद तुलसी आदि पेड़-पौधों में डाले।

१०. **नियम** – साधना में बीच में ही उठकर जप साधना खण्डित नहीं करना चाहिए किन्तु मलमूत्र त्यागने या विवशता उठना या प्रवास या बीमारी था अन्य विवशता वत कुछ कारणों से साधना खण्डित होती है तो स्नान या हाथ पैर धोकर पुनः साधना में बैठे और प्रायचित्त स्वरूप १ माला जाप या जितने दिन व्यवधान आया है उतने दिन की १, १ माला ज्यादा जाप कर लेना चाहिए तथा साधना में समय बदलना वर्जित है। नियमित निश्चित स्थान निश्चित समय और एक ही इष्ट भक्ति करना अत्यंत श्रेष्ठ है। यह तपस्या का स्वरूप है।

११. **सूतक** – जन्म-मृत्यु के सूतक में विधि विधान पूजा पाठ क्रियाएं सभी वर्ज्य है। उस वक्त पूजा स्थान-मन्दिर छोड़कर अन्यत्र केवल मनन या मानसिक जाप कर सकते है अतः यह जाप साधना में सम्मिलित नहीं है।

१२. **संयम** – मन चंचलता, चित्तों के विभिन्न विचारों इत्यादि संयम करना चाहिए और अपने इष्ट पर या गुरु के प्रति एकाग्र होना चाहिए। इसमें योगसाधना प्राणायाम आसनों मुद्राये किया तो अति उत्तम जिसमें संयम जल्दी हो जाता है।

१३. **साधना में साधन** – साधना में संकटे जरूर आती है किन्तु उससे निराश नहीं होना चाहिए और जल्दी लाभ न होने से अपने इष्ट गुरु या साधना पर अविश्वास नहीं करना चाहिए। अतः धैर्य- विश्वास-श्रद्धा-दृढ़ता-नित्यत्ता-गम्भीरता इसके बिना कोई भी साधना सफल नहीं होती।

१४. **सत्गुरु** – सबसे बड़ी बात साधक ने सत्गुरु द्वारा दीक्षित होना

अनिवार्य है क्योंकि गुरु बिना न ज्ञान है ना साधना है। गुरुदेव अनुभवी-आत्म साक्षात्कारी और साधनाओं के आने वाले संकटों व्यवधानों को और बाधाओं को दूर करने में सक्षम होना चाहिए शक्यतों साधक व शिष्य की शंकाये, अज्ञान, अन्धश्रद्धा, त्रुटियाँ कमियाँ इत्यादि समझाकर उसे अवगत कराकर ज्ञान प्रकाश की ओर ले जाने वाले होने चाहिए। विशेषत: सत्गुरु योगी तपस्वी ज्ञानी आत्मदर्शनी गृहस्थी से विरक्त त्यागवैरागी होना चाहिए तथा शिष्यों को संकल्प-दृढ़ इच्छा शक्ति, अटल विश्वास, श्रद्धा उसके भावनाओं की शक्ति तपस्या, एकाग्रता प्राणायामादि साधना ध्यान चिन्तन समाधि इत्यादि का समुची सर्वातोपरि ज्ञान अवगत कराना और अवगत करवाने वाले सत्गुरु होना चाहिए।

१५. संकल्प या दृढ़ इच्छा शक्ति – इष्ट की प्राप्ति हो या मन्त्र सिद्धि हो या गुरु सेवा हो जो भी उसके लिए दृढ़ इच्छा होकर अपने विवेक द्वारा साधक ने निश्चय किया। तो वही संकल्प बन जाता है। जिससे साधक के अन्तरिक गुप्त शक्तियों का प्रगटन होता है। जोकि इच्छा शक्ति के साथ संकल्प शक्ति का दृढ़ भाव होने पर अन्दरूनी अनेकें शक्तिओं का एकीकरण होकर मन के संकल्प से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तक शक्तियाँ प्राप्त होती है। जीवन की सफलता-उत्कर्ष उन्नति प्रगति उसी प्रकार जीवन के पतन असफलता अवनति यह सब मन के इच्छा संकल्पों से ही होती है। प्रत्येक क्रिया कर्म इससे प्रारम्भ होता है। दृढ़ संकल्प एवं इच्छा शक्ति मजबूत होने संकटों, कुविचार, आलस विभिन्न बुरी वृत्तियाँ इत्यादि का उस पर प्रभाव नहीं होता जो कि साधक प्रसन्न सुखी, शान्त एवं प्रसन्न रहता है।

१६. विश्वास-भावना-श्रद्धा – जहां श्रद्धा है वह सिद्धि है, जहां भाव है वहां भक्ति है, जहां विश्वास है वह कर्म है। फिर यहां ना सन्देह है ना तर्क-वितर्क है और नाहि कोई पतन! भावना से भक्ति, भक्ति से शक्ति तथा विश्वास श्रद्धा से आस्था जो शक्तियों की मूल स्तम्ब है। अत: साधक इष्ट को चाहता है या गुरु प्राप्त या गुरु कृपा चाहता है तो यह पहली शर्त है कि विश्वास एवं श्रद्धा अनिवार्य है। तब गुरुदेव सभी भ्रमों को निवारण कर देते है और साधना भक्ति सिद्धि आदि का मार्ग सुगम हो जाता है। अत: मन्त्र सिद्धि हो या तीर्थ यात्रायें हो या देवी देवता-ज्योतिष्य-वैद्य या

मुख्यता सत्गुरु हो इन पर श्रद्धा भाव रखे बिना कुछ प्राप्ति नहीं है। यह भावना साधक के गुप्त तथा अन्दर के चैतन्य, सुप्त शक्तियों को जागृत करती है। योग साधना ध्यान धारणा में भावना बिना सब यन्त्रवत है। अतः दैवी शक्ति या ईश्वर का चैतन्य हो या गुरु कृपा हो यह भक्ति युक्त मन अर्थात् भावनाओं पर श्रद्धा पर टीका है।

भाव बिना भक्ति, भक्ति बिना मुक्ति।

गुरु बिना ज्ञान, ज्ञान कैसे होय।

अतः साधक में विश्वास-भावना-श्रद्धा होना अनिवार्य है।

१७. साधना एवं तपस्या-उपासना

उपासना श्रद्धा भक्ति से तो साधना एवं तपस्या दृढ़वत कर्म से जिसमें अथक प्रयास व परिश्रम करना होता है।

जिसमें प्रतीक्षा या इन्तजार है। पूर्व काल में नाथ सिद्ध मत्स्येन्द्र नाथ जी गोरक्षनाथ जी इ० नवनाथ १२, १२ साल तपस्या करते थे। उनके शरीर कृष हो जाते वायु का आहार लेते थे ऐसी तपस्या ऐसा इन्तजार वह किया करते थे। आज तो केवल ऐसी तपस्याएं और साधनाएं केवल कहना-सुनना और पढ़ना, सुनाना ही रह गया है। फिर भी कोई विरला ही गुरुकृपा से कर लेता है। अतः दैवी सम्पदा हो, सिद्धियाँ हो या दर्शन साक्षात्कार हो इनके लिए तपस्या या साधना रूप में बहुत कीमत चुकानी पड़ती है। जहां तपस्या है, दृढ़ साधना है, भक्ति है, प्रामाणिक उपासना है, वहां शक्ति है, वरदान है भगवत् या आत्म दर्शन है। वहां सुख शान्ति है तो आनन्द है समाधान है, धन समृद्धि यश कीर्ति अतः सब कुछ अपने आप प्राप्त होता है। जोकि जीवन में तपस्या साधना भक्ति उपासना करना चाहिए।

१८. संयम – अपने काया में ५ कर्म इन्द्रिय ५ ज्ञान इन्द्रिय होते है और सभी इन्द्रियों में निहित शक्तियाँ गुप्त रूप से विद्यमान है। जिनका निग्रह करने के संयम कहते है। जैसे ज्यादा खाना नहीं को उपवास (व्रत) कहते है। ज्यादा बोलना नहीं तो मौन कहते है ज्यादा भोग न भोगने को ब्रह्मचर्य कहते ज्यादा देखना-सुनना नहीं जैसे बुरे चलचित्र बुरे साहित्य बुरे संगीत

इत्यादि पर संयम करना अर्थात् एकान्तवास इत्यादि निग्रह करने से सुप्त शक्तियाँ केन्द्रत होकर ईश्वर प्राप्ति, आत्म दर्शन या योग द्वारा कुण्डलीनि उत्थान अत: भक्ति ज्ञान वैराग्य इत्यादि सामर्थ्य प्राप्त होता है।

गो+रक्ष = गोरक्ष अर्थात् गौ यानि इन्द्रियों रक्ष यानि रक्षा करना अत: ॐ शिव गोरक्ष योगी इस मन्त्र से अभिप्रेत अर्थ है कि इन्द्रियों की रक्षा (संयम) करके योग अर्थात् ॐकार स्वरूप शिव की साधना–उपासना–तपस्या आदि करने पर जीव शिव का मिलन यानि योग होकर शिव स्वरूप गुरु गोरक्षनाथ जी को (आत्मा) साक्षात्कार होकर साधक मोक्ष मुक्ति स्वरूप हो जाता है।

अत: संयम न करने पर इन्द्रियों की मनमानी से साधक का पतन होकर चैतन्य आनंद, ऊर्जा सामर्थ्य एकाग्रता विवेक इत्यादि सभी शक्तियाँ नष्ट होकर साधक शारीरिक, मानसिक , बौद्धिक, आत्मिक हर प्रकार से विकारी–भिखारी होकर हीन दिन होकर पतन हो जाता है और उसे अभीष्ट फल, भक्ति शक्ति ज्ञान वैराग्य आदि कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

१९. व्रत (उपवास) – यह भी एक तपस्या है जो हर कोई कर सकता है। व्रत करते है अपेक्षित इच्छापूर्ति फल प्राप्ति कार्य सिद्धि इत्यादि साधना–तपस्या पक्ष में उपवास आत्मिक उत्थान कराता है। जिससे साधक की अन्तरात्मा शक्तियाँ, जागृति, चैतन्य तीव्र हो जाता है और क्रियाशील होती है। विवेक में वृद्धि होती है। विषयों वासनाओं तृष्णा पर संयम होकर मलीनता के प्रति विरक्ति आ जाती है। यह सब उपवासकाल में अनुभव होते है। उपवास कुम्भ की गीली मिट्टी समान बनाके जो चाहे बर्तन बना सकते है वैसे जीवन सुधारता है। उपवास व्रतों के साथ की गयी हर कोई साधना तपस्या उपासना शीघ्र फलदाई हो जाती है। मनन, चिन्तन में मानसिक, तथा व्यवहार में परमार्थ तथा प्राणायाम ध्यान धारण यहाँ तक की समाधि में भी उपवास व्रत का बहुत बड़ा सहयोग होता है। उपवास मन को पवित्र शुद्ध शक्ति ओजस भक्ति शक्ति सिद्धि की ओर अवश्य ले जाता है। अत: व्रत उपवास करना हर साधक को नहीं भुलना चाहिए।

२०. मौन – साधना हो ध्यान हो पूजन पाठ हो जो भी उपासना तपश्चर्या थे व्रत वैकल्य ऐसे सभी उपलब्धि में मौन रखना आवश्यक है तथा फलदाई

है जिसके द्वारा आत्मबल, मानसिक शक्ति की वृध्दि होती है। मौन व्रत यह भी एक उपासना है। मन्त्र शक्ति के लिए, शीघ्र फलदाई है। तपस्या मैं एकाग्रता में तथा पूजन पाठ से यह मौन गुप्त रूप से शक्ति संक्रमण में सहयोगी होता है तथा शक्ति सुरक्षित रहती है अतः सभी प्रकार के उपासना में मौन व्रत करना आवश्यक है।

२१. एकाग्रता – जप साधना में माला तो घुमाते रहते है। मन्त्र भी बोलते रहते है, किन्तु अस्थिर मन इधर-उधर भटकता रहना है। विक्षिप्त चित्त में अनेकों विचार आते रहते है या तो माला को गिनते ही रहते है। बार-बार आसन से उठने का मन करता है। अतः यह सब एकाग्रता न होने से होता है। साधना के लिए शान्त चित्त स्वस्थ स्थिर मन को होना तथा सदहृदय में श्रद्धा भाव भक्ति हो तो मन-चित्त सभी ओर से हटकर जप-ध्यान में एकाग्र होने लगता है और फिर जप होना ध्यान होना प्रारम्भ होता है और यह प्रयास निरंतर अभ्यास करने पर साधक सफलता पा लेता है। उसी प्रकार संसार के सभी बड़े-बड़े कार्य बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ है। वह एकाग्रता के बिना सफलता प्राप्त नहीं होती और दृढ़ता पूर्वक अभ्यास करते रहने से साधक के पूर्व बुरे संस्कार उलटे-पुलटे विचार तथा भटकाव धीरे-धीरे मिटते है और लम्बे समय उपरांत उसे एकाग्रता आती है और उसे त्याग वैराग्य आने लगता है। मन्त्र जाप या सिध्दि साधना करने में वह मन एकाग्र होने लगता है। इस एकाग्रता के लिए प्राणायाम भी बहुत उपयोगी होता है।

२२. प्राणायाम – मन प्राण के अधीन है। प्राण रूक जाते ही मन भी रूक जाता है। अतः प्राण पर आयाम अर्थात् संयम करने पर मन-चित्त पर भी संयम होकर साधना में एकाग्रता आती है जैसे-जैसे प्राणायाम का अभ्यास बढ़ता है वैसे-वैसे एकाग्रता भी बढ़ती है तथा मन चित्त वश में होने लगता है। उत्तरोत्तर सुप्त शक्ति का संचय होने लगता है और साथ-साथ मन्त्र जाप किया तो मन्त्र शक्ति बढ़कर इष्ट का दर्शन, सिध्दियों की प्राप्ति यहां तक की ध्यान धारणा समाधि में जाकर साधक मोक्ष मुक्ति में भी चला जाता है। अतः प्राणायाम में अनेक प्रकार की विधियाँ अभ्यास करने हेतु बतायी गयी है साधक अपने-अपने शरीर-इच्छा-उद्देश्य अनुसार प्राणायाम करके उस पर निश्चित रूप से विजय पा लेता है। १. सामान्य

प्राणायाम २. उज्जायी प्राणायाम ३. भ्रामरी प्राणायाम ४. शीतली प्राणायाम ५. सात्कारी ६. चन्द्र सूर्य भेदी ७. भास्त्रिका ८. कपाल भाती ९. काकी १०. भुजंगी ११. मूर्च्छा १२. प्लाविनी १३. केवली इत्यादि प्राणायामों से साधक शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक प्रगति करके ध्यान धारणा समाधि तक साधना को प्राप्त कर लेता है। तो तुर्यातित अवस्था प्राप्त कर मोक्ष मुक्ति का साधन बना लेता है।

२३. ध्यान – जिस प्रकार (भिंग) शिशा सूर्य की बिखरे हुए किरणों को उन तेज तत्व शक्ति को एकत्रित करके उसके नीचे रखे हुए कागज या कपड़े को जला देता है। उसी प्रकार ध्यान भी एकाग्रता भी अपनी बिखरी हुई मन चित्त इन्द्रियों की शक्ति से भले बुरे कर्म संस्कार जलाकर शुद्ध पवित्र बनाकर ध्यान में अभ्यास करते हुए समाधि तक साधक आरूढ़ हो जाता है। उसमें आसनों प्राणायाम मुद्रायें बंध इत्यादि साधना पक्ष का समावेश है, अभ्यास करना चाहिए। जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान उपलब्धि होकर आत्मदर्शन से आत्मज्ञान होकर साधक मोक्ष मुक्ति का अधिकारी हो जाता है। इस प्रकार एकाग्रता ध्यान के उपलब्धि से साधक संसार की छोटी-बड़ी समस्या को गम्भीरता से सुलझा सकता है और अनेकों उलझी हुई गुत्थियों का समाधान होकर अनेकों रहस्य प्रगट होंगे अतः ऐका ग्रता ही शक्ति का नाम है। उसका अपार सामर्थ्य है जो ध्यान साधना से अनेकों ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त कर वह मोक्ष मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

२४. ॐकार चिन्तन – शब्द समूह या नाद समूह ध्वनि समूह को मन्त्र कहते है। स्वरों पर ध्यान देकर मन्त्र का मनन चिन्तन करना जाप या ध्यान होता है। विशेष ध्यान एकाग्रता में होता है और वही शक्ति है वही भक्ति है और ऐसा ध्यान करने पर उस मन्त्र शक्ति का सीधा प्रभाव साधक के सूक्ष्म ग्रन्थियाँ षड्चक्र और शक्ति केन्द्रों पर पड़ता है कुण्डलीनि उत्थान होता है। और सूक्ष्म जगत में कारण जगत में अनेकों शक्तियों, रहस्यों, कायाकल्प हो जाता है। अतः ॐकार प्रणव मन्त्र सभी मन्त्रों का सार है मूल है आधार स्तम्भ है। जिसका सतत् मनन करने पर ॐकार की साधना ॐकार प्रणव मंत्र जाप का अभ्यास करने पर साधक परिपक्व अवस्था में सब कुछ पा लेता है। अतः ॐकार की उपासना श्रद्धा, भाव, विश्वास, भक्तिपूर्वक ध्यान तथा चिन्तन नित्य नियम से करना चाहिए जिस ॐकार

के प्रणव एक-एक शब्द एक-एक नाद उसके स्वर पर रूक-रूक कर धीरज पूर्वक चिन्तन मनन ध्यान करने पर एकान्त आसन बैठकर आँखे मूँदकर मौन धारण किये ॐकार का मूर्त रूप सन्मुख लाकर साधना करनी चाहिए। इस प्रकार ॐकार प्रणव जो सत्गुरु तत्व है, परमतत्व है, परब्रह्म है ॐ प्रणव में गुरुर्ब्रह्मा 'अ'कार, गुरुर् विष्णु उ कार, गुरुर् देवो महेश्वरा जो 'म'कार गुरुर् साक्षात् परब्रह्म ॐकार, तस्मै श्री गुरवे नमः अतः 'अ'कार ब्रह्म ज्ञान 'उ' कार से ईश्वर भक्ति तो 'म' कार से ईश्वर प्राप्ति तथा 'अ' से सृष्टि उत्पत्ति 'उ' से स्थिति तो 'म' कार से प्रलय का अर्थ ध्वनित होता है। जैसे 'अ' से मुख खुलता है 'उ' से विस्तृत तो 'म' से बन्द होता है। ऐसा ॐकार शिव शक्ति सत्गुरु पंचतत्व सम्पूर्ण सगुण निर्गुणमय सृष्टि चारों वेद आदि सभी रूप से इष्टमय है तो सभी का मुख्य आधार ॐकार है और ऐसे ॐकार परब्रह्म की उपासना साधना तपस्या जप ध्यान भजन आरती जो भी हो वह सब करना उत्तम है श्रेष्ठ है और वह ॐकार का भक्त श्रेष्ठ है।

।। इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि

साधना सिद्धि संकेत नाम

चतुर्थदशोऽध्यायः।।

ध्यान

पञ्चदशः अध्याय

।। ॐकार पर्वत के सानिध्य में ।।

बात सन् २००७ की है, श्रावण मास के समय हमारा श्री शैल कैलास मानसरोवर शुभ यात्रा को जाने का भारत सरकार दिल्ली द्वारा तय हो गया था। हम लगभग ४७ यात्री थे मेरे साथ मेरा शिष्य भूपेन्द्र सिंह और अन्य भक्त भी थे, दिल्ली से कैलास मानसरोवर पैदल यात्रा करते समय बीच में नाभी ढांग नामक स्थान पर ॐकार पर्वत के शुभ दर्शन करने का हमें शुभ अवसर प्राप्त हुआ तब मैं अपने आपको गुरु कृपा तथा गुरु गोरक्षनाथ अनुकम्पा से बड़ा भाग्यशाली समझने लगा, आज भी याद आती है तो हृदय गद् गद् हो जाता है और वह यादे, वह मंगलमय क्षण और अविस्मरणीय क्षण मैं भूला नहीं पाता।

प्रारम्भिक श्री गणेशा दिल्ली के गुजराती समाज साधन-साधन स्थान से हुई यहाँ ६-७-२००७ को भजन संध्या का कैलास तीर्थ यात्रा विकास समीति दिल्ली वालों ने शाम को आयोजन किया था भजन संध्या में हम सब शिव बाबा के मंगलमय भजनों में आनंद विभोर हुए थे। रात्री प्रीति भोज हुआ और हमें मन में आनन्द उत्साह था रात्री यात्रा के प्रति अनेक उमंगों के साथ विश्रांति ली।

प्रातः ठीक ७ बजे, ठीक ७ तारीख और ७ वा ही महीना और साल भी १९०७ था विशेषतः हमारे कैलासी यात्रा का बँच न० भी ७ ही था। ऐसे अनोखे योग संजोग को देखते सभी हम को कहते थे आपकी बँच बहुत लक्की है तथा शुभ ७ अंक ने साथ दी है। मेरे भक्त परिवार तथा अन्य यात्रियों के कुछ रिश्तेदार सभी ने शुभकामना देते हुए हार पुष्प नारियल फोड़ते हुए हमारा यात्रा प्रवास शुभारम्भ हुआ, आगे रस्ते में गाजियाबाद में अखिल भारत कैलास मानसरोवर समिति वालों ने हमारी बस को रोककर हमे आमंत्रित किया। वहां स्वागत चाय पाणी जलपाण तथा शुभकामना देते हुए। हमारा पुनः प्रवास शुरू हुआ बस अन्दर सभी यात्री बड़े खुश थे जोर-जोर से भोले का जय-जयकारा तथा भजन गाते थे उनका उत्साह बढ़ता ही गया। आगे मुरादाबाद में त्यागी परिवार तथा और भक्तों ने पुनः फूल माला, मिठाई आदि से सत्कार किया और पुनः भोले की जय-जयकार में प्रवास प्रारम्भ हुआ जब हम काठगोदाम पहुँचे

यहां भी कुमाऊँ मण्डल विकास निगम वालों ने बड़े आनन्द भरा स्वागत किया। उन्होंने हमें तिलकदान माल्यार्पन तथा जलपान करके भूरी-भूरी प्रशंसा की फिर वहां से अल्मोड़ा के लिए प्रस्थान किया। अल्मोड़ा देर शाम को पहुँचे यहां भोजन पश्चात् विश्राम किया। यहां नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वर तथा योगी सुन्दरनाथ जी आश्रम अल्मोड़ा में से भक्तों सह प्रेमभाव तथा शुभेच्छा देने आये थे।

प्रातः ५ बजे ही हम ३४० किलो मीटर धारचुला के लिए रवाना हुए रस्ते में प्राकृतिक सौन्दर्य देखते हुए भीमताल का अनुपम सृष्टि का आस्वाद लेते हुए शाम करीब ६ बजे धारचुला पहुँचे यहां रात्र भोजन-विश्रान्ति की कुछ बाजार खरीदो की और दूसरे दिन बस में स्थान मंगति पहुँचे यहां चाय नास्ता-पानी करके निकले आगे रास्ता नहीं था अतः यहां से पैदल यात्रा प्रारम्भ हुई। सबके मन में बहुत उत्साह अनेक उमगों तथा श्रद्धा के साथ चलने लगे वहां की पहाड़ी सौंदर्य हरी-भरी धरती, झरनों की निश्चलता यह सब मन को मोह लेती थी आँखे दूर-दूर तक देखते-देखते यह अनुपम सौन्दर्य का आनन्द लूट रहे थे। ३ कि.मी. चढ़ाई चढ़कर स्थान गाला पहुँचे रात्र में भोजन पश्चात् भगवान भोलेनाथ के सूरमधूर भजनानन्द लिया थके हुए सब निन्द्राधीन हो गये प्रातः जल्दी ही निकले वातावरण में सभी ओर बादल छाये हुए थे ठण्डी-ठण्डी हवा मन हरा-भरा कर रही थी फूलों की सुगंध और बादलों में चलना मन तो आनंद घन-वन हो गया था। अब १८ कि.मी. उतराई में हमें १० घण्टे लगे आगे-आगे रास्ता पथरीला, बड़े-बड़े पत्थर रस्ते में फिसलने का डर था नीचे बड़ी-बड़ी खाईयाँ और सीधी उतराई की ढलान, बाबा भोलेनाथ का भजन स्मरण में यह कठिन प्रवास करते हुए स्थान लखनापुर पहुँचे यहां से काली नदी के साथ-साथ चलना होता है, काली नदी भारत, नेपाल के बीच में सरहद रूप से बहती है। इस पार हिन्दुस्तान तो उसपार नेपाल हम चलते ही रहे। अब रास्ता भी सुखकारक था रास्ते में उछलाते बहुत झरने मिले उनको मानों वह छोटे बच्चे खिल-खिलाकर हँसते है ऐसे लगते थे हमने उन झरनों से बहुत आनन्द लिया आगे लामाटी गाँव मिला यहां गरमा-गरमा चाय पीये, उत्साह के साथ माल्पा कस्बा में पहुँचे यहां कुमाऊँ विकास निगम वालों ने सबको मध्याह्न का भोजन परोसा थोड़ी विश्रान्ति के बाद पुनः चलना जारी रखा

वहां से हम बुद्धि स्थित शिविर में पहुँचे रात्री को यहाँ भी भोजन पश्चात् अनेकों भक्ति मय भजन का आनन्द लिया। प्रातः हम सब स्थान गुंजी जाने के लिए निकल पड़े ५ कि.मी. बहुत दुर्गम चढ़ाई थी। थकान महसूस होने लगी बार-बार झरनों का पानी हाथों की अंजलि भर-भर के पीने में बहुत अच्छा लगता था। गरम शरीर को शान्ति मिलती थी। धीरे-धीरे हम छियालीक घाटी में पहुँचे यह घाटी तो अत्यंत मनोहर थी प्रवेश करते ही सुन्दर-सुन्दर और दुर्लभ पर्वतीय पुष्प जो आईटीस, मई एपल, फ्लावर कस्तूरी, कमल इत्यादि जो की इनके सुगन्धि में हम धुन्ध हो गये, शुभ्र शुभ्र हिम नदिया खिल खिलाता ठण्डा जल, हम नई उत्स्पुर्त भाव तथा चैतन्य निर्माण कर देती थी। वहां के हरे-भरे रास्ते, दूर-दूर तक हरियाली को देखते-देखते मन को अह्लादता शक्ति तथा शीतलता मिलती थी और ऐसे अत्यंत रमणीयता को देखते वहां से जाने को मन नहीं करता था। आगे-आगे तो स्थान गुंजी को जाने वाले मार्ग के दुतर्फा घने-घने, हरे-भरे और सुगन्धित पेड़ो ने तो वहां का सारा वातावरण सुगंधित किया हुआ था। मानों हमारे आने की उन्हे खबर लग गई हो और हमारा सुगंधित स्वागत कर रहे हो। हम धुन्ध होकर चलते रहे आगे काली नदी और टिंकट नदी का संगम मिला यहां की अनोखी घटा देखने को मिली मानो की स्वर्ग सा मधुबन हो वहां प्राकृतिक कला सौन्दर्य से हम ओत-प्रोत हो गये और हम सब आनन्द तथा प्रेम वर्षा व करते हुए गुंजी पड़ावपर पहुँच गये अब आज छटा दिन था अतः यहां दो दिन विश्राम था। यहां भारत-तिब्बत सीमा रक्षा दल वालों ने हमें बहुत अपनापन दिया यहां पर पुनः चिकित्सा हुई स्वादिष्ट भोजन नाश्ता, चाय यह सब स्वर्गानंद मिल रहा था। फिर हम विश्रांति के पश्चात् गाँव कालापानी को जाने निकले यहां काली नदी का उगम होता है और इसी उगमपर माता काली का सुन्दर मंदिर है। मन्दिर के सामने ऊँची पहाड़ी है। जिसपर वेदव्यास मुनि जी की तपोभूमि की गुफा थी। कालापानी स्थान में हमारा एक मुक्काम हुआ यहां तलहटी में गरम पानी के झरने है। सभी ने वहां स्नान-विश्राम का आनन्द लिया हमें यहां बहुत अच्छा लगा नदी के उगम स्थान पर ध्यान में क्या अनुभूति होती है। इस उद्देश्य से रात्री तथा प्रातः वही मंदिर में ध्यान क्रिया भी की तथा साथ भक्तों को भी मार्गदर्शन किया। अब आगे ९ कि.मी. की सीधी चढ़ाई थी जिसमें प्राणवायु की कमी थी। हम चढ़ाई चढ़ने लगे अतः

काली नदी पीछे ही छूट गयी और पर्वतों की ऊँची-ऊँची श्रृंखला की ओर चलने लगे आगे-आगे पेड़-पौधे भी खत्म हुए केवल रास्ता ही नीला, पीला, जामुनी रंगों से रंगा दिखाई देता था। हवा की तेज रफ्तार में सभी को बड़े कष्ट होने लगे किन्तु हम जय भोलेनाथ, जय बम्ब भोले के नारे लगाते वह पर्वता रोहन कर रहे थे। अब तो मौसम भी धीरे-धीरे बदलने लगा, अतः हमें नाभिढांग की छूटपूट बस्ती दूर से ही दिखायी पड़ी और यही हम सभी को उस परम पावन ॐकार पर्वत के साकार दर्शन होने वाले थे। जो ऐसे भाग्यशाली दर्शन भाग्यवंत को ही होते है।

।। चलो चले ॐकार की ओर ।।

नाभिढांग छोटा सा कस्बा था। चारों ओर ऊँची-ऊँची पर्वत श्रृंखलायें और उसमें घीरी हुई यह बस्ती, घाटियों को घुमावदार पगडंडी वाला रास्ता, सर्वत्र निर्मलता ऊपर निर्मल आकाश तो नीचे रंगबिरंग धरती सुन्दर-सुन्दर बर्फिले झरने उनकी उछलने की आवाजे और सूः सूः बहती ठण्डी-ठण्डी हवाये। यह सब मन को धूंध मधुर और मदहोश बना दिया था। वो प्राकृतिक नजारा आनंद से पुलकित करता था। दक्षिण दिशा में एक बर्फाछादित पर्वत जहां ऐसा बर्फ गिरा था कि जो सारा पर्वत नाभिके आकार में दिख रहा था और वह माता पार्वती की नाभि है ऐसे वहां के लोक कहते थे जो कि उस स्थान का नाम नाभिढांग इसी नाभिपर्वत के कारण रखा गया था। उत्तर के तरफ का पर्वत बिल्कुल नाग समान फना फैलाये दिख पड़ता था उसे "नाग पर्वत" नाम से सम्बोधित करते थे। यह प्राकृतिक हिम-प्रतिमायें बर्फ से बन जाती थी तो कभी बादली के चादर में ढक्कर फिर विलुप्त हो जाती थी। इन को नमस्कार करते हुए हम पूर्व के तरफ बढ़े। तो सामने ही पूर्व दिशा को ॐकार पर्वत का भव्य दिव्य साक्षात्कार हो रहा था। यहां से साधारण १ कि.मी. नाभिढांग बस्ती थी हम वही सभी रूक गये क्योंकि वह ॐकार पर्वत तो मेघमालाओं से ढका हुआ लुप्त हुवा था तब हमने सभी भक्तों को कहा कि चलो चले ॐकार की हम प्रार्थना करेंगे भगवान ॐ नमः शिवाय की प्रार्थना करे अतः सब की सब बम बमऽऽ भोले की जय, भोलेनाथ की जय, शिव शंकर की जय, ऐसी जोर जोर से नारे लगाने लगे, मेरे साथ के भक्त भी दोनों हाथ उठाये जोर-शोर से अलख निरंजन, ऽऽ अलख निरंजन कहने लगे मानो सब उस

ॐकार परमात्मा को पुकार रहे है, सब जैसे नादान बच्चा खोई हुए अपने माता को पुकारता हो। तब वह नारे ॐ नमो शिवाय ऽऽऽ बोले बम्ब बोले बम्ब अलख निरंजन के नारे चारों तरफ की पर्वत शृंखला पर टकराकर वापस आती थी। वहां नाद प्रतिनाद ध्वनि प्रतिध्वनिओं से सारा वातावरण गुंज रहा था। चैतन्य मय हुआ था। ऐसे नितान्त शान्त वातावरण में अचानक भक्ति की उमंग शायद पहली बार हो रही थी। वहां के कस्बे-बस्ती के लोक कुछ सुरक्षा कर्मी भी बाहर आकर आवक होके देखने लगे। हम भी बहुत अन्तकरण से ॐकार आदिनाथ ॐकार शिव ऽऽ ॐकार ॐकार गोरक्ष की प्रार्थना करने लगे हम तो वही एक छोटे से टिल्ले पर बैठकर और ॐकार भजन गाने लगे ॐ मंगलम् ऽऽऽ साथ में भक्तों ने भी तालियां बजा के त्रिताल में हम भजन गा रहे थे जैसे-जैसे बादल ॐकार पर्वत से यह हटने लगे और थोड़ा सा ॐ का दर्शन होये तो सब रोमांचित होकर और जोर से अलख निरंजन अलख निरंजन बम्ब-बम्ब भोले बम्ब बोलते थे। पुनः पीछे से बादलों से ॐ लुप्त हो जाता था फिर सबकी आवाजे कम होकर सब नाराज हो जाते थे ऐसा कम से कम आधा-पौन घण्टा यह ॐकार की माया चल रही थी किन्तु वहां से कोई हटने को तैयार नहीं थे। वह उन भक्तों की भावनायें उनका ॐकार के प्रति इन्तजार उनके चेहरो पे भक्तिमय उत्साह उनके उत्कट भाव तथा भावनाओं का अन्दाज नहीं लगा पा रहे थे। अन्त में उस ॐकार परब्रह्म ने हम सब की पुकार सुन ली, सबकी भक्ति से प्रसन्न होकर हम सब की दया आ गयी और अब धीरे-धीरे वह घटाये हटने लगी जैसे-जैसे ॐकार पर्वत चोटी के बादल हटकर ॐकार का बर्फीला आकार नजरों में आने लगा सारे के सारे एक साथ जोर-जोर से शिव का जयजयकारा करने लगे यह रोमान्वित प्रसंग इतना भावपूर्ण उत्फुर्त आनंद भरा था, इतना चैतन्यमय था कि हम मनोमनगद्गद् हो उठे। अतः ॐकार का स्पष्ट रूप, प्रगट रूप सामने निखरने लगा वह प्रत्यक्ष प्राकृतिक प्रमाणित प्रमाण सह अत्यंत शुभ्र पवित्र परम पावन परमात्मा ॐकार का दर्शन हो रहा था, साक्षात्कार हो रहा था। सभी भक्त रोमांचित हो रहे थे सबके मुखमण्डल अत्यंत प्रसन्न दिख रहे थे। हाथ जोड़-जोड़ कर सब नमस्कार करने लगे कोई कोई साष्टाग दण्डवत तो कोई मस्तक झुकाकर नमस्कार कर रहे थे। तो कोई दोनों हाथों उठाये नमन कर रहे थ

सबने अपने-अपने प्रेरणावत संस्कारवत दर्शन किये। हमने भी गद्गद् हृदय से नादि बजाकर वन्दना की जिसे नाथ सिद्ध योगेश्वर नाद ॐकार या ॐकार नाद या ॐकार उठाना या ॐकार आदेश करना कहते है और आज मैं इस परब्रह्म प्राकृतिक ॐकार के सन्मुख नाद ॐकार उठाने का प्रत्यक्ष अनुभव ले रहा था। मैं अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली समझने लगा। इधर सभी फटाफट अपने-अपने कैमरों से, तो कोई वीडियो-कैमरें से फोटो खींचने लगे सारे उस भगवान ॐकार के सभी दिशाओं से सभी ऐंगल से उन्हें कैद कर रहे थे जो कि मानो किसी नायक की फिल्म बना रहे हो और सच तो यह है कि ॐकार सभी सृष्टि का, सर्व प्रथम सबका मूल सब कुछ कर्ता धर्ता अर्थात् अनन्त कोटी ब्रह्माण्ड का नायक है।

अत: एक सुरक्षा कर्मी हम सबको बुलाने आया था और हम सब यात्रीओं को नाभिढांग बस्ती में ले आया। यहां हमारे विश्रान्ति खाना-पीना आदि व्यवस्था हो गयी थी। यही रात्री में पड़ाव होने वाला था तब सभी निश्चल हो गये थे। एक-एक कमरे में १०-१०,१५-१५ लोक की विश्राम व्यवस्था हो गयी तब भोजन को बुलाया गया सब थके हुए बड़े रूचि स्वाद से भोजन कर रहे थे सब खुशी-खुशी भोजन कर रहे थे एक-दूसरों को आनंद बांट रहे थे मानो उन्होंने बहुत बड़ी उपलब्धि को पाया हो अब बाहर धूप पड़ी थी। हम और भक्त साथ बाहर खुले आकाश में भोजन कर रहे थे सामने ही परम ईश्वर ॐकार पर्वत स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

हम बहुत ही भाव भरे और एकाग्र होकर सोच रहे थे कि देखो जो ॐकार स्वरूप को हमने ग्रंथ किताबों में पढ़ा था, तस्वीरों फोटों में देखा था इनके विषय में बहुत सारा सुना था वह आज प्रत्यक्ष दर्शन दे रहे है। जीवन की सार्थकता स्पष्ट हो रही थी। इतने में अन्तर मन से एक प्रेरणा आ गयी, और अचानक विचार टकराया अभी तो काफी समय है क्यों ना हम ॐकार पर्वत के स्पर्श दर्शन कर ले ऐसा शुभ मौका फिर कब मिलेगा। वह लालसा वह भाव को हम रोक नहीं पाये और हम सभी को एकदम से कहने लगे "चलो चले ॐकार की ओर" चलो हम ॐकार पर्वत के तलहटी जाकर स्पर्श दर्शन करेंगे किन्तु कोई भी मेरे साथ आने को तैयार नहीं थे। क्योंकि वह सब बहुत थके हुए थे, कोई कोई तो निद्राधीन भी हो गये थे तब एक मध्य प्रदेश गुणा गाँव के प्रेमनारायण खुशुबा नाम के भक्त साथ आने को तैयार हो गय

मुझे आनंद हुआ और उत्साह बढ़ गया। हमने मुख्य यात्रा अधिकारी LO साब श्री दिलीप सिन्हा को बताते हुय निकल पड़े। किन्तु थोड़ा अन्तर चलने के बाद २-३ ISBT के जवान पीछा करते हुये आये और रोकते हुए कहने लगे। आप लोग मत जाईये, उधर जाना मना है। जोकि ॐकार पर्वत स्थान भारत, तिब्बत तथा चीन की सरहद पर ही है। सीमा अधिकृत है। वहां जाना धोके से कम नहीं है, वहां कुछ भी हो सकता है। वहां तो हम जवानों को भी जाना वर्जित है। तुम्हारा जाना दुर्लभ है। बारिश के कारण पानी का बहाव बढ़ा हुआ है। जगह-जगह दलदल है रास्ता बहुत खराब है ऊपर पहाड़ों से बड़े बड़े पत्थर नीचे को गिरते है। यहां से ८-९ कि.मी. दूर है और रास्ता बहुत संकीर्ण है। अत: मौसम भी ठीक नहीं है। बस हमारी सारी उमंगे सारा उत्साह धड़ा धड गिर पड़ा हम तो नीचे बैठ ही गये। इरादो पर पानी बरस रहा था अब क्या करे? हम बहुत ही व्यथित हो गये थे। हमने आकाश की ओर देखते हुए प्रार्थना करने लगे हे भगवत् हे ॐकार गुरुदेवा है ॐकारा हमें इतना पास होकर भी, हमें क्यों दूर कर रहे हो। हमारी अवस्था देखकर उनमें से एक जवान ने सलाह दी कि आप हमारे कमाण्डो ऑफिसर को सूचना देकर या उनके अनुमति से जाने का प्रयास करो। विवशतावत और बड़े आश्चर्य से हम सोचने लगे। कि इस प्राकृतिक परमात्मा ॐकार दर्शन के लिए भक्त को क्या किसी की अनुमति लेनी पड़ेगी ? फिर गुरु स्मरण कर हम उन्हें मिलने गये। तब उन्होंने भी कहा की आप मत जाईये आपको रास्ते की जानकारी नहीं है। आप भटक जाओगे या फस जाओगे हम भी कानूनन किसी जवान को आपके साथ नहीं भेज सकते, यहाँ जाना कानून तथा यात्रा नियम बाह्य है। इत्यादि कहते रहे । आखिर हमने फकीरी स्वभाव बोली भाषा में कहने लगे कि हम आकाश वृत्ति में रहने वाले हमें क्या होगा? हम संत है और दर्शन करना हमारा हट है। हम स्वयं हमारी जवाबदारी लेंगे। ॐकार तो सृष्टि के उत्पत्तिकर्त्ता है मूलतत्व है। हम वहां उस स्पर्श सानिध्य में जायेंगे तो प्राकृतिक ॐकार इस परम ईश्वर से कुछ ना कुछ अवश्य प्राप्ति होगी ज्ञान होगा। अत: हम थोड़ा बहुत साहित्यों का लिखान भी करते है। इसलिए कुछ उपलब्धि कुछ अनुभूति वहां हो जायेगी तो यहां आने का सार्थक होगा। मुझे विश्वास है। परमगुरु ॐकार हमें कुछ ना कुछ नई अनुभूति अवश्य देगें आप हमें जाने की अनुमति दे दो ॐकार भगवान को साक्षी रखते हुए दे दो ता

हमें कुछ नहीं होगा और हम स्पर्श दर्शन करके निर्विघ्न वापस आ जायेंगे। तब उन्होंने हमारी भावना और उपदेश से प्रसन्न होकर हमें जाने की अनुमति दे दी। हमें हर्ष हुआ और पुनः नयी चैतन्यता के साथ हमने यात्रा को प्रारंभ किया। तब दिन का १ बजा था। हम दोनों ही बड़ी अतुरता क साथ झपा-झपा चल रहे थे चलते-चलते इधर-उधर देखते थे थोड़ा सा डर-आनन्द-उत्सुकता और लगन के साथ चलते रहे २-४ कि.मी. पहाड़ी रास्ता पार किया तो रास्ते में बड़े वेग से बहते झरने लगे, एक बड़ा झरना सन्मुख आया अब इसे पार कैसे करे ? देखा वहां पेड़ की लम्बी लकड़ी थी, पानी के ऊपर पुल सा बनाकर हम सर्कस कसरत करते-करते उस पार चले गये। फिर चलते रहे इतने में फिर मौसम बदल गया आकाश में घने बादल छा गये क़ाली-काली घटाये ठण्डी-ठण्डी हवा की वो मार पड़ रही थी और बून्दा-बान्दी भी होने लगी। साथ वाले ने तो हिम्मत हारी, आगे जाने को मना करने लगा। हमने उसे हिम्मत दी कहा चलो हमें तो ॐकार स्पर्श दर्शन करना ही है। भगवान पर तो विश्वास करो और मैं आगे-आगे अकेला ही चलने लगा अब तो वह वापस भी अकेला नहीं जा पा रहा था और फिर हम साथ हो लीये। भिगते हुए चल रहे थे नदी के पात्र में से होकर चलना पड़ा, बहुत दलदल थी जमकर पांव रखते हुए चलना पड़ा कदम-कदम पर थे मुश्किले नहीं आसान, हमें तो उन सूः सूः हवाओं के लहरे नादों में उन बहते हुए जल लहरियों में, आकाश के बादलों की आवाजे में बस ॐकार नाद का ही अहसास हो रहा था ॐॐ की ध्वनि सी सुनाई दे रही थी पता नहीं हमको तो बहुत ज्यादा ही हिम्मत आयी हुई थी। फिर अलख निरंजन ऽ ऽ अलख निरंजन कहते हुए रम्मत करते फकीरी आवेश में मैं चलता रहा और आखिर हम ॐकार पर्वत के तलहेटी में आ पहुँचे मौसम बदल गया था धूप तथा सूखा हो रहा था। ॐकार पर्वत से ॐकार बर्फ पिघलकर पानी नदी में बह रहा था। मनोमन में दिग्मूढ़ हो गया, बहुत खुश था, आनंद भरा स्पर्श कर रहा था। चीन, भारत, तिब्बत, प्रवास-दलदल इत्यादि सरहद कानून अतः सब कुछ भूल चुका था। साथ वाले के पास धूप अगरबत्ती थी, माचिस भी थी, हमने कहा चलो पूजा करे हमने हाथ में जल, गंध तिलक स्वरूप वहीं की जल और मिट्टी से पूजन किया धूप लगाया मेरे पास सूंघने के लिए रखा कर्पूर मिल गया वह भी जलाके आचवाया स्पर्श दर्शन मन भर के लिया वहा

नतमस्तक होकर पुनः नादी बजते हुए हमने आदेश किया और अब मन शान्त हुआ और तब एक चट्टान पर बैठकर ॐकार पर्वत की गोद में बैठकर सद्गुरु स्मरण करके ॐकार परब्रह्म का ध्यान करने लगा। हवा तेज थी आँख-कान सब बन्द करके अन्तरमुख होने का प्रयास किया। १०-१५ मिनट प्राणक्रिया भी की उस पवित्र वातावरण और पावन भूमि में तुरन्त ध्यान लग गया। वहां अनुपम और अगम्य अनुभूति हो रही थी पौन घण्टा खूब आनंद लिया आत्मानंद मिला, जब आँखे खोली तो अन्दर जो देखा वही सन्मुख ॐकार पर्वत पर बर्फ भरी आकार दिखाये पड़े वहां ३ ॐकार देखे एक ॐकार पर्वत के दाहिने अंग में श्री ब्रह्माजी का ॐकार दिखायी दिया जो तीनों ॐ अक्षर से स्पष्ट दिखाई दे रहे थे बीच में मुख्य ॐकार सम्पूर्ण ॐ आकार में प्रत्यक्ष ॐकार आदिनाथ शिव जी का था बांये अंग में श्री विष्णु जी का ॐकार था, जो थोड़ा अस्पष्ट दिखायी दे रहा था। अब आकाश से भूरी-भूरी बर्फ गिर रही थी और क्षण भर में वहां विराट रूप में ३ आकार बने जो स्पष्ट रूप में शिव पार्वती तथा साईड पोज में हनुमान दिख पड़े यह सब दर्शन साक्षात्कार देखकर मन पुलकित हो उठा और नद मस्तक होकर नादी आदेश, ॐकार आदेश करता रहा और मनपूर्वक नमस्कार किया। उसी समय प्रसाद रूप में वहां की मिट्टी हमने ली। आनन्द मन में समा नहीं पा रहा था तो हमें बर्हि मुख होना पड़ा और तब उस प्रेम नारायण साथी को पुकार के तीनों स्वरूप दिखाये वह भी भाव पूर्ण नद मस्तक हो गया और आनंद में झूमने लगा।

जब इधर से निकलते समय बड़ी गड़बड़ी में कैमेरा लाना भूल गये बहुत नाराज हो गये थे। अतः उस भक्त ने वापस चलने की तैयारी की चलो चले हम भी पुनः पुनः नमस्कार करके चल पड़े, अब हमे रास्ते का ज्ञान हो गया था। वह आगे-आगे तो हम पीछे-पीछे चल रहे थे। ध्यान अनुभूति से उस ॐकार मय पर्वत से प्यार हो गया था और अब उसका विरह असाध्य होने लगा हम साधु-संतों को ऐसे पवित्र स्थान, ऐसा निर्मल वातावरण एवं प्रचितीयुक्त साधना का स्थान महात्म्य इन चीजों से नैसर्गिक प्रेम हो जाता है। हमें यहां ध्यान में प्राप्त हुआ बहुत कुछ था जो कह नहीं सकते वह सब स्मरण करके संस्कारित कर उसकी गड्डी बांधे संजोगे रखते हुए वापसी चल रहे थे अब हम बिल्कुल शांत, गम्भीर तथा अन्तर मुख समाधान आनन्द

लेकर ही चल रहे थे रास्ते मे पुनः वही कठिनाईयां आयी किन्तु वह हमें जाने पहचानी सी लगी पुनः उन्हीं उपायों से रास्ता काटते हुए कैम्प के पास लौटे। १-१/½ कि.मी. से हमने देखा कि कैम्प पर सभी हमारा इन्तजार में रास्ता देख रहे थे वह सुरक्षा जवान दूरबीन लगा के देख रहे थे तब हमने हाथ उठा के हवा में लहरा-लहरा कर इशारा दिया कि लो हम आ गये। हम साधारण ५. ५.३० बजे कैम्प में पहुँच गये सभी बड़े चिन्ता में थे विशेषतः हमारे यात्रा अधिकारी LO सर क्योंकि हम सबकी जवाबदारी उन्ही के ऊपर थी। अतः उन्होंने भी मेरा स्वभाव हट जान गये थे फिर हमने खूब-खूब ॐकार की बाते की बहुत कुछ कहा वह भी सुनकर खुश हो रहे थे। रात्री भोजन उपरान्त हमने झट से हमारी डायरी में सारा प्रसंग नोट किया। हम बहुत थक गये थे अतः हमें गाढ़ निन्द्राधीन हो गये।

दूसरे दिन हमें प्रातः निकलना था। आगे ९-१० कि.मी. सीधी ऊँची चढ़ाई थी और चायना बॉर्डर जो लिपुलेख स्थान पर जाना था। जब प्रातः ४ बजे हम निकले तो तब बारीश चल रही थी सभी ने बरसाती पहन कर हम सब ने एक बार फिर ॐकार परमात्मा को नमस्कार करते हुए आगे कैलास मानसरोवर यात्रा जाने का प्रारंभ किया।

एक ओंकार तेरा आधार।

तीन लोक में जय जय कार॥

श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश॥

"ॐ"

॥ वन्दना॥

प्रेममय, प्रेमानन्द प्रेम मकरानन्द प्रेम हो ॐकारा।
सगुण हो निर्गुण हो रूपो की अनन्त थाह हो ॐकारा॥धु॥
ज्ञान हो अज्ञान हो सत्य स्वयं पूर्णज्ञान हो।
प्राण हो अपान हो चलता ओहं-सोहं गान हो॥
द्वैत हो अद्वित हो परम्परा की आनंद खान हो।
शृति हो स्मृति हो जगत संसार मूल ज्ञान हो॥
प्रेममय, प्रेमानन्द...॥१॥

अगम हो निगम हो जनम मरण अमर धाम हो।
संहार हो प्रतिपाल हो उत्पत्ति मूल जनन हार हो॥
वेदमूल हो शास्त्र पुराण हो सब विद्याज्ञान हो।
योग याग हो ज्ञान ध्यान हो मोक्ष मुक्ति आधारा हो॥
प्रेममय, प्रेमानन्द.......................................॥२॥

साधु–संत सब तुमको ही गाते।
ज्ञानी ध्यानी सब तुमको ही पूजते॥
जन मन प्रिय प्रेम तुमको ही करते।
प्रीत सदा भक्ति भी आस तुमसे ही रखते॥
प्रेममय, प्रेमानन्द.......................................॥३॥

सत्य सनातन, सनाथ नाथ, सदगुरौ ॐकारा।
अलख निरंजन निर्गुण निराकारा करो अब उद्धारा॥
भवान्तका भ्रमान्तका मदान्तका भवभयहारा।
नाथ विलास करु वन्दना अब तो तुम ही सहारा॥
स्वरूपी स्वरूप में स्वरूप स्वाहा हो ॐ कारा॥
प्रेममय प्रेमानन्द प्रेम मकरानन्द प्रेम हो ॐकारा
सगुण हो निर्गुण हो रूपों की अनन्त थाह हो ॐकारा॥४॥

॥ इति श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि
ॐकार पर्वत सानिध्य नाम
पश्चदशोऽध्यायः॥

इति श्री श्री नाथ सिद्ध ॐकार सिद्धि साधना वैवस्वत मन्वन्तरे ॐकार महात्मे सम्पूर्ण।

श्री नाथ सिद्ध गुरौ आदेश। आदेश॥ आदेश॥।

॥ सत्याः सन्तु मम कायाः या विश्व शान्ति कामाः॥

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

पुस्तक प्राप्ति स्थान–

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड) फोन : 01334-226583

www.yogigorakshnath.org e-mail : media@yogigorakshnath.org

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह॰ जिला-रोहतक (हरियाणा)

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

	पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	200/-
2.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	250/-
3.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	400/-
4.	श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	65/-
5.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
6.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	125/-
7.	श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	35/-
8.	श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
9.	श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	6/-
10.	श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	70/-
11.	श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	80/-
12.	श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
13.	श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु योगी विलासनाथ जी पुजारी)	150/-
14.	योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	30/-
15.	गोरक्ष स्तवांजलि	योगी भंभूलनाथ जी	15/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
16. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
17. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	10/-
18. गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
19. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
20. भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	5/-
21. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	70/-
22. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	योगी वीरनाथ जी	8/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	20/-
24. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
25. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
26. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
27. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
28. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
29. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
30. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
31. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र

(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	50/-	60/-
5×5 इंच	70/-	80/-
7×7 इंच	90/-	110/-
9×9 इंच	300/-	325/-
12×12 इंच	425/-	450/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P / C = 5 " X 3.5"	5/-	–
बड़े फोटो B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB / C = 10 " X 5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B / C = 10 " X 8 "	35/-	–

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5"X3.5"	3/-	-

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	10/-	70/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	10/-	70/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	40/-	300/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	25/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 250/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	5/-, 10/-, 15/-, 20/-, 25/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट	10/-, 15/-, 20/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	10/-, 20/-, 25/-, 40/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में छोटे, बड़े	25/-, 30/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के	1500/-,
आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-,
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	

मूर्तियाँ (धातु में)

नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्र (पीतल की प
1. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9 "	2 Kg	1100/-	800/-
2. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3 आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4. आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	500/-	
5. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DV
अमृतांजलि (भाग-1) गोरक्ष चालीसा, भजन इत्यादि	गायक-सोमनाथ शर्मा	35/-	
अमृतांजलि (भाग-2) चौरासी सिद्ध चालीसा, भजन इ०	भजन रचना-योगी विलासनाथ	35/-	
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	35/-	
श्रीनाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी) कम्प्यूटर फ्लॉपी	रचना-योगी विलासनाथ	45/-	

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम D. D. भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा V.P. L., V.P.P. से भेजा जायेगा।

अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

ॐकार पर्वत के सानिध्य में योगी विलासनाथ

13–7–07

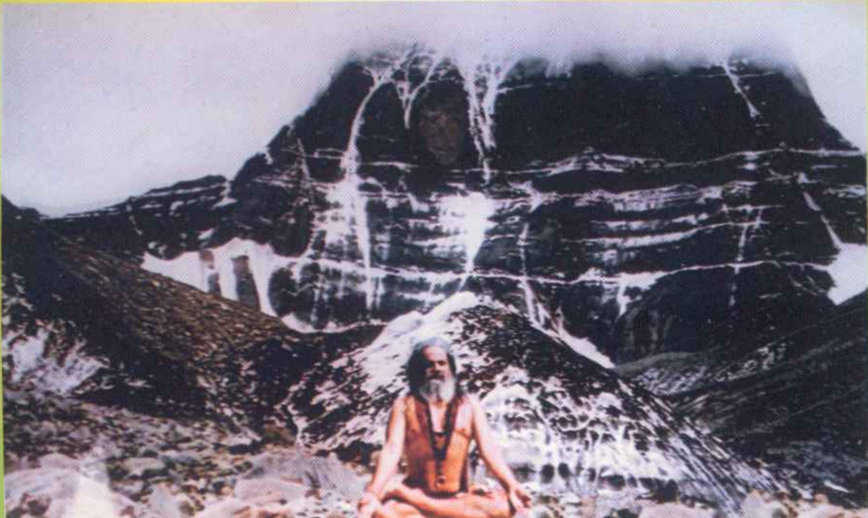

कैलास पर्वत के सानिध्य में योगी विलासनाथ

23–7–07

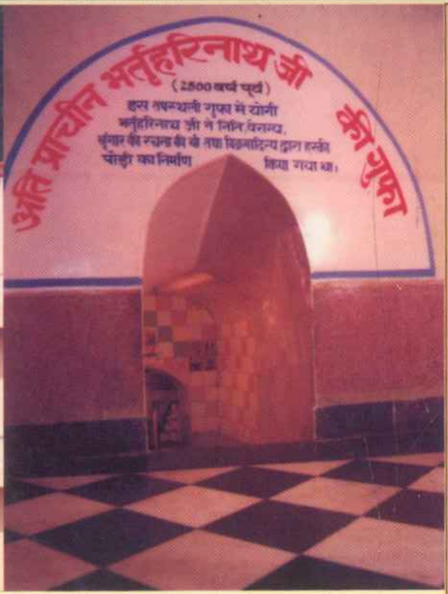

राजा भर्तृहरि श्रृंगार शतक, नीति शतक व वैराग्य शतक तीनों के रचयिता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। राजा भर्तृहरि ने उज्जैन–मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण कर यहाँ तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहाँ विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

–: पुस्तक प्राप्ति स्थान :–

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Visit us at: www./yogigorakshnath.org, e-mail:media@yogigorakshnath.org
Ph. 01334-226583

मुद्रक-शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार। फोन-228796